स्व० जमनालालजीको

जब मैं मूल गुजराती परसे अिस किताबका हिन्दी अनुवाद कर रही थी, तब मेरे पिताजी पू० जमनालालजी (जिन्हे हम काकाजी कहते थे) की पवित्र स्मृतिका मधुर वातावरण मेरे आसपास फैला हुआ था। पू० काकाजीको नित्य-नूतन स्थानोकी यात्रा करनेका और करानेका बडा शौक था। यात्राको वे शिक्षाका बडे महत्त्वका अग समझते थे। विदेशोमें भी अुनकी खास अिच्छा जापान जानेकी थी। लेकिन सारा समय हमारे देशके स्वतत्रता-सग्राममे जुटे रहनेमे वे अपनी अिस अिच्छाको प्रत्यक्ष रूपमे पूरी नही कर पाये।

अुन दिनो तो वे ब्रिटिश सरकारकी जेलकी चार-दीवारोके भीतर ही विदेश-यात्राका मजा ले लेते थे।

पू० काकासाहबके लिअे अुनके दिलमे हमेशासे गहरा स्नेह था। काकासाहबके द्वारा की हुअी यात्राके अिस वर्णनानदको वे स्वय की हुअी यात्राके आनदके समान ही मान लेते। शायद अिसीलिअे आज यह जापान-यात्राका हिन्दी अनुवाद अुन्हीके स्मरणोसे घिरा हुआ प्रकाशमें आ रहा है।

—ॐ

जिस साल स्व० जमनालालजी हिन्दी-साहित्य-समेलनके अध्यक्ष थे, अुनका और मेरा विचार था कि हम हिन्दीका सन्देशा लेकर पूर्व-अेशियाकी मुसाफिरी करे। लेकिन वैसा अुस समय हो नही पाया। अुन्हीकी लडकीके द्वारा किया हुआ मेरी जापान-यात्राका यह अनुवाद श्री जमनालालजीकी पवित्र स्मृतिको अर्पण करते मुझे दुगुना सतोष होता है।

—काका कालेलकर

मार्च ३,१९५६
फाल्गुन १२,१८८०(श)

प्रिय ओनू,

आशीर्वाद।

तुम्हारा २१ फरवरी का पत्र मुझे मिला। यह जानकर मुझे खुशी हुई कि काकासाहेब कालेलकर द्वारा जापान के सम्बन्ध मे लिखित गुजराती पुस्तक का अनुवाद तुमने हिन्दी में किया है। उसका कुछ भाग जो तुमने जापान यात्रा पर जाने से पूर्व मुझे दिया था ~~और~~ उसे मैने देखा भी था। आज हिन्दी मे ऐसे साहित्य का बहुत अभाव है। वर्तमान युग मे तो जबकि सभी देश एक दूसरे के इतने नजदीक आ रहे हैं, यह आवश्यक हो गया है कि जनता दूसरे देशो के सम्बन्ध मे कुछ जानकारी पा सके और हमारे सम्बन्ध दूसरे देशो से बढें, हम लोग वहां की सस्कृति के बारे मे कुछ जानें और सीखें। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि यह पुस्तक जिसका नाम तुमने `सूर्योदय का देश` रखा है प्रकाशित होने जा रही है। तुम्हारा यह प्रयास सफल हो और इसी प्रकार भविष्य मे भी तुम्हारी रुचि ऐसी ऐसी पुस्तको के लिखने में बढे। तुम्हें मेरी बधाई और आशीर्वाद है।

तुम्हारा,

राजेन्द्र प्रसाद

समभावी अनुवादिका

हमारी भाषामें स्वदेशके या परदेशके प्रवास-वर्णन बहुत कम हैं। अगर भारतीय जीवनको परिपुष्ट करना हो तो भारतवासियोंको प्रवास, अध्ययन और सेवा द्वारा अपना विश्व-परिचय और विश्व-समभाव बढाना ही चाहिये। भारतकी परिस्थिति भी कहती है कि जो चीज भारतकी अेक भाषामें प्रकट हुअी हो वह यहांकी दूसरी भाषाओंमें भी प्रकट होनी चाहिये। यह आसानीसे हो भी सकता है।

प्रवास-वर्णन — खास करके परदेशका प्रवास-वर्णन — जितना समृद्ध हो सके अुतना अच्छा ही है। किन्तु आजकी प्राथमिक अवस्थामें सामान्य प्रवासानन्दकी पुस्तकें ही ज्यादा लाभदायक होंगी।

मैंने जापानकी यात्रा दो बार की। अिस यात्रामें जापानका जो प्राकृतिक सौंदर्य और जापानी जीवनका जो माहात्म्य मैं देख सका, अुसका कुछ प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करनेके लिअे मैंने 'अुगमणो देश — जापान' नामक गुजराती पुस्तिका लिखी। अिसके हिन्दी अनुवादके लिअे मुझे ओम्‌का ध्यान आया। अुसने भी अुसे स्वीकार किया। अिससे मुझे बडी खुशी हुअी।

चि० अुमाका असल नाम है ओम्। स्व० श्री जमनालालजीने अपनी लडकियोंके नाम कमला, मदालसा और ओम् रखे। अुसमें अुनकी आध्यात्मिक अभिलाषा और साधनाकी मंजिलें पायी जाती हैं। चि० ओम्‌के बचपनसे — करीब जन्मसे ही मुझे अुसका परिचय है। और अुसके सुन्दर विकासका मैंने कदम कदम पर निरीक्षण भी किया है। अुसके बचपनमें बबअीके समुद्र-किनारे पर, आमके पेडोंमें बैठे हुअे कोयलोंके शब्दका अनुकरण करनेमें मैंने ही अुसे प्रोत्साहन दिया था।

माता-पितासे जैसे अनेक अुत्तम संस्कार ओम्‌ने पाये, वैसे ही पिताके सेवा-समृद्ध जीवनके कारण हिन्दी, मराठी, गुजराती — तीनों भाषाओंका

अुत्तम परिचय भी ओम्‌ने पाया। जब अिन भाषाओंमें वह बोलती है, तब अुस भाषाके स्वारस्यसे तद्‌रूप हो जाती है। भारतमें फैली हुअी आजकी भाषिक संकीर्णताके दिनोंमें यह विशाल आत्मीयता सचमुच अेक राष्ट्रीय लाभकी बात है। आजकल जिन लोगोंने भारतकी सब भाषाअें अपनायी हैं, अुनके द्वारा ही भारतकी अेकता, स्वतंत्रता और सेवा-योग्यता मजबूत होनेवाली है। श्री जमनालालजी और श्री विनोबा जैसोंके पाससे अिन बच्चोंने अेक कीमती विरासत पाअी है।

मेरे प्रवास-वर्णनका अनुवाद करनेका अुत्साह ओम्‌ने दिखाया, अिससे मुझे परम संतोष हुआ। थोडा अनुवाद सुनाते समय ओम्‌ने जो शब्दचर्चा मेरे साथ की, अुससे अुसकी साहित्यिक अभिरुचिकी नजाकतका मुझे परिचय हुआ।

पश्चिमकी ओर यात्राके लिअे प्रस्थान करनेके कारण अिस पूर्वकी यात्राके वर्णनका अनुवाद मैं पूरा सुन नहीं सका। लेकिन अुसकी तनिक भी जरूरत नहीं थी। चि० ओम्‌को और अुसके अिस सुन्दर अनुवादको मैं अपने हार्दिक शुभ आशीर्वाद देता हूं।

नअी दिल्ली, काका कालेलकर
५–६–'५८

पंचामृत

जापान देशमे — जिसका असली नाम निप्पोन अथवा नीहोन है, मै दो बार हो आया हू। पहली बार गया था तीन वर्ष पूर्व १९५४ के अप्रैलमे, दो सप्ताहके लिअे। और दूसरी बार, पिछले साल जुलाअी-अगस्तमे, लगभग चार सप्ताहके लिअे गया था। पहली बार मै वहाकी विश्वशाति परिषद्के लिअे गया था। अुसकी कुछ बाते अेक छोटी-सी डायरीमे लिख रखी थी। अुनके आधार पर अिस देशका विस्तृत वर्णन लिखनेकी अिच्छा थी। गाधी-स्मारक-निधिको अुस प रषद्की रिपोर्ट भी देनी थी। लेकिन दूसरे कर्तव्योके सामने यह सब रह गया। अिस बार मै अेटम-बम और हाअिड्रोजन बमके प्रयोगोके विरुद्ध दुनियाका पुण्यप्रकोप प्रकट करने और पृथ्वी पर सेनाओका भार हलका करनेके विषयमे प्रबल और प्रमत्त राष्ट्रोसे विनती करनेके लिअे होनेवाली परिषद्में भाग लेनेके निमित्त गया था। अिस बारकी यात्राका वर्णन भी गुजरातकी जनताके सामने लिखकर पेश करनेका काम रह ही जाता। लेकिन चि० सरोज अिस बार मेरे साथ जापान न आ सकी थी, अिसलिअे मै वहासे अुसे नियमित पत्र लिखता रहा। अुनमें यह वर्णन विस्तारके साथ और पुराने अनुभवोको जाग्रत करनेवाली व्यक्तिगत भावनाओके साथ सुरक्षित रहा। आखिरी प्रकरणकी बातें चि० सतीशको लिखे गये पत्रसे ली गअी है।

ये सब पत्र अिकट्ठे करके और मेरे साथ गअी हुअी मजुलाकी डायरीमे से थोडी बातें चुनकर कुछ परिवर्तन और परिवर्धनके साथ यह पुस्तक तैयार की गअी है।

पहली बार हमने टोकियोसे दक्षिणका जापान देश ठेठ कुमामोतो तक देखा था। अुत्तरका भाग अनदेखा ही रह गया था। अिस बारकी यात्रामें ठीक अुत्तरके किनारेसे लेकर ठेठ दक्षिणके किनारे तकका सारा जापान देश देखनेका मैंने निश्चय किया था। लेकिन पहली यात्रामें जो महत्त्वके स्थान देख लिये थे अुन्हे अिस बारके प्रोग्राममें नही रखा जा सका। अिसलिअे अिस बारका वर्णन अिस हद तक अधूरा रहता।

अुत्तम परिचय भी ओमने पाया। जब अिन भाषाओंमें वह बोलती है, तब अुस भाषाके स्वारस्यसे तद्रूप हो जाती है। भारतमें फैली हुअी आजकी भाषिक संकीर्णताके दिनोंमें यह विशाल आत्मीयता सचमुच अेक राष्ट्रीय लाभकी बात है। आजकल जिन लोगोंने भारतकी सब भाषाअें अपनायी हैं, अुनके द्वारा ही भारतकी अेकता, स्वतंत्रता और सेवा-योग्यता मजबूत होनेवाली है। श्री जमनालालजी और श्री विनोबा जैसोंके पाससे अिन बच्चोंने अेक कीमती विरासत पाअी है।

मेरे प्रवास-वर्णनका अनुवाद करनेका अुत्साह ओमने दिखाया, अिससे मुझे परम संतोष हुआ। थोड़ा अनुवाद सुनाते समय ओमने जो शब्दचर्चा मेरे साथ की, अुससे अुसकी साहित्यिक अभिरुचिकी नजाकतका मुझे परिचय हुआ।

पश्चिमकी ओर यात्राके लिअे प्रस्थान करनेके कारण अिस पूर्वकी यात्राके वर्णनका अनुवाद मैं पूरा सुन नहीं सका। लेकिन अुसकी तनिक भी जरूरत नहीं थी। चि० ओमको और अुसके अिस सुन्दर अनुवादको मैं अपने हार्दिक शुभ आशीर्वाद देता हूं।

नअी दिल्ली, काका कालेलकर
५-६-'५८

पंचामृत

जापान देशमे — जिसका असली नाम निप्पोन अथवा नीहोन है, मै दो वार हो आया हू। पहली बार गया था तीन वर्ष पूर्व १९५४ के अप्रैलमे, दो सप्ताहके लिअे। और दूसरी बार, पिछले साल जुलाअी-अगस्तमें, लगभग चार सप्ताहके लिअे गया था। पहली बार मै वहाकी विश्वशाति परिषद्के लिअे गया था। अुसकी कुछ बाते अेक छोटी-सी डायरीमे लिख रखी थी। अुनके आधार पर अिस देशका विस्तृत वर्णन लिखनेकी अिच्छा थी। गाधी-स्मारक-निधिको अुस प रखद्की रिपोर्ट भी देनी थी। लेकिन दूसरे कर्तव्योके सामने यह सब रह गया। अिस बार मै अेटम-बम और हाअिड्रोजन बमके प्रयोगोके विरुद्ध दुनियाका पुण्यप्रकोप प्रकट करने और पृथ्वी पर सेनाओका भार हलका करनेके विषयमें प्रबल और प्रमत्त राष्ट्रोमे विनती करनेके लिअे होनेवाली परिषद्में भाग लेनेके निमित्त गया था। अिस बारकी यात्राका वर्णन भी गुजरातकी जनताके सामने लिखकर पेश करनेका काम रह ही जाता। लेकिन चि० सरोज। अस बार मेरे साथ जापान न आ सकी थी, अिसलिअे मै वहासे अुसे नियमित पत्र लिखता रहा। अनमें यह वर्णन विस्तारके साथ और पुराने अनुभवोको जाग्रत करनेवाली व्यक्तिगत भावनाओके साथ सुरक्षित रहा। आखिरी प्रकरणकी बातें चि० सतीशको लिखे गये पत्रसे ली गअी है।

ये सब पत्र अिकट्ठे करके और मेरे साथ गअी हुअी मजुलाकी डायरीमें से थोडी बातें चुनकर कुछ परिवर्तन और परिवर्धनके साथ यह पुस्तक तैयार की गअी है।

पहली बार हमने टोकियोमे दक्षिणका जापान देश ठेठ कुमामोतो तक देखा था। अुत्तरका भाग अनदेखा ही रह गया था। अिस बारकी यात्रामे ठीक अुत्तरके किनारेसे लेकर ठेठ दक्षिणके किनारे तकका सारा जापान देश देखनेका मैंने निश्चय किया था। लेकिन पहली यात्रामें जो महत्त्वके स्थान देख लिये थे अुन्हे अिस बारके प्रोग्राममें नही रखा जा सका। अिसलिअे अिस बारका वर्णन अिस हद तक अधूरा रहता।

यह बात भी खटकने लगी कि जापानके अिस वर्णनमें क्योतो और नारा जैसे संस्कार-धाम रह जायें, हिरोशिमाके बलिदानका वर्णन न आवे, आसो जैसे ज्वालामुखीके रोमांचकारी दर्शनसे यह पुस्तक वंचित रहे और कुमामोतो शहरका तथा वहांके शांति-स्तूपका अुल्लेख भी न आवे, तो यह अिस वर्णनकी अेक बडी कमी ही मानी जायगी। आखिर चि० सरोजने हिम्मत की और अुस छोटी-सी डायरीके चौदह दिनके पृष्ठोंसे हम दोनोंने अपनी स्मरण-शक्ति ताजी करके अुस पुरानी यात्राका वर्णन लिख डाला। जैसे-जैसे लिखते गये वैसे-वैसे कअी पुरानी चीजें मानो कल ही की हों अैसी लगने लगीं। तब मैंने फिरसे अनुभव किया कि मनुष्य अपनी विस्मरण-शक्ति पर भी कभी विश्वास नहीं रख सकता। देखते-ही-देखते यह यात्रा-वर्णन तैयार हो गया, और नअी यात्राकी अिस पुस्तकका अग्रभाग बननेका हकदार भी बना।

पिछले १५–२० वर्षोंकी लगभग सभी छोटी-बडी यात्राओंमें चि० सरोज मेरे साथ रही है और देश-दर्शनके अिस आनन्दमें अुसने अुत्साहसे भाग लिया है। अिसलिअे तीन वर्ष पहलेकी अिस यात्राके संस्मरणोंको ताजा करनेमें अुससे बडी मदद मिली।

*　　　*　　　*

हमारे देशमें यात्रा-वर्णनकी पुस्तकें बहुत थोडी लिखी जाती हैं। विदेश-यात्राओंके वर्णन तो हमारे यहां नहींके बराबर हैं। अैसी स्थितिमें केवल यात्रा-वर्णनोंमें ही रस पैदा करना हो तो वह विविध प्रकारकी अैतिहासिक और वैज्ञानिक जानकारीसे भरा हुआ नहीं होना चाहिये। सामान्य मनुष्य स्वाभाविक कुतूहलसे जितना देखता है और जिस तरहका आनन्द मना सकता है, अुतना ही यदि दे दिया जाय तो पढनेवालेको खुद सफर करनेका कुछ हलका-सा आनन्द मिल सकता है। अुसके बाद मौका मिलते ही वह खुद सफरको निकल पडेगा। और यदि अैसा न हो सके तो वह कमसे कम अुस देशके विषयमें जरूरी और महत्त्वकी बातें बतानेवाली पुस्तकें तो पढेगा ही।

थोडी जानकारी देनेवाली और सरल वर्णन करनेवाली जिस दृष्टिके बारेमें मैंने अूपर कहा है वह दृष्टि अब पश्चिममें भी स्वीकार

की जा रही है। लेकिन वहा अिसका कारण बिलकुल अुलटा है। पश्चिमके लोग पिछले १००–२०० वर्षोमें सारी दुनियाका प्रवास कर चुके है। अुन्होने प्रत्येक देशकी रग-रगकी अैतिहासिक, भौगोलिक और जनपदीय अितनी सारी जानकारी अिकट्ठी की है कि हर देशके लोगोको अपने देशके विषयमें जाननेके लिअे भी पश्चिमके लोगोकी लिखी हुअी पुस्तके ही देखनी पडती है। अिस तरह प्रत्येक देशके विषयमे शुद्ध और सवल जानकारीसे भरी हुअी भारी-भरकम पुस्तकें वहा अितनी अधिक सख्यामें तैयार हुअी है कि पाठकोको अुनका अेपच हो जाता है और वे सरल किताबोके लिअे तरसते है।

अिस नअी दृष्टि अथवा वृत्तिके लिअे अेक दूसरा भी कारण है। आज तककी दुनियाका गठन प्रत्येक देशके प्रतिष्ठित लोगोके हाथोसे हुआ है। जिस तरह सारे महाभारतमे केवल ब्राह्मण और क्षत्रियोका ही वर्णन आता है, अुसी तरह दुनियाके साहित्य तथा अितिहासमे अधिकतर अूपरके दस प्रतिशत लोगोके ही पुरुषार्थका वर्णन किया जाता है। अब पिछले १०० वर्षोसे सामान्य जनताके लोकयुगका प्रारम्भ हुआ है। अिसलिअे जिसका राजनीति, अर्थशास्त्र और धर्मशास्त्रके साथ अधिक सम्बन्ध नही है, लेकिन जो केवल जीती है, प्रेम करती है और आनन्दसे रहती है अैसी जनताके जीवनमें ही आजके नये पाठक रस लेने लगे है। वे कहते है कि रूसके साम्यवादके पक्षमे या विरोधमें लिखे हुअे लम्बे-लम्बे प्रवचनोको सुनकर तो हम तग आ गये है। रूसकी सामान्य प्रजा कैसे जीती है, कैसे श्रम करती है, कैसे नाचती है तथा गाती है, बस अितना ही जाननेके लिअे हम अुत्सुक है। अिस तरहकी जिज्ञासाको सतुष्ट करनेवाली पुस्तके सब जगह ढेरो बिकती है और पढी जाती है।

और मैं तो मानता हू कि शिक्षित समाज तथा सामान्य जन-समाज जिन पर आधार रखता है तथा जिनसे हमारा श्वास चलता है और हमें पोषण मिलता है, वे पृथ्वी, जल और आकाश भी मनुष्यकी जिज्ञासाके प्रधान विषय होने चाहिये। और सृष्टिके अिस पोषण पर जीनेवाले पशु-पक्षी, कृमि-कीट, मछलिया और छोटे-मोटे कीडोवाले शख और अिन सबको आधार देनेवाले वृक्षो तथा वनस्पतियोको भी हम अपनी जिज्ञासामे

वंचित कैसे रख सकते है? जीवन यानी अखण्ड जीवन। अुसमे कुछ भी बहिष्कृत नही होना चाहिये।

मनुष्यने अपनी मति और वृत्तिके अनुसार छोटे-बडे अनेक पाप पैदा किये है तथा अुनको पोसा है। लेकिन सबसे बडा पाप है — अेकागिता। अिस अेकागिताके कारण मनुष्यके अनुभवमें और विचारोंमें प्रमाण-बद्धता नही रहती। कोअी आदमी किसी सभा अथवा समारम्भकी बात करते हुअे यदि दरवाजे पर देखे हुअे जूतोका ही वर्णन करने लगे तो हम अनुमान लगा सकते है कि वह वर्णनकार या तो धन्धेसे निरा चमार होगा अथवा जूते सुधारनेवाला मोची। और यदि कोअी दूसरा आदमी अुसी समारम्भके केवल अध्यात्मका ही वर्णन करने लगे तो हम पहचान सकते है कि वह कोरा तार्किक पडित ही होगा। हम तो चाहते है जीवन-परायण, जीवनानन्दी और जीवनोपासक लेखक। जीवनके सारे पहलुओंको सप्रमाण व्यक्त करना ही नये साहित्यका आदर्श होना चाहिये। यदि हम भविष्यके साहित्यको अिस दिशामें मोड सके, तो भी वह शुभ मगलाचरण कहलायेगा।

जापानके विषयमें लिखनेको तो बहुत है। अेशियाकी पुनर्जागृतिके अिस जमानेमें अेशियावासियोको अेक-दूसरेका गहरा परिचय प्राप्त करना चाहिये। और अिस परिचयके द्वारा मिलनेवाले अिस जीवनानन्द और मानवानन्दको विकसित करना चाहिये। मेरी यह पुस्तक बहुत हुआ तो भोजनके प्रारम्भमें स्वाद जाग्रत करनेके लिअे दिये जानेवाले पेयके जैसी, अर्थात् पचामृत (appetizer) जैसी ही है।

गुजरातकी जनता पुरुषार्थी है। अुसकी महत्त्वाकाक्षा अब अनेक दिशाओमें जाग्रत हुअी है। व्यापार और अुद्योगके लिअे साहस करनेकी वृत्ति तो अिसकी रगोंमें पहलेसे ही है। भारतके युवकोको अब जापान, चीन व कम्बोडिया जैसे पूर्वके देशोकी बारम्बार यात्रा करनी चाहिये। आजकलके नये साहित्यकार देश-देशान्तरोकी 'जमीन और जनता' के बारेमें, भारतकी अपनी दृष्टिसे लिखे हुअे वर्णनोको अिस अुदीयमान पीढीके सामने रखें यह बहुत जरूरी है।*

काका कालेलकर

---

* मूल गुजराती आवृत्तिकी प्रस्तावना।

अनुक्रमणिका

पहली यात्रा — १९५४

दूसरी यात्रा — १९५७

सूर्योदयका देश

पहली यात्रा — १९५४

जापान बुलाता है

मैं कओी वर्षोसे कहता आया हू कि मेरी दुनियाके सारे देश देखनेकी अिच्छा है, लेकिन जापान व अमरीका देखनेकी खास अिच्छा नही होती। कोअी देश जितना अधिक पिछडा हुआ, अविकसित अथवा अुपेक्षित हो अुसकी ओर मेरा अुतना ही अधिक आकर्षण होता है। अुसके विषयमे मैं बहुत-कुछ जानना चाहता हू। अुनके पास अपनी विशिष्ट प्रकृति तो होती है। लेकिन जापान और अमरीकाके विषयमें कुछ अैसा खयाल बन गया था कि ये दोनो देश अुधारी पूजी पर ही आगे बढे हैं। अिनके पास अपना मौलिक या गभीर कुछ नही है। जो कुछ भी है, लिया हुआ है, पैदा किया हुआ नही है। अिसलिअे अिन देशोके लोग छिछले और अभिमानी होने चाहिये। अुनकी सस्कृति अथवा सम्पन्नता टिकते-टिकते भी कहा तक टिकेगी? घासकी ज्वाला भडक कर जलती है, किन्तु अल्पजीवी होती है। दूसरी ओर, लकडिया धीरे-धीरे जलती है पर वे सारी रात जल सकती है अित्यादि।

पर अब मैं देखता हू कि अिस विचारमे अुतावलापन था, दीर्घ दृष्टि नही थी। अुधार पूजी लेनेवाले भी यथासमय मौलिकताका विकास कर सकते है और विशिष्टता प्रगट कर सकते है। खानदानियत तो अनुभव और समयकी अुपज है। मुरब्बा जिस दिन बनता है अुस दिन कच्चा ही होता है। श्रद्धा और धीरज रखनेसे ही वह तैयार होता है। मधु-मक्खियोंके शहदके बारेमें भी अैसा ही है।

मुझे अपने-आप तो जापान जानेका शायद ही सूझता। कहते है कि जापानके गुरुजी निचिदात्सु फूजीअी जब गाधीजीसे मिलने सेवाग्राम जा रहे थे तब मुझे ट्रेनमे मिले थे। स्वाभाविक जिज्ञासासे मैंने अुनके साथियोसे कअी सवाल पूछे होगे। पर मैं तो यह सब भूल गया था। अुसके बाद अुनके शिष्य अेकके बाद अेक सेवाग्राम आश्रममें आकर रहने लगे। चमडेका पखा बजाकर 'नम् म्यो हो रेगे क्यो' की प्रार्थना

करनेका तो अनका नित्यका नियम था। आश्रमका प्रतिदिनका सौंपा हुआ कार्य वे बडी लगनसे करते और बाकीके वक्त अपनी चित्र-विचित्र लिपिमे लिखते रहते। जो कोजी भी मिलता अुसे प्रसन्नतापूर्वक नमस्कार करते। आश्रम-जीवनके दरम्यान अिन लोगोंने किसी तरहकी कोजी माग नही की, न कभी किसीकी शिकायत की अथवा किसी तरहकी टीका-टिप्पणी ही की। वे तो बस काम करते, लिखते और हसकर सबको नमस्कार करते। प्रार्थनाके पहले पत्रा बजाकर मत्र बोलते और माथा टेककर प्रणाम करते।

अिन लोगोकी कार्य-तत्परता, अिनका मेहनती स्वभाव और अिनका प्रसन्न सयम — अिन तीनोका गाधीजीके मन पर बडा प्रभाव पडा। युद्ध प्रारम्भ होने पर जापान राष्ट्रके ब्रिटेन-विरोधी दलमें शामिल होते ही भारतकी अग्रेजी सरकारने आश्रमवासी जापानी साधुओंको गिरफ्तार कर लिया। आश्रममें से ये साधु अिस तरह गये अिसलिअे गाधीजीने अुनकी यादगारमे और अुनके सम्मानमे अुनका मत्र आश्रमकी प्रार्थनामें सम्मिलित किया।

जापानके विषयमे मैंने पहले-पहल अट्ठारह सौ चौरानवेमे अपने बचपनमे सुना था। अुस समय जापानने चीनके साथ युद्ध करके विजय प्राप्त की थी। और अिससे पश्चिमके राष्ट्र जापानकी कदर करने लगे थे। अिसके बाद जापानकी बहुत ही सस्ती-मस्ती चीजें भारतमें आने लगी। सन् अुन्नीस सौ चारमे रूस और जापानके बीच युद्ध छिडा। ये हमारे स्वदेशी हलचलके दिन थे। जापानकी विजयसे हम खुश हुअे। जापान अेशियाके गुरु-स्थान पर पहुच गया। और हम अग्रेजी मालकी जगह स्वदेशी मालकी जैसी भक्तिसे ही जापानी माल लेने लगे। हमारे कुछ विद्यार्थी जापान हो आये। दो कुशल जापानी मजदूरोकी मददसे तलेगावमे सार्वजनिक पैसे-पैसेके चन्देसे अेक काचका कारखाना खोला गया। फिर तो लोग कहने लगे कि अपने देशमें काचका कारखाना — यह तो अेक नया अवतार ही है।

अब शिन्टो, मिकाडो, बुशीडो, सामुराअी, हरिकेरी, जिनतान वगैरा जापानी शब्द लोगोके कानोमें पडने लगे। जापानकी सैनिक

बहादुरीके विषयमे हम अभिमान व्यक्त करने लगे। मारक्विस ओटो, अेडमिरल टोगो, जनरल कुरोकी, मार्शल ओयामा वगैरा सैनिक और राजनीतिक नेताओके नाम हमे अैसे लगने लगे मानो वे हमारे घरके ही हो। पोर्ट आर्थरका किला, मुकडेनकी रणभूमि और सुशीमाकी खाडी, ये तीनो तो अेशियाके भाग्योदयके पुण्य-क्षेत्र ही बन गये।

पिछले महायुद्धमे जापानी लोग सिंगापुर और मणिपुर तक पहुचे थे। नेताजी सुभाषचन्द्र बोसने अुनके साथ सहकार किया था। आगे चलकर हिरोशिमा और नागासाकीमें पश्चिमके गोरोकी सस्कृति और हमारी अेशियाअी सस्कृतिके बीचका सम्बन्ध स्पष्ट हुआ। जापानके विषयमे जो कुतूहल व आदरकी भावना थी वह अब सहानुभूतिमें बदल गअी। पर्ल हार्बर पर घातकी हमला करनेका जापानका कदम सभीको विचित्र लगता था। परन्तु पश्चिमके लोगोने हमारे यहा अिस तरहके दगाबाजीके कृत्य न किये हो, अैसा नही है। अिसलिअे अिस घातकी कृत्यके विषयमें पश्चिमके लोगोका रोष समझमे आना जरा कठिन था। मनमे तो यही लगता था कि शायद जापानके पक्षमें भी कोअी बचाव होगा, जिसे हम नही जानते। खैर, हिरोशिमा और नागासाकीके बाद तो जापानके विरुद्ध कुछ कहनेको जी नही चाहता था।

युद्ध समाप्त होने पर आश्रममें रहे हुअे अेक बौद्ध साधु आनन्दा मारुयामाका जापानसे पत्र आया कि अुनके गुरुजी गाधीजीके विचारोका प्रचार करनेके लिअे अेक प्रदर्शनी कर रहे हैं। अुसके लिअे मै गाधीजीका साहित्य और तसवीरें आदि कुछ सामग्री भेजू। मैने यह खुशीसे किया। बादमे सुना कि गुरुजी विश्व-शातिके लिअे जापानमें जगह-जगह स्तूप-पेगोडाकी स्थापना करना चाहते है। मैंने अुन्हें लिखा कि जापानकी परिस्थितिमे भले ही अिस कार्यकी आवश्यकता व अुपयोगिता हो, लेकिन मेरे मनमे तो न अिसके लिअे विश्वास है और न अुत्साह है।

गुरुजीके शिष्योने अुनके शाति-स्तूपोके बहुतसे चित्र मुझे दिखाये। स्तूपोकी आकृति और आसपासके प्रदेशको देखते हुअे वे सचमुच सुन्दर कलाकृतिया थी। फिर भी विश्व-शातिके आदर्शको जनता तक पहुचानेकी अुनकी शक्ति अथवा अुपयोगिताके विषयमे तो मनमे शका बनी ही रही।

जापानमे जिस बौद्ध-धर्मका प्रचार है वह महायान है। यह मैं जानता था। अिसलिअे पेगोडाके लिअे अुनका पक्षपात मुझे आश्चर्यजनक नही लगा। ब्रह्मदेशके हिनयानी — यानी थेरवादी बौद्ध भी जब नये-नये पेगोडे खडे करते है, तब वे सनातन वृत्तिवाले महायानी तो करेंगे ही।

अिसी बीच जापानमे शातिवादियोकी विश्व परिषद्का होना निश्चित हुआ। गुरुजीका निमत्रण आया कि मुझे अिस परिषद्के लिअे जापान जरूर आना चाहिये। वे तो यह भी चाहते थे कि मैं अिस परिषद्के बाद जापानमे महीने दो महीने गाव-गाव घूमकर अुनकी शाति-प्रवृत्तिमें सहायता दू और खास कुमामोतोमे स्थापित होनेवाले सबसे बडे शाति-स्तूपके अुद्घाटनके अवसर पर भी अुपस्थित रहू।

जवाबमें मैंने कहलवाया कि पिछडे वर्गोकी जाचके कमीशनका भार मेरे सिर पर है अिसलिअे नही आ सकूगा। महीने-दो-महीनेका वक्त निकालना तो असम्भव ही है।

अुनकी फिरसे चिट्ठी आअी कि यदि आप आठ-दस दिन भी निकाल सकें तो अवश्य आअिये। हम आपकी जापानमें रहनेकी व्यवस्था तो अपनी ओरसे करेंगे ही साथ ही जापान-यात्राका अेक तरफका खर्च भी आपको देंगे जो हम किसी दूसरेको नही देते है। अुन लोगोंने गाधी स्मारक निधिको भी लिखा कि हमारी शाति परिषद्मे आपके किसी प्रतिनिधिका होना आवश्यक है। निधिने मेरा और श्री भारतन् कुमारप्पाका नाम पसन्द किया। परिषद्-वालोने मुझे अेक विशेष आग्रहपूर्ण निमत्रण तारसे भेजा तथा अुसमें अेक वाक्य यह भी जोड दिया — "We consider you to be the backbone of the Conference." प्रशसा सुनकर अेकदम फूल अुठनेवाला तो मैं कभी था ही नही, अिसलिअे यह वाक्य व्यक्तिगत रूपसे मेरे लिअे ही है अैसा समझनेकी भूल तो मैं कैसे करता? गाधीजीका अुपदेश और भारतकी अहिंसक लडाअीकी प्रतिष्ठाके कारण जापानमे जो आशा बधी थी वही अिसमें व्यक्त हो रही थी।

अितने आग्रहके बाद जापान गये बिना छुटकारा न था। पिछले युद्धके अन्तमें अमरीकाने शातिकी जो शर्तें जापान पर लादी थी, अुनमें

मुख्य यह थी कि जापान अबसे लडाअीके लिअे सेना नही रखेगा। पराजित राष्ट्र अिस अपमानको पी गया। अुसने केवल भीतरी शातिके लिअे ही जरूरी सेना रखकर सतोष किया।

परन्तु कालका चक्र पलटा। अमरीकाको अब रूस व चीनका डर पैदा हुआ और अुनके विरुद्ध जापानको सशस्त्र करनेकी जरूरत महसूस हुअी। अमरीकाने राज्यका जो सविधान जापान पर लादा था अुसमें जरूरी हेर-फेर किये बिना जापान सशस्त्र नही हो सकता था। खुद लादे हुअे सविधानको अब बदलनेकी सूचना अमरीकाने जापानको दी। जापानके शातिवादियोने अिसका विरोध किया। गुरुजी निचिदात्सु फूजीअी मूलमे तो साम्राज्यवादी थे और जापान द्वारा सारी दुनियामें बौद्ध-धर्म फैलानेकी महत्त्वाकाक्षा भी रखते थे। लेकिन महायुद्धमें हारनेके बाद और हिरोशिमा व नागासाकीके अनुभवोंके बाद गाधीजीसे सुनी हुअी अहिसाकी नीति अुनके गले अुतरी। अुन्होने प्रचार शुरू किया, "अमरीका द्वारा लादी हुअी नि शस्त्रीकरणकी नीति सचमुच अीश्वरके आशीर्वादके समान है। अब अिसे नही छोडना चाहिये।" चारो ओर अुन्होने यही प्रचार चलाया। अिस काममें वे भारतकी सहानुभूति चाहें यह स्वाभाविक था। अिसीमे अुनका आग्रह था कि मै विश्वशाति परिषद्में अुपस्थित रहू।

सोच-विचारके बाद सारा हिसाब लगाकर मैने जापानके लिअे चौदह दिन निकालनेका निश्चय किया। और आते जाते रास्तेमें किसी भी देशको देखनेके लिअे नही ठहरूगा अैसा सयम भी अपने लिअे निर्धारित कर लिया। मेरे आने-जानेका हवाअी-खर्च तो गाधी स्मारक निधिने दिया और जापानमें रहनेका खर्च वहीके लोगोने किया।

अिस तरह मेरी पहली जापान यात्राकी योजना बनी और सन् अुन्नीस सौ चौवनके मार्चकी २९ तारीखकी दोपहरको चि० सरोजके साथ मैंने भारत छोडा। भारतन् बादमे आनेवाले थे।

पिछले पन्द्रह-सोलह वर्षोमे चि० सरोज लडकीकी तरह ही मेरे साथ रहती आअी है। मेरा लेखन और दूसरा सब काम भी वही सभालती है। अिसलिअे अुसका मेरे साथ जापान जाना स्वाभाविक था। अुसने अपने खर्चमे जानेका निश्चय किया और हम कलकत्तेसे चल पडे।

२

विश्व-शांतिकी खोजमें

हम कलकत्तेसे २९ मार्चकी दोपहरको चले और शामको रंगून पहुचे। हमारा हवाओी-जहाज रातके सफरमें विश्वास नही करता था, अिसलिअे हमे अेक रात ब्रह्मदेशमें बितानी पडी। रातको हमारे रहनेका प्रबन्ध स्ट्रैंड होटलमें था। मित्रोंने जिन लोगोंको हमसे मिलनेके लिअे पत्र व तार भेजे थे वे अुन्हें नही मिले थे। अिसलिअे हमें जरा निराशा हुअी। लेकिन अिसी बीच श्यामजी प्रेमजी कम्पनीके श्री हरकचन्द भाअी हमें होटलमें मिले। पहले तो वे हमें घूमने ले गये। फिर अुन्होंने ही वहाके प्रसिद्ध भाअी सीतारामजी (अेकाअुन्टेंट) को फोन करके बुलाया। अुन्हीके साथ हमने ओरिअेन्टल क्लबमें बैठकर सरोवरकी शोभा देखी। अुसके बाद हम भाअी रशीदके यहा गये। भाअी रशीद मूल भारतीय है। ब्रह्मदेशमें जाकर वही शादी करके अुन्होंने वहाकी नागरिकता स्वीकार कर ली है। आज वे बर्मी सरकारमें मन्त्री-पद पर है। अुन्होंने बर्मी सरकारका पूरा विश्वास प्राप्त किया है और वे ब्रह्मदेशकी स्व-राज्य सरकारकी अुत्तम सेवा कर रहे हैं। अुन्हीके यहा हमें श्री और श्रीमती सलाहुद्दीन तैयबजी मिले। चि० रेहाना और सरोजकी वजहसे वे दोनो हमारे लिअे घरके जैसे ही थे। अुनसे अचानक मुलाकात हो जानेसे हमे बडी खुशी हुअी। वे भी बडे खुश हुअे। भारत और ब्रह्मदेशके विषयमें अुनके साथ बहुत-सी बातें हुअी। प्रधान मंत्री अू नू ने बौद्ध-धर्म-ग्रन्थके नव संस्करणके लिअे दो वर्ष तक चलनेवाली संगीति (परिषद्) बुलाअी है, यह चर्चाका मुख्य विषय था। सारे बौद्ध जगतके लिअे यह परिषद् बडे महत्त्वकी थी।

रंगूनसे सुबह बहुत जल्दी अुठकर हमे हवाअी अड्डे पर पहुचना था। सारे दिनका हवाअी सफर करके हम ठेठ शामको साढे सात बजे टोकियो पहुचनेवाले थे। वहा जाते ही स्नान नही हो सकेगा अिसलिअे

आधी रातको करीब अेक बजे अुठकर हमने हरकचन्द भाओीके यहा ही नहा लिया। फिर हमने सवेरे साढे तीन बजे रगून छोडा और शामको देरसे टोकियो पहुचे। रास्तेमें बैंगकॉक और हागकाग आये या नही यह अिस अिस समय याद नही आ रहा है।

प्रथानुसार हमारे हवाओी जहाजने टोकियोकी अेक आकाशी प्रदक्षिणा की और बादमें नीचे अुतरा। अिस बीचमे हम टोकियोके विस्तारकी कल्पना अुसके सुन्दर रग-बिरगे दीयोसे कर सके। सचमुच, वह दीपावली अद्‌भुत थी।

हम हानेडा हवाओी अड्डे पर अुतरे। वहा हमारा कल्पनातीत स्वागत हुआ। भिक्षु मारुयामा तो अुसमे थे ही। भारतमे अुन्नीस सौ अुनचासमें हुओी शाति-परिषद्‌मे मिले हुअे श्रीमती डॉ० टोमी कोरा वगैरा बहुतसे जापानी भी वहा आये थे। भारतके दूतावाससे श्री रणवीरसिंह (महाराजसिंहजीके लडके), श्री मौलिक और श्री मुखर्जी आदि भी थे। यहा जिन भाओीकी भारतके राजदूतके स्थान पर नियुक्ति हुओी थी वे अभी टोकियो नही पहुचे थे अिसलिअे अुनकी जगह श्री रणवीरसिंहजीने हमारा स्वागत किया और गाजे-बाजेके साथ हम अपने डेरे पर पहुचे।

निहोन सैनेन कान (जापान-युवा प्रासाद) नामका यह पाच मजिला भव्य भवन था। सारा मकान लडके-लडकियोसे भरा था। हमें तो सारे जापानियोके चेहरे अेकसे लगते हैं। अूपरसे अिन लडके-लडकियोने गणवेश (यूनिफार्म) के तौर पर अेकसी ही पोशाक पहनी हुओी थी। क्या अुनका अुत्साह था और क्या गजबकी अुनकी अुछल-कूद थी! छुट्टियोमें सरकारकी ओरसे सारे देशके बच्चोको बारी-बारीसे राजधानीमे लाकर सब-कुछ दिखाया जाता है। लडकोंके दलके दल किसी दिन पार्लमेंट देख आते तो किसी दिन बादशाहका राजमहल देखते। किसी दिन सग्रहालय देखते तो किसी दिन तरह-तरहके कारखाने! जब भी थोडा समय मिलता वे टेलीविजनके सामने बैठकर नाटक, क्रिकेट या टेनिसके खेल देखते। अुन दिनो टेलीविजन नया-नया तमाशा था। अिसलिअे लडके-लडकिया मधु-मक्खीकी तरह टेलीविजनके अिर्द-गिर्द अिकट्ठे होते थे।

हमारे लिअे तो वे सब अेक ही जैसे झुण्डके समान थे। लेकिन आपसमे वे सब अेक दूसरेको पहचानते थे, अपनी-अपनी सस्थाके लिअे अभिमान रखते थे, रिश्तेदारोंसे मिल आते थे और अध्यापकोंके साथ बैठकर आगेके अपने जीवन-क्रमकी तरह-तरहकी योजनाअें बनाते थे। वे सब अेक तेजस्वी और अुद्योगी राष्ट्रके प्रतिनिधि थे। हम कौन है, यह जाननेकी अुन्हे परवाह ही न थी। यदि होगी भी तो अुन्होंने अपने लोगोंसे पूछकर अपनी जिज्ञासा कभीकी तृप्त कर ली होगी। मैं अुनको निहार-निहारकर भविष्यके जापानी राष्ट्रका दर्शन कर रहा था और अेशियाके अुत्कर्षके दिवा-स्वप्नोंकी कल्पनामें खो रहा था। भारतके आजके जवान और जापानके युवा मिलकर कोअी भारी पुरुषार्थ नही करनेवाले है, अैसा कौन कह सकता है? हजारो वर्षोंके बाद सूर्य फिरसे पूर्वमें अुगना चाहता है। अभी अपनी पूरी तैयारी नही है। लेकिन जैसा कि विख्यात जर्मन लेखक स्पेंगलर कहता है, क्या पश्चिमका अस्त शुरू हुआ होगा? और आजकल वहा जो चका-चौंध करनेवाली प्रगति दिखाअी दे रही है वह क्या सचमुच सन्ध्याकी ही लाली होगी? रविबाबूने तो अुस सन्ध्याकी लालीका भयानक गीत गाया ही है।

सामान्यतया नये देशमें पहुचनेके बाद आसानीसे नीद नही आती। लेकिन सारे दिनकी थकावटने असर किया और बिना किसी टके-पैसेके खर्चके या बिना हवाअी जहाज जैसे वाहनकी मददके ही हम देखते-ही-देखते स्वप्न-सृष्टिमें पहुच गये।

सुबह अुठकर हमने खिडकियोंके परदे हटाये। जिस प्रकार छोटे बच्चे बिना किसी कारण ही हसते है अुसी तरह हमें बाहर साकुराके पेडो पर पहले-पहल खिले हुअे शुभ्र रेशमी फूल मुस्कुराते हुअे दृष्टि-गोचर हुअे।

जापान देशको पश्चिमके लोग Land of the cherry blossoms कहते है। यह कितना सच है, अिसकी प्रतीति हमें अपने अिस चौदह दिनके सफरमें हुअी। जहा देखो वहा साकुराके फूल-ही-फूल दिखाअी दे रहे थे। डालिया धीरे-धीरे ढक गअी थी, पत्ते लोप हो गये थे। जापानके अिस

छोरसे अुस छोर तक बस साकुरा ही साकुरा दिखाअी देता था। वैसे तो तो ये फूल बिलकुल सफेद और निर्गन्ध होते हैं। अुनमे कोअी अुन्मादक तत्त्व नही होता। लेकिन अिनकी बहार तो अितनी अुन्मादक होती है कि मारी जापानी प्रजा साकुराके ही गीत गाने लगती है। सब जगह ये फूल अेक साथ ही खिलते है। कुदरतने मानो सलाह करके ही सारे देशमें अेक माथ साकुराके पेडो पर फूल खिलाये हो। और तीन-चार हफ्ते पूरे होते-न-होते सभी जगहकी बहार खतम भी हो जाती है। चित्रांगदाका रूप-लावण्य ज्यादा नही फिर भी अेक वर्षके लिअे तो खिल ही अुठा था। लेकिन साकुराकी पुष्प-सृष्टि तो अेक ऋतु भी नही टिकती। पर जब ये खिलते है तो सारा देश अुनके पीछे पागल हो जाता है। अपने यहा तो तरह-तरहके फूल होते हैं। अेककी बहार फीकी नही पड पाती कि दूसरी आ जाती है। बारामासी फूल तो अपने नामानुसार छहो ऋतुओमें अेक ही निष्ठासे खिलते रहते हैं। दो हफ्तेके बाद जब हमने अिनी टोकियोसे जापान छोडा, तब साकुराके पेडो पर फूलोकी पूर्णताको पहुची हुअी बहारमें थोडी-थोडी हरी पत्तिया भी दिखाअी देने लगी थी। वे अिशारा कर रही थी कि यौवन ढलने लगा है अिसलिअे जितना नयनोत्सव मनाना हो अभी अेकाग्रतासे मना लो।

पहले ही दिन आकामाका डायट (पार्लमेंट) के बडे दीवानखानेमें हमारी शान्ति-परिषद् शुरू होनेवाली थी। अिस जागतिक परिषद्में भाग लेनेके लिअे अनेक देशोके प्रतिनिधि आये हुअे थे। अिसलिअे अैमी व्यवस्था हुअी थी कि कुल बारह अध्यक्ष बारी-बारीसे अिस कामको चलावें। अिनमे कअी जापानी थे और कअी बाहरके थे। बाहरके अनेक देशोमें से किन-किन देशोको यह सम्मान मिले और वह किस मात्रामे, अिसकी खूब चर्चा रही। अवसर मिलते ही मैंने कहा कि हमारे हिसाबसे तो सभी देश समान है। छोटे-बडे, अैसा भेद हम क्यो करे? और कुछ नही तो कमसे कम हम अिस परिषद्में विश्व-कुटुम्बका वातावरण तो पैदा करे। भारतकी ओरसे हमारा किसी भी तरहका आग्रह नही है। अध्यक्ष-मडलमें हमें स्थान न मिले तो हमें बुरा नही लगेगा। अिसका असर अच्छा हुआ। लेकिन मैंने सोचा था

अुससे बिल्कुल अुलटा! भारतकी ओरसे मैं और अध्यापक कालिदास नाग मडलमें चुन लिये गये। असलमें तो श्री भारतन् कुमारप्पा हम दोनोंसे अधिक अुपयोगी साबित हुअे। अुनका नम्र व मीठा स्वभाव, भाषा व विषय पर पूरा काबू और अुनकी मेहनती वृत्ति -- अिन सबके, कारण सब जगह अुन्हीकी माग थी। प्रस्ताव बनाने हो या वृत्तान्त तैयार करने हो, भारतन्के बिना किसीका काम ही नही चलता था। सचमुच अुस सारी परिषद्के वे अेक रत्न थे।

हमारी यह प्राथमिक परिषद् दोपहरको अेक बजे शुरू हुअी। अिससे पहले हम सब हिन्दी भाअी प्रथानुसार भारतके दूतावासमें हो आये। वहा डॉ० कालिदास नागके आग्रहसे हमने अेक प्रस्ताव पास करके प० जवाहरलालजीको तारसे भेजा। फिर बैंक आफ अिण्डियामें जाकर अपने पासके पाअुण्डोंके जरूरी जापानी येन करवाये। डॉ० कोराके साथ जापानकी परिस्थितिके विषयमें बहुतसी बातें हुअी। मैंने रणवीरसिंहजीसे कहा कि जापानके प्राचीन आदिवासी आयनु लोगोंके विषयमें मुझे जानना है। अुन्होने थोडीसी जानकारी दी और बताया कि अब अुन लोगोंमें काफी मात्रामें जापानी मिश्रण हो गया है। अनेक जापानियोंके साथ बातें करनेके बाद मैं अिस निष्कर्ष पर पहुचा कि अपने देशकी पिछडी जातियोंके साथ मिलना और अुन्हें अपनाना रूसी लोगोको आता है। चीनी भी अैसा प्रयत्न करते है। लेकिन जापानियोंने अभी यह कला नही सीखी है।

परिषद्की ओरसे हम दोनोकी मददके लिअे दो जापानी विद्यार्थी दिये गअे थे। वे स्थानीय विश्वविद्यालयमे हिन्दी सीखते थे। अेकका नाम था कीमुरा और दूसरेका नाम था कोबायाशी। दोनो स्वभावसे नम्र और मिलनसार थे। हर तरहसे अुपयोगी सिद्ध होनेके लिअे वे हमेशा तैयार रहते थे। अुनमें से भाअी कीमुरा तो अेक कोबेको छोडकर लगातार चौदह-चौदह दिन तक हमारे साथ घूमते रहे।

मेहमानोकी व्यवस्थाका भार भिक्षु सातो-सान पर था। ये भाअी चतुर थे और थोडी अग्रेजी भी जानते थे। चाहे जैसी मुसीबत हो, वे धीरज नही खोते थे और न किसी बातसे परेशान होते थे। बादमें मालम हुआ कि वे भिक्षु होनेसे पहले जापानकी सेनामे थे और

हवाओ जहाजसे शत्रु पर वम फेकनेके पराक्रम भी अुन्होने किये थे। आज अुस कार्यके लिअे वे पछताते है और अुसकी वाते करते हुअे हमेशा सकोचका अनुभव करते है।

अिंग्लैण्डसे आये हुअे प्रतिनिधियोमें मि० टकर और मिसेज विलियमसन थी। क्वेकर दलकी प्रतिनिधि श्रीमती ग्लैडिस ओवेनको तो हम भारतकी ही प्रतिनिधि मानते थे। अुनसे हमारी पहचान भारतमे ही मिस म्यूरियल लेस्टरकी मार्फत हुअी थी। (गाधीजी जव गोल मेज परिषद्के लिअे विलायत गये थे तव लन्दनके गरीवोके मुहल्लेमें मिस म्यूरियल लेस्टरके मेहमान वनकर रहे थे। हम भी जव लन्दन गये थे तव खास तौर पर अुनसे मिले थे। अुन्होने हमें अपने वहा सव जगह घुमाकर गरीवोंके घर व अुनके जीवनके वारेमे वताया था और वे लोग कैसा स्वाभिमानी जीवन विताते है यह समझाया था।) मिस म्यूरियल लेस्टर जव दिल्लीमें हमारी मेहमान वनी थी तव ग्लैडिस ओवेन भी अुनके साथ थी। ये दोनो वहनें सेवापरायण और अुदार-हृदया है।

टोकियोमे डॉ० हावर्ड और अेना व्रिन्टन, अिन क्वेकर दम्पतीसे हमारी जान-पहचान ग्लैडिस ओवेनकी मार्फत हुअी। अेम० आर० अे० वाले श्री और श्रीमती वैसिल अेन्टविसल भी मिले। अुन लोगोसे जापानियोके जीवनके विषयमें काफी जानकारी मिली। लेकिन हम दुनियाकी शान्तिकी चर्चा करनेके लिअे ही अिकट्ठा हुअे थे अिसलिअे दूसरी वाते हमें अधिक सूझती भी नही थी और न हम अुनमें ज्यादा समय दे सकते थे।

पहली अप्रैलकी सुवह पार्लमेंटकी लायव्रेरीमें, शान्ति-परिषद्का पहला अधिवेशन यथाविधि शुरू हुआ। प्रारम्भमें अध्यक्षपद सभालनेका कार्य मेरे हिस्से आया। भारतकी कदर करनेकी दृष्टि तो अिसमें थी ही। अिसके अलावा गुरुजीका भी कुछ आग्रह होगा। मै थोडा अग्रेजीमें वोला। अुसका जापानी अनुवाद तुरन्त कर दिया गया। सुवहका अधिवेशन पूरा होते ही अमरेलीवाले भाओी प्रतापराय मेहता, जो अुसी वक्त टोकियो आये थे, मुझे और चि० सरोजको टोकियो होटलमें खाना खानेके लिअे ले गये। हमें क्या अच्छा लगेगा अिसका ध्यान

रखते हुअे श्री प्रतापभाअीने भोजनकी अुत्तम व्यवस्था करवाअी थी। श्री रणवीरसिंह वहासे हमे टोकियो विश्वविद्यालय ले गये। कुछ गडबड हो जानेके कारण हम जिनसे मिलने गये थे वे भाअी न मिल सके। लेकिन अुनके बदले अेन्थ्रोपोलोजी—नृवंशशास्त्रके प्रोफेसर अीशीडा मिले। वे अंग्रेजी अच्छी जानते है, लेकिन बोलनेकी अितनी आदत नही है। मैंने यह भी देखा कि अिस विश्वविद्यालयमें नृवंशा-विद्या पर अंग्रेजीकी पुस्तकें नहीके बराबर थी। ज्यादातर अच्छी पुस्तकें जर्मनमें ही थी। प्रोफेसर अीशीडाने जब देखा कि जापानके विषयमें मैं अंग्रेजी साहित्य खरीदना चाहता हू, तब अुन्होने अपना काम अेक ओर छोडा और अपनी शिष्या आकेमीको साथ ले बाजार आये। अुस दिन छुट्टी थी फिर भी अीशीडाके कहने पर अेक बडे दूकानदारने Ainu life and lore और दूसरी अुपयोगी किताबें मुझे निकालकर दी। अिन किताबोके लिअे मैंने चौदह सौ येन दिये।

अितना बडा राष्ट्र अपना हिसाब येन जैसे छोटे-से सिक्केमें किस तरह करता होगा यह अभी भी मेरी समझमें नही आया है। ७५ या ७६ येनका अपना अेक रुपया होता है। अिसलिअे अेक येन अपने पुराने पैसेसे कुछ छोटा और नये पैसेसे कुछ बडा होता है। अेक हजारसे अधिक येन दो तब अेक अंग्रेजी पाअुण्ड मिलता है जो करीब अपने साढे तेरह रुपयेके बराबर होता है।

अपने यहा पुराने जमानेमें अिससे अुलटा था। अेक रुपयेके ६४ पैसे और ६४ कौडीका अेक पैसा। लोग बाजारमे सब्जी खरीदने जाते थे तब कौडियोका अुपयोग करते थे। अेक पूरा पैसा खर्च करने-वाले अुडाअू तो अुस वक्त कोअी नही थे। अुत्तर भारतमें अेक दमडीके अंगूर सारा परिवार खा लेता था। नमक पैसे सेर और चने पैसे सेर यह तो अेक समयमें सामान्य भाव था। अब पैसे सस्ते हो गये है। भिखारी भी अेक आनेसे कम दान नही लेता।

बहन आकेमी अपने गुरुके साथ हमें टेलीविजन विभाग दिखाने ले गअी। वे वही काम भी करती थी। हमने वहासे टेलीविजन टावर (मीनार) पर चढकर टोकियो देखा। पूरा शहर देखा अैसा तो नही

कह सकते। फिर भी हम काफी दूर तक देख सके। प्रोफेसर ओीगीडा और आकेमी वहनके बीचका गुरु-शिष्य सम्बन्धी वात्सल्य-भाव हमे विशेष रूपसे रुचिकर लगा। सचमुच सारे अेशियाकी सस्कृति अेक ही है, अिसमें कोअी शक नही।

शामको हम फिर जागतिक परिषद्मे गये। वहा मै विश्व-शातिके लिअे सर्व-धर्म-समन्वयकी आवश्यकता पर थोडा बोला।

दूसरी अप्रैलको ९ बजे फिर परिषद्मे पहुचे। साढे दस बजे वही अेक कमरेमे सारे प्रतिनिधियोने खाना खाया। हमारे हिस्सेमे अिजीप्शियन खण्ड आया था। अुसका सारा ठाठ, चित्र और खिलौने सब कुछ ओीजिप्टकी शैलीके थे। दोपहरके अिस आन्तरराष्ट्रीय भोजनके बाद जापानके सबसे विशाल हालमे—जिसे हीबिया कहते है—टोकियो-वासियोके लिअे अेक बडी सभा रखी गअी थी। विदेशसे आये हुअे हम सब प्रतिनिधियोको स्वागतके लिअे विशाल रग-मच पर बिठाया गया था। फिर हम जितने मेहमान थे अुतनी ही जापानी बालाअें पुराने ढगकी राष्ट्रीय पोशाकोंसे सजकर हाथमें फूलोके बडे-बडे गुच्छे लेकर आअी और ये गुच्छे अुन्होने हमे दिये। सभाका सारा दृश्य भव्य था। अिस सभामे मेरे आग्रहसे भारतकी ओरसे श्री कुमारप्पा बोले।

अखबारवालोने मुझे सभामें से कअी बार बाहर बुला-बुलाकर सवाल पूछे। दूसरे दिन समाचार-पत्रोमें ये मुलाकातें छपी। फोटो तो लिये ही गये।

अेक भेटमे मैने कहा "जापानने पश्चिमी विद्या अपनाकर अुसमें किसी भी अेशियाअी राष्ट्रमे अधिक सफलता प्राप्त की है और दुनियाको दिखा दिया है कि जापान चाहे तो पश्चिमी विद्यामें पश्चिमवालोंसे सफल स्पर्धा कर सकता है। अेक बार यह साबित करके अब जापान अपनी मौलिक सस्कृतिकी प्रवीणता केवल कलामें ही नही बल्कि अपने समस्त जीवनमे क्यो न सिद्ध करे? जिस तरह भारतने अहिंसा और सत्याग्रहका नया मार्ग अपनाकर अेक रास्ता दिखाया है, अुसी तरह जापान भी बौद्ध और शिन्टोके सस्कारोमे से अुत्पन्न हुअी अेक निराली जीवन-परम्पराको विकसित करके दिखावे तो अिसमें क्या

आश्चर्य है? अिसी रास्ते वह शांतिका नया मार्ग-दर्शन भी करा सकता है।

स्त्रियोंकी सस्थाओंके प्रतिनिधियोंसे मुलाकात करते हुअे मैंने कहा कि पुरुषोंने झगडालू सस्कृतिका विकास किया है। प्राण-घातक प्रतिस्पर्धामें पडकर अुन्होंने मानव-जीवनका सत्यानाश किया है। अब स्त्रियोंको दुनियाके काम-काज और व्यवहारका अधिकार अपने हाथमें लेकर स्नेहमयी सस्कृतिका विकास करना चाहिये।

युवकोंको मैंने खास तौरसे कहा Do profit by the *heritage of the past, but pray, don't belong to the past* You have to be loyal to the future of mankind

"प्राचीनकी देनका लाभ अवश्य अुठाअिये, परन्तु भूतकालके बन्धनोंको छोडकर। सारी मानव-जातिका भविष्य बनाना आपके ही सिर पर है। पुरानी परम्पराओंसे मुक्त होओगे तभी भविष्यके निर्माता बन सकोगे।"

अिस तरहकी मुलाकातें अखबारोंमें पढकर नये-नये लोग सभाओंमें आते रहे और मेरे साथ अुत्साहसे बातें करते रहे।

शांति-परिषद्‌के अन्तमें बाहर निकले तब भीडमें से अेक जापानी भाअीने अंग्रेजीमें लिखा हुआ अथवा किसीसे लिखवाया हुआ अेक पत्र मेरे हाथमें दिया और डबडबाअी आखोंसे मेरे साथ शेकहैंड किया। भीडमें अुस पत्रको पढनेका मौका नहीं था। अिसलिअे मैंने अुसे जेबमें रख लिया और अुनसे विदा ली। अेक भोले, रसिक और कुटुम्ब-वत्सल जापानी मजदूरके हृदयके अुद्‌गारोंको जब मैंने पढा तो मेरा हृदय गद्‌गद हो गया। 'निप्पोन'की जनता भारतकी ओर किस आशासे देखती है, यह बतानेके लिअे मैंने वह पत्र सभालकर रखा और प० जवाहरलालजीको दिखाया। यह रहा वह मूल अंग्रेजी पत्र

Dear Dr Kalelkar,

I take the liberty of writing to you. I am a labour in the Japanese In Japan, as you see, it is spring now There are cherry-blosam in field and mountain and skylark's song over our heads

It is best season for picnic and cherry-blosam viewing to go out with family

But I don't feel such delightful Because it is A-BOMB that damaged some fishmen and fishes, we live on, by radiation ash and contaminated water A certain Dietman said, if three A-BOMB exploded in Japan, she would were destroyed at once A scientist declared that in future Japanese will never increase on account of effective for radiation So I hav'nt any hope in future, when hear that

I suppose, it is not only my trouble but also other people's

To settle such tension of world I believe that it is India to do that. Because your country don't belong Two Power She has been neutral.

I heard that you had said "A-BOMB's experiment should be prohibited at once"

I support your opinion

On April 8 is feted Budda's birthday, at every temple of note throughout Japan it is held ceremony as annual tradition

We say it HINAMATSURI

The 25th century ago Budda had been born in India, then Budda saved many people and gave them delightful hope.

The present time your country will give us that one.

Peace for Asia, for Asian and all mankind of world

It is on your shoulder

Take care of yourself

Yours very truly
Sd S Nagamine
A labour

प्रिय आचार्य कालेलकर,

मैं आपको पत्र लिखनेकी अिजाजत लेता हू। मैं अेक जापानी श्रमिक हू।

जैसा आप देख रहे है, आजकल जापानमें वसन्तका आगमन हुआ है। मैदानोमे और पहाडो पर चारो ओर साकुराके फूल खिले हुअे दिखाअी देते है तथा आकाशमें स्काअिलार्क पक्षियोका सुमधुर गान सुनाअी देता है।

कुटुम्बी-जनोंके साथ वनभोजनके लिअे तथा साकुराके फूलोकी शोभा निहारनेके लिअे यह अुत्तम ऋतु है।

परन्तु मेरा हृदय अैसा अनुभव नही करता, क्योकि जिन मछलियोके अूपर हम जीते है वे मछलिया और हमारे मछुअे, दोनोका अणु-बमसे निकलनेवाली राखसे और समुद्रका पानी जहरीला हो जानेसे नाश हुआ है। हमारी लोक-सभा (पार्लमेंट) के अेक सदस्यने कहा है कि यदि अैसे तीन अणु-बम जापानमे फट पडे तो सारे देशका तुरन्त नाश हो जायगा। अेक वैज्ञानिकने घोषणा की है कि बमसे फैलनेवाले रेडियेशनके प्रभावके कारण अब आगेसे जापानियोके वशका विस्तार नही होगा। जब यह सब सुनता हू तब भविष्यके लिअे मेरे मनमें किसी तरहकी आशा नही रहती है।

मैं मानता हू कि यह विपत्ति केवल मेरी ही नही है, औरोकी भी है।

दुनियामे यह जो तनातनी चल रही है अुसका निवारण करनेका काम भारतका है। भारत ही यह कर सकता है। क्योकि आपका देश दोनोमें से किसी भी महाशक्तिके पक्षमें नही गया है। आपकी भूमि तटस्थ रही है।

मैंने सुना है कि शाति-परिषद्में आपने कहा है, 'अणु-बमके प्रयोग अेकदम बन्द कर देने चाहिये।' मैं आपकी अिस रायका समर्थन करता हू।

८ अप्रैलको बुद्धका अुत्सव मनाया जाता है। जापानके सब प्रसिद्ध मंदिरोंमें वार्षिक त्यौहारके रूपमें यह अुत्सव मनाया जाता है। हम अिसे हिनामात्सुरी कहते हैं।

पच्चीस सौ वर्ष पहले भारतमें बुद्धका जन्म हुआ था। अुस समय बुद्धने अनेक लोगोंको अुबारा और अुन्हें मंगलमय आशा प्रदान की।

वर्तमान समयमें आपका देश हमें अैसी ही आशा प्रदान करेगा — अेशिया, अेशियावासी और संसारकी समस्त मानव-जातिके लिअे शांति देगा।

यह भार आपके कन्धों पर है। अपनी तबीयत संभालियेगा।

आपका

नागामिने (मजदूर)

आज भी हम फुरसत मिलते ही शहरमें घूमे। अिसमें खास देखने लायक था सर्व-वस्तु-भण्डार (डिपार्टमेन्टल स्टोर्स)। हमारे यहां अनेक वस्तुओंको बेचनेवाली बड़ी-बड़ी दुकानें बहुत हैं, परन्तु अुनसे अिस विराट सर्व-वस्तु-भण्डारका खयाल नहीं आयेगा। अिसमें सुअीसे लेकर हाथी तक कोअी भी चीज खरीदी जा सकती है। अैसा लगता है मानो अनेक मंजिलोंवाले अिस स्टोरके विशाल मकानमें सैकड़ों दुकानें मिलकर अेक हो गअी हैं। अिसकी बराबरी करनेवाली अेक दुकान लन्दनमें देखी हुअी याद आती है। अिस अेक भण्डारकी विशालता और अन्दरकी कीमती वस्तुओंकी विपुलता देखनेके बाद यह मानना मुश्किल होता है कि पिछले महायुद्धके कारण जापान तबाह हो गया था। अेक तरफ फल और सब्जी मिलती है तो दूसरी ओर दुर्बीन, कैमरे और खेल-खिलौने मिलते हैं। तैयार कपड़े तो सारी दुनियाके खरीदे जा सकें अितनी तरह तरहके हैं। सारी व्यवस्था मानो घड़ीकी सुअीके समान ठीक चल रही थी। हमें आश्चर्य तो केवल अेक मंजिलसे दूसरी मंजिल पर आने-जानेवाली लिफ्ट पर हुआ। 'आरोह-अवरोह' करनेके वे कमरे लम्बे-चौड़े और मजबूत तो थे, लेकिन अुनमें अेक-

साथ कितने लोग चढे अिसका कोअी नियम न था। जिस तरह दियासलाअीकी डिब्बियोमे तीलिया खचाखच भरी होती है अुसी तरह स्त्री-पुरुष तथा बच्चे जितने ठूस-ठूस कर भरे जा सकें अुतने अन्दर घुस जाते है और अूपर नीचे जाते-आते है। यहा अिस भीडकी किसीको कोअी परवाह ही नही है।

अेक बार डा० सेडस कोरा हमारे साथ आअी थी। चीजें पसन्द करके खरीदनेमे अुन्होने हमारी मदद की। टोकियोके जीवनके विषयमे भी अुनसे कितनी ही बाते जाननेको मिली।

अिन दो-तीन दिनोमे हम टोकियो शहर खूब घूमे और बहुत-कुछ देखा। हमारे जैसे शाकाहारी लोग खा सके अैसी जापानी वानगिया हमने जगह जगह पर खाअी। हमने लोगोका जीवन देखा और मनुष्य-जातिने जीवनकी कलाको कितनी तरहसे अुन्नत किया है, यह देखकर आश्चर्य-चकित हुअे। लेकिन साथ ही अिस विविधताके पीछे भी अेक ही हृदय काम करता है, अिसका आश्वासन भी प्राप्त कर सके।

अेक तो हम घूमते-घूमते थक गये थे और अूपरसे हमारे 'युवा-प्रासाद' का लिफ्ट बिगड गया था। मुकाम पर पहुचना यानी पाच मजिल चढना और पाच मजिल अुतरना। चि० सरोजने बडी हिम्मत बताअी, अिसलिअे कोअी खास परेशानी नही हुअी।

तीसरी अप्रैलको सैनान-कानमे नाश्ता करके हम परिषद्में गये। वहा मैं कोरियाके विषयमे बोला। परिषद्के बाद भारतीय दूतावासमे जाकर श्री रणवीरसिंहके साथ जरूरी बाते करके हम जापानी ट्रेन द्वारा सफरके लिअे निकल पडे। परिषद्से भिन्न यह हमारी व्यक्तिगत यात्रा थी। ठीक साढे बारह बजे हाटो अेक्सप्रेससे हमने टोकियो छोडा। स्टेशन पर रणवीरसिंहजी छोडने आये थे। हमारे साथ भिक्षु मारुयामा और ओमाअी-सान दोनो थे। हमे टोकियोसे ओसाका और कोबे जाना था। योकोहामाको तो टोकियोका विराट व्यापारिक अुपनगर ही समझिये— वैसे ही, जैसे कि पच्चीस मीलकी दूरी पर बसे हुअे 'ओसाका' और 'कोबे' अेक दूसरेके पूरक है।

दोपहरमे शाम तक यात्रा करके रास्तेमे सारे देशके सौंदर्यकी चर्चा करते हुअे हम ओसाका स्टेशन पर पहुचे। वहा हम अनेक जापानी और भारतीय भाअियोसे मिले। बादमे हम मोटरसे पच्चीस मीलका रास्ता तय करके 'कोबे' पहुचे। वहा भाअी धर्मदास थाने-वालेके यहा हमारा ठहरनेका प्रवन्ध था। बिस्तर पर पहुचते-पहुचते रातके लगभग पौने बारह बज गये।

३

संस्कार-धाम

अपने अपने ही होते है। बिना किसी पूर्व परिचयके भाअी धर्म-दास थानेवालेके यहा हमारे रहनेकी व्यवस्था की गअी थी। अुनका घर था तो बडा व्यवस्थित, लेकिन हमारे जैसे दो मेहमानोके समाने लायक था, यह नही कह सकते। फिर भी भाअी धर्मदास और अुनकी पत्नी रमीला बहनने बडे परिश्रमसे हमारे लिअे सुन्दर व्यवस्था कर दी। अुनका बालक शिशिर 'चान' तो अपनी मधुर तोतली बोलीसे हमारा मनोरजन करता ही रहा। छोटा अवरीष तो आश्चर्य ही करता होगा कि घरमे ये नये लोग कौन आ गये? चि० सरोजकी और रमीला बहनकी तो खासी दोस्ती जम गअी थी।

कोबेको अपना केन्द्र (हेडक्वार्टर) बनाकर ओसाका, क्योतो और नारा अिन तीन स्थलोकी हमने यात्रा की। यहा मैंने देखा कि आद-रार्थमे 'सान' शब्द केवल मध्यम-वर्गके लोगोको ही नहीं लगाते बल्कि रसोअियेको भी 'कुक-सान' कहते है। बच्चे भी सान या 'चान' प्रत्यय के पात्र माने जाते हैं।

ओसाकामे हमे कअी लोगोसे मिलना था। पहले तो ओसाओ-सान मिले। वह हमे दूसरे जापानी लोगोके पास ले गये। जापानमें धर्ममें रस लेनेवाले लोगोको Religionist कहते है। अैसी दो बहनोसे हम मिले। फिर हम क्योतो गये और वहाका अेक बहुत बडा शिन्टो मन्दिर देखा।

मन्दिरके पुजारियोंने हमारा स्वागत किया। मन्दिरका वैभव और अुसमें छिपी सादगी बडी आकर्षक थी। प्रत्येक कमरेकी दीवारके अूपरी हिस्से पर लकडीके पटिये लगे हुअे थे, जिनका खुदाअीका काम बारीक-कलाके अुत्तम नमूनोंमें गिना जा सकता है।

यहाके मन्दिरके अेक विद्वान पुजारी टोपी पहनकर हमारे साथ आये। अुन्होंने हमें अेक थियेटरमें हो रहे नृत्यके टिकट बडी मेहनतसे दिलवाये। नृत्य और नाटक करनेवाली स्त्रिया सब गेशा लडकिया थी। गेशाके लिअे हमारा पुराना शब्द गुणिका है जिसका रूप बादमें गणिका हुआ। गोवामें अिन्हें कलावन्तिन कहते हैं। अिनको केवल वेश्या कहना ठीक नहीं है। ये लोग सगीत, वादन, नृत्य, चित्रकला, नाट्य, अभिनय अित्यादि अनेक कलाओंमें प्रवीण होती हैं। सम्भाषण-चतुर तो होनी ही चाहिये। अिन लडकियोका मुख्य काम अुच्च-संस्कारी अभिरुचिका पोषण करनेवाली अपनी कलाओंसे मालिकोको या ग्राहकोको सतोष देना होता है। अिन लोगोकी कमाअी भी हैरतमें डालनेवाली होती है।

अेक अनजाने देशकी सस्कृतिके नमूनेके रूपमें ही हम यह नृत्य-नाटिका देखने गये थे। नाट्य-गृहका नाम था डोरैमिको। रग-मच प्रेक्षकोके तीन ओर फैला हुआ था। नृत्य करनेवाली लडकिया जहा-तहा बडी तादादमें मूर्तियोकी तरह बैठी या खडी थी। सामनेका रग-मच चाहे जब जमीनमें से अूपर निकल आता था या भीतर चला जाता था। पर्दोका तो कहना ही क्या? पर्दा खीचे बिना भी अुनके दृश्य परिवर्तित होते थे। कभी शीत, कभी वसत तो कभी देखते ही देखते पतझड! अेक बार अुस पर्देके अूपर हमने समुद्री तूफानको अुठते हुअे और फिर शात होते हुअे भी देखा। अुस तूफानमें पडी हुअी मछलि-लियोके तडपनेका दृश्य आसानीसे भूला नही जा सकता। साकुरा (cherry) और मोमो (peach) के फूलोकी रगीन बहार तो मनुष्यको अुन्मत्त करने-वाली थी।

नृत्यमें चेहरे पर हाव-भाव बिलकुल नही थे। भाव प्रगट करनेका काम अगोकी मरोडसे, हाथके पखोसे और शरीरके कपडोसे किया जाता था। सगीत अुच्च कोटिका था। बीच-बीचमें तो अच्छा लगता था और

कभी कभी नीरस भी लगता था। 'पपेट-शो' और 'बेले' का यह अेक मिश्रण-सा था।

जापानी प्रेक्षक यह सब बडी शान्तिके साथ देख या सुन रहे थे — और अुनका आनन्द लूट रहे थे। 'वाह-वाह' 'बहुत अच्छे', 'क्या खूब', जैसे कोलाहलका यहा नाम न था।

नृत्यके बाद हम पहाडी पर स्थित अेक प्रख्यात मन्दिर देखने गये। जहा तक मुझे याद है अिस मदिरके पास ही अेक छोटेसे अुपवनमें कअी पालतू हिरन अुछल-कूद कर रहे थे और अपने स्वच्छन्द विहारसे प्रेक्षकोंका मनोरजन कर रहे थे। क्योतोमें अनेक जगह घूमकर हम कोबे वापस आये। टोकियो और क्योतो शहर अलग है, लेकिन अुनके नामका अर्थ अेक ही है—राजनगर। यह क्योतो पुराना राजनगर था। आजके टोक्यो या तोक्योका पुराना नाम अेडो था।

भाअी धर्मदास थानेवालेने अपने घर पर ओसाका और कोबेके चालीस-पचास भारतीयोंको अिकट्ठा किया था। अुनमें सिंधी, पजाबी, सिक्ख, गुजराती आदि अनेक प्रकारके लोग थे, अेक वोहरा भाअी और अेक महाराष्ट्रीय भी थे।

अुन लोगोने भारतकी स्थितिके सबधमें अनेक सवाल पूछे। काश्मीर, पाकिस्तानको मिलनेवाली अमरीकाकी सैनिक सहायता और स्वराज्यमें भी प्रचलित घूसखोरी आदि अनेक प्रश्नो पर चर्चा हुअी। फिर असी चर्चामें हमेशा ही आनेवाला यह सवाल भी अुठा कि जवाहरलाल नेहरूके बाद भारतकी धुराका वहन कौन करेगा?

मैंने कहा कि बचपनसे ही अैसे सवाल सुनता आया हू। लोग कहते थे कि सर फिरोजशाह मेहता जैसा दूसरा नेता भारतको कहासे मिलेगा? फिर कहने लगे कि गोखले जैसा त्यागी, वक्ता और कुशल नेता अब मिलनेवाला नही है। लेकिन अुनसे भी अधिक तेजस्वी मिले लोकमान्य। अुनके बाद देशमें अन्धकार छा जायगा, अैसा लोग मानते थे। लेकिन अनकी जगह महात्मा गाधी आये और दुनिया चकित हो गअी। अैसे नेता तो हजारो वर्षोमें अेकाध ही होते हैं।। स्वराज्य मिला और देशकी बागडोर जवाहरलालजीने सभाली। वे तन और मन,

दोनोंसे स्वस्थ है। अभी कअी वर्षो तक वे भारतका मार्ग-दर्शन करते रहेंगे और दुनियाकी राजनीति पर प्रभाव डालते रहेंगे। वे थकेंगे तब तक कोअी और खड़ा होगा ही, अिस विषयमें मुझे शक नहीं है।

अेक पंजाबी भाअीने कहा कि अैसा आदमी कोअी आसमानसे थोड़े ही टपकेगा? आज भी कहीं तो काम करता ही होगा। लोग अुसे जवाहरलालजीके अुत्तराधिकारीके नाते शायद पहचानते भी होंगे।

मैंने कहा कि अैसे तो अेकसे अधिक हैं, कौन आगे जायेगा कैसे कहा जाय? लेकिन मैं मानता हूं कि जवाहरलालजी थकेंगे और निवृत्त होंगे अुसके पहले भारतकी ही नहीं बल्कि सारी दुनियाकी राजनीतिक स्थिति बदल गअी होगी। जीवन-मूल्य ही बदल गये होंगे।

अेक भाअीने पूछा, क्या आप यह सूचित करना चाहते हैं कि विनोबा भावे जवाहरलालजीका स्थान लेंगे? मैंने कहा, ये दोनों अपने अपने ढंगके निराले हैं। विनोबा जवाहरलालजीका स्थान नहीं ले सकते। अुनका खुदका स्वतन्त्र और स्वयंभू स्थान है। वे तो अकेले ही प्रयत्न करते रहेंगे और जनताको अूंचा अुठायेंगे।

आजकी अिस मजलिसमें अेक जापानी प्रोफेसर भी शामिल हुअे थे। वे यहां हिन्दी सिखानेका काम करते हैं। सावा-सान अेक बार भारत हो आये हैं और दूसरी बार फिर जानेवाले हैं, अैसा अुनसे मालूम हुआ। [जैसा अुन्होंने कहा था, वे दुबारा भारत आये थे, मुझसे मिले थे और मैंने अुनके सफरकी थोड़ी व्यवस्था भी की थी।]

भारतसे मैं अपने साथ दो 'गांधी-अलबम' ले गया था — अेक गुरुजीको भेंट दिया और दूसरा कोबेके भारतीयोंको।

दूसरे दिन हम कोबेसे ओसाका होकर नारा पहुंचे। नारा जापानका सबसे पुराना और महत्त्वका संस्कार-धाम है। अितिहास, साहित्य, संगीत, स्थापत्य और धर्म — हरेक दृष्टिसे अिसका अनोखा महत्त्व है। क्योतो और नारा दोनों जगह श्रीमती रमीला बहन अपने गिरिरको लेकर हमारे साथ घूमीं। अिससे बड़ा आराम रहा। ओसाकामें आज कअी अखबारवाले मिले। अुनके साथ वार्तालाप करके अुन्हें अेक सन्देश लिख दिया।

नारा पहुचते ही हम प्रख्यात होडियूजी मन्दिर देखने गये। यहाके मुख्य साधु शान्त, प्रसन्न और प्रभावशाली दिखे। श्रीमाओी-सानने कहा कि ये हमारे गुरुजीके खास मित्र हैं। अुनका नाम रियोकेन सायकी था। अुन्होने हमें मन्दिरके पुराने भित्ति-चित्रोकी नकले भेटमे दी। भारतीय चेहरोको और वेशभूषाको स्वाभाविक जापानी रूप देनेवाले ये चित्र बहुत आकर्षक हैं। कलाके समन्वयने कितना अूचा पहुचा जा सकता है, अिसकी कल्पना ये चित्र देते हैं। प्रतिकृतिया (नकले) देखनेके बाद मूल भित्ति-चित्र देखनेकी माग किये बिना कैसे रहा जाता? लेकिन मालूम हुआ कि मन्दिर लकडीका होनेके कारण अेक दुर्घटनामे जल गया था। मूल चित्रोके नष्ट होनेसे पहले तैयार की हुअी ये प्रतिकृतिया ही अब अुपलब्ध हैं। यह वृत्तान्त सुननेके बाद दुखी मनके सामने अिन प्रतिकृतियोका महत्त्व बढ गया। मैंने वे चित्र सभालकर रखे हैं।

अेक जगह हमने अेकके अूपर अेक अैसा पाच छप्परवाला मन्दिर देखा। अूपरका कलश नीचेकी शोभा पर कलगीके समान लग रहा था।

अिस प्रदेशमें अवलोकितेश्वर भगवानकी भक्ति विशेष रूपसे होती है, अैसा मालूम होता है। अवलोकितेश्वर भगवानके मुह पर शान्ति, कारुण्य और किंचित् विषादका भाव दिखाअी देता है।

दूसरे अेक शिन्टो मन्दिरका नाम था तेन्‌री क्यो—यानी स्वर्गीय विद्या अथवा वाणी। यह सारा मन्दिर गरीब लोगोकी सेवासे बना है। अिसलिअे अधिक पवित्र माना जाता है। यहा पुजारियोने हमें काले कोट जैसे दो झब्बे दिये जिनके अूपर अुनके अिस मन्दिरके विषयमें कुछ लिखा हुआ था। अिस सस्थामें काम करनेवाले कर्मचारी और मजदूर भी काम करते वक्त अैसे ही कपडे पहनते हैं। भक्तिका अैसा ढिंढोरा मुझे पसन्द नही आया। अच्छा था कि कपडो पर लिखी बातें हम पढ नही सकते थे। हमारे लिअे यह सभी आडी-तिरछी रेखाओकी चित्रकारी जैसा ही था।

अेक बार जापानके अेक बादशाहने अपने सरदारो और प्रजाके बीच मतभेद हो जानेके कारण चलनेवाले झगडोंसे तग आकर अेक साधुकी सलाह मागी। साधुने कहा कि अुपदेशसे अेकताकी स्थापना नही

हो सकती। अिन लोगोको कोअी वडा और सर्वमान्य काम सौंप दें तो लोग झगडा भूलकर आपसमें सहयोग करने लगेंगे। साधुकी सलाहके अनुसार सम्राटने वैरोचन बुद्ध भगवानकी ध्यानमें बैठी हुअी तिरपन फुट अूची अेक भव्य मूर्ति वनवाअी और अुसके लिअे मन्दिरकी स्थापना की। अिस राष्ट्रीय धर्म-कार्यके लिअे लोगोंमें अितना अुत्साह अुत्पन्न हुआ कि सचमुच वे झगडा भूल गये। राष्ट्रमें हार्दिक अेकताकी स्थापना हुअी देखकर सम्राट सन्तुष्ट हुआ।

नारासे कोवे वापस आकर हमने मोलकी मानके यहा खाना खाया और लम्वी यात्राके लिअे ट्रेनमें वैठे। अीमाअी-सान ओसाकासे आये थे। अिन जापानी ट्रेनोंमें सोनेकी सुन्दर सुविधा होती है।

४

भीषण ज्वालामुखी और सौम्य दीपक

६ अप्रैल। आज हम अपना द्वीप छोडकर अेक दूसरे द्वीप कियुशुमें जानेवाले थे। सुवह होने से पहले शिमोनोसेकी स्टेशनसे मोजी स्टेशन तक समुद्रके नीचेसे जानेवाली अेक सुरग द्वारा हमारी गाडीने यह द्वीपान्तर-यात्रा की। रेलकी यात्राके लिअे यह वहुत वडा सुविधा थी। ट्रेनसे जहाजमें और जहाजसे फिर अुस पारकी ट्रेनमें अिस तरहकी अदला-वदली कुछ भी नही करनी पडी। अितना ही नही वल्कि नींदमे भी कोअी वाधा नही हुअी। शिमोनोसेकीमें जापानका सवसे वडा लोहेका कारखाना है। सपूर्ण अेशियामे अितना वडा लोहेका कारखाना शायद ही दूसरा हो।

हमें हाकाटा अथवा फुकुओका स्टेशनसे गाडी वदलकर कुमामोतो जाना था। वीचमे थोडासा समय मिलता था। अुसका फायदा अुठाकर हम शहरके अेक अुद्यानमे वोधिसत्त्व निचिरेनकी अेक वडी मूर्ति थी, वह देख आये। अिन साधु निचिरेनके विषयमें कअी चमत्कार वताये जाते हैं। कहते हैं कि अिनके हुकुमसे अेक प्रचण्ड ववण्डर आया और

जापानके अूपर हमला करनेवाले चीनी जहाज समुद्रमे डूब गये!! यह सात सौ वर्ष पुरानी बात है।

हाकाटासे हम कुमामोतो आये। कियुशु द्वीपका यह अेक महत्त्वका मध्यस्थ शहर है। यही गुरुजीने अेक पहाडीके अूपर शान्ति-स्तूप बनवाया है जिसके अन्दर भारत सरकार द्वारा मिले हुअे भगवान बुद्धके शरीरके कुछ अवशेषोकी आज ही स्थापना होगी। हाकाटा स्टेशनसे बहुत-से यात्री अिस अुत्सवके लिअे आ रहे थे। अिसलिअे मानो विजय-प्रवेश कर रही हो, अैसी धूमधामसे हमारी ट्रेन स्टेशन पर पहुची। हमारा डेरा मात्सुनोअी नामके सुन्दर जापानी होटलमे था। हमारे लिअे दो स्वतन्त्र कमरे थे। अेक दीवानखाना था और अुसके सामने जापानी ढगका सुन्दर बगीचा था। जापानी बगीचा यानी अुसमे अक छोटा-सा तालाब, अेक छोटा-सा पुल, थोडे-से झाड, सम्भव हो तो अेक छोटा-सा प्रपात और अिधर-अुधर जाने-आनेके लिअे सुन्दरतासे रखे हुअे गोल चपटे पत्थर होते ही है। बगीचेके अुस पार कअी जापानी मजदूर काम कर रहे थे। अुनके मजबूत गठे हुअे शरीर और काम करनेकी अुमग देखते ही बनती थी।

पहुचते ही अखबारवालोने हमारे फोटो लिये और वहाके दनिकोमे छापनेके लिअे मुलाकाते भी ली। यहा हमें तीन दिन रहना था और तीनो दिनोका कार्यक्रम बडा व्यस्त था।

७ अप्रैलका दिन तो सदा याद रहेगा। अिस दिन हम दुनियाका सबसे बडे द्रोण (crater) वाला, धधकता हुआ ज्वालामुखी देख आये। अिसका नाम 'आसो' है। और यह अखण्ड धुआ और ज्वाला फेंकता रहता है।

सुबह उठकर नाश्ता करके अेक सुन्दर बडी बसमें साढे नौ बजे हम चल पडे। पूरे दो घण्टेकी लम्बी यात्रा करके आसपासके प्रदेशकी शोभा निहारते हुअे हम ज्वालामुखीकी तलहटीमें जा पहुचे। अिन दो घण्टोमें दूर-दूरके छोटे-बडे अनेक पहाड देखे। अिनमें से अेक पहाडीने मेरा ध्यान खास तौरसे खींचा। अिसका आकार अेक सुन्दर कछुअे जैसा था। अिस पहाडी पर लोगोने बाड जैसी अेक दीवार बनाअी हुअी थी। अिसका क्या अुपयोग होगा, यह कुछ समझमें नही आया। अिसकी विशेषता

तो यह थी कि अिस पहाडीके चारो ओर कोअी रास्ता बनाना चाहता हो, अिस तरहका अिसका कुछ अनोखा पथरीला घाट था। अिसी कारण वह कछुअे जैसा लगता था। हमारे रास्तेका घुमाव भी अैसा था कि अिस पहाडीको हम कअी ओरसे देख सके। रास्ता करीब-करीब पूरा होने आया तब हम अेक छोटेसे अन्तिम गावमे ठहरे। यहा खाना खाया। छोटे-छोटे बच्चोको खेलते देखा। अिसके बाद ही ज्वालामुखीके अुस अुजडे हुअे प्रदेशमें हमारी बसने प्रवेश किया।

अेक बात तो लिखनी छूट ही जा रही थी। हमारी बसमें लोगोको टिकट देनेके लिअ अेक बहन कन्डाक्टर थी। जहा जहा बसका स्टेड आता वहा कोअी अुतरने या चढनेवाला हो या न हो पर वह बहन तो बसका दरवाजा खोलकर नीचे अुतरती, अेक क्षण ठहरकर वापस अूपर चढती और फिर दरवाजा बन्द कर लेती। अुसकी अिस नियम-निष्ठाको देखकर हमे बडा कुतूहल हुआ हाथमें छोटा-सा लाअुड स्पीकर लेकर यात्रियोको सूचना देनेका काम भी अुसीका था। बीच-बीचमे यात्रियोके मनोरजनके लिअे वह सुन्दर-सुन्दर गीत भी गाकर सुनाती थी। अुसका कण्ठ अच्छा था। कअी राग तो भारतीय रागोका स्मरण कराते थे। हमारे साथके कुछ दुभाषिये जापानियोने अिस बहनके द्वारा गाये गये लोक-गीतोके अर्थ हमे समझाये। लोक-गीत अकसर करुण ही होते है और सामान्य प्रजाके सामान्य सुख-दुखको अमर करते है। अुस बहनका अेक गीत साकुरा (फूलो) की बहारके विषयमें था। चारो ओर ये फूल खिले हो और बसमे अिनका ही गीत गाया जाता हो तब यात्रा पूरी तरह काव्यमय बन जाती है। अेक जगह लोगोने बसमे अुतरकर साकुराके फूलोकी बहुतसी डालिया अिकट्ठी कर ली और अुन्हे बसमे जगह-जगह खोसकर अुसे पुष्पिताग्रा बना दिया।

लोग मौजमे आ गये। अेकने सुझाया कि बसमे जब आन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन जैसा ही है तो फिर हर आदमी अपने-अपने देशका गीत क्यो न सुनावे। सूचनाका अनादर नही हुआ और आसोके रास्तेकी हवामे अनेक देशोके राग गज अुठे।

जहा-जहा बस ठहरती वहा बच्चे तो अिकट्ठे होते ही। जापानी बच्चे यानी छोटी छोटी आखे, अुठे हुअे गाल, अुनके बीचमे छिपी हुअी चिपटी नाक, प्रसन्न हास्यसे खिले हुअे दात और भरे हुअे हाथ-पैर। अैसे बच्चोके देखते ही ममता अुमड पडती है। कोअी भी बच्चा रोता हुआ या किसी भी तरह परेशान दिखाअी नही दिया।

अब हम ज्वालामुखीकी तलहटीमे जा पहुचे। यहा हमे बससे अुतर कर आध घण्टेकी कडी चढाई चढनी थी। झाड-झखाडका कही नाम भी न था। अूबड-खाबड प्रदेशमे किसी तरह रास्ता निकालते हुअे सब लोग अूपर चढने लगे। सब मिलकर यात्री सौ सवा सौके लगभग होगे। मेरे साथ भिक्षु वातानाबे और जापानी विद्यार्थी किमुरा थे। चढते चढते और भी लोग मिलते जाते थे। यात्री पीछे मुडकर सारा दृश्य देखने, अभी और कितना चढना है जिसका अन्दाज लगाते और छातीमें नया श्वास भरकर फिर अूपर चढने लगते थे। छाछ और दहीके मटकोके मुह पर अुफनकर निकलती हुअी दूध-दहीकी सफेद धारिया जैसे चारो ओर दिखाअी देती है अथवा जैसे शुरू-शुरूमें खाना सीखनेवाले बच्चोके मुहके आसपास दाल-भात चिपके होते है, वैसे ही अिस बडे ज्वालामुखीके मुहके आसपास दूर-दूर तक सफेद और काले रगकी राख जमी हुअी थी। अुसमे से हम रास्ता निकालते-निकालते ठेठ अूपर तक जा पहुचे। कअी ओरसे अुस द्रोणके भीतर झाका। ज्वालामुखीके भयानक मुहमे करीबसे झाककर देखना यह कोअी साधारण अनुभव नहीं था। अुस विशाल और टेढे-मेढे द्रोणमें से कितनी ही जगहोंसे सफेद, नीले और काले धुअेके बादल अुठ रहे थे। बीच-बीचमे खीलोके चटकनेके समान पत्थर भी अुछल रहे थे। किसी-किसी जगह अुस धुअेंमें से ज्वाला भी फूट निकलती थी, तब अुसका सौम्य ताम्र रग अैसा डरावना दिखाअी देता था कि अुसकी तुलनामे रातकी धधकती ज्वाला कही अच्छी कही जा सकती है।

मेरे साथ चलनेवाले भिक्षु वातानाबेके हाथमें भारतका तिरगा झण्डा था। मुझे खुश करनेके लिअे अुन्होने वह झण्डा मेरे हाथमें देनेके लिअे आगे बढाया। लेकिन अिसके बदले मैने दूसरे अेक भाअीके हाथमे लाल

सूर्यके बिम्बवाले जापानी झण्डेको हाथमे लिया और वातानाबेके आस-पास अिकट्ठे हुअे जापानी लोगोंको समझाया कि अिस जगह मेरे हाथमे अपने देशका झण्डा शोभा नही देता। मै जापान-विजय करनेके लिअे आया हुआ कोअी आक्रमणकारी योद्धा नही हू जो अभिमानसे अपना झण्डा लेकर अिस भूमि पर फिरू। हमारा तिरगा झण्डा मेरे लिअे प्राण-तुल्य अवश्य है। अिसकी अिज्जतकी खातिर भारतमे हम कितनी ही बार लडे है। लेकिन यहा तो हमारी आवभगत करनेवाले और भारतके साथ प्रेम-सम्बन्ध जोडनेवाले जापानियोंके हाथमे ही यह झण्डा शोभा देता है। अिसी प्रकार जापानका अुत्कर्ष चाहनेवाले और जापानियोकी दोस्तीकी अिच्छा रखनेवाले मेरे हाथमें आपका चण्ड-प्रतापी सूर्यका झण्डा ही सुन्दर दिखाअी देता है। मेरी अिस विवेक-मीमासाने आसपासके सब लोग खुश हुअे। अेक भाअीने धीरेसे कहा, आपने तो हमारे दिलोको जीत लिया।

अिसके बाद कअी कैमरे बतखकी बोलीकी तरह किलक-किलक करने लगे। मैंने देखा कि जहा हम खडे थे, अुससे भी थोडा अूचा अेक शिखर बाअी ओर है। फिर वहा पहुचे बिना कैसे वापस लौटते? यह सबसे अूची जगह थी, जाना जरा मुश्किल था, लेकिन अिसीसे अुसका दुगुना आकर्षण था। पैरोको सभालते-सभालते अुस शिखर पर पहुचे। यहासे पर्वतके द्रोणकी लम्बाअी ज्यादा अच्छी तरह दिखाअी देती थी और धुओंके बादल भी अधिक अूचे जाते हुअे दिखाअी देते थे।

अैसी जगह बेहिसाब अुमडी हुअी अपनी भावनाओंमे मन परे-शान होता है। जिन्दगीका यह अेक असाधारण सुन्दर अवसर है, जिस-लिअे प्रत्येक क्षणका अुत्तम-से-अुत्तम अुपयोग कर लो — अिस तरह आखोको और हृदयको मन समझा रहा था। आगे और पीछे, दाअे और बाअे, अूपर और नीचे, दसो दिशाओमे आखे तबीयत भरकर देखना चाहती है। कोअी भी अश अनदेखा न रह जाय अैसी सावधानी रखकर देखना चाहती है और स्मृति-पट पर अुनके अनेक चित्र अकित कर लेती है। दूसरी ओर हृदय अिस सारे प्रसगकी गभीरताको पह-चानकर भक्ति-नम्र होता है और गहराअीमें अुतरता है।

दो तीन साल पहले कुछ लोग यहा आये थे और अेकाअेक ज्वालामुखीका गम्भीर विस्फोट हो जानेके कारण वे सभी लोग अुस दुर्घटनामे वहा जल मरे थे। लेकिन यह जानते हुअे भी क्या कोअी मनुष्य अैसी जगह जानेसे रुका है? खतरा कहा नही है? किसी वक्त जोखिम आयेगी और घेर लेगी, अिस डरसे क्या मनुष्य किसी भी कालमे अैसे भव्य विश्व-रूप-दर्शनसे वचित रहा है? जीवित-आशा, धनाशा, विजय-आशा और सुख-लालसा अिन सबसे अधिक सार्वभौम जिज्ञासा और अदम्य कुतूहल ही बलवत्तर सावित हुअे हैं। अीश्वर ज्ञान-स्वरूप है। ज्ञानमे वृद्धि करते-करते ही अीश्वरका साक्षात्कार हो सकेगा। अैसी भव्यताके दर्शनसे ही दृष्टि दिव्य होती हैं। अैसा 'अैश्वर-योग' निहारनेके लिअे हर अेक भक्तको अीश्वर 'दिव्य-चक्षु' देता ही है और जो भगवान दिव्य-चक्षु देता है वह हृदयकी समृद्धि भी देता है।

कहा भारतवर्ष और कहा निप्पोनका यह प्राची-द्वीपका प्रचण्ड ज्वालामुखी! यहा आकर कृतार्थ हुआ। अेक क्षण भी अैसा नही लगा कि पराये मुल्कमें हू। जहा भाषा-भेद है वहा भले ही परायापन महसूस हो पर कुदरत तो सब जगह अेक ही है। मैं हिमालयकी अुत्तुग हिम-राशिमे जो विश्वात्मैक्य अनुभव कर सका था, अुसी विश्वात्मैक्यको अिस रक्षा-पर्वतके शिखर पर धूम्र और ज्योतिके बादलोके बीच अनुभव करनेमें मुझे जरा भी कठिनाअी नही हुअी। वह अनुभूति हृदयमें मुह तक भर गअी और तुरन्त ही ज्ञानेश्वरकी ये दो पक्तिया मुहसे निकल पडी

> हे विश्वचि माझे घर, अैसी जयाची मति स्थिर,
> कि बहुना चराचर, आपणचि झाला।

अर्थात् यह अखिल विश्व ही मेरा घर है अैसी जिसकी मति स्थिर है अथवा जो चराचरमे अपनेको ही व्याप्त देखता है वही, मेरा भक्त है।

मेरे लिअे यात्रा कोअी कुतूहल-तृप्तिका विषय नही है। यह तो विधाताके आद्य अवतारका प्रत्यक्ष दर्शन है। जिसके अुद्धारके लिअे भगवानने दस-चौबीस या अनन्त अवतार लिअे, वही यह विश्व स्वय

भगवानका आद्य और विराट अवतार है। अुसके साथ तादात्म्यका अनुभव करना यही तो सबसे बड़ी साधना है।

जिस तरह मूर्ति-पूजा और मानस-पूजा — यह द्विविध-पूजा भक्तोंको सूझी है अुसी तरह पृथ्वी-पर्यटन और तारा-निरीक्षण ये भी दर्शन-भक्तिके दो विराट प्रकार हैं। जैसे-जैसे मौका मिले वैसे-वैसे अिन दोनोंकी अुपासना करके मनुष्य अनुभवसमृद्ध होता है।

आसोके अिस सर्वोच्च शिखर पर अिससे निम्न विचार आ ही नहीं सकते। ज्वालामुखीकी अग्नि 'कालोऽस्मि लोक-क्षय-कृत् प्रवृद्ध' अैसा कह सकती थी। लेकिन मुझे तो अुसमें विश्व-कल्याण-कामना और अुसके लिअे धारण किया हुआ अुसका संयम ही प्रतीत हुआ।

समाधिके बाद जिस तरह काल-क्रमसे व्युत्थान होता है अुसी प्रकार हम ज्वालामुखीके द्रोण-दर्शनसे कृतार्थ होकर नीचे अुतरने लगे। अूपर चढते हुअे जो अनेक प्रकारकी चर्चाअे चल रही थी वे सब अब बन्द हो गअी। हास्य रसके फव्वारे लोप हो गये। हरअेकके मुंह पर प्रसन्न-गम्भीरता छाअी हुअी थी। 'मन मस्त हुआ फिर क्यों डोले'? लेकिन यह स्थिति देर तक न टिकी। जैसे-जैसे हम अुतरने लगे वैसे-वैसे जगह चौड़ी होती गअी। यात्री अनेक धाराओंमें बिखर गये। फिर सबको अेक-दूसरेके अनुभव सुननेकी सूझी। पुराने अनुभव ताजे होने लगे और लोग विनिमयानन्दमें मग्न हो गये।

नीचे आते ही कअियोंने चाय पी। मैंने चि० सरोजके दिये चाकलेटके टुकड़े खाये, और आजकी यह कृतार्थता किस प्रकार संग्रह करके रखी जाय, अिसी चिंतामें बाकीका दिन बिताया।

जिस रास्तेसे गये थे अुसी रास्ते वापस आये। फिर वही बच्चे दिखाअी दिये। अुसी कछुआ-पहाड़ीने हमारा स्वागत किया। अुन्हीं साकुराके वृक्षोंने अपने हाथमें फूल लेकर हमें पुष्पांजलिके आशीर्वाद दिये और अन्तमें हमने कुमामोतोमें फिरसे प्रवेश किया। सुबह अुठकर जानेवाले हम वापसीमें वही नहीं थे। प्रत्येक व्यक्ति अेक कीमती-से-कीमती अनुभवके भारसे दबा हुआ था और अुससे प्रसन्न था। तब भला सन् १९५४ की यह सातवीं अप्रैल कैसे भुलाअी जा सकती है?

२

अगली सुबह स्तूपोत्सव होनेवाला था। अुसके सम्मानमें कुमामोतो शहरके लोगोंने रातको जापानी दीपोंका अेक जुलूस निकालनेका निश्चय किया था। देश-देशान्तरोंसे आये हुअे हम प्रतिनिधि मेहमान भी अुसमें भाग लेनेवाले थे। अिस तरहके अुत्सवकी श्रीवृद्धि करनेका निमन्त्रण कौन छोड़ता?

जुलूसमें हजारों बच्चे अेक-अेक लकड़ीके सिरे पर बंधे हुअे कागजके दीप लेकर चल रहे थे। अुनके पीछे सुन्दर-सी बसमें बैठकर हम मेहमान चले। हमें भी अैसे ही दीप दिये गये थे। पीले कटहलके आकारके ये कागजी दीप वजनमें बिलकुल हलके होते हैं। अिनकी तली पर लगाअी हुअी मोमबत्तीका प्रकाश कागजके कारण सौम्य रीतिसे फैल रहा था। सौम्य-प्रकाशके ये असंख्य गोले जब हवामें डोलते-डोलते चलते हैं तब अुनका मन पर बड़ा खुशनुमा और जादुअी असर होता है।

जुलूस शुरू होनेके स्थान पर हम समयसे पहुंच गये। अंधेरा होने लगा था, लेकिन शहरके रास्ते हमेशाकी तरह रंग-बिरंगे दीयोंसे प्रकाशित थे। रास्तों पर यदि पहले जमाने जैसा अंधेरा होता तो हमारे अिन कागजी दीयोंका महत्त्व बढ़ जाता। खैर हमें तो कुमामोतो शहरकी शोभा भी देखनी ही थी। नगर सचमुच सुन्दर था। प्रमुख मार्ग और बाजार तो गन्धर्व-नगरीकी-सी शोभा दे रहे थे। हम सब बसमें बैठ गये थे और हमें मिले हुअे दीपोंको हमने लकड़ीके द्वारा खिड़कीके बाहर लटका रखा था। भीतर की मोमबत्तीके बुझते ही या खतम होते ही तुरन्त कोअी-न-कोअी आकर अुसमें नअी मोमबत्ती जला जाता था।

सदा शर्मीले और अलिप्त रहनेवाले भारतन् कुमारप्पा भी अिस सारे वातावरणसे प्रभावित हुअे और खुशीमें आकर बच्चोंके साथ खिलवाड़ करने लगे।

घण्टों तक हम सारे शहरमें धीरे-धीरे घूमे। जहां-तहां लोग घरों और दुकानोंसे बाहर निकलकर जुलूसका अभिनन्दन कर रहे थे। चि० सरोजने मुझसे कहा "अिन बच्चोंका अुत्साह अधिक या घण्टों तक रास्ते

पर पैदल चलनेकी धीरज अधिक, यह कहना मुश्किल है। अच्छे-अच्छे कपडे पहनकर अितने सारे बच्चोका शान्ति और अुत्साहके साथ दीयोंका जुलूस निकालना कोअी छोटी-मोटी सिद्धि नही है।"

किसी भी देशकी दुकानोकी अपेक्षा जापानके बाजारकी दुकानें अधिक सुन्दर, सजी हुअी और आकर्षक मालूम होती है। हमारे लोगोको तो केवल अिसके लिअे ही जापान जाकर यह कला सीख लेनी चाहिये। प्रत्येक वस्तु आकर्षक तरीकेसे सजाकर रखी हुअी तो होती ही है। दुकानकी सर्व-सामान्य रचना भी अैसी होती है कि जिससे सारी दुकानका व्यक्तित्व चमक अुठता है। और जब जापानी ग्राहकोकी टोलिया दुकानोमें घुसती है तब अैसा लगता है मानो वे भी दुकानकी शोभा बढानेके लिअे ही निमन्त्रित किये गये है। जिस तरह दुकानकी सुन्दरतामें वे बिलकुल घुल-मिल जाते है। अिस प्रजामे यह विशेषता किसने और कब पैदा की होगी? अितना लम्बा जुलूस सारे शहरमे घूमा लेकिन किसी भी जगह आवागमनमे न रुकावट हुअी और न अव्यवस्था हुअी। यह जुलूस भी हमारे लिअे अेक कीमती अनुभव था। सारे शहरकी भीडमें हम भी मिल गये। आखिर बडी देर बाद घर जाकर अपने कमरेमें ही पेट-पूजा करके हम निद्राधीन हुअे। मौका मिलने पर मनुष्य कितना कीमती अनुभव अेक ही दिनमें पचा सकता है, अिसका अन्दाज हमें अुस दिन मिला।

५

वुद्ध-धातुकी स्थापना

आजका और अगला दोनो ही दिन विशेष महत्त्वके थे। ८ अप्रैलको कुमामोतोके पानकी पहाडी पर वनाये गये स्तूपमे भगवान वुद्धके अवशेषोकी स्थापना होनेवाली थी। देश-देशान्तरके शान्तिवादी अिस प्रसगका स्वागत करनेके लिअे अिकट्ठे हुअे थे। अिस स्थानसे वुद्ध भगवानकी सनातन वाणी 'न हि वेरेण वेराणि सम्मन्तीध कुदाचन' सुनकर दूसरे ही दिन हमे हिरोशिमा जाना था। वहा लाखो अमर शहीदोको श्रद्धाजलि अर्पण करनी थी और अिस वुद्ध-वचनका अनुभव करना था कि—'दुःख शेते पराजितो।'

सुवह जल्दी अुठकर, नहा-धोकर नौ वजे हम वसमें वैठकर निकले। स्तूपकी पहाडी पर पहुचकर अेक सौ चालीस सीढिया चढे, तव कही अुत्सवके लिअे तैयार किये गये अेक विशाल शामियानेमें स्थानापन्न हुअे। अुत्सवका प्रारम्भ होने ही वाला था कि अितनेमे अेक केनेडियन अथवा अमरीकन यात्री हाफता-हाफता वहा आ पहुचा और कहने लगा, "मैं टोकियोमे ही अुपस्थित रहना चाहता था, लेकिन पासपोट व वीसाकी कुछ गडवड होनेके कारण देरसे निकल सका। आजके अुत्सवमे भी कही देर न हो जाय, अिस डरसे स्टेशनसे सीधा भागा आ रहा हू।" मैंने अुससे पूछा, "आपका सामान कहा है?" वह वोला —"अिस पहाडीके नीचे अेक वुढिया कुछ वेचने वैठी थी, अुससे किस भाषामे वोलता? मेरा सफरका सन्दूक—जिसमें मेरा सव कुछ है—अुसके सामने रखकर अूपर भाग आया हू। मेरे अिशारोसे वह जो समझी हो सो ठीक।"

मैंने पूछा, "आप अुस वहनको पहचान भी सकेंगे? और वह भी पहचान लेगी क्या कि आपने ही वह सन्दूक अुसके पास रखा था?" अुसने कहा, "भगवान भरोसे रख आया हू। मेरा विश्वास है कि मेरी

श्रद्धा गलत साबित नही होगी।" अुत्सवके बाद व्यवस्थापकोंमें से अेकको मने यह बात बताअी। अुस भाअीको अपना सन्दूक बिना किसी कठिनाअीके सही-सलामत मिल गया।

अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूपका यह अुत्सव शुरू हुआ। भव्य पेगोडाके सामने अेक अुच्च आसन पर गुरुजी सहित अनेक साधुगण विराजमान हुअे। पासमें अेक बडा ढोल लकडीकी घोडी पर रखा था। अेक साध्वी बुढिया अुसे ताल-बद्ध बजा रही थी जिससे चारो ओर अुत्सव शुरू होनेकी खबर फैल जाय।

अनेक मन्त्र बोले गये। प्रारम्भिक धर्म-प्रवचन गाये गये। अुसके बाद भारतके प्रतिनिधियोंने बुद्ध भगवानके अवशेषोंकी पिटारी (मजूषा) जापानके बौद्ध-साधुओंको अर्पण की। देनेवालोंमे प्रमुख थे—अेक बौद्ध साधु, जिनके साथ डा० कालिदास नाग व दूसरे सज्जन भी अुपस्थित थे। लेनेवालोमें गुरुजी निचिदात्सु फूजीअी और दूसरे अनेक जापानी बौद्ध साधु थे।

दो राष्ट्रोंके बीच हजारो वर्षके बाद होनेवाले अिस पवित्र आदान-प्रदानका महत्त्व हम सब अपने-अपने मन पर अकित कर रहे थे कि अितनेमे भौंरेकी तरह आवाज करता हुआ अेक विमान आकाशमें आया और बहुत नीची अुडान लेकर अुसने स्तूप पर और आगेकी भीड पर पुष्प-वृष्टि की। अिस अकल्पित पुष्प-वृष्टिमे वहा अेकत्रित हुअे हजारो लोगोंके हृदय पुलकित हो गये। पुष्प-वर्षाके बाद रेशमकी लम्बी-लम्बी डोरियोकी वर्षा हुअी। आकाश-मार्गमे कोअी सर्प अुतरते हो अैसे ये अुलझे हुअे गुच्छे-जैसे दिखाअी दे रहे थे। अुन डोरियो पर जापानी मन्त्रोके छपे हुअे अक्षर सुन्दर लग रहे थे।

बुद्धके अवशेष अेक झरोखेके रास्ते स्तूपके अन्दर रखे गये। हम सब लोगोने अुन्हे धूप-दीप अर्पण किये। जगह-जगह फूलोंके ढेर सारे प्रसगकी शोभा बढा रहे थे। भेंटमें चढाअी हुअी तरह-तरहकी वस्तुअें भी भक्ति बढानेके लिअे वहा सजा दी गअी थी।

अब भाषणोंकी बारी आअी। भारतकी ओरसे मुझे बोलना था। अैसे मगल-प्रसग पर मैंने भारतकी राष्ट्रभाषामें ही बोलना पसन्द किया।

भिक्षु मारुयामा-सान मेरे पास खडे होकर मेरे हिन्दीके हर वाक्यका जापानी अनुवाद कर रहे थे। सारी जापानी जनता भारतका सन्देश बडे हर्षके साथ सुन रही थी। मारुयामाजी प्रसंगको शोभा देनेवाले अुत्साहसे मेरे भाषणका अनुवाद कर रहे थे। मेरा भाषण पूरा होते ही हर्षविभोर मारुयामा मुझसे लिपट गये। वहासे मैं अपने स्थान पर जा बैठा। यहा यूरोप व अमरीकासे आये हुअे प्रतिनिधियोको मैंने अपना भाषण अंग्रेजीमें संक्षेपमे समझाया। बेचारे विदेशी न हिन्दी जानते थे, न जापानी! आगे चलकर प्रबुद्ध अेशियामे अुनका स्थान कहा है यह वे समझ गये।

सबसे अधिक प्रभावशाली व्याख्यान गुरुजीका था। अुसका सार मारुयामा मुझे बादमे बतानेवाले थे। लेकिन बेचारेको वक्त ही न मिला।

जापानी अुत्सव भी अपने अुत्सवोकी तरह लम्बे चलते है। अिसके बिना धर्म-वृत्तिको सन्तोष नही होता। अिस अुत्सवको देखनेके लिअे आअी हुअी बहनोमे से जो वृद्धा थी अुनकी आखोमे आनन्दाश्रु टपक रहे थे और वे मुहसे कोअी न कोअी मन्त्र भी बोलती जा रही थी। अुत्सवके बाद पासके ही अेक बडे कमरेमे हमे ले जाया गया। वहा स्थानीय व्यक्तियो और साधुओके साथ हमारा परिचय कराया गया। वही थोडा कुछ खाकर हम धीरे-धीरे नीचे अुतरे। पूरा गाव-का-गाव अुत्सव-विभोर था।

हम दो बजे होटलमे पहुचे और तीन बजे कान्फरेन्समे। वहा बहुतसे भाषण हुअे। जहा-तहा भारतन् कुमारप्पाकी ही माग हो रही थी।

अेक मजेदार प्रसंग यहा लिखने लायक है। मेरे जैसेको हिन्दीमें बोलता देख, अुन अमरीकी भाअीको सूझा कि वह स्पेनिशमे बोले। अुसे विश्वास था कि यह भाषा यहा न कोअी समझ सकेगा और न कोअी अनुवाद ही कर सकेगा। अुसने केवल विनोदके लिअे ही स्पेनिशमें बोलना शुरू किया। अुसे क्या पता था कि भारत तो सनातन कालसे भाषा-भवन है! अुन सज्जनके वाक्य पूरे होते ही बेचारा जापानी दुभाषिया परेशानीमें अिधर-अुधर देखने लगा। अितनेमें कालिदास नाग उठे हुअे और धारावाही वाणीमे स्पेनिशका सुन्दर अंग्रेजी अनुवाद

कर दिया। वह आश्चर्यचकित अमरीकन बडा खुश हुआ। अुसकी आखोकी चमक देखने लायक थी। तभी चारो ओरसे तालियोका अभिनन्दन सुनाअी दिया।

दो बजे परिषद् खतम हुअी। अुसमें भी मुझे भाषण देना ही पडा। अुसके अलावा यहाकी आकाशवाणीके लिअे दो प्रश्नोत्तरिया भी मेरे लिअे रखी हुअी थी।

अेक प्रश्नमें अुन्होने वहाके स्तूपके विषयमें मेरा अभिप्राय पूछा। जवाबमें मैंने कहा "स्तूपोका प्रारम्भ भारतमे ही हुआ है। छोटे-बडे अनेक स्तूप भारत और नेपालमें मिलते है। लका और ब्रह्मदेशमें कितने ही बडे-बडे स्तूप है। स्तूप बनाना हो तो अुस पहाडीकी अूचाअी, अुसका घेरा आदि ध्यानमें रखना चाहिये और आसपासके सारे स्वरूपके साथ वह मेल खा सके अैसा होना चाहिये। अिस कसौटीके अनुसार कुमामोतोका यह स्तूप बहुत ही सुन्दर है। अुसमे सब तरहके परिमाणका ध्यान रखा गया है। यह तो हुअी कलाकी दृष्टि। अिस सबबमें जापानी लोगोंसे कहनेको कुछ रहता ही नही है। आकृति और परिमाणकी रक्षा करनेकी बातमें आप लोग दुनियाका गुरु-स्थान ले सकते है। बुद्ध भगवानके शरीर-धातु अिसमें पहली बार रखे गये हैं। अिसलिअे हम सबके लिअे यह भूमि आज सनाथ हुअी। मुझे खुशी है कि आजके अुत्सवके लिअे मैं यहा अुपस्थित रह सका। अिस स्तूपके कारण निप्पोन और भारतका हृदय अेक हो सकेगा।"

हमारे होटलमें अितने सारे लोग रहते थे और अुन सबसे मिलनेके लिअे अितने अधिक स्थानीय लोग आते थे कि मानो वह कोअी अखण्ड चलता हुआ निजी सम्मेलन ही हो। अिसमे कअी महत्त्वकी बाते हो सकी।

बहुतसे जिम्मेदार जापानियोंने हमसे कहा कि भारतसे यदि आप यहाकी खेती सीखनेके लिअे नौजवानोको भेजें तो अुनको अुसकी तालीम देनेकी जिम्मेदारी लेनेको हम तैयार है। अिसी तरह यदि आप भारतमें जापानी ढगकी खेतीका प्रयोग करना चाहते हो तो हम अपनी ओरसे बहुतसे अनुभवी युवक किसानोको भेजनेके लिअे तैयार है।

दूसरे अुद्योगो और अुद्योग-कलाओके विषयमे भी अिसी तरहकी कोशिश करनेकी तत्परता अुन्होने बताअी।

रातको मुख्य सम्मेलनकी कार्यतन्त्र-समिति (स्टीयरिंग कमेटी) बैठी। अुसमे अधिकतर भारतन् कुमारप्पाने ही हिस्सा लिया।

दूसरे दिन यानी १० अप्रैलको हमें हिरोशिमा पहुचना था। बडे सवेरे चार बजे अुठकर हमने पाच बजे कुमामोतो छोडा। हाकाटा होकर मोजीके पास सामुद्र-धुनि लाघकर दोपहरको दो बजे हम हिरोशिमा पहुचे। वह प्रसग अितना अधिक भव्य था कि अिसका वर्णन अलग प्रकरणमे ही करना होगा।

६

हिरोशिमाको श्रद्धांजलि

विश्व-शातिकी परिषद्के कारण हर जगह हमारा स्वागत अुत्साहसे तो होना ही था, लेकिन हिरोशिमाने तो गजब ही कर दिया। अितनी भीड थी कि हम तो अुसमें खो ही से गये। स्टेशनसे बाहर भीडमे से रास्ता निकालकर हम सब प्रतिनिधि बडी मुश्किलसे अिकट्ठे हुअे। यहा फूलोके हार और गुच्छोंसे तो हम बिलकुल ढक ही गये। फिर सारी व्यवस्था ठीक हो जाने पर स्वागत-समितिने प्रत्येकके सामने बारी बारीसे ध्वनि-विस्तारक यत्र (माअीक्रोफोन) रखा। तब हम अपना सदेश अुस विशाल भीडके सामने रख सके। यहा अनुवाद कैसे हो सकता था? अखबारवालोंने हरअेकके मुक्ता-फलोका चयन किया और अुनका जापानी अनुवाद करके दूसरे दिन सारे जापानको अुनका हार पहना दिया।

स्वागतके ठडे पडने पर हम सब अेक साथ अेक मदिरमें गये। वहा पर मृतकोंकी शातिके लिअे जैसी विधि होती है वैसी कुछ विधि हुअी। यह मदिर था तो नया, लेकिन अुसकी भव्यतामें जरा भी कमी न थी। अिसके बाद हम अुस खास स्थान पर गये जहा हिरोशिमाके शहीदोका स्मारक बनाया गया था। अिस स्मारकका आकार

बैलगाडी पर लगाअी हुअी चटाअीका-सा अथवा रेलकी सुरंगका-सा था। अनेक धर्मके लोगोंने वहा अपने-अपने ढगसे श्राद्ध किया। अंग्रेजीमें अैसी विधिको 'सर्विस' कहते है। प्रारम्भ अीसाअी पादरियोंसे हुआ यह सब प्रकारसे योग्य ही था। अुन लोगोंकी गम्भीर मुख-मुद्रा, भरी हुअी दाढी, अूची टोपी, लम्बा अंगरखा और गलेमे चमकता हुआ चादीका क्रास यह सब कुछ बडा रुआबदार और गम्भीरतापूर्ण था। लेकिन मुख्य बात तो यह थी कि बौद्ध जापानके लाखों लोगोंको अेक क्षणमें मटियामेट करनेवाला राष्ट्र खुदको अीसाअी कहलवाता है, अिसलिअे यह श्राद्ध अुन्हीके द्वारा प्रायश्चित्त रूपमें प्रारम्भ हो यही अुचित था। शहीदोंके स्मारकके अूपर भारतकी ओरसे पुष्प-गुच्छ अर्पण करते हुअे मैंने अीशोपनिषद्का पाठ किया। ओम् क्रतो स्मर, कृत स्मर (हे पुरुषार्थ करने-वाले! तेरी की हुअी करतूतें याद कर!) यह आर्ष चेतावनी बोलते हुअे मनमें आया कि यदि पश्चिमकी सारी दुनिया अिसे दोनो कानोंसे सुने और समझे तो सचमुच दुनियाका अुद्धार हो।

हमने सामने दिखाअी देनेवाले हिरोशिमाके लोगोंके प्रति और अुनके दारुण दुःख व बलिदानके प्रति सहानुभूति तो व्यक्त की लेकिन बादमे ध्यानमें आया कि अुस हत्याकाण्डमे से बचा हुआ कोअी भी अब अिस शहरमें नही रहा है। अेक पूरी पीढी—बूढे, जवान, बच्चे, स्त्री और पुरुष सबके सब अेक क्षणमें साफ हो गये। जो थोडेसे बचे, वे आज अितने सालोंके बाद भी अस्पतालोंमे पडे-पडे बचनेका अफसोस कर रहे हैं। और जो अच्छे हो गये अुनकी आजीविकाका खयाल दूसरोंको ही करना पडता है। आज हिरोशिमामे जो हजारो-लाखों लोग बसते है वे सब वहा आसपाससे आकर रहने लगे है। नये घर बनाकर नये सिरेसे सारी ही प्रवृत्तिया चलानेवाले अिन नये लोगो पर हिरोशिमाके शहीदोके नाते सहानुभूति किस तरह जताते? अिसलिअे सारे जापान राष्ट्रके प्रति ही हृदयकी भावना व्यक्त करे यही ठीक था। हिरोशिमाको तो नअी सस्कृतिका ही प्रारम्भ करना चाहिये। मैंने तो कहा भी कि हिरोशिमा सिद्ध करता है कि सहार-शक्तिसे सजीवन होनेकी शक्ति अधिक प्रतापी और श्रेष्ठ है।

जहा यह स्मारक बना है वहा पासमें ही अेक बौद्ध मदिर बनाया गया है। वहा हम सबको लकडीके छोटेसे डिब्बेमें हिरोशिमाके भग्नावशेषोंके टुकडे दिये गये। ओटका टुकडा, जले हुअे मिट्टीके बर्तनोंके ठीकरे –अैसी कोअी न कोअी चीज अिन डिब्बोंमे रखकर देश-देशान्तरके लोगोंको बेची जाती हैं। महासहारके अवशेषोंमे से भी आयका साधन बनानेवाली अिस सेवा-भावी व्यापार वृत्तिकी जरूर कदर करनी चाहिये। वर्ना हमेशा आनेवाले सस्कार-यात्री (टूरिस्ट) अिस तरहकी सुविधाके बिना हिरोशिमाकी यादगार कैसे प्राप्त कर सकते?

जापानी लोगोंने सारे हिरोशिमाका और भी अच्छी तरह फिरसे निर्माण कर लिया हैं। सिर्फ जहा बम गिरा था अुस स्थानकी अेक अिमारतका ढाचा स्मारकके तौर पर अब भी ज्योंका-त्यो सभालकर रखा हुआ है।

दूसरी अेक जगह हमने देखा कि अेक मकान पूरा-का-पूरा बच गया है, लेकिन अुसके भीतरका सभी कुछ जल गया था। सो यहा तक कि लोहेकी चीजें गरम होकर पिघल गअी थी। कही किसी कमरेमें रहनेवाले लोगोंमे अेक ही आदमी बच गया और बाकीके सब मर गये। अिस तरहके चमत्कारोंकी बाते सुनते-सुनते हम विश्व-शातिकी परिषदमें जा पहुचे। अध्यक्षके स्थान पर अेक बहन थीं। यहा लोगोंमें—खासकर स्त्रियोंमें विशेष जाग्रति दिखाअी दी। विश्व-शाति-परिषद्का अेक अधिवेशन हिरोशिमामें हो यह सब तरहसे अुचित ही था।

शामको सातसे नौ तक हम सब प्रतिनिधियोंके स्वागतका कार्यक्रम था। अुसमें नृत्यका कार्यक्रम बडा ही सुन्दर रहा। अुसके अन्तमें लोगोंने मुझे अपना अभिप्राय प्रकट करनेको कहा। मैंने कहा, "हमारे देशमे नृत्य-कला अितनी अधिक बढी हुअी है कि सामान्य तौरसे हम मानते हैं कि हमें दूसरे लोगोंसे सीखनेको कुछ खास नही होगा। लेकिन आपका आजका कार्यक्रम देखकर मुझे लगता है कि हमारे दोनों देशोंकी जनताके लिअे परस्पर विनिमय करने योग्य बहुत कुछ है। खासकर नृत्यके बारेमे तो बहुत है।

अैसे प्रसगो पर खुश करनेके लिअे मनचाहा बोलनेका रिवाज है। लेकिन अुस कलामें मैं प्रवीण नही हू और नृत्य-शास्त्र तो मैं जरा भी नही जानता। फिर भी नृत्य देखे बहुत है अिसलिअे मुझे जसा लगा वैसा ही बोल दिया। रातको दस बजे होटल कैनानसोमें पहुचे। वहा जापानी ढगकी और सारी सुविधाअें तो अुत्तम थी लेकिन शौच-गृहकी सुविधा अनुकूल नही थी। अिसलिअे दूसरे दिन हम वान-शो-अेन होटलमें रहने गये। वहा हमारे लिअे अेक सुन्दर झोपडीके जैसा कमरा रखा गया था। वह हमें बहुत पसन्द आया।

दूसरे दिन सुबह फिरसे परिषद् शुरू हुअी। खानेके लिअे परिषद्‌का काम मुलतवी रखनेके बदले, हम जहा बैठे थे वही पुस्तक-जैसे आकारके लकडीके डिब्बेमें सेंडविचिज (डबलरोटीके तिकोन टुकडोंके बीचमें टमाटर या ककडी आदि रखते है।) और अेक-अेक फल दिया गया। लोग खाते जाते थे और भाषण सुनते जाते थे। कागजकी नलीसे नारगीका रस पी रहे थे और आपसमें बातें भी कर रहे थे। खानेके डिब्बे लेनेसे पहले हमें याद रखकर कहना पडता था कि हम मासाहारी नही है अिसलिअे हमें शुद्ध शाकाहारी डिब्बे ही दें।

दोपहरको हिरोशिमा विश्व-विद्यालय जानेका कार्यक्रम था। वहा मेरा अेक भाषण गाधीजी और टैगोरके विषयमें रखा गया था। डॉ० कालिदास नाग अेक बार रवीन्द्रनाथ ठाकुरके साथ अिस देशमें आये थे। अिसलिअे अुनका भाषण कविके सदेशके विषयमें था। कुमामोतोमें मिले हुअे अेक नये दुभाषियेने हमारी ठीक मदद की। अिसे बतानेका कारण यह है कि पिछले दस दिनो तक परिषद्‌में जो जापानी भाअी हमारे अग्रेजी भाषणोका अनुवाद जापानीमें करते थे और जापानी भाषणो का सार हमें अग्रेजीमें सुनाते थे अुससे हम बिलकुल अूब गये थे। बेचारेको कुछ आता ही नही था, शब्द भी तुरन्त नही सूझते थे, अिसलिअे हर वाक्यके बीच-बीचमें अ—अ—अ—अ—करते जाते थे। आपसमें बातें करते वक्त तो मैंने अुस भाअी का नाम ही अ—अ—अ—अ—रख दिया था। यद्यपि मै जानता था कि अैसा मजाक अतिथि-धर्ममें शोभा नही देता।

श्री कालिदास नागने अपने भाषणमे पुरानी चीजोका जिस तरह जिक्र किया वह हममे से कुछको पसन्द नही आया। जापानी लोगोको अगर कुछ बुरा भी लगे तब भी वह अुनके चेहरेसे प्रकट नही होता। अुनकी सस्कृतिकी यह विशेषता है।

हिरोशिमा विश्वविद्यालयके अध्यक्षने भाषणके प्रति आभार प्रदर्शित करते हुअे हमें लकडीका अेक-अेक सुन्दर पगोडा भेटमे दिया जो अभी भी मेरे कमरेमें शोभा दे रहा है और हिरोशिमाका स्मरण दिलाता रहता है। Nehru on Gandhiji पुस्तक का जापानी भाषान्तर भी अुन्होने हमें भेंटमें दिया।

अिन अध्यक्षके कमरेमें हमने पत्थरमें खुदी हुअी अेक मूर्ति देखी जिनमे अेक बालक और अेक बालिका आमने-सामने खडे होकर भेंट करनेकी तैयारीमें थे। मूर्तिकारने पूरे आत्म-विश्वासमे अिसे गढा था। अैसी जीती-जागती कला-कृतिया सब जगह देखने को नही मिलती।

नामको प्रथानुसार हमारी परिषद्के विषयवार तीन विभाग किये गये। धर्म-परायण लोग विश्व-शातिकी स्थापनाके लिअे क्या कर सकते हैं जिस प्रश्नकी चर्चा करनेवाले विभागमें हम पहुचे। मैंने अपने भाषणमें कहा, "अेक जमाना था जब कि धर्मके नाम पर आपसमें युद्ध चलते थे और अुसे धर्म-युद्ध कहते थे। अब धर्मके नाम पर कोअी लडाअी नही छेडता यह ठीक है, लेकिन सारे ही धर्म और अुनके पथ परस्पर लडकर अप्रतिष्ठित और निर्वीर्य हो गये है। अिसलिअे धर्मोको अब सबसे पहले अपने अन्दर सर्व-धर्म-समभाव पैदा करना चाहिये।" लोगोको मेरी यह बात पसन्द आअी, लेकिन भारतके अेक बौद्ध भिक्षुने सवाल अुठाया, "हम आत्माको नही मानते, आप मानते है फिर हम लोगोमें समन्वय कैसे हो?" मैंने अुसका अुत्तर देना आवश्यक नही समझा। अिससे सबको बडी राहत मिली। पाच बजे हिरोशिमाके गवर्नरकी ओरसे अेक स्वागत था। अुसमे हम गये।

स्वागतकी व्यवस्था बहुत ही अच्छी तथा कलापूर्ण थी। स्वाद-रसिको व चटोरोको तो अुस दिन असाधारण तृप्ति मिली होगी। किसीने लिखा है कि भगवान जिनसे रूठता है अुनको शाकाहारी, मद्य-

पान-निषेधी या विरोधी बनाता है और यदि अधिक नाराज हो तो मनुष्यको सन्यासी बना देता है! जीवनके श्रेष्ठ आदर्शकी अिससे अधिक दिल्लगी और क्या हो सकती है!

अन्तिम दिन सुबह हिरोशिमामे ही बहुतसे लोगोंसे विदा लेनी थी। भिक्षु मारुयामाने अैसे कअी लोगोंको वान-शो-अेनमें अेकत्र किया था। वहा हममें से कअियोंने सुन्दर बागमें छोटे-छोटे पुलो पर चलकर झरनो और प्रपातोकी शोभा देखी। फिर लोगोने हमारे फोटो लिये। अितनेमे समाचार मिले कि जिस हवाअी जहाजसे हम टोकियो जानेवाले थे वह बिगड गया है। अिसलिअे हमे रेलगाडीसे जाना पडेगा। अिस कारण ओमाओी-सान टिकटें लेने स्टेशन गये और हम अपने हिन्दी दुभाषिये भाअी किमुराके साथ हिरोशिमाके चौडे और सुन्दर बाजारमें चीजें खरीदनेके लिअे निकले। मुख्य अुद्देश्य तो बाजार देखनेका ही था। बाजारकी खूबी यह थी कि रास्तोंके अूपर आमने-सामनेकी दुकानो तक कपडे तानकर छाया की गअी थी। हमारे यहा भी सक्कर और शिकारपुर आदि शहरोमे अिस तरहसे रास्तो पर छाया की जाती है। लेकिन ये रास्ते बहुत सकरे होते हैं और दुकानें अितनी पास-पास होतीहैं कि मानो अेक-दूसरेके साथ शेकहैंड करना चाहती हो। हिरोशिमाके रास्ते तो अितने अधिक चौडे थे कि वहा अेकसे अधिक मोटरे अेक साथ दौड सकती थी। बाजारमें बच्चोका चित्रमय साहित्य बहुत ही आकर्षक था। लेकिन जिनको हवाअी जहाजसे यात्रा करनी होती है अुनको अपरिग्रह व्रत ही पालना पडता है। चीजे देखो, अुनकी कद्र करो लेकिन साथ अुठाकर न लाओ, यह आजके सफरका मूल-तत्त्व है, और पैसोकी तगीके दिनोमे तो अिस मूल-तत्त्वका कडाअीसे पालन करना पडता है। बच्चोकी किताबोमें तो जापानी चित्र-कला सचमुच सोलह कलाओ सहित प्रगट होती है। हमारे यहा अभी भी अग्रेजी कला का अनुकरण होता है अिसका दु ख जापानी किताबें देखनेके बाद और भी बढ जाता है।

हम स्टेशन पहुचे और हमारे ओमाओी-सान नदारद! कहा खो गये राम जाने! अब क्या करते? अनजान मुल्कमें भाषा भी नही जानते थे। लेकिन हिम्मतके साथ बिना टिकटके ही रेलगाडीमें जा बैठे। अपने

पैसोका हिसाव किया तो मालूम हुआ कि पासमे पूरे जापानी सिक्के नही है। खाने पर खर्च करे तो सोनेकी सुविधा छोडनी पडती है। और यदि सोनेकी सुविधाका आग्रह रखे तो भूखे पेट सोना पडता है। चि० सरोजने और मैंने अिस सारी मुसीबतको हसीसे टाल दिया। सरोज कहने लगी कि अैसा अनुभव न होता तो यात्रामें अितनी कमी ही रह जाती।

दो चार स्टेशन के वाद कन्डक्टरने आकर कहा कि हिरोशिमासे से आपके लिअे तार आ गया है, आप परेशान न हो। अुसके वाद हमने अपने पासके पैसे खुलकर खर्चे। हम तीन सौ येन खा गये और निश्चिन्त होकर सोये। अेक वात यहा कह देनी चाहिये। कोवे स्टेशन पर रमीला वहन साग-पूरी दे गअी थी वे यहा वहुत काम आअी।

हमारा वह सारा दिन निरीक्षणमे गया। छोटी-वडी सुरगें आती और चली जाती। हर सुरग कह रही थी पश्याश्चर्याणि भारत! (यहा भारत शव्द अर्जुनके लिअे नही था। वह भरत-खण्डके समस्त निवासियोके लिअे लागू होता था)। समुद्र, गाव, घरोके छप्पर, आसपासके वगीचे, आदर्श खेती, रग-विरगे फूल और फूलसे भी अधिक प्रसन्न वच्चे—अिस तरह यह सारा रास्ता अखण्ड चलते हुअे पिकनिकके समान था। लोग हमें देख रहे थे, हम लोगोको देख रहे थे और अेक-दूसरेका मनोरजन कर रहे थे। फूजीयामा पहाड न देख सके अिस अेक अफसोसको छोड दें तो कह सकते है कि हमने पेट भरकर खाया, जी भरकर देखा और भरपूर सोये। लोरिया गानेका काम तो रेलगाडी कर रही थी। आखिर १३ तारीखको वडे सवेरे ही हम टोकियो स्टेशन पर पहुचे। अिस वार हमने पहलेसे ही अपने दूतावासके रणवीरसिहजीके मेहमान वनकर रहना स्वीकार कर लिया था।

७

पुनरागमनाय च

अब तो टोकियो शहर हमारे लिअे पूर्व-परिचित था। हम जैसे ही अुतरे ड्राअिवर अिवाओका-सान ने हमें तुरन्त पहचान लिया। अितनेमें श्री रणवीरसिंहजी भी आ गये। टिकटकी कथा स्टेशनवालोंसे कहकर हम श्री रणवीरसिंहजी के घर पहुचे । वहा अुनकी पत्नी खानम मिली। अुन्होंने हमारे रहनेकी व्यवस्था बडी सुन्दर कर रखी थी। अुनका दो बरसका लडका पोपो अितनी मीठी बातें करता था कि हमारे लिअे खातिरदारीका सबसे बढिया नमूना तो वही था। अेक होशियार जापानी लडकी अुस बच्चेको सभालती थी और मेहमानोंकी सुविधाका भी खयाल रखती थी। वह पूरा दिन हमने खानोंमें, चीजें खरीदनेमें और रणवीरसिंहजीने हमसे खासकर मिलनेके लिअे पार्टीमें जिन लोगोको बुलाया था अुनसे विचार-विनिमय करनेमें बिताया। ये लोग जब पहले-पहल मिले थे, तब चूकि हम नये थे, हमें जापानके विषयमें जानकारी देते थे। लेकिन अब तो ये लोग हमारे बारह-तेरह दिनके अनुभवका सार जाननेके लिअे अुत्सुक दिखाअी दे रहे थे। रणवीर-सिंहजीको तत्त्व-ज्ञानमें बहुत रुचि थी। अिसलिअे अतिथियोंके जानेके बाद हम वार्तालापमें व्यस्त हो गये। भारतकी राजनीतिकी बातें तो बीच-बीचमें चलती ही थी। लेकिन ज्यादातर हम शुद्ध ज्ञानकी तत्त्वचर्चामें ही मग्न रहे।

१४ तारीख हमारे लिअे अनेक कार्यक्रमोंसे व्यस्त साबित हुअी। सोशलिस्ट पार्टी की सदस्या श्रीमती कोराने World Government Association के सामने मेरा अेक व्याख्यान रखा था। ओीमाओी-सान भी हमारे साथ थे। अुसी जगह अुनका अेक शाकाहारी मण्डल भी चलता था। मेरे व्याख्यानके बाद अुन लोगोंके साथ हमारे खानेकी व्यवस्था थी। अुन लोगोंने मुझे दूधिया काचकी रकाबी पर गाधीजी का फोटो छपवा

कर भेट में दिया। वे गाधीजीके शाकाहार और निसर्गोपचार-सम्बन्धी विचारोमे प्रभावित हुअे थे। ये लोग हमारी तरह दूधका अपयोग नही करते। अिस दर्जे तक अिन पर पश्चिमी शाकाहार का असर है। ये गुड या खाड भी नही लेते, यह अिनकी खुदकी विशेषता है। हम भारतके शाकाहारी दूध-घी वगैरा लेते है, अिस विषयमे मैंने अुन्हे अपना दृष्टिकोण समझाया, लेकिन मैं नही मानता कि वह पूरी तौरपर अुनके गले अुतरा। हमारी दृष्टि जीव-दयाकी यानी अहिंसाकी है, जबकि पश्चिमके शाकाहारियोकी दृष्टि माम जैसा पदार्थ मनुष्य जातिकी नैसर्गिक खुराक है ही नही, अिस सिद्धान्त पर आधारित है। मनुष्यके दात न निकलें तब तक वह माता का दूध पिये यह ठीक है। लेकिन दात निकलनेके बाद प्राणीके शरीरमें से अुत्पन्न हुआ दूध मनुष्यको नही पीना चाहिये, अैसा अिनका आग्रह होता है। जापानी शाकाहारी खुराकमे खाडको क्यो टालते हैं यह मुझे वे ठीकसे समझा न सके। लेकिन यह चर्चा चल रही थी कि अुनमें से अेक नअी ही बात निकल आअी। अुन्होने कहा कि हमारे लोगोका स्वास्थ्य मत्स्याहारके बिना टिकता ही नही अैसा अनुभव होने से हमने खुराकमें बीस फी सदी मत्स्याहारकी छूट रखी है। मैं तो चकित ही रह गया। दुग्धाहारकी हमारी छूटके विषयमें अेतराज करनेवाले ये लोग मछली खानेको कैसे तैयार हो जाते हैं यह मैं किसी भी तरह समझ न सका। 'बहुरत्ना वसुन्धरा,' और क्या?

चर्चा और भोजनके बाद सारी भीड आगनमें बैठी और वहा हम सब लोगोका फोटो लिया गया। अिस सारे समाजकी बातचीतमे और सह-भोजनमें हम सब अेक कुटुम्बके जैसी आत्मीयता महसूस कर रहे थे। अिस समाजके संस्थापक श्री ओसावा अुन दिनो कलकत्तेमें थे और वहाके जैन लोगोंके साथ मिलकर प्रचारकार्य कर रहे थे।

अिस मण्डलके सदस्योंसे विदा लेकर हम मेजी (Meiji) मदिरमें गये। यह राष्ट्रीय मदिर अेक विशाल अुपवनमें बादशाही ढग पर बनाया हुआ है। अन्दर मोटर आदि वाहनोको नही जाने देते अिसलिअे हम वहा खब घूम सके। दूसरे प्रेक्षकोंके भी दलके-दल घूम रहे थे। अेक जगह

वडे मकानमे चित्र-सग्रहालय था। जापानके वादशाहोके और राष्ट्रीय महत्त्वके अैतिहासिक प्रसगोके चित्र अच्छे-अच्छे चित्रकारोसे वनवा कर यहा लगाये गये थे। अिन चित्रोका अैतिहासिक और कलात्मक महत्त्व अितना अधिक है कि जापान जानेवाला प्रत्येक सस्कार-यात्री अिनका अलवम तो खरीदता ही है। भीमकाय वृक्षोके तनोको आकार देकर दरवाजो पर तोरणके समान स्थान-स्थान पर सजा देना यह जापानी स्थापत्यकी विशेषता है। हमने मेजी मदिर जी भरकर देखा। आते-जाते, भीतर-वाहर सव जगह साकुराके फूलोकी तो भरमार थी ही।

पानीसे भरी हुअी खाअीसे घिरे अेक किलेके अन्दर वादशाहका महल था। वाहरसे यह महल दिखाअी भी नही देता था। जापानी लोग अपने राजाको अीश्वरका अश अथवा विभूति मानते है। राजाके प्रति वफादारी यह जापानी मनुष्यका सर्वोपरि धर्म है। वे राजाके लिअे मर मिटनेमें ही जीवनकी सर्वोच्च कृतार्थता मानते है। यह सस्कार जापानियोकी रग-रग में समाया हुआ है।

पिछले महायुद्धमें जव जापान हारा तव अमरीकी लोगोने जापानके वादशाहसे अिस तरहका अिकरार लिखवा लिया कि वे अीश्वरीय अश नही है और अिस प्रकार राज्यकी सारी सत्ता प्रजाको दिला दी।

यहा से हम जापानी पार्लमेंट का विशाल भवन देखने गये। अिसे यहा 'डायट' कहते है। मै नही मानता कि अिग्लैण्ड की पार्लमेंटका भवन भी अिसकी तुलनामें ठहर सकता है। पार्लमेंटमें श्रीमती कोराने समाजवादी पक्षके कुछ सदस्योको वार्तालापके लिअे अिकट्ठा किया था। श्रीमती कोराकी अिच्छा थी कि भारतकी ओरसे कुछ जापानी कुटुम्वोको निमत्रण देकर अुन्हे भारतमें वसाया जाय। भूदानमें अितनी जमीन मिलती है तो अुसमें से थोडी जापानियोको वसानेके लिअे क्या नही दी जा सकती ? अिस तरहकी वात अुन्होने छेडी। मैंने अुन्हे विवेक के साथ कहा कि भारतकी जन-सख्या वहुत है। हमारे पास परती जमीन अधिक है ही नही कि जिस पर जापानियोको वसाया जाय।

आखिरमें मैंने कहा कि समाजवादी लोगो पर मै जरूर विश्वास रख सकता हू। लेकिन यह हम कैसे भूलें कि अेक समय

जापानी राष्ट्र पूरा साम्राज्यवादी था ? हमारे देशमे जापानियोको बसानेकी बात लोगोके गले अुतारना बडा मुश्किल होगा। यदि आप हमारे यहा आकर हमें खेती-बाडीके नये ढग सिखावें तो हम धन्यवाद देंगे। हमारे लडके आपके यहा आकर तरह-तरहके गृह-अुद्योग सीख सकें तो हम आपका अुपकार मानेंगे। मत्स्य-विद्या (fisheries) भी आपसे सीखने लायक है। अिस प्रकार मैंने अपनी बात अत्यन्त मिठास और स्नेह-भावसे कही। जापानको आस्ट्रेलिया और साअिबेरियामें बसने के लिअे जमीन मिलनी चाहिये अिस विचारका मैं समर्थक हू। अिसे वे जानते थे। अिसलिअे वे हमारी दिक्कत आसानीसे समझ सके।

अिस तरह सारा दिन महत्त्वकी बातोमें व्यतीत करनेके बाद हम यथासमय अिन्श्योरेन्स कम्पनीवाले श्री देसाअीके यहा, जिन्होने हमे खानेका निमत्रण दे रखा था, पहुचे। मैं जब तक परदेश नही गया था तब तक यह नही समझ सका था कि लोग स्वदेशी भोजनके लिअे अितना क्यो तरसते है। लकामें, ब्रह्मदेशमें और पूर्वी अफ्रीकामें हमे अधिकतर स्वदेशी ढगका ही आहार मिलता था। अिसलिअे यहा पहली ही बार मैंने स्वदेशी और विदेशी भोजनके बीचका फर्क अनुभव किया। यद्यपि हमें जापानी लोगोके यहा अुत्तमसे अुत्तम खाना मिलता था फिर भी शरीर अपनी आदतोको छोडता नही है। मै तो भारतके सब प्रान्तोमे रहा हू और प्रत्येक जगहके शाकाहारी भोजनका अितना आदी हो गया हू कि मुझे किसी जगह दिक्कत नही आती।

देसाअीके यहा ही हमने तीन हजार येन देकर सफरका जीवन-बीमा करवाया और तैयार होकर हानेडा हवाअी अड्डे पर पहुचे। वहा अनेक लोग विदा देनेको अिकट्ठे हुअे थे। अुनमे किसीके साथ विस्तारके साथ बात करना असम्भव था। लेकिन जहा प्रेम और कृतज्ञता प्रदर्शित करनेका सवाल हो वहा भाषाके विस्तारकी जरूरत ही नही पडती। अीश्वरने मनुष्यको आखे देकर कृतार्थ किया है। दो भीगी आखे मनचाहा भाव पूरी तरह व्यक्त कर सकती हैं। मैंने सब लोगोसे अितना तो कहा ही कि फिरसे आपके देशमे आये बिना तृप्ति होनेवाली नहीं है। सुबहवाले शाकाहारी मण्डलके लोग फूल और भेंट

लेकर काफी बडी संख्यामें हमें विदा करने आये थे। गुरुजीके शिष्योंने पखे बजाते हुअे 'नम् म्यो हो रेगे क्यो' से हमें विदा दी। आधी रात होने आअी थी। विमान आकाशमें उडते ही टोकियोकी रत्न-नगरीका विस्तार हमारे आंखोंके सामने आ गया। नीद आनेमें बडी देर लगी। आंखे लगी ही थी कि अितने मे हमने अेक प्रचण्ड तूफानका अनुभव किया।

हम ओकीनावा द्वीप परसे गुजरे होंगे कि अितनेमें आकाशमें अेकाअेक झझावात शुरू हुआ—'झझावात सवृष्टिक।' वर्षाकी झडी शुरू हुअी और हमारा हवाअी जहाज बादलोंसे घिर गया। पथरीली जमीन पर मोटर जिस तरह दौडती है अुस तरह हमारा विमान हवामें खडवड करता हुआ और डोलता हुआ चलने लगा। धक्के बढने लगे। चालक (पायलट) ने कमर पर पेटी (belt) बाधने की सूचना देनेवाली बत्ती जलाअी। सारे यात्री चौंक पडे। लेकिन कोअी कर ही क्या सकता था? क्या हो रहा है और क्या होनेवाला है अिसकी कल्पना करते हुअे अपने स्थान पर डटे रहें, बस यही हमारा कर्तव्य था।

अितनेमें विमानके अूपरका वायरलेसका तार तडाकसे टूट गया। अुस तारके दोनों टुकडे चाबुककी तरह विमानकी पीठ पर प्रहार करने लगे। यह आवाज सचमुच भयकर थी। पायलटने तूफानसे बचनेके लिअे विमानको हजार फुट अूपर चढाया। फिर भी कोअी फर्क न पडा। बिजली चमक रही थी, वर्षा हो रही थी और वायरलेसके टुकडे फटाक-फटाक चाबुकके समान मार मार रहे थे। विमानके यात्रियोंका ध्यान रखनेवाली सेविका भी जो हर वक्त प्रसन्नतासे काम करती थी अब घबडा गअी। अुसका चेहरा पीला पड गया। यात्री स्तम्भित होकर अेक-दूसरेका मुह देखने लगे।

अिस तरह कोअी दो घटे निकल गये, फिर भी तूफान कम होनेके लक्षण दिखाअी नही दिये।

अितनेमें विमानका अेक पायलट अपने कमरेसे बाहर आया। मैंने अुनसे पूछा 'चाबुककी-सी आवाज आ रही है, यह क्या है?' अुन्होंने कहा 'यह तो वायरलेसका तार टूट गया है।' चिंतातुर होकर

मैंने पूछा 'तब तो हम अपनी हालत बाहरकी दुनियाको किसी भी तरह नही समझा सकेंगे।' अुन्होने कहा, 'अैसा तो नही है, विमानके पेटके नीचे दूसरा तार है। बात असलमें यह है कि हम अिस क्षण ओकीनावा और हागकाग दोनो जगह सदेश भेज रहे है। आजका तूफान सचमुच खराब है। जोखिम-जैसा तो नही है, लेकिन हमने अिससे पहले अैसा तूफान नही देखा।'

अब तो विमानके चारो ओर जोरोकी बारिश शुरू हो गअी। फट-फटकी तालबद्ध आवाज परेशानी पैदा करनेवाली न होती तो मैं अुसे मजेदार ही कहता।

मैंने अनुभव किया है कि जोखिमके वक्त चि० सरोज बिलकुल भी परेशान नही होती। हम पास-पास बैठे तूफानकी प्रत्येक क्रियाका अवलोकन कर रहे थे और अुसीकी बाते करते जा रहे थे। अुसके बाद स्वाभाविक तौरसे जोखिमें कितनी प्रकारकी हो सकती हैं, किस-किस तरह मृत्यु आ सकती है अिनकी बातें हमने ठडे दिमागसे – अथवा बधे पेटसे – की। अिन परसे फिर हम आत्माकी अमरत्वकी बातो पर आ पहुचे। न बातें खतम हुअी और न तूफान ही बन्द हुआ। दो सौ तीन सौ मीलका यह तूफान हमने अिस ओरसे अुस ओर तक पूरा पार किया होगा। अुसके बाद ही आखिर आकाशकी कालिमा बदली। बाअी ओर पौ फटनेका-सा आभास हुआ। फिर तो अुषाका प्रकाश भी बादलोकी आज्ञा लेकर हम तक आ पहुचा। तूफान शात हुआ, यात्रियोके जीमें जी आया और हम सही-सलामत हागकागके पासके काअुलून हवाअी अड्डे पर पहुच गये।

हागकागसे ग्यारह बजे हमारा विमान फिरसे अुडनेवाला था अिसलिअे हमें मिलने आये हुअे भाअी शशिकान्त नानावटीकी मोटरमें बैठकर हम थोडा घूम आये। हागकाग बन्दरगाह असाधारण सुन्दर है। आन्तरराष्ट्रीय अड्डा होनेके कारण यहा सब चीजे सस्ती मिलती है। भोगविलासका तो यह पीहर माना जाता है। हमने अिधर-अुधर घूमकर आस-पासका दृश्य देखा, नाश्ता किया और कुछ दूर 'टाअिगर' नामका अेक पैगोडा दिखाअी दे रहा था अुसके बारेमें बातें सुनी और फिरसे विमान पर चढे।

बैंकाकमे हमारा विमान जरा बीमार हो गया, अिसलिअे अुडनेमें थोडी देर हुअी। शामको रगून पहुचे। अुस दिनकी रात भी हमें पहली बारकी तरह वही बितानी पडी। रास्तेमे बर्मी लोग रग-पचमीका अुत्सव मना रहे थे। हवाअी अड्डे पर हमें कोअी लेने नही आया था अिसलिअे स्ट्रेड होटलमें रात बिताअी। फिर सुबह अच्छी तरह नहा-धोकर हम आगे बढे। हमारा विमान कलकत्ता पहुचनेसे पहले पाकिस्तानकी राजधानी ढाकामें रुका था। अुसके बाद की हवा बडी खराब थी। कितने ही लोगोको अुससे तकलीफ हुअी। आखिर हम दोपहरके बारह बजेके बाद कलकत्ता पहुचे। कलकत्तासे चि० सरोज सीधी दिल्ली गअी और मै सर्वोदयके वार्षिक सम्मेलनके लिअे बोधि गया पहुचा। वहा मुझे श्री विनोबाके साथ जापानके अनुभव की, बौद्ध जगतकी और धर्म-समन्वयकी बाते करनी थी।

अिस तरह चौदह-पन्द्रह दिनमें अेक महान सस्कृतिके प्रतिनिधि जापान देशकी यात्रा पूरी करके हम वापस आये। हमें मनुष्य-जातिके और खासकर अेशियाके राष्ट्रोके अनेक सवालोका प्रत्यक्ष परिचय हुआ, दृष्टि व्यापक हुअी और भारतके युग-कार्यका खयाल हमारे मनमें स्पष्ट हुआ।

हम लोगोको सूर्योदयके अिस देशके साथ परिचय बढाना ही चाहिये। भारत और जापानके बीच केवल व्यापारी लेन-देन ही नही, बल्कि सस्कृतिका लेन-देन भी होना चाहिये और बढना चाहिये।

यह जगत अेक और अविभाज्य है। प्रत्येक देशके सवाल सारी मनुष्य-जातिके सवाल है। हम सब अेक-दूसरेके है। सब मिल-कर ही मनुष्य-जाति बनती है। अिस वस्तुका साक्षात्कार हमारे अदर दृढ होना चाहिये।

सूर्योदयका देश

दूसरी यात्रा — १९५७

१
तैयारी

मद्रास जाते हुअे चलती ट्रेनमें से,
८-६-५७

दूसरी बार जापान जानेकी बात तय हो रही है। मेरी अिच्छा तो वहां जानेकी थी ही, अब वहांके लोगोंका निमंत्रण भी आया है, अिसलिअे मैंने हां कर दी है। सन् १९५४ मे हम लोग अेक बार जापान हो आये हैं। अुस बार राजधानी टोकियोसे दक्षिणकी ओरका सारा जापान देश हमने देखा था। अिस बार मैंने निमंत्रण भेजनेवालों पर यह अिच्छा प्रकट की है कि अुत्तरसे दक्षिण तकका सारा जापान देखनेकी सुविधा वे हमें कर दें। अुत्तरकी तरफके होक्कायडो द्वीपमें मैं खास तौरसे घूमना चाहता हूं। अिसका कारण यह है कि वह प्रदेश रमणीय जापानमें भी विशेष रमणीय है। लेकिन अिसके अलावा अेक खास बात यह है कि अुस द्वीपमें जापानकी 'आयनु' नामकी आदिम जाति रहती है। यह जाति जापानियोंकी तरह पीले मंगोल-वंशकी नहीं है, बल्कि यह लम्बे बालोंवाले काकेशियन वंशकी है। धीरे-धीरे ये लोग नष्ट होने जा रहे हैं। अिसलिअे अिन लोगोंको देखनेकी मेरी खास अिच्छा है।

तुम्हें याद होगा कि अेक बार सीलोन-यात्राके विषयमें बताते हुअे मैंने तुम्हें लंकाकी वेद्दा जातिकी जानकारी दी थी। यह जाति भी मिटती जा रही है। अिन लोगोंके बारेमें मैंने जब पहली बार सुना था, तब अिनकी संख्या बीस-तीस हजार बताअी जाती थी। लेकिन बादमें सुना कि यह तीन-चार हजार ही रह गअी है। अब तो कहते हैं कि सीलोनमें वेद्दा जातिके कुल सौ-दो सौ परिवार ही बचे हैं। सभ्यतामें आगे बढ़े हुअे अिस जमानेमें जब कि जीनेकी कला का सब तरहका विकास हुआ है और मनुष्य अपनी सामाजिक जवाबदारी भी

पहचानता है, तब कोअी जाति अिस तरह नष्ट होती जाय और अुसके लिअे हम कुछ भी न कर सके, तो मनमें बडा दुःख होता है।

[मेरी माने अपनी आखिरी बीमारीमें काफी कष्ट अुठानेके बाद अेक दिन मुझसे कहा, 'दत्तु, तुम्हें और तुम्हारे पिताजीको अितनी मेहनत करते देखकर मुझे विश्वास हो गया था कि अिस बीमारीमें मैं अच्छी हो जाअूगी। पर अब लगता है कि तुम लोग मुझे बचा नहीं सकोगे। अवस्था हो जाने पर अिस दुनियासे अुठ जानेके अलावा कोअी चारा भी नही है। लेकिन तुम लोगोंको छोडकर जाने का मन नहीं होता।' अितना कहकर वह रो पडी और अेक लोक-गीतकी कडी गुनगुनाने लगी

'मोडूनिया पिल्ले कशी जाअू वना'।

अर्थात् अिन बच्चोंको छोडकर किस तरह वनमें जाअू।

'वेद्दा' अथवा 'आयनु' जैसी जाति का अस्तित्व हमारे बीच मे मिट जानेवाला है, अैसा जब कुछ लोग बडी आसानीसे कहते है, तब मुझे न मालूम कैसी बेचैनी-सी होने लगती है। मानव-जातिके अिन अपने ही भाअी-बन्धुओके विनाशको रोकनेका क्या कोअी भी अिलाज नहीं है?]

खैर। और कुछ नहीं तो कम-से-कम अिस जातिके लोगोंके दर्शन करू, और अुनके जीवन-क्रमको देख-परख कर जापानके लोगोंके साथ अुसकी चर्चा करू, अैसी अिच्छा पहली यात्राके समय भी मेरे मनमें थी। लेकिन अब जब अुस प्रदेशको देखनेका मौका मिल रहा है, तब तुम साथ नही चल सकती, अिसका मुझे सचमुच अफसोस है।

जब हम नये अनुभव प्राप्त करते है तब पुराने अनुभवोको याद करके नये और पुरानो की तुलना करना बडा ही आनददायी होता है। अैसा करने से हमारा जीवन भी समृद्ध बनता है। अिन पन्द्रह-बीस वर्षोंमें हमने न मालूम कितनी यात्राअे साथ-साथ की है। हिमालयकी तराअीसे लेकर कन्याकुमारीके सागरसगम तक और सिंधके नचर सरोवरसे लेकर असमके अुतने ही विशाल लबतक सरोवर तक हम कअी बार घूमे है और जी भरकर हमने भारतका दर्शन किया है। अिसी तरह अफ्रीका और यूरोप में भी हम साथ-साथ घूमे है। मुझे स्वप्नमें भी यह खयाल नही था कि दुनियाकी कोअी भी यात्रा मैं

तुम्हारे विना कर सकूगा। लेकिन तुम्हारी तबीयतने धोखा दिया, अिसका क्या अिलाज? खैर। कोअी-न-कोअी तो सफरमें मेरे साथ रहेगा ही। लेकिन हमने साथ-साथ रहकर जो यात्राअे की हैं, अुनके सस्मरणोकी पूजी भला दूसरेके पास कहासे हो सकती है।

मराठीमें अेक कहावत है 'दुधाची तहान ताकावर भागवावयाची'। दूधकी भूख छाछ पीकर मिटाना। अिस न्यायके मुताबिक अिस यात्रामें मैं जो कुछ देखूगा, कहूगा और सोचूगा, अुसका सब हाल तुम्हे बराबर लिखता रहूगा। समय-समय पर वहाके अपने पते भी मैं तुमको लिखूगा ही। फिर भी वहाके दो स्थायी पते तो तुम्हे दे देता हू। वहासे हम जहा भी हो वहा तुम्हारा पत्र तुरत पहुच जाय, अैसी व्यवस्था करवा देगे। पहला पता —

Bhikhu Imai San,
Nipponzan Myohoji,
Ryogoku Nihonbashi,
Chuo-ku,
Tokyo Japan

दूसरा पता —

C/o The Indian Embassy,
Tokyo Japan

आजादी मिली तब से यह दूसरी सुविधा हमें आसानीसे मिल जाती है। मेरे पुराने पासपोर्टके सारे पन्ने भर गये हैं अिसलिअे नया पासपोट बनवा लिया है और अुसके आधार पर जहा-जहा जाना है, अुन देशोके वीसा भी ले लिये हैं।

अब हैजेका और चेचकका टीका लगवाना बाकी है। विदेशमें खर्चके लिअे पैसे साथ ले जानेकी अिजाजत भी सरकारसे लेनी पडती है और फिर अुसके मुताबिक यात्री-हुण्डी (ट्रेवलर्स)चैक भी लेनी पडती है। यह सारी तैयारी अभी करनी है। सुना है कि दो सौ सत्तर रुपये तक साथ ले जानेके लिअे सरकारकी अिजाजत नही लेनी पडती। लेकिन अितनेसे हमारा काम नही चलेगा, अिसलिअे कुछ अधिक रकम साथ

जाने की अिजाजत तो लेनी ही पडेगी। आशा है कि अिसमें कोअी दिक्कत नही होगी।

चि० शरद और बच्चोंको मेरे सप्रेम शुभाशिष कहना। तुम्हारे लिअे तो सदा मेरे सप्रेम शुभाशिष है ही। तुम्हारे माता पिताने तुम्हे फूलका नाम दिया है और वह भी भारतके प्रतीक सरोजका। अिसलिअे तुम्हारे लिअे तो फूल जैसे ही कोमल व ताजा शुभाशिष भेजने चाहिये। आजकल तो पत्र हवाअी जहाजमे अुडकर पहुचते है, अिसलिअे फूलोंके आशीर्वाद भी बासी नही होंगे।

२

साथी

'सन्निधि', राजघाट
नअी दिल्ली-१
१४-७-५७

कल चि० अवनीका ट्रक-काल आया था। अुन्होने चि० मजुको मेरे साथ भेजना तय किया है। अिस बारेमें कल तुम्हे ट्रक-कालमे बताया ही है। लेकिन सब बात विस्तार मे लिखू, यह अच्छा है।

चि० बालकी बडी अिच्छा थी कि चि० रेवतीको मैं अपने साथ ले जाअू। रेवतीको अुसके माता-पिताने कालेजकी शिक्षा दी, लेकिन अुसे परदेश जानेका मौका अभी तक नही मिला। मैं कहा करता हू कि देशाटनके बगैर शिक्षा पूरी नही होती। यात्राके द्वारा जो ज्ञान व सस्कार मिलते है वे कालेजकी शिक्षाकी अपेक्षा हजार गुने अधिक महत्त्वके होते है। अिस कारण बालकी अिच्छाका स्वागत करू तो अिसमें आश्चर्य ही क्या! बालने यह भी कहा कि "सरोजबेन आपके साथ जाती तब तो कोअी सवाल ही न था। लेकिन जब वे नही जा रही है तब अिस अुमरमें आपके साथ घरका कोअी हो तो अच्छा रहे।" मै मानता हू कि सफरमें मै अपनी सार-सभाल ठीकसे रख सकता

हू। पश्चिमी अफ्रीकाकी और मिस्रकी सारी यात्रा मैने अकेले ही की थी। फिर भी साथ मे कोअी हो तो अच्छा, यह सोचकर रेवतीको साथ में ले जानेका तय किया है।

अिसी बीचमे टोकियोमे भिक्षु मारुयामाका पत्र आया —'आपके साथ अेककी जगह दो बहने आवे तो हर्ज नही है।' अिसलिअे मैने अवनीको लिख दिया कि 'यदि बहुत देर न हुअी हो और आप सब व्यवस्था कर सके तो आपकी अिच्छानुसार चि० मजुको मै अपने साथ ले जा सकता हू।' वे राजी हो गये है। लेकिन मुझे डर है कि वीसा स्वास्थ्य-प्रमाण-पत्र (हैल्थ सर्टिफिकेट) तथा विदेशी-मुद्रा आदिकी व्यवस्था करना आसान नही है। अिसलिअे मेरी कल्पनाके अनुसार मजुका जाना सभव नही मालूम होता। फिर भी अवनीकी कार्य-शक्ति गजबकी है। दौड-धूप करके सब ठीक-ठाक कर लेगा, अैसा लगता है।

मैने यह सोचा कि जब अवनीने अिच्छा प्रकट की है और यदि व्यवस्था हो सकती है तो अुसको पूछ ही लेना चाहिये। । दूसरे मैने यह भी सोचा कि दो बहनें साथमे होगी तो अेक-दूसरेके सहवासमे प्रसन्न रहेगी। कोअी भी अकेली रहेगी तो मुझे अुसकी ओर ज्यादा ध्यान देना होगा। अिसलिअे मै समझता हू कि अवनी आखिरी वक्त भी मजुकी तैयारी करा देगा और हम तीनो जापानकी यात्राको निकल पड़ेंगे।

साथमे मुझे जितने पैसे लेने है अुसकी अिजाजत लेनेके लिअे बबअीमे रिजर्व-बैकके श्री आयगरसे मिलना होगा। मै कलकत्ता अितवारको पहुचूगा, अिसलिअे वहा अिस सबधमे कुछ हो नही सकेगा। अिस कठिनाअीकी ओर चि० अमृतलालने मेरा ध्यान दिलाया। अिसलिअे बबअी अेक दिन पहले पहुचकर सारी व्यवस्था वहीसे कर लेगे। विदेशी व्यापारकी आजकी परिस्थितिके कारण हमारे देशकी फारेन-अेक्सचेजकी हालत अभी विषम है। अिस कारण अिन दिनो देशका पैसा परदेशमे ले जाना हितकर नही है।

यहाके अेक बडे अफसर ने मुझसे कहा था —"आप तो राज्य-सभाके सदस्य है, आपको विदेशी-मुद्रा मिलनेमे दिक्कत नही होनी चाहिये।" अुनका यह कहना ठीक था। लेकिन राज्य-सभाके सदस्यका

धर्म तो यह है कि वह स्वराज्य-सरकारकी नीतिका ज्यादा अच्छी तरह पालन करे। अिसलिअे अत्यंत आवश्यक पैसोंकी ही अिजाजत लेनेका मेरा विचार है। यहासे विदेश जाकर अनेक देशोंमें घूम-फिर-कर वापस आनेके लिअे हवाअी जहाजकी टिकटें वगैरा लेनी होगी। अुनके पैसे यही अेयर अिंडिया अिन्टरनेशनलको दे देते हैं। जापानमें मेरे अकेलेका खर्च तो वहा के लोग ही अुठानेवाले हैं। अिसलिअे मुझे पैसोंकी खास दिक्कत नही होगी। लेकिन विदेश जायें और पासमे पूरे पैसे न हो और अुस कारण किसी कठिनाअीमें पड जाय, यह शोभा नही देता। अिसलिअे दो-तीन हजार रुपयोंकी फारेन-अेक्सचेंज लेकर जो रुपये वहा खर्च न हो वे वापस लाकर यहा जमा करा देनेका मेरा विचार है।

३

खिड़कीके बाहर

(वर्धा स्टेशन आनेवाला ही है)
दोपहरको १२ बजे
२०-७-५७

भुसावलसे पहले हमारा अेन्जिन बिगडा। अिसलिअे गाडी बडी देर तक खडी रही। अब दूसरा अेन्जिन हमें खींच रहा है। सुबह अुठ-कर श्री कुंदरकी पुस्तककी पाडुलिपि पढी और पाच पन्नोंकी प्रस्तावना चि० रेवतीको लिखाअी। कुछ बाकी रहे हुअे कामोंको भी पूरा किया। ट्रेनमें अेक अमरीकी (मूल स्विस) क्वेकर दम्पती मिले। अुनसे साढे नौ बजे तक बातें हुअी। भारतमें मध्यम वर्गके कुटुम्बोंमें तलाक करीब-करीब होता ही नहीं, यह जानकर अुस बहनको बडा आश्चर्य हुआ।

सुबह खिडकीके बाहर देखते हुअे मैंने रेवतीसे कहा, "जब कोअी अैसा मनमोहक और सुन्दर दृश्य दिखाअी देता है तो अुसमें आनन्द-विभोर होना सरोजको खूब आता है। प्रकृति-रसिक साथीका साथमें होना अेक

अहोभाग्य ही है।" रेवतीने अपने बचपनकी और खंडाला घाटमें खोपोलीके पास रहने व घूमने-फिरनेकी बातें बताअी।

अभी वर्धा स्टेशन आने ही वाला है। वहा हम बरसो रहे है। तब कअी बार पूज्य बापूजीसे मिलने भी जाया करते थे।

४

प्रस्थान

डमडम हवाअी अड्डा
२१-७-५७

थोडी ही देरमें हवाअी जहाज पर चढकर हम भारतका आकाश छोडनेवाले हैं। मैं लिखने लगा था कि 'भारतका किनारा छोडनेवाले हैं,' लेकिन न तो कलकत्ता समुद्रके किनारे है और न मेरी यात्रा ही समुद्री जहाजमें हो रही है।

दोपहरको करीब तीन बजे हम कलकत्ता पहुचे। आम तौर पर अितनी देर नही होती। मैंने श्री सीतारामजीके यहा नहा-धोकर खाना खाया तथा वहा मिलने आये हुअे जापानी लोगोंसे मिला। अपने लोग तो काफी मात्रामें आये ही थे।

वर्धा सेवाग्राममें मैंदा नामके अेक जापानी प्रोफेसर काम करते हैं। वे भी यहा मिले। अुनकी बहन सेवाग्राममें रहनेके लिअे जापानसे आअी है। अुसे लेने वे यहा आये हैं। अुस बहनने हमें 'गुलछडी' के सुन्दर फूल दिये। वे फूल ताजे, सुगधित और बडे सुन्दर थे। अुनकी सुगंध यदि पत्रके द्वारा भेजी जा सकती तो कितना अच्छा होता!

हमारा जहाज बम्बअीसे आ पहुचा है। अुसमें चि० मजु आअी है। अुसे मिलने अुसके पिता ठाकोरभाअी और अुनके भाअी जयंती भाअी वगैरा काफी लोग आये हैं। मजुने मेरे नामका तुम्हारा पत्र मुझे दिया। बडी खुशी हुअी। अुसे आरामसे फिर पढूगा, वरना यह पत्र पूरा नहीं हो पायगा। मैं अभी-अभी अेअर अिंडिया अिंटरनेशनलके

जलपान-गृहमे स्वादिष्ठ चोकोलेटका दूध पी आया हू। ये लोग वडे सज्जन है। यात्रियोंकी सब प्रकारसे सहायता करते है। मजुके आते ही असको असके पिताजीसे मिलानेकी सुविधा भी मैं अिन लोगो की मददसे कर सका।

वस अव अधिक लिखने का समय नही है। न मालूम भारतका दर्शन अव फिर कव होगा?

५

वातावरण और अुदावरणके वीच

हागकाग छोडनेके वाद
दोपहरको १ वजे
२२-७-५७

हागकाग छोडनेके वाद यह खत लिख रहा हू।

कल रात करीव पौने दस वजे कलकत्तासे हमारा जहाज अुडा। अुसके वाद तुम्हारा खत आरामसे पढा। फिर प्रार्थना की और सो गये। अिन लोगोने हम तीनोको वैठनेकी जगह पास-पास ही दी है। सुवह चार वजे वैंगकाक आया। वहाका हवाअी-अड्डा परिचित था। कॉफी पीकर आखोंसे नीद अुडाअी। और हागकागकी प्रतीक्षामें नीचेका देश देखते हुअे आगे वढे।

अपने कमिश्नर श्री अडारकरको चि० सतीशका पत्र मिला ही नही था। अिसलिअे वे मिलने कैसे आते? मैंने हवाअी-अड्डेसे अुनको फोन किया तव अुन्हे वडा आश्चर्य हुआ। आखिरी वक्त दौडकर आना तो सभव था ही नही, क्योंकि हागकाग शहर तो अेक द्वीप पर वसा हुआ है और हवाअी-अड्डा है खण्डस्थ भूमि काअूलून नामकी जगह पर। मोटरसे आते हुअे समुद्र पार करना पडता है। अुसीमें आधा घटा तो आसानीसे निकल जाता है।

हागकाग पहुचते ही तुम्हारी व्यवस्थाके अनुसार रेवतीने तुम्हारा अेक खत मुझे दिया। अब हम अुसी आकाश-खण्डमें आ पहुचे हैं जहा तीन साल पहले टोकियोसे हागकाग जाते हुअे हम रातको दो वजेके वाद हवाअी तूफानमें फसे थे।

तुम्हे याद होगा कि अुस समय हमारा हवाअी-जहाज समुद्रके जहाजकी तरह डोल रहा था। वायरलेसका अेक तार टूटकर जहाजकी पीठ पर फटाक्-फटाक् कोडे मार रहा था। तूफानसे वच निकलनेके लिअे सारथीने जहाज हजार-दो हजार फुट अूपर ले जाकर देखा, लेकिन दो सौ मील तक तूफानने हमारा पीछा छोडा ही नही। तुम्हे यह भी याद होगा कि जव मैंने सारथीसे पूछा था तो अुसने वताया था कि वेतार (वायरलेस) का अेक ही तार टूटा है दूसरा सही-सलामत है। और यह कि वे ओकिनावा और हागकागके साथ वेतारसे वात कर रहे हैं। अुन्होंने वताया था कि कोअी खतरेवाली वात तो नही है, लेकिन अैसा खराव तूफान हम पहली ही वार देख रहे हैं।

यात्री सव अवाक् रह गये थे। वेचारी अेअर होस्टेस भी घवडा गअी थी। शान्त थे केवल सारथी, अुसके साथी और हम। चाहे जैसा कठिन प्रसग हो तो भी तुम घवडाती नही हो। मेरे लिअे अपनी यात्राकी यह अेक वडी विशेषता है। हम अुस दिन आत्माकी अमरता, लडाअीके सैनिकोकी मनोवृत्ति वगैरा कअी विषयो पर वातें कर रहे थे और खिडकी के रास्ते अरुणोदय की राह देख रहे थे।

अुस दिनके अनुभवके वाद आजका आकाश और नीचेका समुद्र विल्कुल ही शान्त — सलोना समुद्र माफ करे तो — अलोना लग रहा था। मैंने चि० रेवतीको और मजुको पिछला सारा हाल वताया। हवा अितनी शान्त थी कि सामान्यतया विमानकी गति का जो अनुभव होता है वह भी आज नही हो रहा था। नीचे के समुद्र पर भी लहरियोंकी खाअी खास लीला नहीं दिखाअी दे रही थी।

हमारी वाते खतम होते ही मेरा मन अभी तक देखे हुअे सागरोंके चित्रोंको ताजा करनेमें लग गया। समुद्री जहाज (स्टीमर) से समुद्रका जो दर्शन होता है वह प्रत्यक्ष है और विमानमें से जो होता है

वह परोक्ष है —— अैसी अेक भावना मेरे मनमे बैठ गअी है। यद्यपि समुद्री जहाजमे तो पानीका दो सौ-तीन सौ मीलका विस्तार ही दिखाअी देता है, जब कि विमानमे से हजारो मील तकका विस्तार एक साथ दिखाअी देता है। अुसमें विश्व-रूप-दर्शनकी यह धन्यता होते हुअे भी समुद्रकी लहरे अितने अूचेसे बिलकुल निर्जीव-सी लगती है, यही मुझे नही रुचता है। दससे बीस हजार फुटकी अूचाअीसे समुद्रके किनारेकी प्रचण्ड लहरे अितनी गरीब-सी लगती है कि समुद्रके प्रति दया हो जाती है।

अिस तरह देखें तो जब हवाअी जहाजसे जमीन दिखाअी देनी बद हो जाती है और विमानके नीचे व आसपास क्षितिजके वलय तक केवल पानी-ही-पानी दिखाअी देता है, तब अपने जगतके विषयमें तरह-तरहके विचार मनमें आते है। कही भी जमीन दिखाअी न दे और जिसके पेटमें अपना यह विमान अथवा हम जी ही न सकें अैसा पानीका विस्तार दिखाअी दे तब जमीनवासीके नाते मेरा मन अस्वस्थ हो जाता है।

जब हम जमीन पर होते है तब हमें अूपरका आकाश अपार विस्तार और स्वतत्रताका आश्वासन देता है। लेकिन यहा वही आकाश समुद्रके अूपर रखे हुअे अेक डिब्बेके ढक्कन जैसा मालूम होता है और किसी तरहका आश्वासन तो देता ही नही है।

बबअीसे भावनगर जाते-जाते जो समुद्र दिखाअी देता है वह तो घरका-सा ही लगता है। अुसके प्रति आत्मीयता हो जानेसे वह भव्य नही लगता। अफ्रीकाके अमरसर (लेक विक्टोरिया) के अूपर होकर हम गये थे तब तो वह बिलकुल अुथला लगता था। मोम्बासासे लिंडी तक रुकते-रुकते अलग-अलग टुकडोमें गये तब महासागर और महाद्वीप आपसमें शेकहेड कर रहे हो, अैसा लगता था। दारेस्सलामसे हम जजीबार गये तब अुडे और अुतर पडे—अैसा अनुभव आया था और अिसलिअे अैसा ही लगता था कि मानो समुद्रका अपमान कर रहे हो। गगोत्रीमें गगाके छोटेसे प्रवाहके दाअें किनारे पर अेक पैर और बाअें पर दूसरा पैर रखनेसे जैसे अुस प्रवाहके प्रति आदर नही बढता अुसी प्रकार दारेस्सलामसे जजीबार जाते हुअे समुद्रके सबधमें अनुभव होता है।

अेडिन अबाबा से अेडन जाते वक्त हम लोग आकाशमें अैसी जगह पहुंचे थे जहांसे अेक ओर अफ्रीकाका किनारा और दूसरी ओर अेशियाका किनारा दिखाओ देता था। वहां भी भूमिकी अपेक्षा जलका महत्त्व विशेष है अैसा नहीं लगता था।

भूमिकी अल्पता पहले-पहल तभी ध्यानमें आओ जब मैंने काहिरासे बम्बओ जाते वक्त १८००० फुटकी अूंचाओीसे सारा काठियावाड अेक नजरमें देखा।

समुद्रकी भव्यता तो औरानकी खाडीमें, भूमध्य सागरमें और लन्दनसे लिस्बन जाते समय अटलांटिक महासागरमें दिखाओ पडी। अुसके बाद पश्चिमी अफ्रीका जाते वक्त दक्षिणके अटलांटिक महासागरने तो मेरा मन ही हर लिया।

लेकिन मेरी भक्ति तो यह महासागर ही पा सका है। न मालूम क्यों? अुसकी विशेष गहराओीसे? या अुसके अितने बडे विस्तारसे? या अुसके मनमोहक सूर्योदयसे? यह कहना मुश्किल है। लेकिन प्रशांत महासागर देखते ही मनमें यह भाव आता है कि मनुष्यको अुसके सामने नम्र होना चाहिये।

जिस पृथ्वी पर जमीनसे तीन गुना पानी है। अुस पानीके अन्दर पली हुओ जीव-सृष्टिको हम गौण क्यों मानें? अैसा विचार मनमें आया पर वह टिका नहीं। हम लोगोंने आकाशके साथ जितनी दोस्ती कायम की है अुतनी समुद्रके साथ अथवा अुसकी गहराओीके साथ पैदा नहीं की है, यह तो कबूल करना ही होगा। हम सब वातावरणकी प्रजा हैं, अुदावरणकी नहीं।

अभी ओकीनावा द्वीप आयेगा। जब जब यह द्वीप देखता हूं तब-तब जिसकी प्रजाके लिये मनमें सहानुभूति जागृत होती है। अमरीकी लोगोंने जिस द्वीपको हवाओ जहाजका बडा सैनिक अड्डा बनाया है। नतीजा यह हुआ है कि वहांके लोग और अुनका जीवन गौण व अपमानित बन गया है। यह जापानका ही अेक हिस्सा होते हुअे भी अलग [illegible] कर दिया गया है और वहां जबरदस्त सैनिक तैयारियां चल रही हैं।

प्रशांत महासागरमें सैण्डविच द्वीप समूहमें हवाअी नामका अेक टापू है। अुसके अन्दर होनोलूलूका ज्वालामुखी अखण्ड प्रज्वलित रहता है। लेकिन यह ज्वालामुखी अितना विस्फोटक नही है जितनी ओकीनावाकी आजकी सैनिक तैयारी है। किसीकी छातीके सामने पिस्तौल तान कर हम अुसे कहें "तू स्वस्थ चित्तसे अपना काम करता रह।" अुसी तरह अमरीकी लोग ओकीनावामें सैनिक तैयारी बढाते हुअे अेशियाके लोगोसे कहते है "आपको अभयदान है, हम आपके जीवनमें दखल नही देना चाहते। आप चाहे तो हम मदद भी करेंगे।"

मैं अेक बार जापान हो आया हू। वहाके लोगोसे परिचय हुआ अिसलिअे अिस बार अुस परिचयको बढानेकी अुत्सुकता है। जब हम पहले गये थे तब अज्ञात प्रदेश देखनेकी अुत्सुकता थी। वह अिस बार नही है। लेकिन आत्मीयता बढती जा रही है।

६

टोकियोमें – १

टोकियो,
२३–७–'५७

हम कल रातको आठ बजेसे पहले ही टोकियोके हवाअी अड्डे — हानेदा पहुच गये। भारतके विदेश कार्यालयके सचिवालयसे मेरे आनेकी खबर यहा पहुच गअी थी। अिसलिअे यहाके दूतावासके प्रथम सचिव श्री मल्लिक हमें मिलने आये थे। हम लोग जब अिथियोपियाकी राजधानी अेडिसअबाबा गये थे तब श्री मल्लिक हमें मिले थे, यह तुम्हें याद होगा। वहा वे अपने राजदूत सरदार सतसिंहजीके मातहत काम करते थे। पहले वे मेरी दाढी देखकर जरा चकराये, लेकिन फिर अुन्होने सोचा कि भारतसे हवाअी जहाज द्वारा आये हैं अिसलिअे और कौन हो सकते हैं? हवाअी अड्डे पर दूतावासके लोगोको सबसे पहले मिलने देते हैं अिसीलिअे वे सर्वप्रथम मिले। अुसके बाद मिले — गुरुजीके पट्टशिष्य — हमारे आनन्द

अितनी सुन्दर गाढी नीद आअी कि कोअी छोटा-सा सपना भी पास फटक न सका।

सुबह हम Anti Atom Bomb and Hydrogen Bomb और For disarmament वाली परिषद्के दफ्तरमें गये। आन्तर-राष्ट्रीय पूर्व तैयारीकी समितिमे (International Preparatory Committee) में पहुचते ही अुसके अेक मत्री मि० मॉरो, जो आस्ट्रेलियासे आये है, खडे हुअे और अुन्होंने मेरा अभिनन्दन करते हुअे बताया "कल ही हमने आपको अपनी समितिका अुप-प्रधान चुना है। आपको पूछनेके लिअे भी हम नही ठहरे!" अिस सम्मानके लिअे मैंने अुनका आभार माना और कहा "मैं जानता हू कि भारतकी सरकार और भारत-राष्ट्र विश्व-शांतिके लिअे जो कुछ कर रहा है अुसीकी कदर करनेका आपका हेतु है।" अुनसे मैंने यह भी कहा "टोकियोमें रहकर अुनके काम-काजमें मैं हिस्सा नही ले सकूगा, क्योंकि मेरा कार्यक्रम जापानके सारे देशमें घूमनेका है। आन्तरराष्ट्रीय समितिमें बैठकर काम करनेके महत्त्वको तो मैं स्वीकार करता हू, लेकिन मैंने तो अपना समय सारे देशमे घूमकर जन-सम्पर्कके लिअे देना निश्चित किया है। परिषद्के दिनोंमें तो मैं जरूर अुपस्थित रहूगा। आपकी पूर्व तैयारीमें मदद देनेके लिअे भारतसे प० सुन्दरलाल आनेवाले है। वे पूरा समय आपके साथ रहेंगे।"

अिसके बाद समितिमें अेक गम्भीर प्रश्न पर चर्चा हुअी।

जापानके हवाअी अड्डे अमरीकाके अधिकारमे है। अणु-बमके लिअे अिनका अुपयोग करना हो तो अिन हवाअी अड्डोंका काफी विस्तार करना होगा और आसपासकी खेतीकी जमीन भी फौजी कामके लिअे अिस्तेमाल करनी होगी। जापानी सरकार अिस तरह जमीन देनेके लिअे तयार हो जाय यह यहाकी प्रजाके लिअे असह्य है।

अेक तो जापान छोटा देश है, अिसके अलावा वहा चारो ओर पहाड ही पहाड है। जनसख्या बेहिसाब बढी हुअी है। खेतीके लायक जमीनका क्षेत्रफल मुश्किलसे चालीस फी सदी है। अिसलिअे खेतीकी जमीनका दूसरी चीजोंमें अुपयोग किया जाय अिसे जापानी लोग कैसे

रहन कर सकते है ? आजकल अिसी सिलसिलेमे कही-कही सत्याग्रह भी चल रहा है। समितिमें किसीने सवाल अुठाया कि जब हम लोग अिसी कामके लिअे अेकत्र हुअे है तब हमें अिस सत्याग्रहमे भाग लेना चाहिये या नही ? कुछ लोग कहने लगे कि हम लोग अिस देशके रहनेवाले नही हैं। यहाकी सरकारकी अिजाजत लेकर मेहमानके नाते आये है। हमे यहाके सत्याग्रहमे भाग नही लेना चाहिये। अिस विषयमें जब मेरा अभिप्राय पूछा गया तब मैंने कहा — सत्याग्रहमें हम भाग तो नही ले सकते। लेकिन जहा सत्याग्रह चल रहा हो, वहा निरीक्षक (observer) के नाते व्यक्तिगत रूपसे किसीको जाना हो तो हम अुसे रोक नही सकते। अिस तरह जानेवाला व्यक्ति पहलेसे ही जाहिर कर दे तो अच्छा कि वह तटस्थ होकर केवल निरीक्षणके लिअे ही जा रहा है।" मेरे अिस अभिप्रायसे सब लोग सहमत हुअे और प्रारम्भमें ही अुठा हुआ अेक मतभेद टल गया।

रिवाजके मुताबिक मैं अपने दूतावासमें तुरन्त ही गया। वहा मालूम हुआ कि हमारे राजदूत श्री झा कही सफर पर गये हुअे है। लेकिन श्री नरिस्कने हमारी सारी व्यवस्था करनेकी तत्परता प्रकट की। मुझे तो अितनी ही सुविधा चाहिये थी कि दूतावासके पते पर मेरे नाम जो पत्र आवें वे मेरी यात्राके क्रमके अनुसार यथास्थान मुझे तुरन्त मिलते रहें। श्री नरिस्कने यह कार्य दफ्तरके अेक जापानी कर्मचारीको सौंप दिया।

आजके दिन टोकियोमे थोडा आराम करके कल हम विमान द्वारा सीधे अुत्तरमे बसे हुअे होक्कायडो द्वीपके मुख्य शहर सप्पोरो जानेवाले हैं। हमारी सारी व्यवस्था करनेके लिअे श्री ओमाओ-सान वहा कभीके पहुंच चुके है। सारयामा आज रातको ट्रेनसे रवाना होगे। गुरुजीकी तबियत अच्छी रही तो वे खुद हमारे साथ विमानसे चलेंगे।

रातभर डटकर सोया। बस, अभी अुठा हू। दोपहरके तीन बजे [illegible] से जानेवाली ट्रेनके द्वारा बाजार जायगे वहा मेरी कर्णिका (hearing aid) के लिअे बॅटरिया लेनी हैं।

७
टोकियोमें — २

टोकियो
२४-३-'५७

मैंने सोचा कि अेक वार सफरकी दौड-धूप शुरू हो जाने पर यहाके नाटक अथवा नृत्य देखनेका समय नही मिलेगा। हमको होक्कायडो जानेसे पहले अेक दिन मिलता है अुसमें कुछ देख लें तो अच्छा। यहा 'कावूकी' नामके पुराने ढगके नाटक होते है। ये नाटक पुराने ढगके होते हुअे भी अितने अधिक लोकप्रिय है कि टिकटोके लिअे हमेशा ही भीड लगी रहती है। फिर भला अैन मौके पर हमें कहासे टिकटें मिलती ? दिन बेकार न जाय अिसलिअे हमने जापानी सिनेमा कैसा होता है यही देखना तय किया। चि० मजुको आश्चर्य हुआ कि 'काका साहेव और सिनेमा देखने जाअेंगे!' मैंने अुससे कहा, "भारतमें मैं शायद ही कभी सिनेमा देखता हू, लेकिन परदेशमें जब थोडे ही दिनोमें सारा देश देखना है तब सामाजिक जीवनका कुछ अन्दाजा तो नाटक व सिनेमाके द्वारा ही मिल सकता है। अिस देशकी वर्तमान समयकी रसिकता व कलाकी अभिरुचि भी रग-मच पर आसानीसे परखी जा सकती है।" हम सिनेमा देखने गये। हमारे साथ अेक बौद्ध साधुको भी जाना पडा। सामान्यतया साधु सिनेमा देखने नही जाते, लेकिन मेहमानोके लिअे जाना पडे तो अिलाज क्या? फिर हमारे साथ बैठनेके बाद वे अुसमें रस न ले यह जरूरी नही था। हमे वे बीच-बीचमे समझाते जाते थे। भली ओकासान भी हमारे साथ आयी थी। सिनेमाकी कहानी मजेदार थी। अभिनय सुन्दर था। लेकिन मुझे लगा कि अभिनयके बारेमें सारी दुनियामें अेक ही सर्वसामान्य ढग (mannerism) बनता जा रहा है। अिसलिअे सिनेमामें हमें विशेष रस नही आया।

माताजी ओकासानने हमारे लिअे अपने घर पर ही अेक नृत्यका कार्यक्रम आयोजित किया था। लडकियोको नृत्य सिखानेवाली नृत्यमें

पारंगत अेक बहनको अुन्होंने बुलाया था। ओकामानने वाद्य बजानेका काम अपने अूपर लिया। अुन्होंने कहा, "पिछले तीन वर्षोंमें मैंने यह वाद्य नहीं बजाया है। ये शिक्षिका बहन सादी पोशाकमें ही आपको नृत्य दिखायेंगी, अुनका साथ मैं न दूं तो ठीक नहीं रहेगा।" नृत्य सुन्दर था। अुसमें तरह-तरहके भाव व्यक्त हो रहे थे। अुस शिक्षिकाका चेहरा सादा ही था, लेकिन जब नृत्य करती थी तो अेकदम दमक अुठता था। बहुतसे कलाकारोंमें यह खूबी होती है कि नृत्यके वक्त वे कुछ निराले ही दिखाओ देने लगते हैं।

जैसे नृत्यको वाद्यका साथ होता है वैसे ही यहां जापानी पंखेका साथ भी होता है। पंखेको घडीमें बंद करना, घडीमें फैलाना और अुसे अनेक प्रकारसे घुमाना, अिसका अपना अेक पूरा शास्त्र ही रचा हुआ है।

दूसरे दिन मेरी कर्णिका (hearing aid) के लिअे बैटरी खरीदने हम सर्ववस्तु-भंडार (departmental stores) में गये। तीन साल पहले हमने यह भण्डार देखा ही था। अिसलिअे मेरे लिअे अिसमें कुछ नवीन नहीं था। लेकिन रेवती और मंजु तो अिसे देखकर चकित ही रह गअी। प्रत्येक मंजिलको देखते हुअे हम ठेठ अूपर तक गये। अखण्ड चलती-अुतरती सीढियोंकी घटमाल (रहट-माला) देखनेमें हम सबको बडा मजा आया। जहां बहनोंके लिअे तैयार कपडे बिकते हैं, अुन विभागमें अेक जगह जापानी स्त्रियोंके और दूसरी जगह अमरीकी स्त्रियोंके पुतले खडे करके कपडे किस तरह फिट होते हैं, अिसका प्रदर्शन किया गया था। सैकडों पुतलोंके द्वारा जिन लोगोंने मनुष्यके और कपडोंके सौन्दर्यकी [illegible] की थी। विकारोंको कैसे पोसा जाय अिसकी कला आजके जमानेने खूब विकसित की है। बच्चोंके पुतले बडे ही मनोरंजक थे। अेकदम अूपर जानेके बाद टोकियो शहरका विस्तार दिखाओ देता है। वहां तक मैं नहीं गया क्योंकि वहांके लिअे लिफ्ट न थी। छत पर लकडीके घोडों और हिंडोलोंके अूपर बच्चे खेल रहे थे, वह मजा देखना हमें भी अच्छा लगा। बच्चे अनजान लोगोंके प्रति अक्सर लापरवाह होते हैं, फिर भी कभी बच्चे काले कोट पर मेरी सफेद दाढी कैसी लगती है यह पास जाकर देख ही लेते थे।

सर्व-वस्तु-भण्डारमें कणिकाकी बैटरी नही मिली। पर आश्चर्यकी बात तो यह थी कि भडारकी अेक बहनने मेरी पुरानी बैटरीके अूपरके नम्बर वगैरा देखकर अैसी बैटरी टोकियोमे कहा मिल सकेगी यह अेक निर्देशिका (directory) मे से ढूढकर अचूक बता दिया। हमें किसी तरहकी दिक्कत नही हुअी। अिस विशाल नगरमें अेक कोनेकी छोटीसी दुकानमे सीधे पहुच कर हमने वह बैटरी खरीद ली। भिक्षु ताम्से-सान साथ थे अिसीसे यह हम आसानीसे कर सके।

टोकियोमे और सारे जापान देशमे केवल जापानी भाषाका ही प्रयोग होता है। अग्रेजी बिल्कुल नही चलती। रेलवे, तार-घर, डाक-घरके नाम और सरकारी दफ्तरोमें भी कही अग्रेजीका प्रयोग नही होता है। केवल स्टेशनोके नाम और रास्तोके नम्बर जापानीके साथ अग्रेजीमें भी दिये गये हैं। अितना भी अमरीकाके राजनीतिक और आर्थिक प्रभावके कारण ही अुन्हें मजबूरन चलाना पडता है।

आज भी हम पूर्व तैयारीकी समितिमे (Preparatory Committee) गये। वहा मुझसे प्रेसके लोग मिलने आनेवाले थे। वे समय पर नही आये। अिसलिअे अुस बीचमें मैं P E N क्लबकी मुख्य मत्राणी योको मात्सुओका — Yoko Motsuoka से मिल लिया। अुनके साथ अेक सज्जन और थे। जिन्होने कअी सवाल पूछकर अुसे अेक मुलाकातका ही रूप दे दिया।

बादमें मालूम हुआ कि जो प्रेसवाले मुझसे मिलने आनेवाले थे वे आये थे और राह देखकर चले गये। मुझे किसीने बताया ही नही। दोनो पक्षोको बडी निराशा हुअी। पूर्व तैयारीकी समिति-वाले बडे नाराज हुअे। अिस भूलको सुधारनेके लिअे बादमे प्रेसवालोको हमारे निवास-स्थान किनोकुनियामे ही बुलाया गया। मुलाकात हुअी। फ़ोटो भी लिये गये। अिन सबसे निवृत्त होकर फिर हम सप्पोरो जाने के लिअे हवाअी अड्डे पर पहुचे।

८

सप्पोरो जाते हुअे

सप्पोरो जाते हुअे,
२४-७-'५७

JAL यानी 'जापान अेयर लाअिन्स' के अेक विमानमे बैठकर हम लोग सप्पोरो जानेके लिअे निकले है। सप्पोरो होक्कायडोकी राजधानी है। (राजधानी शब्द ठीक नही लगता, मुख्य शहर अथवा कारभार-धानी कहना चाहिये। सम्कार-धानी तो यह है ही)। अिस द्वीपका क्षेत्रफल तीस हजार वर्गमीलसे अधिक है। अिन आकडेमे तो हमे कोअी मतलब नही है। लेकिन यदि समुद्री जहाजमे बैठकर अिस द्वीपकी प्रदक्षिणा की जाय तो डेढ हजार मीलकी समुद्री-यात्रा करनी होगी। यह कल्पना सचमुच आकर्षक है। होक्कायडो यानी 'अुत्तर सागरकी तरफका प्रदेश'। चीनी भाषामे और जापानी भाषामे 'हाय' यानी समुद्र। यह शब्द होक्कायडामे छिपा हुआ है। 'होकु' यानी अुत्तर।

मर्व-वस्तु-भण्डारमे कर्णिकाकी वैटरी नही मिली। पर आश्चर्यकी वात तो यह थी कि भडारकी अेक वहनने मेरी पुरानी वैटरीके अूपरके नम्वर वगैरा देखकर अैमी वैटरी टोकियोमे कहा मिल मकेगी यह अेक निर्देशिका (directory) में मे ढूढकर अचूक वता दिया। हमें किमी तरहकी दिक्कत नही हुअी। अिम विशाल नगरमे अेक कोनेकी छोटीमी दुकानमे सीधे पहुच कर हमने वह वैटरी खरीद ली। भिक्षु ताम्मे-मान साथ थे अिमीमे यह हम आमानीमे कर मके।

टोकियोमें और मारे जापान देशमें केवल जापानी भाषाका ही प्रयोग होता है। अग्रेजी विल्कुल नही चलती। रेलवे, तार-घर, डाक-घरके नाम और मरकारी दफ्तरोंमे भी कही अग्रेजीका प्रयोग नही होता है। केवल स्टेशनोके नाम और रास्तोके नम्बर जापानीके माथ अग्रेजीमें भी दिये गये है। अितना भी अमरीकाके राजनीतिक और आर्थिक प्रभावके कारण ही अुन्हें मजवूरन चलाना पडता है।

आज भी हम पूर्व तैयारीकी ममितिमे (Preparatory Committee) गये। वहा मुझसे प्रेसके लोग मिलने आनेवाले थे। वे ममय पर नही आये। अिसलिअे अुस वीचमे मै P E N क्लवकी मुख्य मत्राणी योको माल्सुओका — Yoko Motsuoka से मिल लिया। अुनके साथ अेक मज्जन और थे। जिन्होने कअी सवाल पूछकर अुसे अेक मुलाकातका ही रूप दे दिया।

वादमे मालूम हुआ कि जो प्रेमवाले मुझसे मिलने आनेवाले थे वे आये थे और राह देखकर चले गये। मुझे किमीने वताया ही नही। दोनो पक्षोको वडी निराशा हुअी। पूर्व तैयारीकी समिति-वाले वडे नाराज हुअे। अिस भूलको सुधारनेके लिअे वादमे प्रेमवालोको हमारे निवास-स्थान किनोकुनियामें ही वुलाया गया। मुलाकात हुअी। फ़ोटो भी लिये गये। अिन सवसे निवृत्त होकर फिर हम सप्पोरो जाने के लिअे हवाअी अड्डे पर पहुचे।

८

सप्पोरो जाते हुअे

सप्पोरो जाते हुअे,
२४-७-'५७

JAL यानी 'जापान अेयर लाअिन्स' के अेक विमानमें बैठकर हम लोग सप्पोरो जानेके लिअे निकले है। सप्पोरो होक्कायडोकी राजधानी है। (राजधानी शब्द ठीक नही लगता, मुख्य शहर अथवा कारभार-धानी कहना चाहिये। मस्कार-धानी तो यह है ही)। अिस द्वीपका क्षेत्रफल तीस हजार वर्गमीलसे अधिक है। अिस आकडेसे तो हमें कोअी मतलब नही है। लेकिन यदि समुद्री जहाजमें बैठकर अिस द्वीपकी प्रदक्षिणा की जाय तो डेढ हजार मीलकी समुद्री-यात्रा करनी होगी। यह कल्पना सचमुच आकर्षक है! होक्कायडो यानी 'अुत्तर सागरकी तरफका प्रदेश'। चीनी भाषामें और जापानी भाषामें 'हाय' यानी समुद्र। यह शब्द होक्कायडोमे छिपा हुआ है। 'होकु' यानी अुत्तर।

अिसी द्वीपके अुत्तरमे साघानिल टापू है जिसके विषय में वचपनसे ही पढता आया हू। अिस द्वीपका यह दुर्भाग्य है कि यह रूसी साअि-वेरियाके किनारे और जापानके अुत्तरमें स्थित है। जापानी लोगोंने सबसे पहले साघानिल द्वीप पर बसना शुरु किया था, लेकिन प्राचीन समयमे जापानी राजसत्ता वहा ठीक तरहसे नही जम सकी। अिसलिअे रूसी मछियारे वहा पहुच गये। आयनु लोगोके विषयमें हमने कअी वार चर्चा की है। अुनको देखनेके वाद मैं अुनके विषयमें अधिक लिखनेवाला हू। ये आयनु लोग भी अुत्तरकी ओर खिसकते-खिसकते अिस साघानिल द्वीपमे पहुच गये है। मेरे वचपनमें रूस और जापानके वीच युद्ध हुआ था (१९०५ मे) तव साघानिल द्वीप पर रूसका राज्य था। जापानकी विजय हुअी अिसलिअे जापानने रूससे आधा द्वीप ले लिया। फलत जापानका खुराक प्राप्त करनेका प्रश्न कुछ आसान हुआ। पिछले

महायुद्धमें जापानकी हार हुअी जिसमें फिरसे पूरा साघालिन द्वीप रूसके हाथमें चला गया। अब अुत्तरी सरहदकी रक्षा करनेके लिअे होक्कायडो द्वीपको सुदृढ किये बिना और कोअी चारा ही नहीं है। अिस द्वीपको हम अष्टावक्र कह सकते हैं। किनारा टेढा-मेढा, जहा-तहा पहाड और सरोवर भी सब तरहसे टेढे-मेढे ।

अिस द्वीपके विषयमें मैंने आयनु लोगोंकी अेक दन्तकथा पढी थी, जैसी याद है यहा लिख रहा हू। स्त्री जातिके विषयमें अैसी अनुदार बातें दुनियाके सभी देशोमें और सभी लोगोंमें न मालूम क्यो प्रचलित है? भिन्न-भिन्न वंश और भिन्न-भिन्न जातियोंके लोग अेक-दूसरेके विषयमें हलके खयाल रखें यह तो समझमें आ सकता है। अनजान और पराये लोगोंके विषयमें तो गलतफहमी होनी ही है। लेकिन स्त्री-पुरुष मिलकर ही समाज बनता है। प्रत्येक पुरुष किसी स्त्रीके पेटसे ही जन्म लेता है। अुसका दूध पीकर बडा होता है और फिर किसी स्त्रीके सहारे ही गृह-ससार चलाता है। अुसके अिच्छित बच्चे भी अुसे स्त्रीके द्वारा ही मिल सकते हैं। अितना परम्परावलम्बन होते हुअे भी पुरुष स्त्री जातिके विषयमें हलके विचार क्यो रखता होगा राम ही जाने।

आयनु लोगोंकी मान्यताके अनुसार भगवानने अपने देवी-देवताओंको अनेक देश रचनेका कार्य सौंपा। होक्कायडो द्वीपको बनानेका काम अेक देवीको सौंपा गया। अुसने गारा-ककड-पत्थर आदिसे अपना काम अुत्साहसे शुरू किया। लेकिन अुसके साथ बातें करनेके लिअे अेक दूसरी देवी वहा आ पहुची। जहा दो स्त्रिया मिली और बातोंका ताता चला। किसी तरह भी बाते खतम नही होती थी। दिया हुआ वक्त पूरा हो चला। भगवानने पूछा 'सौंपा हुआ काम पूरा हुआ?' काम कहासे पूरा होता। अब क्या अुपाय? भाडमें जाय द्वीप! जैसे-तैसे कुछ कर-कराके देवीने अुत्तर दिया—'हा जी, यह रहा द्वीप। बिलकुल तैयार।' अिस तरह स्त्रियोंका बातूनी स्वभाव अिस सारे प्रदेशके लिअे हानिकारक सिद्ध हुआ।

आयनु पूर्वजोंका अभिप्राय चाहे जो रहा हो लेकिन यह प्रदेश बडा ही मनोहर है और यहा खेतीकी पैदावार भी कुछ कम नही है। हम

सप्पोरो शहर, खुशीरो बन्दरगाह, आकान नामका कानन और हाकोदाते नामका दूसरा बन्दरगाह आदि सब देखना था। मैंने पढा था कि आकान-काननमे बडे ही सुन्दर-सुन्दर सरोवर है और अिसी प्रदेशमे आयनु लोग भी रहते है। अिसलिअे यह सारा प्रदेश देखनेकी बडी अुत्कण्ठा थी।

मैं समझता हूँ कि भविष्यमें शीघ्र ही अिस द्वीप का महत्त्व काफी बढनेवाला है। केवल फौजी दृष्टिसे ही नही, बल्कि जापानकी समृद्धिकी दृष्टिसे भी। यहा सरोवरोके किनारे गर्म पानीके चश्में है जिसमें नहानेसे चमडीके कुछ रोग मिट जाते है। ठडके दिनोमें यहा लोग तग बर्फीले पहाडी रास्तोपर फिसलने (ski-ing)का खेल खेलते है। अिनके बाद ठडके अन्तमें प्रसन्न होकर फिर ग्रीष्मका आनन्द लूटते है।

गुरुजी फूजीअी अिस द्वीपमें तीन-चार स्तूप बनाकर धर्मप्रचार और धर्म-सगठन बढाना चाहते है। मैं भी मानता हू कि अुसके लिअे यह भूमि अनुकूल है।

यह लो, देखते-ही-देखते सप्पोरो आ भी गया। तीन बजे टोकियो छोडा था। अब छह बजनेवाले है।

चि० रेवती और मजुके बीच न मालूम क्या हसी-मजाक चल रही है। मुझे अितना वक्त मिला तभी यह पत्र पूरा कर सका ।

९

सप्पोरो

सप्पोरो
२६-१०-'५७ की रात्रि।

आखिर हमने सप्पोरो देख ही लिया!

तीन घंटेमें पांच सौ अड़तीस मीलका सफर करके सप्पोरोके हवाअी अड्डे 'चितोसे' पर हम २४ तारीखकी शामको ही पहुंच गये। हर शहरके नामके साथ अुसके हवाअी अड्डेके अलग नामका भी ध्यान रखना पड़ता है। (अपवाद केवल बर्लिनका है, क्योंकि यहांका विराट हवाअी-अड्डा शहरके बिलकुल बीचों-बीच है।) हवाअी अड्डे मुख्य शहरसे पांच-पांच, दस-दस मील दूर होते हैं। लेकिन चितोसेसे सप्पोरो तो पूरा पच्चीस मील दूर है! परन्तु जिस आनन्दके साथ हमने यह सफर किया अुसका विचार करते हुअे पच्चीसके बदले तीस मील भी होता तो हमें भारी नहीं पड़ता। जैसे ही हम पहुंचे स्वागतके लिअे आयी हुअी अेक छोटी टोलीने हमें सप्पोरोकी नगरपालिका द्वारा भेजी गअी अेक बादशाही ठाठकी अमरीकन मोटरमें बिठाया और तुरन्त मोटरके रेडियोने सुन्दर जापानी संगीत शुरू किया। सारा रास्ता तारकोलका बना था। कअी पहाड़ियों परसे चढ़ते-अुतरते और घुमाव लेते हुअे हमें जरा भी धक्के महसूस नहीं हुअे। अैसा लगता था कि मानो हम पानीमें तैर रहे हैं और बीच-बीचमें लहरोंके कारण अूपर-नीचे हिलोरे भी लेते जा रहे हैं। जब अमरीकी लोगोंने जापानका फौजी कब्जा लिया तब अुन्होंने यहां अच्छे रास्ते बनाये और कामचलाअू मकान भी बनाये। शामका वक्त और यह मनमोहक प्रदेश! हरी-भरी पृथ्वी पर तरह-तरहके फूल हमारा मनोरंजन कर रहे थे। साथ ही सस्कारी मधुर संगीतके कारण सारा आनन्द और भी मुखरित हो अुठा था। अैसा लगता था मानो हृदय ही अुत्फुल्ल और रागमय हो गया है।

ओीमाओी-सान हमे सप्पोरोकी सीमा पर मिले ओर हमे अेक वडी दुकानके हालमे ले गये। वहा हमारा सार्वजनिक स्वागत हुआ। छोटी-वडी लडकियोने हमे फूलोके गुच्छे दिये। नगरपालिकाके प्रमुख लोगोने स्वागत भाषण किये। आभार मानते हुअे मैं हिन्दीमे थोडा वोला। ओीमाओी-साननें अुसका जापानी अनुवाद किया। भारत और निप्पोनको स्नेह और मैत्रीमे जोडनेवाला बौद्धधर्म है। अुस धर्मका प्रचार करनेवाले अनेक लोगोंमें से गुरुजी निचिदात्सु फूजीओीने विश्व-शाति और विश्व मत्रीका काम अपने सिर पर लिया है। मैं अुनके निमत्रण पर यहा आया हू — अित्यादि वातें सक्षेपमे कही। फिर हम अेक सुन्दर जापानी होटलमे ठहरने गये।

अुस होटलका निचला भाग अिस तरह सजाया गया था मानो अेक सग्रहालय ही हो। अुसमे आयनु लोगोके कपडे, हथियार, वाद्य, मूर्ति व चित्र आदि वहुत कुछ था। अिसके अलावा वहाके प्राचीन कालके अवशेष और वादशाहोकी मूर्तियो वगैरा भी थी। लेकिन यहा मैं अुनका वर्णन नही करूगा।

जापानी मकान भीतरसे सादे दिखाओी देते हैं, लेकिन अितने सुघड, कलापूर्ण और प्रमाणवद्ध होते हैं कि देखते ही चित्त प्रसन्न हो जाता है। सुनता हू कि अिन सादे मकानोको वनाना भी कम खर्चीला नही होता। पश्चिमके होटलोमें अैशोआराम आदिकी सारी सुविधा होती है। लेकिन हम अेशियावासियोको यह जापानी रहन-सहन ही अधिक सतोष देता है। चटाअीवाली जमीन पर मोटे-मोटे गद्दे विछाकर सोते हुअे स्वदेशी वातावरणमें ही रहनेका अनुभव होता है। गद्दियो जैसे नरम आसन पर चौकी जितनी अूची मेजके आसपास वैठकर चाय पीना अितना सुन्दर लगता है कि मानो किसी धार्मिक अथवा सास्कृतिक विधिमें वैठे हो।

सचमुच जापानी लोगोने चाय पीनेकी विधिको अत्यधिक सास्कृतिक महत्त्व दिया है। फूलोकी रचना, वैठनेका ढग, चाय परोसनेका तरीका, चाय पीते समय मिठाससे वोलनेकी भाषा और ढीले-ढीले 'कीमोनो'के आसपास लपेटनेकी 'ओवी' की खूविया — आदि सव

मिलकर असा अनुभव होता है मानो हमें जापानी बनानेकी या बननेकी दीक्षा ही मिल रही है। जब हम जापानी ढगसे रहते हैं तब स्वाभाविक रीतिसे वहाके लोगोंमें आत्मीयता जाग्रत होती है। यदि हमें वहाके लोगोंकी थोडी-सी भाषा भी आ जाय तो वह सोनेमें सुगधके समान हो। मुझे अिस जापानी रहन-सहनके ढगके प्रति सहज ही आकर्षण हो गया।

जापानी घरोंमें जहा-तहा निश्चित नापकी चटाअिया बिछी हुअी होती हैं। यहा तक कि 'अमुक कमरा चार चटाअी जितना बडा है अथवा साढे पाच चटाअी जितना बडा है' अित्यादि कहकर समझाते हैं।

पश्चिमके लोग जूते पहनकर सब जगह घूमते हैं। हमारे यहा लोग घरके दरवाजे पर जूते अुतारकर नगे पैर घरोंमें घूमते हैं। पर जापानियोंने बीचका सुन्दर रास्ता निकाला है। किसी भी घरमें जायें तो पहले घरभरके लोग अथवा नौकर आकर आपका स्वागत करेंगे और घरमें अिस्तेमाल करनेकी खडाअू सामने रखेंगे। अपने जूते निकालकर अिन खडाअुओंको पहननेके बाद ही घरमें प्रवेश किया जाता है। घरके अन्दर भी पाखानेके खडाअू अलग होते हैं। वे दूसरी जगह नही ले जाये जाते।

नहानेके कमरोंमें कपडे रखनेके लिअे खूटिया नही होती, लेकिन बेतकी अथवा असी ही दूसरी प्रकारकी टोकरिया रखी होती हैं। अेक टोकरीमें अुतारे हुअे व दूसरीमें नये पहननेके कपडे रखे जाते हैं। नहानेके लिअे लोटे अथवा प्यालोंकी जगह लकडीके बालिश्त-दो-बालिश्त चौडे कटोरेका अुपयोग होता है। अुसे भरकर सिर पर पानी डालनेमें पूरी कसरत हो जाती है। आखिर मैंने तो अुस प्यालेके सरदारको दोनों हाथोंसे ही अुठाना पसन्द किया। अुसमें से गरम-गरम पानी सिर पर डालनेमें बडा सुख मिलता था।

अिनमें से कअी वस्तुअें तो तुम जानती ही हो, लेकिन वर्णन करनेके रसमें मगन हो जाने पर अेक चित्र पूरा करनेका मन हो ही जाता है। वहा कितने ही लोग तुमसे यह पत्र लेकर पढेंगे। अुनकी सुविधाके लिअे विस्तारसे लिखू तो तुम अूबोगी नही अिसका मुझे विश्वास है।

दूसरे दिन २५ तारीखकी सुबह अेक अूची पहाडी पर अेक वडा स्तूप वनानेका काम शुरू होनेवाला था। वहुतसे स्त्री-पुरुष वहा अिकट्ठे हुअे थे। अपने मारुयामा-सान अिस अुत्सवके पुरोहित थे। जहा स्तूप तैयार होनेवाला था वहा अेक पुराना वहुत ही-छोटा-सा काम-चलाअू स्तूप था। लोग अुसके चारो ओर वैठ गये थे। सामनेकी ओर छोटे-छोटे वच्चे सज-धजकर वैठे थे। हम लोग वच्चोके मस्तक पर अथवा दो भौहोके वीच विन्दी लगाते है। कभी-कभी काजलकी विन्दी भी लगा देते हैं। यहा अिसके वदले दोनो भौहोके अूपर लेकिन अेक-दूसरेसे दूर नही अैसी दो काली विन्दिया लगानेका रिवाज है। अिन लोगोको जरूर यह विन्दी सुन्दर लगती होगी। वच्चोके सिर पर पुराने ढगका सुनहरी मुकुट पहना देते हैं। सिरके आकारसे यह वहुत छोटा होता है अिसलिअे अिसे कानके पाससे गलेके नीचे वाधना पडता है।

सारी विधि दो तक घटे चली। तव तक ये वच्चे चुपचाप वैठे रहे, न कोअी रोया और न कोअी अिधर-अुधर दौडा ही। किसीने वाते भी नही की। केवल अुन्हें भूख लगी तव अुनकी माताओने आकर अुनको खिला-पिला दिया। सचमुच जापानी वच्चोका धैर्य प्रशसनीय है। अिन लोगोको जन्म-घुट्टीमे ही अपनी भावनाओ पर कावू रखनेके सस्कार मिले होते हैं। यह तो अिनकी सारी सस्कृतिकी विशेषता है।

पहाडी पर चढना मेरे लिअे आसान नही था। मोटर जहा तक जा सकी वहा तक अुसीमे गये। अुनकी परेशानी देखकर मैंने कहा कि आप चिन्ता न करें, वाकी चढाअी मै चढ लूगा। ओमाअी-सानके मजवूत कधो पर हाथ रखकर मैं चढ ही गया। विधिके अतमे कुछ भाषण हुअे। अुनमे मुझे भी वोलना पडा। जापान की अिस यात्रामें मेरा यह सवसे पहला भाषण था। मनमें विचार आया कि अितनी दूर पूर्वमे और अुत्तरमे आया हू और ये लोग मुझे अपने अुत्सवमें आदर व प्रेमके साथ वोलनेको कह रहे हैं, सचमुच यह भगवान और महात्मा गाधीका प्रताप हैं। हिन्दुस्तानमें मैं अुत्तरमें चौंतीस या पैंतीस अक्षाश तक ही गया हू, लेकिन सप्पोरो तो तेंतालीस अक्षाश पर वसा

हुआ है। पूर्व दिशामें भी अितनी दूर अिससे पहले नहीं आया था। यहाकी भाषा, यहाके रिवाज कुछ भी नहीं जानता हू। फिर भी अिन लोगोसे, अिनकी भावनाओं और महत्त्वाकाक्षाओसे, पूरी-पूरी सहानुभूति रखता हू और प्रेमके कारण तथा स्वतत्रता, शान्ति और बन्धुत्वके आदर्शके कारण अिन लोगोके साथ मैं अेक प्रकारका हार्दिक अैक्य अनुभव करता हू। अीश्वरके यहा न कोअी स्थान दूर है और न कोअी दूसरा पराया है। हम अेक दूसरेकी बोलचालकी भाषासे अनजान थे। लेकिन आखोके द्वारा अेक-दूसरेके समक्ष आत्मीयताको और भावनाओको सहज ही व्यक्त कर सकते थे।

मेरी भाषा समझनेवाले यहा दो ही व्यक्ति थे। अुनमें से ओमाओ-सान कहीं गये हुअे थे अिसलिअे श्री मारुयामाने मेरे भाषणका जापानी अनुवाद किया। सारी विधि पूरी होनेके बाद मैंने अपने जुड़वा दुर्बीनसे सप्पोरोका विस्तार देखा। पासकी पहाड़ी पर ठडमें जब बरफ जम जाती है तब दूर-दूरसे लोग फिसलने (ski-ing) का खेल खेलने आते हैं। यह खेल सचमुच बडा रोमाचकारी होता है। सौ दो सौ फुट अथवा अुससे भी अधिक अूचाअीसे निर्भयतापूर्वक फिसल जाना और वह भी बैठकर नहीं, लेकिन पाच-पाच फुटके तलेवाले जूते पहनकर! अिसका आनन्द और रोमाच अनोखा ही होता है।

सप्पोरोकी आबादी पाच लाखकी है। अुनमें सत्तर स्कूल और अेकसे अधिक विश्वविद्यालय हैं।

स्तूपके अुत्सवमें भाग लेकर हम नीचे अुतरे। दोपहरके खानेके बाद थोडी नीद ली।

अुस दिन फिर हमने आराम ही किया। शामको थोडा-सा शहरमें घूमे-फिरे। अिस सुन्दर शहरकी रचना अमरीकी ढगकी है। अिसलिअे जापानकी नगर-रचनासे अलग पड जाती है। हम जिस होटलमें ठहरे हुअे थे अुसके पीछे अेक बडी अिमारत थी। रातको वहा बडी देर तक दीये जलते थे। पूछने पर पता चला कि वह केश-कृन्तन महाविद्यालय है। अिसमें नाअियोको बाल काटनेकी कला सिखाअी जाती है। यह अभ्यास-क्रम अेक वर्षमें भी पूरा नहीं होता!

दूसरे दिन सुबह यानी २६ को हमने सप्पोरोका ठीकसे निरीक्षण किया। सबसे पहले अेक शिन्टो मन्दिर देखा। अिसमें मूर्ति नही होती, लेकिन बीचका कमरा पवित्र माना जाता है। अिसमे पुजारी ही जा सकते हैं। भक्त लोग दरवाजेमे से ही अन्दर देखकर ताली बजाकर नमस्कार कर लेते हैं।

शिन्टो जापानियोका राष्ट्रीय धर्म है। चीन और कोरियासे आये हुअे बौद्ध धर्मकी अिस शिन्टो धर्म पर कलम चढाअी गअी। आगे चलकर राष्ट्रीय सरकारको यह बात न रुची। अिसलिअे दोनो धर्म बादशाहके हुक्मसे अलग-अलग कर दिये गये।

शिन्टो धर्ममे प्रकृतिकी पूजा तो है ही, लेकिन अिसमे अधिकतर पूर्वजोकी पूजा होती है। अैसी भावनाके कारण ही जापानी लोग अपने सम्राटको दैवी पुरुष मानने लगे और राज-भक्ति व देश-भक्तिके बीच अभिन्नता सिद्ध कर सके। अिस मन्दिरसे निकलकर हमने यहाका जू–चिडियाघर, गवर्नरका प्रासाद, वानस्पत्यम् (बोटेनिकल गार्डन) और स्टेडियम–क्रीडागण आदि देखे।

करीब चार वर्ष पहले यहासे नजदीक ही अेक ज्वालामुखी फट पडा था और अुसने तीनसौ पचास फुटकी अेक पहाडीकी भेंट दी थी अिसका हाल सुना। अुसके बाद हम खेती-बाडी और पशु-पालनकी सस्था देखने गये। यहाकी गायें मजबूत और काफी दूध देनेवाली होती हैं। यह सब देखकर हम लगभग बारह बजे यहाके ग्राण्ड होटलमें पहुचे। नगरपालिकाकी ओरसे हमें यहा दावत दी गअी थी। नगरके प्रतिष्ठित लोगोके साथ खाना खाकर और बातें करके हम घर लौटे।

अिस प्रदेशके बडे-बडे घरोमें प्रयत्नपूर्वक ठिगने कदके झाड रखे जाते हैं। ग्राण्ड होटलमे अेक आलेमें रखा हुआ अैसा अेक झाड — जिसे मैंने बालखिल्य नाम दिया है—तीन सौ साल पुराना है।

रातको हम ८-४० की ट्रेनसे खुशीरो जानेके लिअे निकले। यहासे अेक जापानी बहन भी हमारे साथ शामिल हुअी। अुनका नाम श्रीमती याअेको अीवामुरा था। अीमाअी-सानको होक्कायडोमें प्रचार कार्यमें अिन्होंने अिती अधिक मदद की है कि अीमाअी-सान अपनेको अुनके

घरके कुटुम्बीजन जैसा ही मानते हैं। होक्कागडोके सारे सफरमें यह हमारे साथ घूमेगी। अिनके गावका नाम ओनाफ है।

अब तो होक्कागडोकी शिरोमणि शोभा आकन-कननमें पहुचकर ही तुम्हें पत्र लिखूगा। रुसीरोमें हम अधिक नहीं रहनेवाले है।

१०

'खुश रहो'

आकन्‌को,
२७–१०–'५७

अब हमारी रेल-यात्रा शुरू होती है।

जापानी ट्रेनोकी यह खासियत है कि आपको जहा जाना हो अुसकी टिकट पहले खरीद लीजिये। यह टिकट किसी भी ट्रेनके लिअे अिस्तेमाल हो सकती है। यदि आपको जल्दी जाना हो तो थोडे अधिक पैसे देकर अेक पूरक टिकट खरीद लीजिये जिससे आप अेक्सप्रेसमें बैठ सकेंगे। नियम अैसा है कि यदि यह अेक्सप्रेस ट्रेन नियमित समयसे अेक घटेसे अधिक देरसे पहुचे तो अेक्सप्रेसके लिअे दिये हुअे अधिक पैसे आपको वापिस मिल जायगे। अिसी तरह यदि आपको सोते हुअे जाना हो तो अुसके लिअे भी कुछ पैसे और देकर पूरक टिकट ली जा सकती है। अपने देशकी अपेक्षा यहाकी रेल-यात्रा कुछ महगी जरूर है, किन्तु यहाकी रेलोमें सुविधा काफी होती है। तुम्हें याद होगा कि ट्रेनके साथ चलनेवाले यहाके रेल-कर्मचारियोमें जरा भी मिजाज नही होता। हमारे यहा तो हमने अग्रेजोके समयका मिजाज और स्वराज्यके बादकी अपने कर्मचारियोकी सज्जनता दोनोका ही अनुभव किया है। राज्यकर्त्ताओके मानसका प्रतिबिम्ब कर्मचारियो पर पडता ही है।

सप्पोरोसे खुशीरो तक लगभग बारह घटेका रातका सफर था। यह प्रदेश अितना अधिक अुत्तरकी ओर है कि अिन दिनो यहा सुबह चार बजे ही पौ फटती है। देशका सृष्टि-सौंदर्य देखनेके लिअे निकले हुअे हमारे जैसे तो रेलका सफर ही पसन्द करते है। वक्त बचानेका

मवाल न होता तो यात्रीके नाते मैं विमानमे अुडकर जाना पसन्द नही करता। सुबहके दो-तीन घटे ट्रेन के दोनो ओर दौडती हुअी कुदरतका और सुन्दर पहाडोका जी भरकर ध्यान करते-करते हमने प्रार्थना की। अुमके वाद हमने पेट भर तो नही, लेकिन कामचलाअू नाश्ता किया और सात वजे खुशीरो पहुचे। अिस स्टेशनका नाम याद नही रहता था अिसलिअे मैंने अिसे 'खुश रहो' नाम दिया। और अिस वन्दरगाहकी वढती हुअी आवादी और समृद्धि देखते हुअे 'खुश रहो' नाम सचमुच शोभा भी देता है।

अिनी नामकी अेक दक्षिणवाहिनी सरयू अथवा सरो-जा नदी अिस शहरके पास ही समुद्रसे मिलती है। अिस सुविधाको देखकर ही मनुष्य यहा काफी तादादमे वस गये हैं।

जवसे मैंने कन्याकुमारीकी शोभा देखी है, तवसे मुझे दक्षिणकी ओर गरजनेवाले समुद्रका विशेष आकर्षण है। लकाके दक्षिणमे भी लगभग अैसी ही शोभा है। पश्चिम अफ्रीकाके दक्षिणमें भी अैसी ही छटा दिखाअी देती है और अिस समय यहा खुशीरोमें भी अैसा ही सौंदर्य देखकर पुराने स्मरण ताजे हो आये।

गुरुजीके भक्तोने यहा अेक वडा स्तूप वनानेका काम अपने जिम्मे लिया है। प्रथम अिसे देखने हम वहा गये। काम करनेवाले सारे ही भक्तिभावसे प्रेरित थे और देखरेख करनेवाले शहरके लोग भी धर्म समझकर मुफ्तमें काम कर रहे थे। फिर काम सुन्दर हो और तेजीसे चले अिसमें आश्चर्य ही क्या? वौद्ध साधु भी मजदूरोमें मिलकर काम करनेको तैयार थे। यह दृश्य मुझे वडा ही अच्छा लगा। पुराने ढगके स्तूपोके अन्दर नये ढगकी वैज्ञानिक सुविधा देखकर अिस प्रजाकी व्यवहार-कुशलताके प्रति मनमे सम्मान अुत्पन्न हुआ। अिस स्तूपको देखकर हम अुनके अेक मदिरमें गये। स्टेशन पर क्या और मदिरमें क्या, हमारा स्वागत चमडेके पखोकी आवाजके साथ 'नम् म्यो हो रेंगे क्यो' वाले मन्त्रसे ही हुआ। यह मत्र जापानी भाषाका है। चीनी लोग कहते है कि यह चीनी भी है। जिसका अर्थ है — "सद्धर्म-पुण्डरीकका, वुद्ध भगवानके कल्याण-कारी अुपदेशका सर्वत्र विकास हो, विजय हो। अुसीकी शरण हम लें।"

जापानके निचिरेन पथके साधुओंके लिअे और भक्तोंके लिअे भी यह मत्र धर्म-सर्वस्व है। यह मत्र बजाते हुअे वे सब जगह घूमते है। जिस मदिरमे भक्त काफी सख्यामे अिकट्ठे हुअे थे। मुझे वहा थोडा बोलनेको कहा गया। वक्त थोडा, भाषाकी दिक्कत व दुभाषियेकी मार्फत बाते करना अिसलिअे मतलबकी मुख्य-मुख्य बाते छोटे-छोटे वाक्योमें भावपूर्वक कहनी थी। जिसका असर वक्तृत्वपूर्ण व्याख्यानोसे ज्यादा अच्छा होता है। अितनी दूरसे, बुद्ध भगवानकी पुण्य-भूमिसे आया हुआ और अुसमें भी महात्मा गाधीके साथ रहा हुआ आदमी, अुसके शब्द ध्यानपूर्वक और श्रद्धापूर्वक सुनने ही चाहिये — अैसा अनुकूल मानस लेकर आये हुअे लोगोंके सामने अुदाहरणो और दलीलोके विस्तारकी जरूरत नहीं होती। बालक जैसे माका दूध पीकर अुसे अनायास ही हजम कर लेता है, अुसी तरह भक्त-हृदय, जिसके प्रति श्रद्धा होती है अुसके वचन स्वीकार कर लेते है।

मैंने अुन लोगोसे कहा कि हमारे यहा मदिरो, मस्जिदो और गिरजाघरोंके झगडे देखकर हम नये युगके लोग अीट-चूना-पत्थरकी रचनाके प्रति अुदासीन बन गये है। अिसलिअे मै प्रथम आपके गुरुजीके स्तूप-निर्माणके प्रति अुदासीन था। लेकिन जापानकी बात दूसरी है। आप लोगोको स्तूप जैसी चीज जीवित प्रेरणा दे सकती है। गुरुजी अपनी श्रद्धा आपमे भर सके है।

गुरुजी महातमा गाधीसे मिले थे। अुनके बीच बडे महत्त्वका धर्म-सवाद हुआ था। गुरुजी भी महातमा गाधीकी तरह अहिंसाके द्वारा विश्व-शातिकी स्थापनाके लिअे जूझ रहे है।

हमारे शास्त्रोमे अेक सुन्दर वचन है धर्मो रक्षति रक्षित — हम यदि धर्मका रक्षण व पालन करें तो धर्म भी हमारा रक्षण व पोषण करता ही है। हमारे यहा सेनाकी दृष्टिसे जो स्थान महत्त्वके गिने जाते थे वहा पुराने लोग या तो किले बनाकर फौज रखते थे अथवा मदिर बनाकर भक्तोको अिकट्ठा करते थे। अूची पहाडीके अूपर स्थित मदिरका धर्म-निष्ठासे रक्षण करें तो सारे देशका रक्षण अपने आप ही हो जाता है।। धर्म-रक्षण और देश-रक्षण दोनोको अेक करनेवाले धर्म-नेता जिस देशमें पनपते है अुस देशका कल्याण ही है। होक्कायडोमें अैसे

चार स्तूप बन जावे और अुनके प्रति निष्ठा रखनेवाले भक्त भी हो तो धर्मकी और देशकी रक्षा अेक साथ ही होगी।

पश्चिमके लोगोने विज्ञानकी अुपासना करके अणु-बमका आविष्कार किया है। अुसका प्रथम प्रयोग अुन्होने आपकी भूमि पर किया। यदि अेशियाका हृदय अेक हो तो आपका दुःख सो हमारा दुःख अैसा हमे लगना ही चाहिये। अेकका सकट यानी सबका सकट। जब हम अैसा समझेगे तभी बच सकेंगे। पश्चिमके लोगोने जैसे विज्ञानकी अुपासना की है वैसे ही हमे आत्म-शक्तिकी और धर्म-शक्तिकी अुपासना करनी चाहिये। भगवान बुद्धने हमें निर्भयताका और विश्व-मैत्रीका सदेश दिया है। ढाअी हजार वर्षमे हम यह सदेश सुनते आ रहे है। अब अैसा जमाना आ गया है कि यदि हम अिस सदेशको अमलमे नही लायेंगे तो मनुष्य-जाति टिकनेवाली नही है। अिसलिअे जिन लोगोने यह अुपदेश अपनाया है अुन हम अेशियावासियोको विशेष प्रयत्न करना चाहिये। अैसी कुछ बाते कहकर मैने अुन लोगोसे विदा ली।

जलपान कराये बिना ये लोग छोडनेवाले नही थे। खास-खास लोगोके साथ अिधर-अुधरकी बाते करते-करते हमने नाश्ता किया। अिनमे हमारे बम्बअीवाले जापानी साधु बातानबेके अेक सम्बन्धी किचिमात्सु भी थे। ये यहा ठेकेदारीका काम करते है। हमारे बातानबेके लिअे यहा घरके लोगोमें बडा आदर है। अिसके बाद हम मोटरमें बैठकर आकान् जानेके लिअे निकले। थोडा नदीके किनारे, थोडा नदी पार करके रास्ता नापते हुअे हम खुशीरोके बाहर पहुचे। फिर तो जहा देखो वही हरी-भरी कुदरतकी शोभा दिखाअी दे रही थी। मनुष्यकी आबादीका असर कम होने लगा और कुदरतका अनिर्बन्ध साम्राज्य दिखाअी देने लगा। मनुष्योके घरोंसे आगे निकलकर व खेतो और झाड-झखाडोको पार करनेके बाद जगलमें प्रवेश करते हुअे अेक तरहकी राहत-सी मिलती है। कारण यह है कि मनुष्यकी दुनिया चाहे जितनी सुन्दर और सस्कारी हो, फिर भी अुसमें अनिर्बन्ध आनन्द नही होता। वह आनन्द तो अरण्यमे ही मिलता है। पर यहा वनकी शोभा सोलह कलाओंसे प्रगट होते हुअे भी पक्षियोके दर्शन नही हुअे और न ही अुनका

कलरव सुनाअी दिया। जिससे सभी कुछ सुनसान-सा लगता था। अेक बजे तक हम आकन्को सरोवरके किनारे अेक बडे सुविधावाले और मनोहर यादोया (होटल) मे डेरा डाल चुके थे।

यहासे चिट्ठिया भेजनेकी सुविधा होती तो यह पत्र यही पूरा करके तुरन्त भेज देता। अिसके बादके दो दिन तो अब पहाड, जगल, सरोवर और नदियोकी मस्तीके ही होगे। आजका दिन भी सागर, सरिता और सरोवर अिन तीनोके अेक साथ दर्शनमे ही बीता।

११

आकन-कानन

विहोरोसे हाकोदाते जाते हुअे ट्रेनमें,
२१-७-५७

आजका पत्र मुझे सरोवरके वर्णनसे ही भरना है। अग्रेज लोग तो अिस प्रदेशका नाम Lake District ही रखते। यहाके लोग अिसे आकन नेशनल पार्क कहते है। मै भी अिसे आकन अरण्य कहनेवाला था लेकिन आकनके साथ कानन शब्द ठीक जचता है जिसलिअे आकन-कानन नाम देना ही मैने ठीक समझा।

हमने पूनामे जब पहली ही बार नौका-विहार किया था तबसे पानीके विस्तारके प्रति तुम्हारा आकर्षण मै जानता हू। हम कितनी ही जगह तालाबो, सरोवरो व नदियोको देखकर खुश हुअे है। भारतके दोनो ओरके किनारो पर बने हुअे दो बडे-से-बडे सरोवरो — मचर (सिन्ध) और लवतक (असम)मे हम नौकामे बैठकर कितना अधिक घूमे है!

अभी यहा जिन तीन-चार सरोवरोको हमने देखा अुन समय तुम हमारे साथ नही थी, अिसका दु ख तुम्हे अधिक होगा या मुझे, अिसकी चर्चामें अुतरे बिना अुन सरोवरोका वर्णन ही तुम्हे भेज देता हू। अुमसे यहा तुम हमारे साथ ही हो अैसा मानकर यह प्रदेश तुम देख सकोगी। अिस पत्रके द्वारा कल्पनाकी आखोसे अिस दृश्यको देखनेके आनन्दमें

तुम्हारा स्वाभाविक दुःख हलका होगा, अैसा मैं मानता हू। हमने बहुत कुछ साथ-साथ देखा है और अुसके आनन्दकी अितनी अधिक सुन्दर चर्चा भी की है कि यहाका वर्णन बिलकुल सादे शब्दोमे लिखू तो भी तुम मेरे हृदयके भाव आसानी से समझ सकोगी। दूसरोकी भावनाओके साथ अेकरूप होनेकी अपनी समभाव-शक्तिकी मददसे तुम कल्पना-शक्तिकी पूर्णताको पहुच ही सकती हो।

यहाके होटलोमे हमारा यह होटल सबसे बढिया माना जाता है। अिसके अेक ओरसे आकन्को सरोवरके विस्तारकी झलक दिखाअी देती है तो दूसरी ओर पासके छोटे-से अुपवनमे वन-भोजनके लिअे आये हुअे जापानी युवक-युवतियोका शोर-गुल आकर्षित करता है। अिस स्थान पर जहा देखो वही होटल-ही-होटल है। आजकल पिकनिकका खास मौसम होनेसे सभी होटल सस्कार-यात्रियो (Tourists) से भरे पडे है। जगह-जगह आयनु लोगोकी बनाअी हुअी वस्तुओको बेचनेकी दुकाने है। यहाके जगलोमे रीछ और हिरण अधिक मात्रामें है। पर हमारे भाग्यमें अुनके दर्शन नही थे। यहाके लोग जगलकी अेक विशेष लकडी लाकर अुसके छोटे-बडे टुकडे कर लेते है। फिर अुसे तराशकर अुससे तरह-तरहके पैतरो-वाले रीछ बनाते है।

मौका मिलते ही हमने सबसे पहले सरोवरके किनारे जाकर टिकटे ले ली और अेक जहाजके आते ही अुसमे जा बैठे। मैं अेक छोटी-सी नावमें ही घूमना पसन्द करता, लेकिन थोडे समयमें ज्यादा घूमना था। अिसके अलावा जहाजमें जानेका अेक और भी कारण था। अिस सरोवरमें 'मारीमो' नामकी अेक वनस्पति होती है। अिसका आकार गेंद जैसा होता है। यह गेद धीरे-धीरे बडा होता जाता है। कहते है कि टेनिसके गेंद जितना आकार धारण करनेमें अिसे दो सौ साल लग जाते है। अिस वनस्पतिकी खूबी यह है कि यदि हवा अच्छी हो तो ये हरे गेद पानीमें काफी अूपर तक आ जाते है। हवाका मिजाज जरा भी बिगडा कि तुरन्त ये मारीमो डुबकी लगाकर बिलकुल नीचे पहुच जाते है। मारीमोके अिन गेंदोको देखनेके लिअे जहाजमें दो-दो बैठकोके बीच, पानी तक पहुचनेवाला अेक-अेक पाइप लगा हुआ था। हमारे खयालसे तो हवा अच्छी थी।

मजेकी धूप थी। जहाजमे कितनी ही लडकिया सुन्दर गाने भी गा रही थी, लेकिन मारीमोका मन नही लगता था। वे अूपर आये ही नही! यह वनस्पति दुनियामे दूसरी जगह कही नही मिलती। जापानमें अितने सरोवर है लेकिन अन सबमे भी मारीमो नही है। यह सरोवर किसी भी जगह सौ फुटसे अधिक गहरा नही है, लेकिन अिसका घेरा सारा २५ मीलका है। अिसका आकार टेढे-मेढे त्रिकोण जैसा है और अेक तरफ पूछ-सी बढी हुअी है। जापानी भाषामे 'को' यानी सरोवर। यह सरोवर आकान-अरण्यमे है जिसलिये अिसे आकानको कहते है। यह नाम ही कितना काव्यमय है! अेक जापानी गीत कहता है कि आकानको यानी चिर यौवन। यह बाला कभी वृद्ध होनेवाला नही है। अिसका रक्षण करनेके लिअे दोनो ओर अूचे-अूचे दो भव्य पर्वत है। कवि कहते है कि ये दोनो पहाड स्त्री-पुरुष है। पुरुष पहाडका नाम है — 'ओ आकान' और स्त्री पहाडका नाम है 'मे आकान'।

पुरुष पहाड लगभग तीन तरफ सरोवरसे घिरा हुआ है। जिन दो पहाडोकी प्रेम-गोष्ठी कवियोने सुनी है और अपने काव्योमे अमर कर दी है। लैला और मजनू तो आखिर मनुष्य थे। लेकिन ये तो विशाल-काय पर्वत-युगल है। अिनका जीवन लाखो वर्षोका है। अिनका प्रेम सवाद भी अितना ही भव्य होना चाहिये।

सभी यात्री आखे गडा-गडाकर मारीमो देखनेकी कोशिशमे व्यस्त थे। मैने सोचा कि अिस अध्रुव (अनिश्चित वस्तु) के पीछे समय खराब करना बेकार है। अितना काव्य सरोवरके रूपमे और असके भाअी-बन्धु पहाडोके रूपमें स्थिरतासे फैला हुआ है, अुनकी क्यो अुपेक्षा करे। जहाजमे बैठकर हम धीरे-धीरे अुस पार गये। वहा थोडी देर ठहर कर आसपासकी वनश्री निहारी, अेक छोटे-से टापूकी प्रदक्षिणा की और वापस लौटे। अेक ओर सरोवरके बढे हुअे पानीको मार्ग देनेके लिअे अेक परीवाह बनाया हुआ है। दूसरी ओर अेक नदी अिस सरोवरसे जन्म लेकर दूसरे सरोवरमे जा गिरती है और वहा बिना ठहरे रास्ता बनाती हुअी समुद्रमे जा मिलती है। यहाके जगलोमे जो रीछ होते है वे सब तैरनेमे कुशल होते है। वे कभी-कभी अपनी मनचाही मछलिया खानेके लिअे
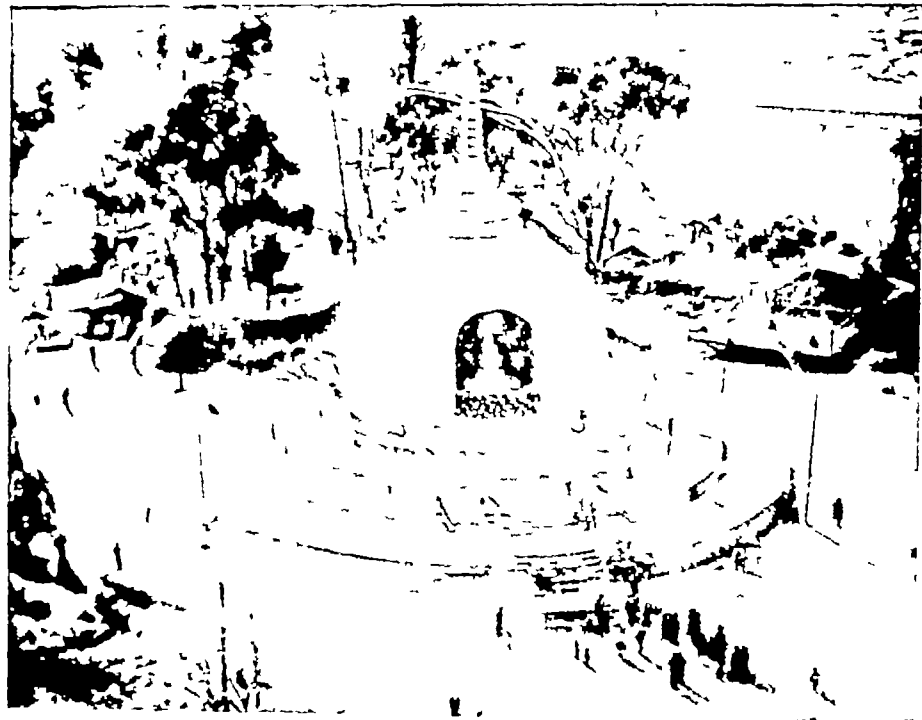
विश्वशान्तिके लिअे स्थापित किये जानेवाले बौद्ध स्तूपोंका नमूना

आसो ज्वालामुखीसे लौटते हुअे। जापानी साधुके हाथमें हमारा तिरंगा रहा है। (देखिये पृष्ठ २९)

जापानी साधु चि० मरोजको और मुझे आसो ज्वालामुखीके चित्र दिखा रहे हैं।

ओकासान और मुमिकोमान भारतीय वेशमें। चि० रेवती और मंजु जापानी वेशमें।
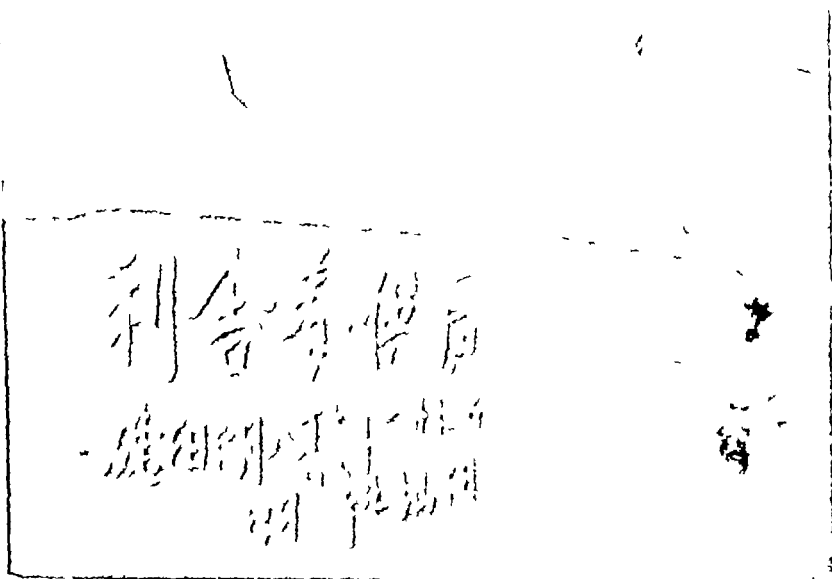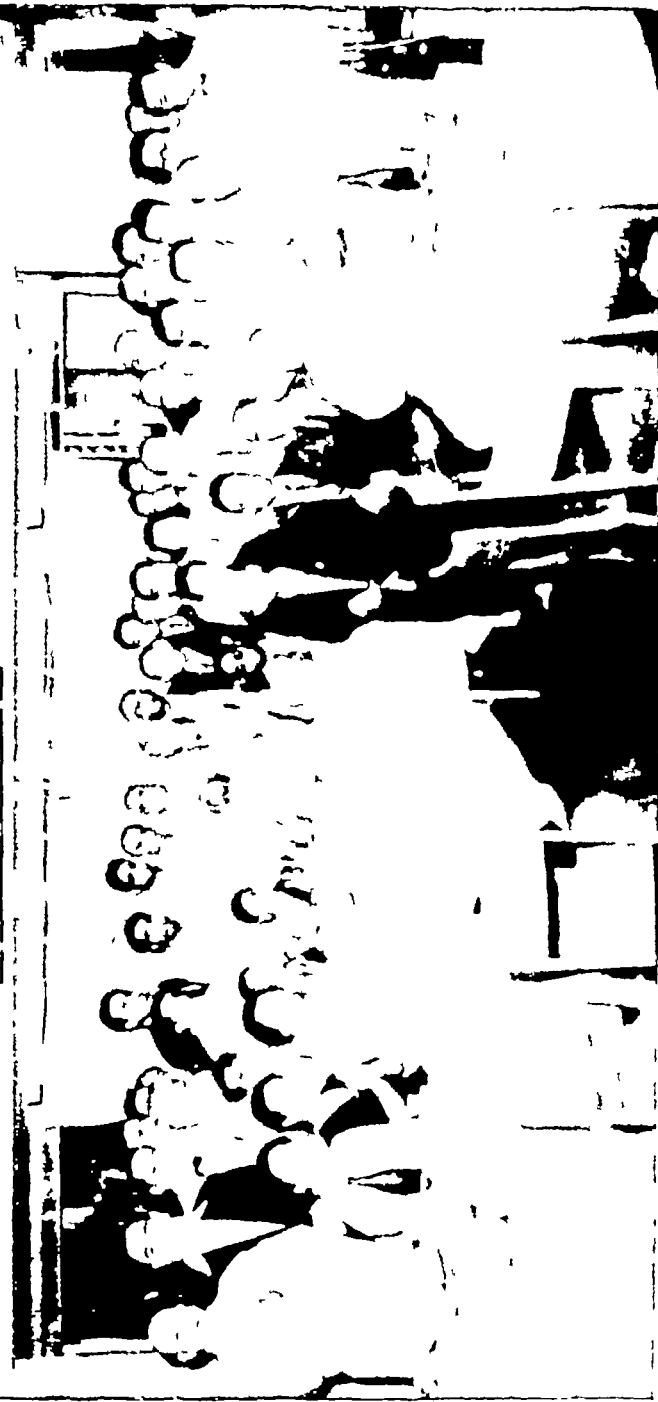
कोबेके भोजन-समारम्भके बाद (देखिये पृष्ठ १७९)

पानीमे अुतरते भी हैं। हमारे जहाजने लौटते हुअे जब सीटी दी तब आसपासकी पहाडियोने भी स्वागतम्-स्वागतम्की प्रतिध्वनि की। ये पहाडिया न तो सस्कृत जानती हैं और न अुन्हे जापानी भाषा सीखनेकी ही परवाह है। जिनकी भाषा तो प्रकृतिके पीछे पागल लोग ही समझते हैं। लेकिन दूसरोको सिखानेकी अुन्हे सख्त मनाही है।

अपनी और सरोवरकी प्रतिष्ठाको शोभा देनेवाली धीर-गम्भीर गतिसे हमारा जहाज चल रहा था। अितनेमे यन्त्रसे चलनेवाली अेक छोटी-सी नाव अमरीकी निर्लज्जतासे पानी अुडाती हुअी हमसे आगे दौड गअी। अितने वेगसे पानी काटनेमे अेक तरहका अुन्माद तो होता है लेकिन अुसमे जीवनका काव्य जरा भी नही मिलता। "ये निकले, और ये पहुचे।" वापस लौटे और पलक मारते ही मूल स्थान पर आ धमके। अिसमे मजा ही क्या आया?

सरोवरमे जो टापू थे अुन पर खडे रहने लायक भी समतल जमीन नही थी। जहा देखो वही पत्थरोके ढेर और अुनके बीच बढे हुअे झाडोका घना जगल। कितने ही पेडोंके तनो पर लाल रगके ठप्पे लगे हुअे थे। मनुष्यने किसलिअे यह तकलीफ की होगी यह कोअी बता न सका।

पानीका विस्तार यानी शीतल शाति, प्रसन्नता और पावनता। मौजी और विलासी मनुष्य भी सरोवरकी पवित्रताको अधिक नही बिगाड सकता।

खुशीरो नदीका यही कहीसे अुद्गम होता है और वह दक्षिण की ओर सौ मीलकी यात्रा करके अपने आपको सागरकी गोदमें अर्पण कर देती है।

मनमे विचार आया कि जहाजमे बैठे हुअे हम सब अेक ही अुद्देश्यसे अिकट्ठे हुअे हैं। फिर भी प्रत्येकका जीवन-प्रवाह भिन्न-भिन्न है। सरोवरकी शोभा देखकर सबकी आखोमे अेक-सी प्रसन्नता छलक रही है, पर क्या हर आदमीके दिमागमें अेक ही विचार चलता होगा? जैसे मैं अपने पुराने अनुभव ताजे कर रहा हू क्या वैसे ही प्रत्येक व्यक्ति कर रहा होगा? अिन सबमे कितनी विविधता होगी! अितने लोगोके जीवनमे केवल अिस घटे भरका घटेकी जीवनानुभूति समान है। अिसे छोडकर हम सबमें और

क्या समानता हो सकती है? हमारी ही बात लें। मैं अिस आककोको देखकर पहले देखे हुअे देश-विदेशके अनेक सरोवरोंके साथ अिसकी तुलना कर रहा हूँ। सरोज अपने देखे हुअे सरोवरोंको याद कर रही है और रेवतीको गोवाकी खाडीके माडमें किये हुअे नौका-विहारकी याद आ रही है। अिस तरह आककोके आनन्दकी प्रत्येककी आवृत्ति भिन्न-भिन्न है। हम तीन तो अेक भारतके ही रहनेवाले हैं। हमारे जीवनानन्दमें अमुक साम्य भी होगा। पर अिन जापानियोंको तो न मालूम कैसा आनन्द आ रहा होगा। अिन सरोवरोंके किनारमें अपने कवियोंके रचे हुअे स्तोत्र गाकर वे भावना-समृद्ध होते होंगे — जिस भावनाकी दुनिया मेरे लिअे अनजान है और शायद सदाके लिअे अनजान ही रहनेवाली है!

कितनी तरहके लोग प्रतिवर्ष यहां आकर आनन्द प्राप्त करते हैं? अिस सरोवरको अुनके विषयमें क्या लगता होगा?

बनारसमें असंख्य यात्री सैकडों वर्षोंसे आते हैं और जाते हैं। बनारसकी पवित्र भूमिको, गंगा माताके प्रवाहको और प्रवाह तक स्नान-लोलुप यात्रियोंको लानेवाले गंगाके अनेकानेक घाटोंको क्या अिन सबका स्मरण रहता होगा? अेक साधुने पूछने पर अुसने कहा, "यहांके रास्तों पर घोडागाडी अथवा टमटम चलाकर आजीविका प्राप्त करनेवाले गाडीवालोंको यात्रियोंके बारेमें जितना लगता होगा गंगा माताको अुतनी भावना भी आपके विषयमें नहीं अुठती होगी।"

मैंने कहा, "साधु महाराज! जब आपने गंगाको माता कहा तभी आपने अपनी बातका खण्डन कर दिया। माताके लिअे तो अेक बच्चा हो या असंख्य वे सब समान हैं। अुसकी तुलना बाजारू गाडीवालेके साथ नहीं की जा सकती।"

तब क्या अिस सरोवरको, यहां आनेवाले लहरी और गम्भीर, मस्त और दुःखी, थके हुअे और अुत्साही, अिन तमाम यात्रियोंका स्मरण रहता होगा? सरोवरको भले ही स्मरण न रहे, किसीको तो होना ही चाहिये। अीश्वरकी अेकाध विभूति तो सर्वसाक्षी होगी ही। फिर यहांके लिअे अैसी विभूति यह सरोवर ही क्यों न हो। सरोवरने जरा मुस्कराकर कहा, "यह काम सर्व-पिता आकाशका है।" मैंने आकाशकी ओर देखा। वहां

न तो बादलोकी खास रचना दिखाओी दी न निखरा हुआ सूर्य-प्रकाश। रेवतीने मेरा ध्यान खींचा कि पश्चिमकी ओर फटे हुअे बादलोमे से सूर्य-प्रकाशका विपुल प्रपात चमकीली वर्षाका दृश्य प्रकट कर रहा है। बीच-बीचमे जापानी सगीत अपनी ध्वनिकी गुजारसे हमे आनन्दविभोर कर रहा था। लोग मारीमोकी गेद न देख पानेकी बाते कर रहे थे, पर हम तो आककोकी ही यादमे मग्न थे।

हमने अिस आककोका दर्शन चौबीस घटेसे भी कम किया होगा। और जहाजमें बैठकर नजरके जोरसे कल्पनाके जालमें जिस आनन्दको हमने पकडा अुसमें अधिकसे अधिक सवा घटा गया होगा। लेकिन आककोकी याद तो जन्म भर रहेगी। जब कभी वह जागृत होगी अुस समय अेक मीठी अस्वस्थताका अनुभव होगा। लेकिन अतमे तो प्रकृतिके साथ अैक्यसे अुत्पन्न हुअी आनन्ददायी शान्ति ही स्थायी रहेगी।

शामको देरसे मैने आयनु लोगोकी बस्ती देखनेका अवसर ढूढ निकाला। अुसके लिअे मुख्य रास्ता छोडकर अेक पग-डण्डीसे जगलमें जरा भीतर जाना था। आयनु लोगोके जीवनकी खोज-खबर लेनेका अुत्साह रेवती व मजुमे नही था। अुनको अधेरेमें अूबड-खाबड रास्तेमें ले जाना मुझे पसन्द भी नही था। अिसलिअे होटलके पासकी अेक दुकानकी चीजे देखने-खरीदनेके लिअे अुन्हें छोडकर ओीमाओी-सान और मैं आयनु लोगोकी खोजमें निकले।

अिनकी बस्तीके बीचो-बीच अेक बडी झोपडी थी। अुसमे सारे गावके आयनु लोग पूजा आदिके लिअे अिकट्ठे होते हैं। हमने वहा जाकर पुरोहित जैसे लगनेवाले अेक सज्जनको अपना अुद्देश्य बताया। वे अुत्तरकी तरफकी जापानी भाषा जानते थे। यद्यपि आपसमें वे आयनु भाषा ही बोलते थे।

झोपडीके बीचोबीचमे अेक चौकोर गड्ढा था। यह अेक बुझी हुअी धूनी थी। झोपडीके अेक किनारे घासके बनाये हुअे अेक विशेष प्रकारके चाबुक रखे हुअे थे। ये अिन लोगोंके देवता थे। झोपडीके पीछेकी ओर खिडकी-जैसी अेक खुली जगह थी। देवता-

लिये नैवेद्य मुख्य दरवाजेसे भीतर नहीं लाया जाता, वह अिस खिड़कीनुमा रास्तेसे ही भीतर लिया जाता है।

हमारा अड्डेपर मालूम होने पर पुरोहितजीने सारी बस्तीमें खबर की। फिर तो बहुतसे लोग हमें झोपड़ीमें देखने आये। अपना कुतूहल पूरा होने पर वे लौट जाते थे। काफी राह देखनेके बाद कुछ स्त्री-पुरुष अेक जगह जमा हुअे। अिनमें से कअी स्त्रियोंको तो हमने दुकानों पर बैठकर लकड़ीके रीछ आदि चीजें बेचते हुअे देखा था। अिन्हें देखनेके कौतूहलसे आये हुअे यात्रियोंके आनन्दके लिअे ये लोग दुकानों पर और नाचते वक्त पुरानी आयन ढंगकी पोशाक ही पहनते हैं। अिन कपड़ों पर का कसीदा-काम अिस कौमकी विशेषता है। घासकी बनी हुअी अेक डोरी माथेमें पीछे तक बांधकर ये लोग अपनी शोभा कुछ बढ़ा लेते हैं। नाच दिखानेकी अुनकी खास अिच्छा नहीं थी। मैं भारतसे आया हूं, अिस दलीलका अुनपर क्या असर हो सकता था! लेकिन ओमाओी-सानने अुन्हें समझा ही लिया। फिर तो अुन्होंने दो-तीन तरहके नाच दिखाये। मैं वंश-शास्त्रकी दृष्टिसे अुनके नाक, कान, आंखें, बाल और गालोंकी हड्डियोंको बड़े ध्यानसे देख रहा था।

पुरानी पीढ़ीके लोग मुंहके आसपास और अूपर-नीचेके होंठ नीले रंगसे गुदवा लेते हैं। हमारी अपनी अभिरुचिके अनुसार यह सब बड़ा भद्दा दिखाओी देता है। अच्छा हुआ कि नृत्यमें भाग लेनेवाले किसी भी स्त्री-पुरुषने अिस तरहके गोदने नहीं गुदवाये थे। अुनके बीच कअी दशाब्दियों तक रहे हुअे अेक मिशनरी रेवरण्ड बेचलर द्वारा लिखी हुअी 'Ainu Life and Lore' नामक पुस्तक मैंने १९५४ में खरीदी थी। अुसमें अैसे गोदनोंके चित्र दिये हुअे थे। यह रिवाज अभी लोप नहीं हुआ है, यह सिद्ध करनेके लिअे ही मानो दूसरे दिन जो अेक-दो आयनु मैंने देखे अुनके नाकके नीचेका सारा मुंह नीला और काला दिखाओी दे रहा था। नाचनेवाले लोगोंमें कअियोंके मुंह बिलकुल मध्य-अेशियाके लोगोंसे मिलते-जुलते थे। कअियोंके चेहरोंका रंग तो बिलकुल गाजर जैसा था और कअी लगभग जापानी जैसे लगते थे।

मैं जानता था कि यह जाति धीरे-धीरे निर्वंश होती जा रही है। अिसीलिअे अब ये जापानी बच्चोंको गोद लेकर अुन्हें आयनु भाषा और

रिवाज सिखा रहे है। जापानी लोगोके साथ विवाह करनेमे दोनो पक्षोको कोअी खास आपत्ति नही है। अितने पर भी अिस जातिकी विशेषता अब तक टिकी हुअी है। जगलमे जाकर रीछके बच्चोको पकडकर अुन्हें सिखानेमे ये लोग होशियार है। अिन लोगोका नाच देखनेके बाद हमने अुन्हे अेक हजार येन देकर सन्तुष्ट किया। अेक हजार येन यानी लगभग तेरह-चौदह रुपये। नृत्य पूरा होने पर वे सब लोग चले गये। फिर अुनके नेता पुरोहितजीके साथ मैंने थोडा वार्त्तालाप किया। अुनकी धार्मिक मान्यताअें, अुनकी पूजाकी विधि और अुनके विवाह-शादीके नियम आदिके बारेमें मैंने मुख्य-मुख्य सवाल पूछे। मैंने Life and Lore पुस्तक हालमें ही फिरसे पढी थी अिस कारण बहुत कुछ तो जानता था। फिर भी पूछकर निश्चय कर लेना अच्छा है अिस हेतुसे मैंने ये सवाल पूछे थे। पुरोहितजीने कहा कि आप पूछते है वैसे खास कडे नियम अथवा बन्धन हमारे यहा नही है। लेकिन अिस तरहके कुछ रिवाज तो जरूर है। ये रिवाज कोअी तोडे तो अुसके लिअे समाजकी ओरसे कोअी सजा नही होती, बल्कि नापसन्दगी भी जाहिर नही की जाती। मैंने देखा कि यह जाति अधिकतर अलिप्त रहनेवाली है। फिर भी जापानके रीति-रिवाजका असर अिस पर पडता जा रहा है।

अिस जातिके विषयमे पहले मुझे जो चिन्ता हो रही थी वह अब कम हुअी। मालूम होता है कि यह जाति अेक दो पीढीके अन्दर ही जापानी प्रजामे घुल-मिल जायगी। यदि मेरे जैसे यात्री कुतूहलसे आयनु जीवन और अुनके प्राचीन रीति-रिवाजोकी खोजमें यहा न आते और ये रिवाज कुतूहल-तृप्ति व कमाअीका साधन न बनते तो यह मिल जानेकी अथवा निमज्जनकी क्रिया कभी की पूरी हो गयी होती। यात्रियोंके कुतूहलका प्रभाव अिन लोगो पर अच्छा नही होता, यह तो स्पष्ट था। हमारे यहा-की कअी पिछडी हुअी जातियोके लोग 'साब पैसा दो, बख्शिश दो' कहकर जैसे गोरोके पीछे पडते थे, बिलकुल वैसा तो नही लेकिन अुससे मिलता-जुलता असर यहा भी स्पष्ट दिखाअी दे रहा था। अब तो बहुत-से आयनु लोग शहरोमे जाते है, मेहनत-मजूरी करते है और अुद्योग-हुनर भी सीखते है।

आखिर आसान् जानेके विषयमें मेरा चिर-संचित कुतूहल तृप्त हुआ। अैसा लगता था कि मानो सिरका अेक बोझ हलका हुआ। सच पूछो तो अिस बोझका कोअी अर्थ नही था। आसान् मजाक मैं पूछ कर सकता था और कह सकता था "मिया दुबले क्यो? तो कहने लगे कि शहरके अदेशे से।"

रातको बडे आरामसे सोये। दूसरे दिन दस बजे तक अिधर-अुधर चक्कर लगाये, दुकानोंमें सजायी हुअी सुन्दर-सुन्दर चीजें देखी-भाली और आगेकी यात्राके बारेमें कुछ कल्पनाअें की। अिसके बादकी यात्रामें ओसाओी-सानने स्वतन्त्र मोटर किराये पर लेनेके बदले बसमें बैठकर जाना ही पसन्द किया। मोटरके लिअे रास्ता भी अच्छा नही था और बस बडी ही सुविधाजनक थी। अिस सुन्दर यात्राका वर्णन अिसके बादके पत्रके लिअे सुरक्षित रख रहा हू।

१२
मात्स्यु और खुशारो

हाकोदाते,
३०-७-'५७

आकको जैसे ही दूसरे दो सुन्दर सरोवर देखनेका अिरादा करके हमने ता० २८ को सुबह दस बजे आकको छोडा। शाम तक हमे कवायु पहुचना था। सीधे रास्तसे जाते तो मात्स्यु सरोवर नही देख पाते। अिसलिअे लम्बा रास्ता पकडा और बस चलते ही रहे। यहाका प्रदेश काफी अूचाअी पर है। पहाड तो यहा जितने चाहो अुतने है और अेकसे अेक अूचे भी। वनश्रीका सबसे ज्यादा वैभव अिसी जगह देखनेको मिलता है। लेकिन दिनभरके सफरमे न तो कोअी पक्षी देखनको मिला और न कोअी रीछ अथवा हिरन! अिस चीजके लिअे अफसोस नही करेंगे, यह पहले ही तय कर लिया था। फिर भी आश्चर्यकी बात तो यह थी ही कि आखिर सारे पशु-पक्षी गये कहा? कोअी बता नही सका।

बसमे बैठनेके बाद भी कुछ दूर तक आकको सरोवर थोडा बहुत दिखाअी दे रहा था। कही-कही बडे-बडे पेडोके कारण सरोवरके दर्शन बराबर नही हो पाते थे। जब सरोवर ओझल होनेवाला ही था तब मैने अुसे कृतज्ञ आखोने नमस्कार किया। 'पुनरागमनाय च' वाला मन्त्र प्रामाणिक तौर पर बोलनेकी हिम्मत नही हुअी। जिन्दगीके अुत्तरार्धमे पूर्वसे भी पूर्व और अुत्तरसे भी अुत्तरकी ओर यहा तक मै अेक बार आ सका यही बडा अहोभाग्य है। आज भी हम कुछ और ज्यादा अुत्तरमे ही जा रहे थे।

थोडा-सा पूर्वकी ओर जाने पर रास्तेसे ही मात्स्यु सरोवर दिखाअी दे सकता था। अिसलिअे बडे-बडे पहाडोको लाघकर और घने-से-घने जगलोको पारकर टेगीकागा शहरके अुस पार हम अुस सरोवरकी खोजमें निकले। जिस स्थानसे सरोवरका दृश्य सबसे सुन्दर दिखाअी दे सकता था वहा जाकर हम सब बससे नीचे अुतरे लेकिन बडी ही निराशा हुअी। चारो ओर कुहरेका क्षीरसागर फैला हुआ था। न आकाश दिखाअी दे रहा था न पृथ्वी। फिर जगल और सरोवर तो क्या दिखाअी देते! गीतामें कहा है न कि सब स्थान जल-मग्न होने पर कुअे, गड्ढे और तालाबोका कोअी भिन्न अस्तित्व नही रहता। बिलकुल वैसी ही स्थिति यहा दिखाअी दे रही थी। बीच-बीचमे कुहरा कुछ हलका होकर सरोवरकी सलवटोंके जैसी लहरोका दर्शन करा देता था। लेकिन अुससे अिस बातका विषाद मनमें और भी ज्यादा बढ जाता था कि हम कितने सुन्दर दृश्यसे वचित रहे। अुस पर तुर्रा यह कि अेक जापानी बहनने अिस मात्स्यु सरोवरके दस-बीस रगीन पोस्टकार्ड भी दिखाये! अेकसे अेक बढिया दृश्य! विस्तृत दृश्य अेक साथ दिखानेके लिअे अुसमे अेक-दो जुडवा पोस्ट-कार्ड भी थे। डाकखानेके डबल नही, लेकिन लग्न-पत्रिकाके जैसे अेक कोने पर जुडे हुअे। अिन चित्रोको देखकर जी और भी कुढा और अैसा लगा कि अिससे तो ये सुन्दर फोटो न देखने वही अच्छा था! अज्ञान परम सुखम्! चित्र दिखानेवाली अुस जापानी बहनको हमने धन्यवाद दिये और जो देखनेको नही मिला अुसका दुःख करनेके बदले जो मिलनेवाला है अुसकी कल्पना करनेमें ही अक्लमन्दी और सुख है, यह विचार करके हम पश्चिमकी ओर प्रवृत्त हुअे। और करीब सवा तीन बजे कवाय् पहुचे।

रास्तेमें हमने अेक अूंचे पहाडका टेढा-मेढा और फटा हुआ द्रोण (क्रेटर) देखा। जंगलकी चिर हरियालीके बीच अितना ही भाग वनस्पति-विहीन देखकर मनमें कुछ डर और दर्द पैदा होता था। कुछ आगे चलकर हमने दिशा बदली। वहां तो सफेद धुअेके बादल अूपर जाते हुअे दिखाओ दिये। गंधककी गंध भी गजबकी थी। गन्धक शब्द गन्धसे ही आया है अिसलिअे अुसकी अुग्रता कितनी थी यह कहनेकी जरूरत नहीं है।

जैसे ही हमारी बस रुकी, यात्री कैमरा लेकर दौडे। कअी तो धुअेकी तरफ ही बढने लगे और सब तरफसे फोटो लेने लगे। हम भी अुनके पीछे-पीछे जाते, लेकिन चि० मंजुकी आंखकी हालत मैं जानता था, अिसलिअे मैंने अुसे जानेसे मना किया। आज्ञा कठोर तो थी पर आवश्यक थी। अुसकी निराशा जरा सुसह्य करनेके लिअे मैंने भी न जाना ही ठीक समझा। चि० रेवतीको भी रोक सकता था लेकिन अुसका मन था। वह अेक अनोखा अनुभव कर प्राप्त कर सके तो यह अच्छा ही है, यह सोचकर मैंने अुसे तो जाने दिया। मंजुको मना किया था अिससे अुसने मान लिया था कि अुसे भी अिजाजत नहीं मिलेगी। अनपेक्षित अिजाजत मिलने ही वह दौड पडी। गन्धकके धुअेके बादलोंने अुसका बडे अुत्साहसे स्वागत किया। अुसे भी धुअेकी घबराहटके अनुभवका संतोष मिला। अैसी जगह कब विस्फोट हो जाये यह कहा नहीं जा सकता। लेकिन बिना जोखिम अुठाये जिन्दगीका आनन्द कैसे मिल सकता है?

तुम्हें याद होगा कि अफ्रीकाके अेक अभयारण्यमें हिप्पोके झुण्डको पानीमें लोट-पोट होते हुअे देखनेके लिअे हम अुस डबरेमें अुतरे थे। यदि हिप्पो हमला कर दे तो तुम दौडकर कगार पर चढ नहीं सकोगी, अिस डरसे मैंने पहले तो तुम्हें जानेसे मना किया था। लेकिन फिर मुझे ही लगा कि अिस तरह जरा भी जोखिम न अुठाअे तो कैसे काम चल सकता है? अितनेमें कमलनयनने भी कहा 'काकासाहेब, सरोज बहनको भी साथ ले लें।' फिर हम किनारे तक गये और अुन अहदी जानवरोंको हमने जलोत्सव मनाते हुअे जी भरकर देखा था।

वहा यदि मै रेवतीके साथ चला जाता तो अितनी चिंता नही होती। मनमे विचार आया कि यदि विस्फोट हो और अुसमे रेवतीको कुछ हो जाय तो मुझे अुसके बगैर स्वदेश लौटनेमे कैसा लगेगा! पर मुझे विश्वास है कि चाहे जितना बुरा लगता, फिर भी अुसे जाने दिया अिसके लिअे मुझे अफसोस नही होता। जातिके रूपमे हम लोगोंको खतरा अुठानेकी आदत डालनी ही चाहिये।

तीन साल पहले जब हम जापानके दक्षिणमे कुमामोतो गये थे, तब वहासे आसोका ज्वालामुखी देखने गये थे। अुसकी याद तुम्हे भी होगी। तब दुनियाका सबसे बडा जलता हुआ द्रोण देखनेका मौका मै न खो दू अिस खयालसे तुमने मुझे द्रोणके मुह तक जाने दिया था। यह बात भी मुझे यहा स्मरण हो आअी।

अब हम कवागु पहुच गये। अेक सबसे सुन्दर, सुघड और स्वच्छ होटलमे हमने डेरा डाला और कुचारो अथवा खुशारो देखनेकी अुत्कण्ठा बढी। लेकिन हमारे मेजबान व मार्गदर्शक—स्वामी अीमाअी-सान तो बर्फ जैसे ठडे दिखाअी दिये। "देर हो गअी है। सरोवर दूर है" आदि अनेक दलीलें अुन्होने दी। सरोवर देखनेकी मेरी अुत्कण्ठा तीव्र थी, लेकिन अीमाअी-सानकी मरजी न हो तो मेहमानोको मेजबानकी असुविधाका विचार करना ही चाहिये, अिस सिद्धान्तके अनुसार मै ढीला पड गया। लेकिन अीश्वरने चि० सजुको अुत्साहके साथ हिम्मत भी दी। अुसे आगे करके मै भी दृढ हो गया। तब अीमाअी-सानको अेक टैक्सी मगानी ही पडी। सरोवर कुछ दूर तो था। हम अेक टेढा-मेढा रास्ता पार करके सरोवरके किनारे पहुचे। देखते ही मनमे खयाल आया कि यह पानीका सरोवर नही है, यहा तो विशुद्ध काव्यमय आकर्षण ही छलक रहा है! फिर अधिक कौन सोचता? तुरन्त ही हमने अेक नाव मगानेका प्रस्ताव किया। यहा हमारी अेक परीक्षा और होनेवाली थी। आकाश घिर गया। शाम हो चली थी। भरे हुअे बादल पीछेके पहाड पर रात्रिके विश्रामके लिअे अुतरे। दाहिनी ओर दूर पहाड पर बारिश होती हुअी दिखाअी देती थी। अेक-दो बूदे हमारे सिर पर भी पडी! अीमाअी-सानने कहा — अेक बार चल पडे तो चालीस मिनटसे पहले वापस नही

आ सकेंगे। काकासाहब भीगे और बीमार पडे तो सारा कार्यक्रम बिगड जायगा। अिस बडे सरोवरमे तूफान भी आते है। मेरे जैसा मजबूत आदमी तो तैरकर किनारे पहुच भी सकता है, लेकिन आप लोगोका क्या होगा?" अुनकी बात मानकर मैने सबसे कहा 'तब रहने दो न!' लेकिन जब अिसका अुन पर कोअी भी असर नही हुआ, तब आखिरी निर्णय मैने अपने हाथमे लेकर कहा 'चिन्ताकी कोअी बात नही है। भीगेंगे तो घर जाकर कपडे सुखा लेंगे। लेकिन अिस सरोवरके अुस पार तो जाना ही है।'

फिर मैने बताया कि अेक समय मै भी अच्छा तैराक था, यद्यपि अिस बातमे अब कोअी अर्थ नही था। जवानीमे खूब तैर सकता था, अिसलिअे सरोवर मेरी दया थोडे ही खानेवाला था! लहरे तो कहती कि हम दया खानेकी आदी नही है हम तो मनुष्योको ही खा जाती है। खैर, आखिर बेचारे ओिमाओी-सान भी मान गये! तुरन्त ही पाच-छह लोग बैठ सके अितनी बडी नावका अिंजिन भक्-भक् करने लगा और हम चल पडे। अिस मौके पर यदि हम हार जाते तो सचमुच जीवनके आनन्दका अेक स्वर्ण-अवसर खो बैठते।

सरोवरका पानी गहरा नीला और हरा था। अैसे रगको जेड (Jade) की अुपमा दी जाती है। मैने जेडके कीमती पत्थर कोअी कम नही देखे है। अुन सख्त पत्थरोमे से कारीगरोके बनाये हुअे छोटे-छोटे बर्तन और मूर्तिया भी मैने बहुत देखी है। जेडकी गहरी और हलकी छटाओको मै जानता था। फिर भी सरोवरके अिस पानीके रगको जेडकी अुपमा देनेके लिअे आज मै तैयार नही होता।

देखते-ही-देखते हमारी नाव अुत्तरकी तरफ बढने लगी। आगे बाअी ओर नाकानोशीमाका बडा द्वीप दिखाअी दिया। अैसा लगता था मानो कोअी पुराण-पुरुष तपस्या कर रहा हो। नाकानोशीमाका अर्थ होता है बीचका द्वीप। दक्षिणकी हवा थी। जब तक हमारी नौकाने गति नही पकडी तब तक अुसकी ध्वजा फड-फड करती हुअी हमारे आगे-आगे चल रही थी। अैसा लगता था मानो अिंजिन काम नही कर रहा है, बल्कि

ा ही हमे धकेल रही है। थोडी देर बाद जब नावने गति पकडी तब ानकी गति और नावके अिंजनकी गति दोनो अेकसमान हो गअी। तब जा ढीली होकर नीचे लटकने लगी मानो हवा हो ही नही!

अेक बार बम्बअीसे रत्नागिरि जाते हुअे हमारा जहाज तेज हवामे ाकी ही दिशामें व अुसीके वेगसे चल रहा था। अिसलिअे अैसा गता था मानो हवा थी ही नही। डेक पर खडे-खडे हम लोगोको ग रहा था कि हम बिल्कुल शान्त वातावरणमे ही चल रहे है। लेकिन ब बन्दरगाह आया व जहाज ठहरा तब हवाके जोरसे कही अुड जाये अैसा डर लगने लगा।

ध्वजा क्यो ढीली पडी अिसके बारेमे मै साथकी बहनोको समझा हा था कि अितनेमे हवाको शायद दक्षिण-पश्चिमकी ओरसे गति मिली ार हमारी ध्वजाकी पूछ पूर्वकी ओर फडफडाने लगी। जानकार लोग ी अिन सारी खूबियोका आनन्द अुठा सकते है।

अब हम आधे रास्ते आ पहुचे। पानीमें खुशीकी लहरे अुठ रही ी। अुसका रग कुछ ज्यादा गहरा होने लगा। जैसे-जैसे वह चमकता से-वैसे अुसका रग और भी चैतन्यमय दिखाअी देता।

काश्मीरमें झेलम नदीके अुद्गमके पासके तालावका पानी गहरा ीला है। अुसकी शोभा कुछ और है। और आजके अिस सरोवरके ाट रगके पानीकी शोभा कुछ और है। वहा लगता था कि ायद किसीने तालावमे नीले कपडे धोये है या किसी रगरेजने नीला ग घोल दिया है। अिस खुशारो सरोवरमे कृत्रिमताका शक ्रा भी पैदा नही हो सकता। हम जैसे-जैसे आगे बढे वैसे-वैसे सामनेके हाडके जगलके अूचे-अूचे पेड अधिक स्पष्ट दिखाअी देने लगे। अुनके ीच कुछ चट्टाने खिन्नताने हृदयाविष्कारण कर रही थी। लेकिन अुनकी ाषा कौन समझता? पाषाणकी भाषा जापानी भी नही जानते और ी हजार वर्षमे अिस ओर बसे हुअे आयनु लोग भी नही जानते। फर हम तो अितनी दूर भारतसे यहा आये हुअे थे!

पहाडी प्रदेश महाराष्ट्रमे जन्मा हुआ होनेके कारण मै पहाडी रचनाका आसानीसे पहचान लेता हू। अुनका भाव भी कुछ समझ लेता

है। लेकिन अुसे व्यक्त करनेकी मुझे मनाही है। मैंने अपनी जुड़वा दूरबीन लेकर और रख दी और तब मैं अुस पहाड़ी चोटीके साथ अेकदिल हो सका। अन्तमें मैंने अुसे हृदयसे नमस्कार किया।

बिलकुल नजदीक जाने पर हमने देखा कि मनुष्यने सरोवरके चारों ओर अेक रास्ता बनानेका सोचा है। अिसे देखकर मुझे आनन्द भी हुआ और दुःख भी। अब अिस सरोवरके अेकान्तका हनन होगा, अिसके चारों ओर मोटरें दौड़ेंगी, कैमरे कअी ओरसे बन्दूकोंकी तरह क्लिक-क्लिक करेंगे और प्रकृतिकी अिस जलदेवीको मनुष्यकी सेवा करनेवाली दासी बना देंगे! यह विषादका कारण था। आनन्द अिस-लिओ था कि अैसा करने पर भी मनुष्य-जातिको प्रकृति माताका अधिकसे अधिक दर्शन हो सकेगा, मनुष्यके जीवनकी कृत्रिमता कुछ कम होगी और किसी दिन अुसे जीवन-धर्मकी दीक्षा भी मिलेगी। आखिर जहां देखो वहीं प्रकृतिकी जो छटा फैली हुअी है, अुसका कुछ तो अैसा अुपयोग होना ही चाहिये। प्रकृतिके साथ तादात्म्य अनुभव करनेके लिअे वैराग्य बढ़ानेकी जरूरत नहीं है। तटस्थता प्राप्त होना ही काफी है। बल्कि यही सच्ची साधना है।

हमारे देखे हुअे तीनों सरोवरोंमें से यह सरोवर सबसे बड़ा है और मेरे खयालसे सबसे गहरा भी। विचार आया कि अिसके बीचके नाकाझीमा टापू पर क्या किसी साधुने तपस्या नहीं की होगी? प्रकृतिका अितिहास करीब अेक लाख सालका तो है ही। अितने वर्षोंमें क्या अेक भी आत्मवीर अिस टापूमें नहीं पहुंचा होगा? पानीके अितने स्वच्छ और शीतल विस्तारमें विश्व-चैतन्यको अपनी छटाके साथ प्रकट होते देखकर किसी न किसी साधकको तो यहां अन्तर्मुख होनेकी प्रेरणा जरूर मिली होगी। अुसने यहां कृतज्ञताके साथ अिस पानीमें डुबकी लगाकर अद्वैतानन्दका अनुभव भी किया होगा।

वापस लौटनेसे पहले हम बाअीं ओर यानी पश्चिमकी तरफ आगे बढ़े। अब हवा हमारी नावके बाअीं ओर टकराने लगी। नाव डोलने लगी। साथ ही हमारे हृदय भी भीतर संगृहीत आनन्दसे डोलने लगे। तूफान तो नहीं था, लेकिन अुसकी याद आ रही थी। वापस

लौटते समय जरूर हवामें कुछ तूफानके आसार दिखाअी देने लगे। अब हमारी ध्वजा जिस दिशामे फडफडा रही थी अुसी दिशामे हमारी नाव भी जा रही थी, अिस कारण अुनका परस्पर विरोध मिट गया। फलत ध्वजाका फडफडाना तो कम हुआ, लेकिन अुसका बदला हवाके साथ खेल करनेवाली लहरोकी फुहारोने लिया। लहरे नावकी नाक पर टकराती थी और अुसमें से निकले हुअे पानीके अुदार छीटे हमारा आश्रय ढूढते थे। हमारे बीच मैं ही कुछ सुरक्षित था। मेरे सामने ओीमाओी-सान बैठे थे और वे जापानी बहन भी थी। दाओी ओर रेवती थी और बाओी ओर नौका-विहारका आग्रह करनेवाली मजु थी। पानीकी बूदें अुनके प्रति खास पक्षपात दिखावें तो अिसमें आश्चर्य ही क्या!

यह छोटा-सा तूफान हमारे नौका-विहारका आनन्द बढा रहा था। जोखिम तो कुछ थी ही नही, फिर भी मनमे तरह-तरहके विचार और पाप-शकाअे अुठने लगी। जोरकी आधी आ जाय तो? लहरे दुगुने वेगसे अुछलने लगें तो? और यदि सचमुच यही जल-समाधि लेनेका हम सबके भाग्यमें लिखा हो, तो डूबते-डूबते हर आदमीके मनमें कैसे विचार आयेंगे?

मुझे अपने बारेमे तो विश्वास था कि मैं अकेला होता तो तूफानके साथ अद्वैतानन्दका ही अनुभव करता। तुम साथमे होती तो भी अिसमें फर्क नही पडता। लेकिन जब दूसरे साथी साथमे होते है तब अुनका विचार पहले आता है। कल्पना जाग्रत हुअी और दोनो बहनोके दो-दो बच्चे नजरके सामने घूमने लगे। चारो बच्चे मानो मुझसे पूछ रहे थे 'आपको किसने कहा था कि अैसे पागलपनको बढावा दें? आपने ओीमाओी-सानका कहना क्यो नही माना? हमारा विचार भी नही किया?'

लेकिन यह तो केवल मेरी कल्पनाका दृश्य था। वह आखिर कहा तक टिकता? सरोवरकी छोटी-छोटी लहरे भी पानीकी बच्चिया ही थी। वे आनन्द और मौजकी किलकारिया भरने लगी। अशुभकी कल्पना पानीमें डूब गअी और केवल 'जीवन' का तरलानन्द ही तैरने लगा।

१३

अुत्तर जापानके पहाड़ी प्रदेशमें

हाकोदाते,
३०–७–'५७

जापान आनेसे पहले ही मैंने श्री ओीमाओी-सानको लिख दिया था कि अिस बार मैं होटलोंमें नहीं रहना चाहता, मुझे जापानी लोगोंके घरोंमें रहकर अुनका जीवन नजदीकसे देखना है। अिनमें हमें कुछ असुविधा भी अुठानी पड़े तो कोओी बात नहीं है। अधिक असुविधा तो हमारे मेजबानोंको ही होगी। हमारे लिअे तो आत्मीयताके विकासका आनन्द छोटी-बडी सारी असुविधाओंसे अधिक महत्त्वका होगा।

मेरी अिस अिच्छाके अनुसार टोकियोमें हमें मासुजी बन्धुओंके घरमें ठहराया गया था। लेकिन सुदूर होक्कायडोमें अैसा करना अशक्य था।

यह प्रदेश गरम चश्मोके लिअे प्रख्यात है। अिसलिअे यहा लोग चश्मोके समीपवर्ती होटलोमे रहनेके लिअे ही जाते है। बहुतसे अच्छे-अच्छे जापानी होटलोमे रहनेके बाद मुझे लगा कि यह अनुभव भी लेने लायक था। होटल चलानेवाले भाअी-बहनोका जापानी शिष्टाचार हमे जापानी संस्कृतिकी खुबूबीका अनुभव कराता है। संपूर्ण घरकी निर्माण-कला, कमरोकी सुघडता व सजावट आदि सब कुछ सूक्ष्मतासे समझने लायक होती है।

अेक पौराणिक कथा है कि पाण्डवोके जमानेमे मयासुर चीनमे जाकर वहाका अेक राजप्रासाद अुठा लाया था। यानी राजमहल बनानेकी वहाकी कला सीखकर अुसने अुसे अिन्द्रप्रस्थ और हस्तिनापुरमे दाखिल किया — जहा जमीन हो वहा पानीका भ्रम हो और जहा पानी हो वहा जमीन जैसा लगे, अैसी करामात अुसने कर दिखायी थी। पुराणोमे वर्णित और विस्मृत वे प्राचीन दिन तो गये। मेरे खयालमे तो अब असमके अथवा पश्चिमी हिन्दुस्तानके किसी अुत्साही शिल्पीको जापान जाकर अुनके घरोका अध्ययन करना चाहिये और जरूरी हेरफेर करके अुस पद्धतिको अपने यहा दाखिल करना चाहिये। असमके कितने ही घरोमें लकडीके चौखटमे घास अथवा बेतके डठल जमाकर अुनकी दीवारे बनाअी जाती है। दोनो ओर मिट्टीसे लीपकर सफेदी कर देते हैं तब दीवारें और भी सुन्दर लगने लगती हैं। अुन लोगोको जापानी ढग अपनानेमे जरा भी दिक्कत नही होगी।

बेदायुसे (२९-७) सुबह नहा-धोकर निकलते-निकलते दस बज गये। रास्तेके लोगोका हमारी पोशाकके बारेमें अितना कुतूहल था कि सब जगह हमारे फोटो लिये जाते थे। अिसके अलावा, दो जापानी बहनोने तो चि० मजु और रेवतीसे हमारे कपडे पहनना सीखकर अुन पोशाकमें अपने फोटो भी खिचवाये। मेरी दाढी भी अिन लोगोको बडी मजेदार लगती है। हमारे बीच यह अेक कहावत ही बन गअी है कि 'साडीसे और दाढीसे' हम भारतीय हैं यह जापानी लोग सरलतासे पहचान लेते हैं।

आगेका रास्ता भी बहुत सुन्दर था। चढाअी तो थी ही। टैक्सीमें बैठकर धीरे-धीरे पहाड चढे। पूरे समय कुशारो सरोवरका साथ रहा।

नाकाशीमा द्वीप दूर-दूर जाने लगा। दूसरे छोटे-छोटे टापू भी बीच-बीचमें [illegible]ाकिओंका [illegible] देने लगे। जैसे जैसे अूपर चढ़ते गये वैसे वैसे सरोवरका पूरा किनारा और दूर-दूरके पहाड़ोंको मिलाकर अेक अखण्ड, विशाल और विशालतर दृश्य होता गया। नीचे जो वृक्ष सरोवरके दर्शनमें विघ्नरूप थे, वे ही अब हमारी अुन्नति (अूचाअी) की वजहसे पैरों तले जा रहे थे और सारे प्रदेशकी शोभा बढ़ानेमें अुन्होंने मदद की है, अिस भावनासे सन्तुष्ट दिखाअी दे रहे थे।

आखिर हम अिस प्रदेशके ठीक सिर पर पहुंच गये। हमारे देशमें जब हम किसी पहाड़के अूपर पहुंचते हैं तब वहां किसी बड़े पत्थर पर सिंदूर लगा हुआ देखते हैं। चढ़ाअी चढ़नेका पुरुषार्थ सफल हुआ अिसकी कृतज्ञता व्यक्त करनेके लिअे गाड़ीवाले अैसी जगह नारियल भी फोड़ते हैं। नारियलकी जटाओंका ढेर देखकर लोगोंकी बढ़ती श्रद्धाका अनुमान लगाया जा सकता है।

यहां हम बिहोरोकी चढ़ाअी चढ़े तब वहां सबसे अूंची जगह पर हमने अेक नीरस-पत्थरका अूंचा स्तंभ देखा। अुस पर जापानीमें 'बिहोरो घाट' लिखा भी था। यह लिपि चित्र जैसी होनेके कारण पत्थरकी शोभा भी बढ़ाती थी। यहांसे कुशारो सरोवरका आखिरी और रमणीयतम दर्शन होता था। अिस सरोवरकी ओर पीठ करके स्तंभके चारों ओर हम पांचों खड़े हो गये और वहीं मिले अेक फोटोग्राफरसे हमने अपना फोटो खिचवाया। बादलोंने भी विचार किया कि अितनी सुन्दर पृथ्वीके अूपरका आकाश बिल्कुल नीला व फीका रहे तो यह बुरी बात होगी। अिसलिअे बीच-बीचमें सफेद बादल आकाशमें फैल गये और अुन्होंने हमारे फोटोकी शोभा बढ़ाअी। सचमुच अिससे फोटो खिल अुठा। अुन बादलोंको मैंने कृतज्ञतापूर्वक अनेक धन्यवाद दिये। शायद अुनके भारसे ही बादल धीरे-धीरे नीचे झुकने लगे।

बिहोरोकी वह अूचाअी, वहांसे देखा हुआ सरोवरका दृश्य और अुस प्रकृति-सौंदर्यके बीचमें बैठकर किया हुआ वनभोजन — नाश्ता यह सब आसानीसे नहीं भुलाया जा सकता।

अब हमारी टैक्सीके भाग्यमे धीरे-धीरे अुतरना ही था। आसपासके गावोके रास्ते, सुन्दर-सुन्दर वाडिया, अुनमे से झाकते हुअे रग-बिरगे फूल — सब हमारे आनन्दको पूर्णता प्रदान कर रहे थे।

डेढ बजे हम लोग बिहोरो स्टेशन पहुचे और वहा हाकोदाते जानेवाली ट्रेनका अिन्तजार करने लगे। पर हमें अधिक राह नही देखनी पडी। धूपमे बचनेके लिअे हम स्टेशनके पुलकी छाया ढूढ रहे थे, अितनेमें ही ट्रेन आ पहुची।

अब हमें होक्कायडोका लगभग सारा द्वीप बेधकर, बिच्छूके डक-जैसे टेढे-मेढे दक्षिणी होक्कायडोमें प्रवेश करना था और ठेठ दक्षिणमें हाकोदाते बन्दरगाह तक पहुचना था। ट्रेनकी अिस अेक ही यात्रामे हमने होक्कायडो द्वीपका सारा पूर्वी भाग, आखें थकने और अधेरा होने तक, जी भरकर देखा। फिर हमने ट्रेनमें ही खाना खाया और आठ-नौ बजे तृतीय श्रेणीके सोनेके डिब्बेमे पहुच गये। यहा तीन मजिलवाले अेक कमरेमे हम टिके, जिसमें छह बिस्तर बिछे थे। सप्पोरोसे हमारे साथ आअी हुअी स्नेही बहन श्रीमती याअेको अीवामुरा रास्तेमे ओतारु-स्टेशन पर अुतरनेवाली थी (यह स्थान सप्पोरोके पूर्वोत्तरमें है), अिसलिअे सोनेसे पहले अुन्होंने हमसे विदा ली। अुन्होने हमे सुन्दर-सुन्दर आयनु खिलौने दिये। हमने अुनसे कहा कि ये खिलौने हमारे यहाके लोगोंको बहुत पसन्द आयेंगे। लेकिन हमे तो खास अुनका सौम्य अेव सस्कारी साथ ही हमेशा याद रहेगा। यात्रामें ये बहन हमारी सुविधाका भी थोडा-बहुत खयाल तो रखती ही थी, लेकिन अुनका भक्त-हृदय साधु ओसाअी-सानको किसी भी तरहकी तकलीफ न हो अिसका पूरी तरहसे ध्यान रखता था।

हर तरहसे चिन्ता करती रहती है। जापानसे भेजे हुअे मजुके पत्रोंसे अुनकी नामको तसल्ली मिलती है। सामके पत्रोंमें निश्चिन्तता के अैसे अुद्गार पढकर मजु वडी खुश होती है। मुझे भी सतोष होता है।

रेवतीके दोनो बच्चोंकी जिम्मेदारी अुसकी माने ली है। माकी मददके लिअे रेवतीकी वहन हेमाताअी भी दिल्ली जाकर रहती है। फिर भला रेवती क्यों चिंता करने लगी? लेकिन वालका पत्र न मिलने पर वह बिलकुल मुरझा जाती है। तब मुझे वालके बचावमें जितनी दलीलें सूझती हैं, अुतनी सब अुसके सामने रखनी पडती हैं। अुसे समझाता हू कि वालने तो काफी खत लिखे होंगे, लेकिन डाकखानेकी गफलतसे यदि वे हमे न मिले तो अिसमें अुसकी क्या गलती?

खैर। अब मैं अपनी बात कहू? कलकत्ता और हागकागके बाद मुझे तुम्हारा अेक भी पत्र नही मिला था। जापानमें पैर रखनेके बाद आज पहली बार तुम्हारा १९ तारीखका पत्र मिला है। बडी खुशी हुअी। तुम्हारे पत्रमें चि० वाल, दीपक तथा सिद्धार्थके और मजुके घरके व अुसके बच्चोंके समाचार होते ही हैं। अिसलिअे तुम्हारा पत्र हम तीनोंको अेक साथ ही प्रसन्न कर देता है। हमारे तीनोंके अप्रकट आशीर्वाद व धन्यवाद सुगन्धकी तरह तुम्हारी ओर वह रहे हैं।

मजु और रेवतीको तो मैंने घर पत्र लिखनेको विठा दिया है। अिसलिअे आज पहली बार तुम्हें अपने हाथसे पत्र लिख रहा हू। यह भी मेरे लिअे अेक आनन्दकी बात है। अिसे शायद तुम नही समझ सकोगी। अपने हाथसे लिखनेका मेरा आलस्य तुम जानती ही हो। लेकिन अिसीलिअे जब कभी अपने हाथसे लिख पाता हू, तब विशेष सतोष होता है। और यहा तो वक्त भी काफी मिला।

हाकोदातेमें और यहा आसपास देखने लायक काफी है। लेकिन हमने अिन पाच दिनोंमें अितना अधिक देखा-भाला है कि अब अुनमें वृद्धिकी और गुंजायश ही नहीं रह गअी है। जिस द्वीपमें सप्पोरोके बाद यही वडा शहर है। आबादी ढाअी लाखके करीब है। अिस शहरके अुत्तरमें सत्तर मील दूर 'ओनुमा' नामका अेक सरोवर है। अुसका घेरा अिक्कीस मीलका है। शोभाकी दृष्टिसे यह सरोवर भी अप्रतिम

हर तरहसे चिन्ता करती रहती है। जापानसे भेजे हुअे मजुके पत्रोंसे अुनकी मानको तसल्ली मिलती है। मामके पत्रोंमें निश्चिन्तता के अैसे अुद्‌गार पढकर मजु बडी खुश होती है। मुझे भी सतोष होता है।

रेवतीके दोनो बच्चोंकी जिम्मेदारी अुसकी माने ली है। माकी मददके लिअे रेवतीकी बहन हेमाताअी भी दिल्ली जाकर रहती है। फिर भला रेवती क्यों चिंता करने लगी? लेकिन बालका पत्र न मिलने पर वह बिलकुल मुरझा जाती है। तब मुझे बालके बचावमें जितनी दलीलें सूझती हैं, अुतनी सब अुसके सामने रखनी पडती हैं। अुसे समझाता हू कि बालने तो काफी खत लिखे होंगे, लेकिन डाकखानेकी गफलतमे यदि वे हमें न मिले तो अिसमें अुसकी क्या गलती?

खैर। अब मैं अपनी बात कहू? कलकत्ता और हागकागके बाद मुझे तुम्हारा अेक भी पत्र नहीं मिला था। जापानमें पैर रखनेके बाद आज पहली बार तुम्हारा १९ तारीखका पत्र मिला है। बडी खुशी हुअी। तुम्हारे पत्रमें चि० बाल, दीपक तथा सिद्धार्थके और मजुके घरके व अुसके बच्चोंके समाचार होते ही है। अिसलिअे तुम्हारा पत्र हम तीनोंको अेक साथ ही प्रसन्न कर देता है। हमारे तीनोंके अप्रकट आशीर्वाद व धन्यवाद सुगन्धकी तरह तुम्हारी ओर बह रहे हैं।

मजु और रेवतीको तो मैंने घर पत्र लिखनेको बिठा दिया है। अिसलिअे आज पहली बार तुम्हें अपने हाथसे पत्र लिख रहा हू। यह भी मेरे लिअे अेक आनन्दकी बात है। अिसे शायद तुम नहीं समझ सकोगी। अपने हाथसे लिखनेका मेरा आलस्य तुम जानती ही हो। लेकिन अिसीलिअे जब कभी अपने हाथसे लिख पाता हू, तब विशेष सतोष होता है। और यहा तो वक्त भी काफी मिला।

हाकोदातेमें और यहा आसपास देखने लायक काफी है। लेकिन हमने अिन पाच दिनोंमें अितना अधिक देखा-भाला है कि अब अुनमें दिलचस्पी और गुजायश ही नहीं रह गअी है। अिस द्वीपमें सप्पोरोके बाद यही बडा शहर है। आबादी ढाअी लाखके करीब है। अिस शहरके अुत्तरमें सत्तर मील दूर 'ओनुमा' नामका अेक सरोवर है। अुसका घेरा अिक्कीस मीलका है। शोभाकी दृष्टिसे यह सरोवर भी अप्रतिम

हर तरहसे चिन्ता करती रहती है। जापानसे भेजे हुअे मजुके पत्रोसे अुनकी मानको तसल्ली मिलती है। सासके पत्रोमे निश्चिन्तता के अैसे अुद्गार पढकर मजु बडी खुश होती है। मुझे भी सतोष होता है।

रेवतीके दोनो बच्चोकी जिम्मेदारी अुसकी माने ली है। माकी मददके लिअे रेवतीकी बहन हेमाताअी भी दिल्ली जाकर रहती है। फिर भला रेवती क्यो चिंता करने लगी? लेकिन बालका पत्र न मिलने पर वह बिल्कुल मुरझा जाती है। तब मुझे बालके बचावमे जितनी दलीले सूझती है, अुतनी सब अुसके सामने रखनी पडती हैं। अुसे समझाता हू कि बालने तो काफी खत लिखे होगे, लेकिन डाकखानेकी गफलतमे यदि वे हमे न मिले तो अिसमें अुसकी क्या गलती?

खैर। अब मैं अपनी बात कहू? कलकत्ता और हागकागके बाद मुझे तुम्हारा अेक भी पत्र नही मिला था। जापानमे पैर रखनेके बाद आज पहली बार तुम्हारा १९ तारीखका पत्र मिला है। बडी खुशी हुअी। तुम्हारे पत्रमें चि० बाल, दीपक तथा सिद्धार्थके और मजुके घरके व अुसके बच्चोंके समाचार होते ही हैं। अिसलिअे तुम्हारा पत्र हम तीनोंको अेक साथ ही प्रसन्न कर देता है। हमारे तीनोंके अप्रकट आशीर्वाद व धन्यवाद सुगन्धकी तरह तुम्हारी ओर बह रहे हैं।

मजु और रेवतीको तो मैंने घर पत्र लिखनेको बिठा दिया है। जिसलिअे आज पहली बार तुम्हे अपने हाथसे पत्र लिख रहा हू। यह भी मेरे लिअे अेक आनन्दकी बात है। अिसे शायद तुम नही समझ सकोगी। अपने हाथसे लिखनेका मेरा आलस्य तुम जानती ही हो। लेकिन अिसीलिअे जब कभी अपने हाथसे लिख पाता हू, तब विशेष सतोष होता है। और यहा तो वक्त भी काफी मिला।

हाकोदातेमे और यहा आसपास देखने लायक काफी है। लेकिन हमने अिन पाच दिनोंमे अितना अधिक देखा-भाला है कि अब अुसमें वृद्धिकी और गुजायश ही नही रह गअी है। अिस द्वीपमें सप्पोरोके बाद यही बडा शहर है। आबादी ढाअी लाखके करीब है। अिस शहरके अुत्तरमे सत्तर मील दूर 'ओनुमा' नामका अेक सरोवर है। अुसका घेरा अिक्कीस मीलका है। शोभाकी दृष्टिसे यह सरोवर भी अप्रतिम

हर तरहसे चिन्ता करती रहती है। जापानसे भेजे हुअे मजुके पत्रोसे अुनकी मानको तसल्ली मिलती है। मानके पत्रोमे निश्चिन्तता के अैसे अुद्‌गार पढकर मजु बडी खुश होती है। मुझे भी सतोष होता है।

रेवतीके दोनो बच्चोकी जिम्मेदारी अुसकी माने ली है। साफी मदद्‌के लिअे रेवतीकी बहन हेमाताअी भी दिल्ली जाकर रहती है। फिर भला रेवती क्यो चिता करने लगी? लेकिन बालका पत्र न मिलने पर वह बिल्कुल मुरझा जाती है। तब मुझे बालके बचावमे जितनी दलीले सूझती है, अुतनी सब अुसके सामने रखनी पडती है। अुसे समझाता हू कि बालने तो काफी खत लिखे होगे, लेकिन डाकखानेकी गफलतमे यदि वे हमे न मिलें तो अिसमें अुसकी क्या गलती?

खैर। अब मै अपनी बात कहू? कलकत्ता और हागकागके बाद मुझे तुम्हारा अेक भी पत्र नही मिला था। जापानमे पैर रखनेके बाद आज पहली बार तुम्हारा १९ तारीखका पत्र मिला है। बडी खुशी हुअी। तुम्हारे पत्रमे चि० बाल, दीपक तथा सिद्धार्थके और मजुके घरके व अुसके बच्चोके समाचार होते ही है। अिसलिअे तुम्हारा पत्र हम तीनोको अेक साथ ही प्रसन्न कर देता है। हमारे तीनोके अप्रकट आशीर्वाद व धन्यवाद सुगन्धकी तरह तुम्हारी ओर बह रहे है।

मजु और रेवतीको तो मैने घर पत्र लिखनेको बिठा दिया है। अिसलिअे आज पहली बार तुम्हे अपने हाथसे पत्र लिख रहा हू। यह भी मेरे लिअे अेक आनन्दकी बात है। अिसे शायद तुम नही समझ सकोगी। अपने हाथसे लिखनेका मेरा आलस्य तुम जानती ही हो। लेकिन अिसीलिअे जब कभी अपने हाथसे लिख पाता हू, तब विशेष सतोष होता है। आज यहा तो वक्त भी काफी मिला।

हाकोदातेमे और यहा आसपास देखने लायक काफी है। लेकिन हमने अिन पाच दिनोमे अितना अधिक देखा-भाला है कि अब अुसमें वृद्धिकी और गुजायश ही नही रह गअी है। अिस द्वीपमें सप्पोरोके बाद यही बडा शहर है। आबादी ढाअी लाखके करीब है। अिस शहरके अुत्तरमे सत्तर मील दूर 'ओनुमा' नामका अेक सरोवर है। अुसका घेरा अिक्कीस मीलका है। शोभाकी दृष्टिसे यह सरोवर भी अप्रतिम

हर तरहसे चिन्ता करती रहती है। जापानसे भेजे हुअे मजुके पत्रोंसे अुनकी मानको तसल्ली मिलती हैं। सामके पत्रोंमे निश्चिन्तता के अैसे अुद्गार पढकर मजु बडी खुश होती है। मुझे भी सतोष होता है।

रेवतीके दोनो बच्चोंकी जिम्मेदारी अुसकी माने ली है। माकी मददके लिअे रेवतीकी बहन हेमाताओ भी दिल्ली जाकर रहती है। फिर भला रेवती क्यों चिंता करने लगी? लेकिन बालका पत्र न मिलने पर वह बिलकुल मुरझा जाती है। तब मुझे बालके बचावमे जितनी दलीलें सूझती हैं, अुतनी सब अुसके सामने रखनी पडती हैं। अुसे समझाता हू कि बालने तो काफी खत लिखे होंगे, लेकिन डाकखानेकी गफलतसे यदि वे हमें न मिले तो अिसमें अुसकी क्या गलती?

खैर। अब मैं अपनी बात कहू? कलकत्ता और हागकागके बाद मुझे तुम्हारा अेक भी पत्र नही मिला था। जापानमे पैर रखनेके बाद आज पहली बार तुम्हारा १९ तारीखका पत्र मिला है। बडी खुशी हुअी। तुम्हारे पत्रमें चि० बाल, दीपक तथा सिद्धार्थके और मजुके घरके व अुसके बच्चोंके समाचार होते ही हैं। जिसलिअे तुम्हारा पत्र हम तीनोंको अेक साथ ही प्रसन्न कर देता है। हमारे तीनोंके अप्रकट आशीर्वाद व धन्यवाद सुगन्धकी तरह तुम्हारी ओर बह रहे हैं।

मजु और रेवतीको तो मैंने घर पत्र लिखनेको बिठा दिया है। अिसलिअे आज पहली बार तुम्हें अपने हाथसे पत्र लिख रहा हू। यह भी मेरे लिअे अेक आनन्दकी बात है। अिसे शायद तुम नहीं समझ सकोगी। अपने हाथसे लिखनेका मेरा आलस्य तुम जानती ही हो। लेकिन अिसीलिअे जब कभी अपने हाथसे लिख पाता हू, तब विशेष सतोष होता है। और यहा तो वक्त भी काफी मिला।

हाकोदातेमे और यहा आसपास देखने लायक काफी है। लेकिन हमने अिन पाच दिनोंमे अितना अधिक देखा-भाला है कि अब अुनमें वृद्धिकी और गुजायश ही नहीं रह गअी है। अिस द्वीपमें सप्पोरोके बाद यही बडा शहर है। आबादी ढाअी लाखके करीब है। अिस शहरके अुत्तरमें सत्तर मील दूर 'ओनुमा' नामका अेक सरोवर है। अुसका घेरा अिक्कीस मीलका है। शोभाकी दृष्टिसे यह सरोवर भी अप्रतिम

१४

हाकोदाते

ता० ३०को सुवह छह वजे हम हाकोदाते पहुचे। स्टेशनसे मुकाम पर पहुचनेके लिअे काफी लम्बा रास्ता काटना पडा। अिस तरह हम अिस बन्दरका बडा भाग सहज ही देख सके। समुद्रके किनारे नावे और जहाज काफी बडी सख्यामे खडे थे। हवामे जहा जाओ वही मछलीकी गन्ध फैली हुअी थी। गन्धककी गन्ध अधिक अुग्र होती है अथवा मछलीकी, यह कहना मुश्किल है। भाग्यसे जहा हमें रहना था वहा यह गन्ध नही पहुचती थी। हम जहा ठहरे थे वह आधा घर था और आधा होटल। यहा हमे हर तरहकी सुविधा देनेके लिअे गृहपति विशेष प्रयत्नशील थे। अितने लम्बे सफरके बाद आरामकी जरूरत तो थी ही। चि० मजुने अपनी डायरीमें जो लिखा है, अुसके दो वाक्य यहा दे रहा हू "आज कोअी खास प्रोग्राम नही था। दोपहरके बाद ही बाहर जाना था। घर अवनिभाअीको अथवा और किसीको पत्र लिखनेका मन भी नही था। लेकिन श्री काकासाहेबने मुझे और रेवती बहनको लिखनेके लिअे आमने-सामने जबरदस्ती बिठा ही दिया। फिर तो कोअी चारा ही न था। मैने पूज्य मातुश्रीको तथा प्रदीपको पत्र लिखे।"

अिन दोनोकी पत्र लिखनेकी स्वतत्रतामे बाधा न पहुचे अिसलिअे मैं अुनके पत्रोंको देखना टालता हू। लेकिन यात्रामे चौबीसों घटे तरह-तरहके नये अनुभव लेते हुअे और आनन्दका आदान-प्रदान करते हुअे आत्मीयता अितनी बढ जाती है कि अुन्हे मिले हुअे और अुनके लिखे हुअे पत्र मुझे दिखाये बिना अिनसे रहा ही नहीं जाता। और मै तो स्वभावका शिक्षक ठहरा। अुनके पत्र पढनेके बाद अेकाध शब्द सुझाये बिना मै कैसे रह सकता हू? मजुको अेक अत्यन्त प्रेमालु और अनुभवी सास मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सासने मजुके दोनो बच्चोको सभालकर अुसे निश्चिन्त कर दिया है। वह तो अुलटे घर बैठे मजुको ही

हर तरहसे चिन्ता करती रहती है। जापानसे भेजे हुअे मजुके पत्रोंसे अुसकी माको तसल्ली मिलती है। सासके पत्रोंमे निश्चिन्तता के अैसे अुद्गार पढकर मजु बडी खुश होती है। मुझे भी सतोष होता है।

रेवतीके दोनो बच्चोकी जिम्मेदारी अुसकी माने ली है। माकी मददके लिअे रेवतीकी बहन हेमाताजी भी दिल्ली जाकर रहती है। फिर भला रेवती क्यो चिता करने लगी? लेकिन बालका पत्र न मिलने पर वह बिल्कुल मुरझा जाती है। तब मुझे बालके बचावमे जितनी दलीले सूझती है, अुतनी सब अुनके सामने रखनी पडती है। अुसे समझाता हू कि बालने तो काफी खत लिखे होगे, लेकिन डाकखानेकी गफलतमे यदि वे हमे न मिले तो अिसमे अुसकी क्या गलती?

खैर। अब मै अपनी बात कहू? कलकत्ता और हागकागके बाद मुझे तुम्हारा अेक भी पत्र नही मिला था। जापानमे पैर रखनेके बाद आज पहली बार तुम्हारा १९ तारीखका पत्र मिला है। बडी खुशी हुअी। तुम्हारे पत्रमें चि० बाल, दीपक तथा सिद्धार्थके और मजुके घरके व अुसके बच्चोके समाचार होते ही है। अिसलिअे तुम्हारा पत्र हम तीनोको अेक साथ ही प्रसन्न कर देता है। हमारे तीनोके अप्रकट आशीर्वाद व धन्यवाद सुगन्धकी तरह तुम्हारी ओर बह रहे है।

मजु और रेवतीको तो मैने घर पत्र लिखनेको बिठा दिया है। अिसलिअे आज पहली बार तुम्हे अपने हाथसे पत्र लिख रहा हू। यह भी मेरे लिअे अेक आनन्दकी बात है। अिसे शायद तुम नही समझ सकोगी। अपने हाथसे लिखनेका मेरा आलस्य तुम जानती ही हो। लेकिन अिसीलिअे जब कभी अपने हाथसे लिख पाता हू, तब विशेष सतोष होता है। और यहा तो वक्त भी काफी मिला।

हाकोदातेमे और यहा आसपास देखने लायक काफी है। लेकिन हमने अिन पाच दिनोमे अितना अधिक देखा-भाला है कि अब अुनमें रुचिकी और गुजायश ही नही रह गअी है। अिस द्वीपमें सप्पोरोके बाद यही बडा शहर है। आबादी ढाअी लाखके करीब है। अिस शहरके अुत्तरमे सत्तर मील दूर 'आनुना' नामका अेक सरोवर है। अुसका घेरा अिकतीस मीलका है। शोभाकी दृष्टिसे यह सरोवर भी अप्रतिम

गिना जाता है। वहा बरफ कम पडती है, अिस कारण बारहो महीने अुसके आसपास घूमनेका आनन्द अुठाया जा सकता है।

(देरसे आओमोरी जाते हुअे जहाजमे)

अितने बडे शहरमे आनेके बाद अखबारवाले मुलाकात लिये विना कैसे रहते? तीन बजे हम नगरपालिकाके दफ्तरमे गये। वहा यहाके डिप्टी मेयरसे मिले। (मेयर विदेश गये हुअे है)। यहाके दीवानखानेमे जापानके और होक्कायडोके बडे-बडे वैज्ञानिक नक्शे थे। अिन्हे देखकर मेरी घुमक्कड अन्तरात्मा प्रसन्न हुअी। थोडा समय मिलते ही मैने रेवती और मजुको अिन नक्शोकी मददसे काफी चीजे समझा दी।

यहासे हम पहाडीके अेक स्तूप पर गये। अूपर पहुचना अितना आसान नही था। यहा भी भक्तगण काफी सख्यामें अेकत्र हुअे थे। कैमरेवाले भी स्वधर्म समझकर हाजिर थे। मैने अपने प्रवचनमे भगवान बुद्धके विषयमे, तमाम वासनाओके अुन्नयनके विषयमे और विश्वशातिके लिअे त्याग और बलिदानकी आवश्यकताके विषयमे थोडा कहा। कितने ही भक्त पैदल ही अूपर आये थे। अुनको हाफते देखकर मैने कहा — "आरोहणम् तु सायासम्। किसी भी समाजको, राष्ट्रको अथवा व्यक्तिको जब चढना होता है तब बडा भारी पुरुषार्थ करना पडता है।" गिरनेका रास्ता तो हमेशा ही आसान होता है। अन्तमे मैने कहा कि मन पर यह पाठ अकित करनेके लिअे ही ये सारे स्तूप अूचीं पहाडीके अूपर बनाये जाते है। अिस अन्तिम वाक्यका जब ओमाओी-सानने जापानीमे अनुवाद किया, तब यह स्तूप बनवानेवाले और वहा पूजाके लिअे आनेवाले सारे भक्तोकी मुखमुद्रा पर अकित धन्यता देखने लायक थी।

साढे चार बजे नगरपिताओकी ओरसे हमारा स्वागत था। जिसके साथ खानेकी बढिया व्यवस्था तो होती ही है। यहा भी स्तूपके विषयमे, गुरुजीके कार्यके सम्बन्धमें और ओमाओी-सान भारत व निप्पोनके बीच अेक कडीके समान है, अिस बारेमे मैने थोडा-बहुत कहा। मेरे भाषणोका जापानी अनुवाद ओमाओी-सान बहुत अच्छा करते थे, लेकिन अुस नगरके प्रतिष्ठित लोग जो कुछ बोले अुसका हिन्दी अनुवाद करना मारुयामाजीके

लिअे सरल नहीं था। खैर। भाव तो हम समझ ही गये। 'धर्मो रक्षति रक्षित' वाली मेरी दलील अिन लोगोंको बहुत अच्छी लगी।

पौने छह बजे हमने हाकोदाते छोड़ा। सब तरहकी सुन्दर सुविधा-वाला यह बढ़िया जहाज हमे साढ़े चार घंटेके समुद्री सफरके बाद आओ-मोरी बन्दर पहुचा देगा। वहासे ट्रेन पकडकर हम सुबह तक सेन्डाओ पहुच जायगे।

होक्कायडोमें बिताये हुअे पाच दिनोंका और वहा लूटे हुअे आनन्दका जब मैं विचार करता हू तब ओश्वरके प्रति हृदय भक्तिसे नम्र हो जाता है। भगवानने अितनी जीवन-समृद्धि प्रदान की है, अुसका मैं अुदारतासे वितरण करू तभी वह सफल हुओ कही जायगी। नहीं तो — गीताकी भाषामे — मैं चोर ठहराया जाअूगा। मेरा विश्वास है कि होक्कायडो द्वीपका महत्त्व भविष्यमें जल्दी ही बहुत बढ़नेवाला है।

अेक तरफ मैं अैसे गंभीर विचारोंमें डूबा रहता हू और अुधर मंजु व रेवतीके मुख आनन्द और अुल्लाससे खिले ही रहते हैं। दोनोंकी खासी दोस्ती जम गओ है। सारे दिन हसती रहती हैं। हसनेके लिअे अुन्हे अितनी बातें कहासे मिल जाती हैं यह तो वे ही जानें। लेकिन जब चित्त प्रसन्न हो तब कारणकी जरूरत भी क्या? अिस जहाज पर लोग टोलियोंमें जमा होकर अिन दोनोंकी साड़ियों व अिनकी आखोंको देखते हैं और अेक-दूसरेको अिशारोंसे बताते हैं। जापानी लोगोंकी छोटी-छोटी आखोंका तुम्हे खयाल है ही। अुन्हें हमारी आखें कैसी लगती होंगी?

अिन चार घंटोंके सफरके लिअे भी ओसाजी-सानने हमारे लिअे sleeping berths (बिस्तरोंकी) व्यवस्था की है। सचमुच ओसाजी-सान बड़े ही प्रेमालु और चतुर व्यक्ति हैं। पहलेसे ही सोचकर सारी चीजोंकी व्यवस्था कर लेते हैं। अेक भी चीज भूलते नहीं हैं। प्रत्येककी खुराकका भी बारीकीसे ध्यान रखते हैं। खुद तो त्यागी व सहनशील भिक्षु हैं, लेकिन दूसरोंकी सुविधाका विचार किसी स्नेहमयी माताकी कोमलतासे करते हैं। अब यदि हम आरामसे सोनेका आनन्द लेनेकी सोचते तो बड़े हुअे अंधेरेमें बन्दरकी शोभा देखना रह जाता। जहाजमेसे समुद्रका पानी सुन्दर दिखाओ दे रहा था। लेकिन पतवारके साथ जब पानी अुछलकर

चमकता था तब अुसमें फीरोजी रंगकी नीलिमा दिखाओी देती थी। अिस ओर रेवतीने मेरा ध्यान खींचा। बडी देर तक समुद्रकी शोभा देखी और कुछ खाये बिना ही थोडा-बहुत सो लिये। जहाजके संगीतने हमारे लिअे लोरियोंका काम किया।

१५

भव्यताका पीहर : निक्को

नागाओका
१–८–'५७

आज तो मुझे बडे अुत्साहसे अुभरते हुअे आनन्दको समेटकर पत्र लिखना है। निक्को यानी जापानका प्राकृतिक सौंदर्य-धाम, पुरानी और नअी मानवीय कलाका संग्रहालय, बौद्धोंका अेक धर्म-क्षेत्र और सब तरहसे भव्यताका पीहर। आज मुझे अिसी निक्कोके विषयमें लिखना है। निक्कोकी बडाओी मेरे जैसा करे अिसमें आश्चर्य ही क्या? पश्चिमके लोग बडाओी करें तो वह भी समझा जा सकता है। लेकिन जापानी खुद कहते हैं, अुनकी यह कहावत ही है "निक्को न देखें तब तक केक्को न कहें।" "केक्को" यानी तृप्त होना। निक्कोके अनुभव और आनन्दके विषयमें जी भरकर लिखूं अुससे पहले पिछले पत्रके सिलसिलेमें रही हुअी कुछ बातें पहले लिख डालता हूं, जिससे फिर वे बीचमें टांग न अडायें।

अब तकका सारा सफर अुत्तरी द्वीपमें किया था। अब हमने होनशुमें प्रवेश किया है। यह जापानका मुख्य द्वीप है। जिस जमानेमें टोक्योको येड्डो अथवा येज्जो कहते थे, अुस जमानेमें अिस होनशु द्वीपको ही निप्पोन कहते थे। अब निप्पोन अथवा निहोन यानी चार मुख्य द्वीप और अुनके छोटे-छोटे हजारों टापू मिलकर बना हुआ जापानियोंका सारा प्रदेश।

जब तीन साल पहले हम आये थे तब होनशुका दक्षिणी भाग और क्यूशु द्वीप हमने देखा था। चौथा द्वीप शिकोकु भी जरूर आकर्षक होगा, लेकिन वहा अधिक लोग नही जाते है अिसलिअे वह बेचारा हमेशा ही बिना प्रशंसाके रह जाता है। पिछली बार हमने जो स्थान देखे थे अुन्हे छोडकर अिस बार नये स्थान देखना तय किया है। हमारे पास काफी समय होता तो हाकोदातेसे आओमोरी आते ही हम तोवाडाका सुन्दर सरोवर और अुसके आसपासके अरण्यकी शोभा देखनेका अवसर नही छोडते। पर अुपाय क्या! हमें तो रातों-रात चोरकी तरह, जहाजसे सीधे स्टेशन जाकर द्वितीय श्रेणीके सोनेके डिब्बेमे (जहा हमारी जगह नियुक्त थी) जाकर सो जाना पडा। ३१ को सुबह सात बजे हम सेन्डाओी स्टेशन पहुच गये। अितिहास अथवा सौंदर्यकी दृष्टिसे सेन्डाओीका महत्त्व कम नही है। हम चाहते तो यहा भी आसपास काफी घूम सकते थे, लेकिन हमें निक्को पहुचनेकी जल्दी थी। दूसरा अेक सन्तोष यह भी था कि जहा जायेंगे वहा प्रकृति-सौंदर्य अेक-सा ही बिखरा हुआ मिलेगा। खुशीकी बात है कि जिस देशमे प्रकृतिका प्रसाद और मनुष्यका पुरुषार्थ दोनो मानो अेक-दूसरे पर मुग्ध हो जिस तरह अपनी हर तरहकी कलाका विस्तार करते है। सेन्डाओीमें हमने गाडी बदली और अुत्सुनोमिया गये। जहा देखो वही पहाडकी शोभा, नदियोंकी अुछल-कूद, परिश्रमी किसानोंकी प्रसन्नतासे की हुआी खेती और प्रत्येक दृश्य पर अंधकारका पर्दा डालकर नया दृश्य दिखानेवाली रेलवेकी सुरगें — सब मिलकर चित्तरूपी सागरको बिलोते ही रहते थे। कभी-कभी आनन्द भी थककर कहता "जरा ठहरो तो! बिलोये हुअे मक्खनको अेकत्र तो कर लेने दो।" लेकिन जापानमें अैसा मौका था जितना आराम हमें मिलना वहा सम्भव था!

हमें अुत्सुनोमियासे निक्को ले जानेके लिअे अेक मोटर तैयार थी। निक्कोका अेक शब्दमें वर्णन करना असम्भव है। जैसे दीवाली यानी अनेक त्योहारोंका सम्मेलन, वैसे ही निक्कोको सैर-सपाटे और 'पिकनिक' का महापर्व ही समझो।

चमकता था तब अुसमें फीरोजी रंगकी नीलिमा दिखाओी देती थी। अिस ओर रेवतीने मेरा ध्यान खींचा। बड़ी देर तक समुद्रकी शोभा देखी और कुछ खाये बिना ही थोड़ा-बहुत सो लिये। जहाजके संगीतने हमारे लिअे लोरियोंका काम किया।

१५

भव्यताका पीहर : निक्को

नागाओका
१–८–'५७

आज तो मुझे बड़े अुत्साहसे अुभरते हुअे आनन्दको समेटकर खूब लिखना है। निक्को यानी जापानका प्राकृतिक सौंदर्य-धाम, पुरानी और नअी मानवीय कलाका संग्रहालय, बौद्धोंका अेक धर्म-क्षेत्र और सब तरहसे भव्यताका पीहर। आज मुझे अिसी निक्कोके विषयमें लिखना है। निक्कोकी बड़ाअी मेरे जैसा करे अिसमें आश्चर्य ही क्या? पश्चिमके लोग बड़ाअी करें तो वह भी समझा जा सकता है। लेकिन जापानी खुद कहते हैं, अुनकी यह कहावत ही है "निक्को न देखे तब तक केक्को न कहें।" "केक्को" यानी तृप्त होना। निक्कोके अनुभव और आनन्दके विषयमें जी भरकर लिखूं अुससे पहले पिछले पत्रके सिलसिलेमें रही हुअी कुछ बातें पहले लिख डालता हूं, जिससे फिर वे बीचमें टांग न अड़ाअें।

अब तकका सारा सफर अुत्तरी द्वीपमें किया था। अब हमने होनशुमें प्रवेश किया है। यह जापानका मुख्य द्वीप है। जिस जमानेमें होक्कायडोको येंड्डो अथवा येज्जो कहते थे, अुस जमानेमें अिस होनशु द्वीपको ही निप्पोन कहते थे। अब निप्पोन अथवा निहोन यानी चार मुख्य द्वीप और अुनके छोटे-छोटे हजारों टापू मिलकर बना हुआ जापानियोंका सारा प्रदेश।

जब तीन साल पहले हम आये थे तब होनशुका दक्षिणी भाग और कियुशु द्वीप हमने देखा था। चौथा द्वीप शिकोकु भी जरूर आकर्षक होगा, लेकिन वहा अधिक लोग नही जाते है अिसलिअे वह बेचारा हमेशा ही विना प्रशसाके रह जाता है। पिछली बार हमने जो स्थान देखे थे अुन्हे छोडकर अिस बार नये स्थान देखना तय किया है। हमारे पास काफी समय होता तो हाकोदातेसे आओमोरी आते ही हम तोवाडाका सुन्दर सरोवर और अुसके आसपासके अरण्यकी शोभा देखनेका अवसर नही छोडते। पर अुपाय क्या! हमें तो रातो-रात चोरकी तरह, जहाजसे सीधे स्टेशन जाकर द्वितीय श्रेणीके सोनेके डिब्बेमे (जहा हमारी जगह नियुक्त थी) जाकर सो जाना पडा। ३१ को सुबह सात बजे हम सेन्डाअी स्टेशन पहुच गये। अितिहास अथवा सौदर्यकी दृष्टिसे सेन्डाअीका महत्त्व कम नही है। हम चाहते तो यहा भी आसपास काफी घूम सकते थे, लेकिन हमें निक्को पहुचनेकी जल्दी थी। दूसरा अेक सतोष यह भी था कि जहा जायेगे वहा प्रकृति-सौदर्य अेक-सा ही विखरा हुआ मिलेगा। खुशीकी बात है कि अिस देशमें प्रकृतिका प्रसाद और मनुष्यका पुरुषार्थ दोनो मानो अेक-दूसरे पर मुग्ध हो अैसे तरह अपनी हर तरहकी कलाका विस्तार करते हैं। सेन्डाअीमे हमने गाडी बदली और अुत्सुनोमिया गये। जहा देखो वही पहाडकी शोभा, नदियोकी अुछल-कूद, परिश्रमी किसानोकी प्रसन्नतासे की हुअी खेती और प्रत्येक दृश्य पर अधकारका पर्दा डालकर नया दृश्य दिखानेवाली रेलवेकी सुरगे — सब मिलकर चित्तरूपी सागरको विलोते ही रहते थे। कभी-कभी आनन्द भी थककर कहता "जरा ठहरो तो! विलोये हुअे मक्खनको अेकत्र तो कर लेने दो।" लेकिन जापानमे अैसा मौका या अितना आराम हमें मिलना कहा सम्भव था!

हमे अुत्सुनोमियासे निक्को ले जानेके लिअे अेक मोटर तैयार थी। निक्कोका अेक शब्दमे वर्णन करना असम्भव है। जैसे दीवाली यानी अनेक त्योहारोका सम्मेलन, वैसे ही निक्कोको सैर-सपाटे और 'पिकनिक' का महापर्व ही समझो!

निक्को पहुचते हुअे अुसका मगलाचरण बीस-पच्चीस मीलके राज-वन-पथसे ही शुरू हो जाता है। वहा पहुचने पर मोटरसे मुन्दर चालीस मीलका सर्पाकार रास्ता चढना पडता है। अुस अूचाअीसे अुन्नतिके अुत्सवकी खुशी मनानेका और विशालसे विशालतर मृष्टि देखनेका आनन्द प्राप्त होता है। अूपर पहुचनेके बाद चार हजार फुटकी अूचाअी पर चुझेन्जी सरोवरका चमकता हुआ विस्तार दिखाअी देता है। वहासे मानो मोनेकी खानमे अुतरते हो अिस तरह अेक तलघरमें अुतरते है। यहा अेक अद्भुत प्रपात और अुसीके परिवारके बाल-बच्चोका दर्शन होता है। मरोवरके किनारे भिन्न-भिन्न कालमें बनाये हुअे बौद्ध मदिरोका स्थापत्य, आसपासके बगीचे, अुसके बाद दो पहाडियोके शिखरोको जोडनेवाली रोप-ट्रोली (रस्सेके आधार पर लटकनेवाला वाहन) का चमत्कार और अन्तमें अितनी अूचाअीसे कुछ ही पलोमें तलहटी तक ले जानेवाली रोम-हर्षण ट्राम — अितनी विविधता सिरमें चक्कर लानेके लिअे काफी है। लेकिन निक्कोका मुख्य आकर्षण तो अभी बाकी ही है। यह सारा प्रदेश अनेक पहाडियो, अनेक सरोवरो और अुनके बीच खेलती-कूदती व डग-डग पर नाचती हुअी छोटी-मोटी नदियोंके जालसे भरा पडा है। अैसे प्राकृतिक अुत्सवमें मनुष्यके लगाये हुअे वृक्ष, बनाअे हुअे मदिर, तोरण-स्तम्भ व विशालकाय दीप और भीतर व बाहर फैली हुअी रग-बिरगी चित्र-कला आदि विभिन्न प्रकारके आकर्षणोकी भी यहा कमी नही है। यह सब देखने, अनुभव करने और आनन्द लेनेमें मेरे जैसे रसिकको भी अपच होने लगता है। डेढ दिनमें जो मिला अुसे हजम करनेमें न मालूम कितना समय लगेगा। लेकिन यदि अिसे तुरन्त ही न लिख डालू तो साराका सारा ही रह जायगा। अिसलिअे किसी भी तरह अिसकी फुटकर जानकारी यहासे लिखकर भेज देना चाहता हू।

और सच कहू तो यह हृदयमे भरा हुआ अनुभवानन्द तुम्हारे सामने न अुडेलू तब तक अुसकी अकुलाहट या बेचैनी कम न होगी। जैसे मनुष्यको पैसे अपनी जेबमें सुरक्षित नही लगते, लेकिन अुन्हे बैंकमे जमा करके वह निश्चितता अनुभव करता है, अुसी तरह मुझे लगता है

कि यह सारा अनुभवानन्द अिस पत्रके द्वारा तुम्हे भेज दू तो आगेको यात्राके लिअे हलका हो सकूगा।

अब पहले बाअीस मील लम्बे अुस राज-वन-पथकी बात कह दू। रावलपिंडीसे श्रीनगर जाते हुअे अंतिम दो दिनोमे रास्तेके दोनो ओर हमने सफेदा (poplar) के पेड देखे थे। तब लगता था कि अैसी शोभा दुनियामें और कही नही हो सकती। पर यहा तो डेढ-डेढ सौ फुट अूचे बीस-तीस हजार सीडरके पेड बडे-बडे राजपुरुषोकी तरह रास्तेके दोनो ओर खडे हैं। पेड समझते होगे कि वे हमारा बादशाही स्वागत करनेके लिअे ही खडे हैं। लेकिन हमें लगता है कि अिनके सामने हम कितने तुच्छ प्राणी हैं!

सीडरका पेड यो भी बहुत अूचा, सीधा, फिर भी घेरवाला और शानदार होता है और अुस पर यदि किसी तरह भी खतम न होनेवाली अुनकी पंक्तिया रास्तेके दोनो ओर खडी हो तो मनुष्यकी भावनाकी क्या स्थिति हो! यदि कोअी सारा दिन अुनके बीच चलता ही रहे तो भी अुनका पार नही पा सकता। हम तो मोटरमे वेगसे जा रहे थे, फिर भी हमारा धीरज खतम हो गया।

अीसवी सन् १६२५ के आसपास यहाके अेक गवर्नरने अिस वन-वीथीकी कल्पना की होगी। बीस वर्षकी मेहनतसे चालीस हजार पेड लगाये गये। जो पेड कमजोर हो अथवा मर जाये अुनकी जगह दूसरे लगाते जाना, आधी-तूफान आये और लगाये हुअे पेडोका नाश कर दे तो अुन्हें फिरसे लगाना — अिस प्रकार करते-करते अिन महावृक्षोकी यह सेना यहा कायम हो सकी है। मध्यकालीन युगमें हर किसी आदमीको अिस रास्तेमे जानेकी अिजाजत नही थी। आजकल तो अितना चौडा रास्ता भी मोटर आदि वाहनोके लिअे सकरा साबित हुआ है। अिसलिअे बीच-बीचमें अिस वीथीके बाहर समानान्तर नये रास्ते बनाये गये हैं, जिनसे गुजरते हुअे छाती पर पडा हुआ मानसिक दबाव कुछ हलका होता है और यह आश्वासन मिलता है कि आकाश लुप्त नही हो गया है।

अिस राज-वन-वीथीके खतम होने पर हम निक्को पहुचे। जापानमें सारे ही शहर सुघड और आकर्षक होते हैं। दुकानोकी सजावट तो

जापानियोंकी खास कला ही है। मैंने सोचा था कि निक्को जाकर तुरन्त किसी होटलमें आराम करेंगे, लेकिन ओीमाओी-सानकी योजना कुछ और ही थी। अेक दुकानके अन्दर हमारा सामान अुतार कर हमें सीधे सरोवर पर ले जानेका अुनका अिरादा था।

प्रारम्भमें ही हमने लाल रंगका अेक कमानीदार पुल देखा। अुसके नीचे नदी कलरव करती हुओी दौड रही थी और अपने ठंडे जलमें पैर धोनेका निमंत्रण दे रही थी। मालूम हुआ कि अिस पवित्र पुल परसे किसीको जाने नहीं देते। यह पुल तो मंदिरोंके लिअे बादशाही भेंट लानेवाले गवर्नर या राजदूतोंके लिअे ही है। यहांके पुराण कहते हैं कि अेक पुजारीको अिस ओरके अेक पहाड पर पंचरंगी बादल दिखाओी दिये। वह अुस ओर चला। वहां जाते हुअे रास्तेमें अेक नदी पडी। पुरोहितने बौद्ध-सूत्रोंमें से मंत्रोंका अुच्चारण किया, त्योंही वहां दो सर्प प्रगट हुअे — अेक लाल और दूसरा नीला। अुन्होंने आमने-सामनेसे आकर अपना ही अेक पुल बना दिया। अैसे विचित्र और सजीव पुलको अिस्तेमाल करनेकी पुरोहितकी हिम्मत न पडी। अुसने अेक किसानकी मददसे पुल पर घास बिछाओी और अुस पार गया।

यह पौराणिक कथा नहीं होती तो भी अिस पुलकी और आसपासकी शोभा देखनेके लिअे हम थोडा समय यहां रुके बिना नहीं रहते।

अब हम धीरे-धीरे पहाड पर चढने लगे। किसी भी स्थान पर प्रकृतिके सौंदर्यमें फीकापन न था। किसी जगह सुन्दर पत्तियोंका आकर्षण था तो किसी जगह तितलियोंका, किसी जगह झरनोंका नाद हमें रोक लेता था तो किसी जगह अूपरके बादल हमारा ध्यान खींचकर गर्दनमें दर्द पैदा कर देते थे। सारा रास्ता अंग्रेजीके कओी जेड (Z)-अक्षरोंके आकारका था। हर मोड पर अुसका क्रमांक और अूंचाओी लिखी हुओी थी। अैसे मोडोंका मुख्य लाभ यह है कि बार बार दिशा बदल जानेसे आप आगे-पीछे दोनों ओर देख सकते हैं। अतः वनश्रीका अेक भी पार्श्व नजरसे चूकता नहीं। जैसे-जैसे अूपर जाते हैं वैसे-वैसे हवा अधिक स्फूर्तिदायी होनेसे अुत्साह बढाती जाती है, और नजरके लिअे प्रकृतिका विस्तार जितना बढता जाता है अुतना ही सृष्टिके साथ हमारे तादात्म्यका विस्तार

बढनेसे नशा भी चढता जाता है। अुन्नति और विस्तार अिन दोनोका प्रमाण अिस प्रकार अच्छी तरह सुरक्षित रहता है। अिसीसे मनुष्यमें विश्व-रूप-दर्शनकी योग्यता आती है। गीतामे भगवानने अर्जुनसे कहा है कि तुम अपने रोजके चर्म-चक्षुसे मेरे विश्व-रूपका दर्शन नही कर सकते। तुम्हे दिव्य-चक्षु देता हू। अिसी तरह यहा प्रकृति भी हमे कहती है — "मेरा विस्तार यदि दो आखोसे कण्ठ तक पान करना हो तो अुसके लिअे मेरे अुन्नत शिखर हाजिर है और वहा आपके फेफडोके लिअे विरल-तरल प्राणवायुकी भी व्यवस्था है।" हमे अूपर पहुचनेकी जरा भी जल्दी नही थी क्योकि हर मोड पर अेक-से-अेक नया दर्शन-सुख मिल रहा था।

लेकिन जैसे ही हम अूपर पहुचे अुन्नति-क्रमका यह सारा अनुभव अेक क्षणमे चमकते हुअे सरोवरके विस्तारमे डूब गया। अैसा लगा मानो जन्मान्तर करके हमने अेक नअी दुनियामे प्रवेश किया हो। हम चार हजार फुटकी अूचाअी पर पहुचे थे, फिर भी सरोवरके आसपास पहाडियोकी कमी न थी। अीमाअी-सान कहने लगे कि जरा आराम करके आसपासके बौद्ध मंदिर देखने चलेगे। हम नजदीकके अेक आराम-गृहमे पहुचे। अिस आराम-गृहको चलानेवाला कुटुम्ब गुरुजीके भक्तोंमें से अेक था। आराम-गृह सरोवरके किनारे पर होनेके कारण वहासे दृश्य बहुत सुन्दर दिखाअी देता था। चि० मजु जुडवा दूरबीन लेकर आराम-गृहके छोटेसे बगीचेमें पहुच गअी और रेवती नावोको निहारनेमें मग्न हो गअी। अिस तरह अुन्हे दुहरा लाभ मिला। प्रकृतिकी शोभा तो अुन्हे जी भरकर पीनेको मिली ही, साथ ही स्वागतमे आअी हुअी जापानी चाय पीनेके सकटसे भी वे बच गअी। अुन्हे विश्वास था कि तीनो प्यालोकी कडवी चाय मै खुशीसे अकेला ही खाली कर दूगा। भक्तोंके साथ बातचीत करके मैं भी बगीचेमे जा पहुचा। मैने भी चमकते हुअे पानीकी लहरे — नही यह शब्द गलत रहा है — पानीकी सलवटे और अुनकी बदलती हुअी आकृतिया देखी। अितनेमे अीमाअी-सानने अेक सुन्दर कीमती कार्डबोर्ड मेरे सामने रखकर [illegible] रोशनाअीमे भीगी हुअी अेक कूची मेरे हाथमें दी। गृहपतिके लिअे अुस पर मैने नागरी अक्षरोमे "नम् म्यो हो रेंगे क्यो" [illegible] और अुनके नीचे सत्य और अहिंसाकी विजयकी कामना

व्यक्त की। मेरी यह स्वाक्षरी प्राप्त करके भक्त लोग बडे खुश हुअे और अुनकी सरोवरकी तरह झिलमलाती और भक्तिसे गीली आखें देखकर मै भी प्रसन्न हुआ।

यहासे हम बौद्ध मदिर देखने गये। यहा जापानकी अुत्तमसे अुत्तम कारीगिरी देखनेको मिलती है। मदिर-कलाका दर्शन प्रवेश-द्वारसे ही शुरू हो जाता है। फिर अन्दरका बगीचा, अुसके छोटे-बडे पेड, बीच-बीचमें सजाये हुअे पत्थरके दीपक, सीढियोसे लेकर ठेठ छप्पर तक औचित्यसे अुभरते हुअे मदिर, मूर्ति, चित्र और बर्तन — अिस सारी समृद्धिका कोअी ठिकाना था! अेक बडा चौकोर अथवा गोल पत्थर लेकर अुसमें आमने-सामने दो आर-पार छेद करके भीतर रखे हुअे दीयेका प्रकाश चारो दिशाओमें जा सके अैसी व्यवस्थावाले जापानी दीपक हमने तीन वर्ष पहले भी देखे थे। प्रवेश-द्वारके सामने जैसे दोनो ओर दो खम्भे होते है और अुनके सिर पर पत्थरकी टोपी होती है, अुसी तरह अिस पत्थरके दीपक पर भी अेक टोपी होती है। जापानकी यह खासियत अुत्तरसे दक्षिण तक सभी जगह देखनेको मिलती है। जिस तरह पत्थरको खोदकर अैसे दीपक बनाते है, अुसी तरह कासेके भी बनाते है। यहा तो अेक सूबेदारने अपने प्रातकी तीन वर्षकी आमदनी खर्च करके लोहेके दो अूचे-अूचे दीपक बनवाकर निक्कोके अेक मदिरको चढाये है। अुस जमानेमे जापानमें लोहा दुर्लभ था।

अेक जगह अेक बडा चिकना पत्थर देखा, जो शायद आकाशसे गिरी हुअी अुल्काका होगा। अिसे यही देखा था या और कही, यह याद नही आ रहा है।

मूर्तियोमें भगवान बुद्धकी अथवा बोधिसत्त्वोकी मूर्तिया अलग-अलग है। ये शात, प्रसन्न और भीमकाय होते हुअे भी सौम्य दिखाअी देती है, जब कि भगवान बुद्धके शिष्योकी मूर्तियोमे अनेक प्रकार होते है। अिन्द्र, विरोचन आदि देव-दानवोकी व द्वारपालोकी मूर्तिया तो अुग्र और कभी-कभी विकराल भी होती है।

अेक-अेक मदिर यानी धार्मिक कलाका सग्रहालय। मदिरके पुजारी और वहा रहनेवाले साधु धीर-गम्भीर व स्वमानका महत्त्व जाननेवाले दिखाअी दिये। हमारे यहा तो कअी मदिरोमे पुजारी दक्षिणा मागकर

हैरान करेंगे, यह डर लगा रहता है। यहाके मदिर समृद्धिमें हमारे यहाके मदिरोंसे कम नही हैं। हमारे पुजारी कब समझेंगे कि 'विन मागे मोती मिले मागे मिले न भीख'?

यहा अेक मदिरके बगीचेमें कितने ही पेडोकी डाली-डालीमे कपडे और कागजके चिथडे बधे दिखाअी दिये। मानो किसी मध्यकालीन शूर-वीरके शरीरका कण-कण घायल हो गया हो। कुतूहलसे अुन चिथडोका अर्थ पूछने पर अेक मजेदार रिवाज जाननेको मिला। जो प्रणयी-युगल विवाहका निश्चय करने पर भी घरके या बाहरके विघ्नोके कारण तुरन्त विवाह नही कर सकते, वे अिस पेडके नीचे आकर प्रार्थना करते हैं और शादीके बाद भेटके रूपमें ये चिथडे डालो पर बाध जाते हैं। अैसे चढाये हुअे अितने सारे चिथडे यहा देखकर श्रद्धा कहती थी कि यहाकी प्रार्थना जरूर सफल होती होगी।

(यहा कोअी यह अभद्र शका न करे कि प्रार्थना करनेके बाद भी जो तुरन्त शादी न कर सके हो अैसे युगलोकी सख्या जाननेका साधन आपके पास कहा है?)

अुन प्रणयोत्सुक असख्य युगलोके प्रति मनमें समभाव लाकर हमने अुन पेडोकी ओर आदरसे देखा।

मालूम हुआ कि पासके अेक सरोवरका बढा हुआ पानी दौडकर दो छलागोमें ही अपने चुझेन्जी सरोवरसे मिलता है। जो प्रतिग्रह स्वीकार करता है, अुसे दान देना ही पडता है। अिसलिअे चुझेन्जी सरोवरने पचीस फुट चौडे अेक परीवाहके द्वारा बढे हुअे पानीको छोडनेकी व्यवस्था की है। सरोवर देखनेके लिअे हमें जितनी अूचाअी चढनी पडी अुतनी ही अूचाअी अुतरनेकी जिम्मेदारी अिस परीवाहके सिर आ पडी है। 'जीवन' को भला डर किस बात का? अुसे मौका मिलते ही अुसने पहली ही कूद तीन सौ फुटकी मारी। अुसके बाद अैसे ही छोटे-बडे प्रपातोका पानी अिकट्ठा करके और खेलते-कूदते अुसने आगे जाना पसन्द किया। यही कूद प्रख्यात 'केगान प्रपात' है। अिसकी शोभा देखनेके लिअे देश-विदेशके असख्य लोग यहा अिकट्ठे होते हैं।

जापानी लोगोंकी विज्ञान-विद्या और कला-रसिकताके सयोगसे अिस तालावके दुहरे दर्शनकी सुन्दर-से-सुन्दर सुविधा की गअी है। सरोवरके किनारेसे अेक रास्ता हमें अेक सुरगके मुहकी ओर ले जाता है। हम कोलारकी सोनेकी खान देखने गये थे। वहा अेक लिफ्ट जैसा झूला अथवा कमरा बिजलीकी मददसे पृथ्वीके पेटमे ले जाता है। वैसी ही यहाकी व्यवस्था है। टिकट खरीदकर हमने जैसे ही अुस लिफ्टमे प्रवेश किया कि घर-ररर घर-ररर करती वह नीचे पहुच गअी। अब पहाडीमे बाहरकी ओर निकलनेके लिअे अेक सुरग पार करनी थी, अुतना चलकर हम अेक प्लेटफार्म — मच पर पहुच गये। वहासे नाहन प्रपातकी पहली झलक दिखाअी दी। अेकदम नजदीकसे अुसकी शोभा और गर्जनाका अनुभव करनेके बाद हमने दाअी ओर देखा। वहा हाथीकी सूडकी तरह लटकता हुआ केगोन प्रपात दिखाअी दिया। अिस सुन्दरताको दूसरी कोअी अुपमा देना कठिन है। हाथीकी सूड अूपरसे चौडी और नीचेसे सकरी होती है। यह दृश्य अुससे बिलकुल अुलटा था। लेकिन हाथीके गण्डस्थलसे जिस ठाठसे सूड लटकती है, अुसी शानसे यह प्रपात अूपरसे नीचे गिरता है।

अितना पराक्रम करनेके बाद अनेक आकार धारण करता हुआ अिसका पानी नीचे कूदता जाता है और सारी घाटीको अपनी चहल-पहलसे निनादित करता रहता है। आसपासकी वनश्री भी अिस भव्यताको बढाती है। केगोन प्रपातका अुसके बाल-बच्चोंके साथ निरीक्षण करनेके लिअे यह स्थान जिसने पसन्द किया होगा, वह स्वभावसे जरूर बडा रसिक कवि होना चाहिये। अुसका कृतज्ञतापूर्ण तर्पण किये बिना यह स्थान छोडना मुश्किल था।

अिस स्थानमें अेक ही कमी थी, वह यह कि सीढियोंसे प्रपातका निरीक्षण करते हुअे जिसमें से यह प्रपात निकलता है अुस सरोवरका दर्शन यहासे नही होता। यह कमी दूर करनेके लिअे अपने निसर्ग-प्रेमी कविने दूसरा अेक स्थान पसन्द किया। अितना ही नही, लेकिन वहा जानेके लिअे विज्ञानकी मदद लेकर अेक काव्यमय अुपाय भी ढूढ निकाला। अिसका विवरण भी यहा देने लायक है।

हमने फिरसे सुरगमे प्रवेश किया और बिजलीके झूलेमे बैठकर अूपर पहुचे। वहासे अेक पहाडीके सिरेसे दूसरी पहाडीके सिरे तक लोहेके तारोंके बने हुअे रस्से बधे हुअे थे। अुनके आधारसे आने-जानेवाले दो कमरे अिन पर टगे हुअे थे। बिजलीकी मददसे अेक कमरा अिस पारसे अुस पार पहुचे तब तक अुस पारका कमरा अिस किनारे आ जाता है। हम अैसे अेक कमरेमे बैठकर चले। आधे रास्ते जाने पर नीचे खाओमे देखनेसे कोअी डर न होने पर भी स्वाभाविक ही मनमे विचार आया कि रस्सा टूट जाय तो? हवाअी जहाजमे अुडनेकी आदत होनेसे अिस विचारका कोअी महत्व नही था। नीचे अूचे पेडोका घना जमघट देखकर मनको थोडा आश्वासन भी मिला कि यदि कमरा टूट पडे तो भी अुसका और हमारा चूरा-चूरा शायद नही होगा। ये मागे पेड अपने आपको मिटाकर भी हमें जिला सकेंगे।

अुस पार पहुचने पर चुझेन्जी सरोवर, अुसमे से गिरता हुआ केगोन प्रपात और आसपासका विस्तीर्ण प्रदेश अेक साथ दृष्टिगोचर होने पर प्रकृतिका समस्त सौंदर्य अपने स्वच्छ व शुद्ध रूपमे दिखाअी देने लगा।

हृदयसे अुद्गार निकले 'धन्य-धन्य!' लेकिन आखे कहती थीं कि 'हम तो जिह्वारहित है, कुछ कह ही क्या सकती है!' शामका वक्त भी हो रहा था, अिसलिअे हमने तुरन्त ही लौटनेकी तैयारी की। आने-जानेके लिअे जिस बिजलीकी ट्रामकी बात पहले आअी है वह ट्राम अेक प्राअीवेट (खानगी) कम्पनीकी है। देर हो जानेसे आजके लिअे वह बन्द हो जायगी, अिस डरके मारे भी हमे जल्दी करनी पडी। हम ट्रामके स्टेशन पर पहुचे तब नीचेसे अूपर आअी हुअी ट्राम नीचे जानेकी तयारीमें ही थी। हमे बहुत ठहरना नही पडा। अिस ट्रामकी अुतराअी अितनी कडी थी कि जिसके मुकाबलेमे अुटकमण्ड, दार्जिलिंग अथवा शिमलाकी पहाडी ट्रेन कुछ भी नही है। स्विटजरलैण्डमे हम लोग 'रागेर द नेय' गये थे। अुस पहाडी रेलवेका देखकर अिस चढाअीकी कुछ कल्पना आ सकती है। अुससे भी अधिक अच्छी कल्पना वैरवर्ड कर्गामेज कमीशनके दिनोमे हमे पश्चिम हिमालयमे जो अनुभव मिला था अुससे आ सकेगी। लेकिन अुसका वर्णन करने बैठू तो यही रात हो जायगी और हम

वक्तमे होटल नहीं पहुच सकेंगे। यह रास्ता बारह सौ मीटरका है और अिसकी चढाओ अधिकसे अधिक सैंतीस अंश जितनी कठिन है। अिसमे अेक पुल है जो दो सौ मीटरका है। सारी घाटीकी मनमोहक शोभा निहार कर हम नीचे पहुचे। वहा मोटर हमारी राह देख ही रही थी।

होटल पहुचकर खाया-पिया। अब तो स्वप्न-सृष्टिके अूपर राज्य करने जितना भी मस्तिष्कमें अवकाश नही था। फिर दूसरे दिन निक्कोके मदिर और अुसके आसपासके अूचे-अूचे वृक्ष देखने ही थे। वहा काफी पैदल चलना व चढना था। अिसके लिअे भी मनकी तैयारी करनी थी। अिसलिअे सवेरे तक अैसे डटकर सोये कि मानो दुनियाका लोप ही हो गया हो।

दूसरे दिन पहली अगस्त थी। कितनी ही बाते अिस तारीखके साथ याद आअी। लोकमान्य तिलकका अवसान और राष्ट्रव्यापी सत्याग्रहका प्रारम्भ अिसी दिन हुआ था। अिसलिअे सुबहकी प्रार्थनाके बाद मैंने मजु और रेवतीको अिस दिनका माहात्म्य समझाया। मजुने कहा कि अुसका जन्मदिन भी अिसी महीनेमें है। यहाके होटलवाले भी गुरुजीके भक्त थे, अिसलिअे अुनसे भी थोडी बातें की। आठ बजे हम अुस पवित्र लाल पुलके पास पहुच गये। आज मोटरका अुपयोग करना सम्भव नही था। चढाओ-अुतराओ भी काफी थी। अिसलिअे मुझे कभी ओसाओ-सानके और कभी मजु अथवा रेवतीके कन्धोका सहारा लेना पडता था। और कभी-कभी तो सीढिया चढते अथवा अुतरते हुअे मैं दोनोके कन्धोका अेक साथ अुपयोग करता था। अच्छा हुआ कि अिस समय कोओ फोटोग्राफर नही था, जो अिस दृश्यके फोटो लेकर मुझे शर्मिन्दा करता!

निक्कोके मदिरोका जी भरकर वर्णन करू अैसा विचार था, लेकिन अब लगता है कि यह होना मुश्किल है। जापानके राजपुरुष, पुरोहित और भावुक लोगोने मिलकर सदियो तक अपनी भक्ति, अभिरुचि, कला-रसिकता और समूचे जीवनकी सस्कारिता जिसमे ढाली है और प्रकृतिकी भव्यतामें किसी तरहकी आच आये बिना जिसकी वृद्धि की है, अुसका वर्णन कहा तक करू? यहाके मदिरोकी रगीन तसवीरोकी किताब तुम्हारे समक्ष रखकर प्रत्यक्ष समझाने बैठू तभी मुझे सतोष होगा।

अेक-अेक मदिरके तरह-तरहके छप्परोका वर्णन करू तो अुसीमे अेक अलग पत्र पूरा हो सकता है। हमारे मदिरोमे जैसे सारी कला शिखरो पर और अुसके नीचेकी दीवारो पर खर्च की जाती है, वैसे ही जापानी लोग बाहरके, भीतरके और आसपासके प्रवेश-द्वारो पर ही सारी कला अुडेल देते है। ये द्वार और अिन द्वारोके छप्पर अितने अूचे, चौडे और मोटे होते है कि अुनका भार सहन करनेके लिअे मोटे-मोटे खम्भोका आश्रय लेना पडता है। ये खम्भे अपने आसपास चाहे जितनी कारीगरीका समावेश कर सकते है। कहते है कि प्रवेश-द्वारकी यह कला जापानी लोग चीन देशसे लाये है। जो भी हो, अिन्होने अुसमें अपना व्यक्तित्व अुडेलकर अुसे पूरी-पूरी अपनी बना ली है। प्रवेश-द्वारके साथ द्वारपाल तो होते ही है। दोनो ओरकी दीवारो पर पशु-पक्षी खोदे हुअे और चित्रित किये हुअे दिखाअी पडते है। अशुभ कुछ न सुनने, न देखने और न बोलनेका व्रत लेनेवाले बन्दर मूलत यहाके स्थापत्यमे से ही लिये हुअे है। पूज्य बापूजीने अिन बन्दरोको अपना गुरु बनाया अिसलिअे भारतीय चित्रकारोने भी अुन्हें हमारे देशमे लोकप्रिय बनाया है। अिन मदिरोका अितिहास सुनने बैठें तो जापानका लगभग अेक हजार वर्षका अितिहास आखोके सामने थोडा-बहुत प्रत्यक्ष हो जाता है। अेक जगह अेक कासेका बडा स्तभ खडा है। अुसके अूपरकी छोटी-छोटी बटिया भवनाको निमत्रित करती है और भूत-पिशाचोको भगा देती है। अुसके पास कासेके दो बडे दीपक है। अुन्हे तीन शहरोंके रेशमके व्यापारियोकी पचायतने यहा अर्पण किया है। रेशमके व्यापारियोकी जाति अूची नही मानी जाती थी, अिसलिअे ये दीपक भीतरी आगनमें नही रखे गये है।। अिन मदिरोके बीचमे अेक सुन्दर मकान है, जिसमे पुरानेसे पुराने धर्मग्रन्थोका सग्रह किया हुआ है।

अिन्ही दिनो -- यानी तीस-चालीस वर्ष पहले — यहा अेक बडा सग्र-हालय बनाया गया है। अिसकी वजहसे भेंटमे चढाअी हुअी छोटी-बडी महत्त्वकी और अद्वितीय चीजे अेक जगह रखनेकी और अुनका अभ्यास करनेकी सुविधा हो गअी है।

अितनी सारी भव्यताकी समृष्टि देखनेके बाद कहना पडता है कि अिन अूची-नीची पहाडियो पर अुगे हुअे पुराण-पुरुषो जैसे भव्यतर वृक्षोंके सामने मानवी भव्यता केवल वामनावतारके समान है। ये सारे वृक्ष बुजुर्गोंकी तरह आशीर्वाद देकर वात्सल्य भावसे अुसे पोस रहे थे।

गौतम बुद्धने तपस्या करके मानव-हितका चितन किया और जिस गहरी तपस्याके परिणामस्वरूप अुन्हें जो सत्य प्राप्त हुआ, अुसका चालीस वर्ष तक गया और बनारसके बीचके प्रदेशके लोगोमें प्रचार करके कअी तरहसे अुन्होने अुसे मानवके सामने स्पष्ट किया। अुनके अिस सत्यकी और सकल्प-शक्तिकी कितनी अमोघ तेजस्वी शक्ति थी कि अुनके स्वप्नमे भी न हो अितने विस्तीर्ण भू-खण्डमे, युगो तक, अनेक वशके असख्य लोगोने अनेक भाषाओमें अुसका प्रचार किया और अुसके द्वारा अनेकविध जीवनोका अुद्धार किया! आज जब हम अेक कानसे सुनी हुअी बातें दूसरे कानसे निकाल देते है और किसी भी विचारका — वह बासी हो गया जिसी कारण — अनादर करते है, तब दूसरी ओर आजीवन कष्ट अुठाकर भारतका धर्मज्ञान चीनमें ले जानेवालोकी, वहासे अुसे कोरियामें दाखिल करने-वालोकी और अुन दोनो देशोमें विशेषरूपसे जाकर अुसे अपने देशमें ले आने-वाले जापानी बौद्धोकी श्रद्धा कितनी अजरामर होगी कि हजारो वर्ष तक अेकके बाद अेक कितने ही युगोने अुसके पीछे अपना जीवन-सर्वस्व खर्च कर दिया। क्या कवि और क्या कलाकार, क्या गायक और क्या चित्रकार, क्या वैराग्यशील साधु और क्या अुत्सवप्रिय गृहस्थाश्रमी, सबने अेक नादे और ठोस अुपदेशका शृगार करनेमें, अुसे हृदयगम करनेमे और पीढी-दर-पीढी अुसका विकास करनेमें कृतार्थता मानी है!

अिस तरह निक्कोका सस्कार-वैभव देखकर हम दोपहरको यहासे चले, और अेक बहुत ही सुविधाजनक और सुन्दर ट्राममे बैठकर सत्तर मीलका सफर करके टोकियो पहुचे। यहा अधिक नही ठहरना

था, जिसलिअे हम अपने पुराने मुकाम पर भी नही गये, अेक भक्त दुकानदारके यहा खाना खाकर सीधे स्टेशन पहुच गये। हमे शाम तक नागाओकाकी शात व सुन्दर जगह पर पहुचकर डेढ दिनका आराम करना था। टोकियोमे दुकानदारकी लडकी सुमीको-सानने हमे प्रेमपूर्वक खाना खिलाया।

टोकियो पहुचते ही हमे सबसे बडी खुशी तो घरसे आये हुअे पत्रोको देखकर हुअी। तारीख २२, २३ व २४ के तुम्हारे पत्रोका जवाब तो पहले लिख चुका हू। अभी जो तुम्हारे तीन पत्र मिले अुनमे से अेक टाअिप किया हुआ था। टाअिपिग बहुत अच्छा है, लेकिन मैं मानता हू कि बीमारीकी अैसी हालतमे तुम्हें मुद्रा-लेखनकी हलकी मेहनत भी नही करनी चाहिये।

चि० अवनिके दो पत्र आये हैं। अेक मजुके नाम और अेक मेरे नाम। मजु और अवनि अेक-दूसरेमें जितने ओत-प्रोत है कि दोनोके प्रति मेरे मनमे अेक साथ ही वात्सल्य-भाव जाग्रत होता है।

प० सुन्दरलालजी टोकियो पहुच गये है। अब परिषद्की तैयारीकी समितिमे मेरा स्थान वे लेंगे। रामेश्वरीजी पाचवी या छठीको आयेगी।

अनुभव बताता है कि ओसाजी-सानके पते पर लिखे हुअे पत्र हमे शीघ्र मिलते है। अिसलिअे यदि अवनि दिल्लीसे वापस आ गये हो तो अुन्हे फोन पर कहना कि ओसाजी-सानके पते पर ही पत्र लिखे।

चि० बालका अेक पत्र मिला। रेवती जब प्रसन्न है। अुसने निद्रार्थका वजन ना लिखा, लेकिन वह ठीक है या कम यह किस तरह मालूम हो? तुम्हारे पत्रमे डा० शरदबहनका यह अभिप्राय कि साडे बारह पौंड वजन ठीक है पढकर रेवती खुश हो गअी।

चि० नगीनको स्कूटर चलाना पडता है और अुसमें अुसे खूब मजा है, यह जानकर प्रसन्नता हुअी। अुनकी जेटसमसे हमारी यात्राके हाल अुसे बताना और कहना कि जैसे यूरोपके पश्चिममे ब्रिटेनके द्वीप है, वैसे अेशियाके पूर्वमे जापानके द्वीप है। जिन दोनो देशोकी प्रजा चतुर और पुरुषार्थी है।

ओमाजी-सान हमारी पूरी देखभाल करते है और हर जगहकी थोडे शब्दोमें जरूरी जानकारी भी देते रहते है। कल हम अेक सुरगमें से गुजर रहे थे। तुरन ही अुन्होने आकर कहा — "यह हमारे देशकी सबसे बडी सुरग है।"

जापान देश ही अैसा है कि अेक सुरगमें से पार होते ही समुद्र दिखाओी देने लगता है। अुसके किनारे अेक-दो शहर और गाव, थोडी-सी बढिया खेती, कुछ बगीचे — फिरसे पहाड और सुरगें — अिस तरह मानो हम प्रकृतिके चित्रोकी मजूषा (अेल्बम) के पन्ने ही पलटते रहते है।

अिस प्रकार यहाके सब दिन आनन्दसे बीत रहे है। चि० मजु और रेवती दोनो खुश है। यात्रामे अेक-दूसरेको बतानेकी, चर्चा करनेकी और विनोदकी बातें अितनी होती है कि अब हमारे बीच खुलकर बातें करनेमें किसीको कोओी सकोच नही रहा है।

जिस तरह पार्थिव-पूजाके अन्तमें मानस-पूजाकी बारी आती है और वह पार्थिव-पूजाके जितनी ही अुत्कट बन जाती है, अुसी तरह अठारह-बीस वर्ष तक साथमें सफर करनेके बाद अब तुम मेरे पत्र पढकर यात्राका मानसिक आनन्द अुत्कट रीतिसे प्राप्त कर सकोगी, अैसा मेरा विश्वास है।

तीन बजे हम टोकियोके मुख्य रेलवे स्टेशन अुअेनो (Ueno) से चले थे। अब शामको सवा पाच बजे नागाओका आ पहुचे है। यहा हमें खाना बहुत अच्छा मिला। यहा मच्छरदानीका अुपयोग करना पडा।

हमने यहा खूब आराम किया। आतिशबाजीका दिन होते हुअे भी हम अुसे देखने नही गये और न अुसका हमें कोओी अफसोस ही रहा।

१६

नागाओकाकी जलचरी

नागाओका,
३-८-'५७

निक्कोके दो दिनके मधुर लेकिन कठिन और अुत्तेजक परिश्रमके बाद डेढ़ दिनका आराम लेनेके हम पूरे-पूरे हकदार थे। अिसीलिअे टोकियोमे अधिक न रहकर हम नागाओका आ गये। यहाका होटल बडी अच्छी जगह पर बना हुआ है। जापानी लोग घर बनाते वक्त आसपासकी पहाडियोकी शोभा, पवनकी दिशा, दूर और पासके पेड, पानीका प्रवाह और अुसके अूपरके पुल आदिका विचार करके घर कैसे बनाना, अुसका मुह किस ओर रखना, यह सब निश्चित करते है। फिर प्राकृतिक शोभा लानेके लिअे आगनमे जगह-जगह गोल-मटोल पत्थरोको सजा देते है। कही अुनके अूपर तो कही अुनके बीचमे चलनेके लिअे पगडण्डिया भी बना देते है। पेडोकी डाले भी सारी शोभामे खप सके अिसी तरह अुगनी चाहिये। असुक पेडोको नगा नही रहने देते है। तनो और डालियोको घास लपेटकर अुसके अूपर तार बाध देते है। कितना परिश्रम केवल अिस शोभाके लिअे अुठाते है! जिस पुरुषार्थका अुनके जीवन पर भी असर होता है और जीवन अनायास ही विवेकपूर्ण बन जाता है। स्त्रियोके रीति-रिवाजोमे यह खास तौरसे दिखाअी देता है।

नागाओकाके जिस होटलमे हम रहते है वह अेक बुढियाने तीस वर्ष पहले खोला था। बुड्ढी मा, जिन्हे सब ओबामान कहते है, अब नब्बे वर्षकी हो गअी है। अुनकी लडकी अब दो-तीन होटल चलाती है। जिनमे हम रहते है यह होटल तो छोटा है, लेकिन यहा हमारे खाने-पीनेकी व्यवस्था ज्यादा अच्छी तरह रखी जाती है।

डेढ दिन तक हम नहाने, खाने और सोनेके अलावा कुछ न करते तो भी काम चल जाता। लेकिन यहा भी जापानके दो महत्त्वपूर्ण अखबारोके

प्रतिनिधि मिलने आये। मैंने भी बचपनमें अनेक बार वृत्त-विवेचकका — यानी अखबारके संपादकका काम किया है, अिसलिअे पत्र-प्रतिनिधिके प्रति मेरे मनमें सहानुभूति रहती है। अनजाने देशमें भाषाकी दिक्कतके कारण जन-सम्पर्क साधना कठिन होता है। पत्र-प्रतिनिधियों द्वारा यह कठिनाअी बहुत-कुछ दूर हो जाती है। अिसलिअे अैसा मौका मिले तो मैं छोड़ता नहीं। ये लोग कुछ महत्त्वके सवाल पूछते हैं और जानेसे पहले फोटो लेना नहीं भूलते। जापानमें करीब सबके पास कैमरा होता ही है। कोअी भी आदमी, लड़का अथवा लड़की बिना कैमरेके शायद ही बाहर निकलते होंगे। यहां कैमरे सस्ते भी बहुत मिलते हैं। दूसरी अगस्तको पत्र-प्रतिनिधियोंके साथ हुअी बातें चाहे जितनी महत्त्वकी हों, फिर भी पत्रमें अुनका पूरा विवरण लिखनेका मन नहीं हो रहा है। क्योंकि अिसके बाद हम जिस जलचरी (Aquarium) को देखने गये थे, अुसका वर्णन मुझे विस्तारसे देना है।

दोपहरमें किये हुअे आरामका आलस्य हटानेके लिअे ओमाजी-सानने हमें समुद्रके किनारे ले जाना तय किया। वहां देखनेका क्या है, यह अुन्होंने हमें पहलेसे नहीं बताया था। किनारे पर पहुंचनेके बाद अुन्होंने टिकटें खरीदीं। मैंने सोचा कि स्टीम लांचमें बैठकर थोड़ी देर सैर करनी होगी। लेकिन निकला कुछ और ही और वह भी बहुत मजेदार।

यहां समुद्रके किनारे अेक खास तरहकी जलचरी (Aquarium) है। सोचा था अुससे वह कहीं अधिक बड़ी और आकर्षक निकली।

सबसे पहले अेक गहरे हौजमें विराजमान अेक बतखने हमारा स्वागत किया। स्वागत-समितिके अध्यक्षको शोभा देनेवाला अुसका रोब था। अुस हौजमें पानीके अन्दर छह बड़े-बड़े कछुअे थे। अपनी पीठकी ढालके अभिमानमें वे कूर्मगतिसे अिधर-अुधर घूम रहे थे। अितने बड़े कछुअेकी पीठ हमारे यहां काफी अूंची गुम्बद जैसी होती है। लेकिन अिन कछुओंकी पीठ कुछ सपाट मालूम हुअी। और अुतना ही अुनका रोब कम था।

अिसके आगे समुद्रके अन्दर अेक जाली अूपरसे नीचे तक लटकाकर अुसका कुछ हिस्सा तालाब जैसा बनाया हुआ है। अिसमें बहुतसी

बडी-बडी मछलिया तैर रही थी, दौड लगा रही थी और सिर नीचा करके पूछसे पानी अुछाल रही थी। अुनकी यह गति और खेल खास देखने लायक थे। व्हेल नामके मत्स्येश्वर भी विशाल समुद्रमे अिसी तरह पानीकी पिचकारिया छोडते है।

किनारेके पास भी पानी काफी गहरा था। अुसमे लोहेकी जालीसे बनाया हुआ अेक हौज लकडीके सहारे लटक रहा था। अिस जालीदार हौजमे छोटी-छोटी मछलियाँ निर्भयतासे नाच रही थी। वे जालीसे रक्षित न होती तो मत्स्य-न्यायके अनुसार बडी मछलियोने अुन्हे कभीका हडप कर लिया होता। अिस तरहके दो-तीन हौज अथवा जल-कमरोके अन्दर रहनेवाली मछलियोका खेल देखकर हम बाजी ओरके अेक बडे झोपडेमे पहुचे। मद्रासके समुद्र-तटकी और बम्बअीके मैरीन-ड्राअिवकी जलचरियाके समान अिस जगह काचके बडे-बडे हौजोमे, हवा-पानी और प्रकाशकी सुविधा रखकर, तरह-तरहकी मछलिया रखी हुअी थी। मद्रास तथा बम्बअीमे जलचरोकी जितनी विविधता है अुतनी तो यहा नही होगी। लेकिन यहा हमने कितने ही नअी तरहके जलचर देखे जो हमारे यहा नही है।

पहले जैसी बात होती तो अिन सबके नाम, अिनका स्वभाव, अिनकी विशेषताअे, समुद्रकी कितनी गहराअीमे ये मिलती है, हाथमे पकडते समय बिजली जैसा धक्का देनेवाली कहा कहा है वगैरा सब बाते मै विस्तारसे जान लेता। लेकिन अब तो अिस तरहके ज्ञानमे वृद्धि करनेकी बात सूझती नही। मछलियोका रग, आकार और अुनकी अनेक तरहकी मत्स्य-गति देखकर मेरी कलात्मा सतोष मान लेती है। और मेरी सहानुभूति अुनके जीवनमे प्रवेश करके अुनका जीवनानन्द समझने और प्राप्त करनेके लिअे अुत्सुक हो अुठती है। बौद्धिक ज्ञानानन्दने अब अद्वैतानन्दका हार्दिक सुख भोगना ही पसन्द किया है।

अिस तरह चारो ओर घूमकर अनेक प्रकारकी मछलिया, प्यारे समुद्री घोडे (Sea-horses) और भयानक 'ऑक्टोपस' देखकर हमारा मन भर गया। अिन जलचरोको देखनेके लिअे जापानी लडके-लडकियोके झुण्डके झुण्ड अुमड रहे थे। अुन्हे भी हमने अितने ही कुतूहलसे देखा और आगे चलकर किनारेके दक्षिणकी ओर पहुचे। वहा बडी मछलियोको

छोटी मछलिया खिलानेका खेल देखनेकी अिच्छा रखनेवाले लोगोके लिअे अेक भाअीने अेक दुकान खोल रखी है। हमारे मेजबानने वहासे थोडी मरी हुअी मछलिया खरीदी। अिन मछलियोको वे अेकके बाद अेक पानीमें फेंकते जाते थे और अुन्हें खानेके लिअे प्रतिस्पर्धा करनेवाली बडी मछलियोकी ओर हमारा ध्यान आकृष्ट कर रहे थे। बडी मछलिया छोटी मछलियोको अपने विकराल दातोमे पकडकर झटसे चट कर जाती है, यह खेल आकर्षक तो है, लेकिन हमें वह रुचिकर नही लगा।

शामके पाच बजनेवाले थे। कितने ही बच्चे, युवक व युवतिया तैरनेकी तग पोशाक पहनकर अिधर-अुधर घूम रहे थे। बहुतसे पानीमें कूद रहे थे। कुछ नाव चला रहे थे। थोडेसे अिस चमकते पानीमें तैर रहे थे और कुछ तो पानीमे तैरते हुअे अेक दो लकडीके पटियो पर अेक पैरसे खडे होकर अपना तोल सभाल रहे थे। समुद्रकी लहरोके साथ डोलते हुअे पटियो पर अिस तरह सतुलन साधना (surfing) आसान नही होता, लेकिन अिसीमें अिसका आनन्द है।

ये सारे लोग तो अपने देश में, अपने गावमें, अपने समाजमें अपनी ही भाषा बोलते हुअे जीवनका आनन्द ले रहे थे। और हम दूर देशसे आये हुअे अनजान लोग अुनके विषयमे तरह-तरहकी कल्पना करते हुअे अुन्हे निहार रहे थे।

जापानी लोगोकी शारीरिक शक्ति, प्राणशक्ति और अुनके परिश्रमी स्वभावकी ओर मेरा ध्यान गया। कद्दावर रूसी लोगोके साथ भिडकर जो अुनको अेक बार हरा सके थे और विषम प्रसगो पर भी जो हिम्मत नही हारे थे, अैसे ये सारे लोग केवल देशनेता नही है, बल्कि स्वाभाविक जीवन जीनेवाली सामान्य प्रजा ही है — अिस विचारसे अिन लोगोके प्रति मनमे आदर अुत्पन्न हुआ।

अिन लोगोकी किंचित् छोटी आखे, रीछके जैसे मोटे व काले-काले बाल, कुछ बैठी हुअी नाक और अिस कारण अूपर अुठे हुअे गाल — यह सब मेरे निरीक्षणका विषय था। और अिन लोगोको मजु व रेवतीकी रगीन साडिया और मेरी सफेद दाढी देखकर कुतूहल होता था, अितना ही नही, मौका ढूढकर वे हमारे फोटो भी लेते थे।

मछलिया देखनेके लिअे हमे टिकिट खरीदनी पडी थी, पर लोगोका दर्शन प्राप्त करनेके लिअे हमे कुछ नही देना पडा। लेकिन हमारे फोटो लेनेके लिअे तो अिन बेचारोको हमारी अिजाजत लेनी ही पडती थी। शामके अिस अनुभवके बाद मनमे निश्चय हुआ कि कुतूहल सचमुच जीवनानन्दका अेक बडे ही महत्त्वका और सार्वभौम पहलू है।

वापस लौटते समय हम होटलकी मालकिन ओबामानसे मिले। अिनका अेक दूसरा बडा होटल हमने देखा। काफी बडा विस्तार था। अिसमे सब तरहकी सुविधाअें थी। लेकिन अिसका सामुदायिक स्नानागार देखकर तो हम चकित ही रह गये। सचमुच ये मा-बेटी बडी चतुर होटल-सचालिकाअें है।

हमने यह होटल छोडा तब ओबामानने हम सबको अेक-अेक नहानेका सुन्दर तौलिया भेंटमे दिया। यहाका यह रिवाज ही है। और कुछ नही तो अेकाध पखा ही सही, परन्तु देगे जरूर। तौलियेके अूपर शायद होटलका नाम बुना हुआ होगा, लेकिन हमारे लिअे तो यह बुनावट सुन्दर चित्र जैसी ही है।।

जापानकी अिस यात्रामे हमें यहाके लोक-जीवनकी और राष्ट्रीय जीवनकी हर रोज नित-नअी ही झाकिया देखनेको मिली है। अिसलिअे प्रत्येक दिनका अनुभव अपना अेक अलग महत्त्व रखता है।

यहा हम अेक साथ डेढ दिन रहनेवाले थे, अिसलिअे अपने कपडे धोबीको दे सके। वे अच्छी तरह धुलकर आ गये, अिसलिअे हमारी आगेकी चिंता कम हुअी। लम्बी यात्राका यात्री अिस चीजके महत्त्वको तुरन्त समझ सकता है।

यहा अेक बात और लिखने लायक है। जापानमें अितने घूमे, लेकिन किसी भी जगह चोरीका डर नही दिखाअी दिया। होटलमें चीजें चाहे जहा रखें, फिर भी किसीके अुठा ले जानेका डर नही था।

हमारे अिस होटलमें पहुचते ही जीमाअी-सानके द्वारा व्यवस्था-पिका बहनने कहा "आपके पास पैसे अथवा कोअी कीमती वस्तु हो तो हमारे पास रख दीजिये। हम सभालेंगे और जब आप जायेंगे तब आपको वापस दे देंगे।" यह सुनकर मुझे बडा आश्चर्य हुआ। तब अुन

लोगोंने बताया कि हमारे यहा भी कोओी डर तो नही है, लेकिन कुछ वर्षों पहले अेक बार किसीकी कोओी चीज हमारे यहासे खो गओी थी। हमे ताज्जुब तो जरूर हुआ, पर तबसे हमने नियम बना लिया है कि यदि कोओी विदेशी हमारे यहा आवे तो हमें अितनी सावधानी रखनी होगी। मैंने कहा "हमारे पास जापानी सिक्के तो है ही नही। हमारा सारा व्यवहार ओीमाओी-सानके हाथमें है। मेरे पास जो यात्री-हुण्डिया (Traveller's Cheques) है, अुनका यहा कोओी अुपयोग नही कर सकता। फिर भी पोर्टफोलियो साथ लेकर फिरू अिसकी अपेक्षा अिसे कोओी सभाले यह अच्छा ही है। अिसलिअे अिसे आपको सौंप देता हू।"

१७

जापानी सत्याग्रह

नागाओका,
३-८-'५७

समय-समय पर जापानमें ओीमाओी-सानके साथ अथवा दूसरे लोगोके साथ बातें करते हुअे यहाकी राजनीतिक परिस्थितिके विषयमें जो कुछ सुना है और सोचा है, अुसे यहा देना लाभदायक होगा।

आज सुबह नहा-धोकर हम नागाओका छोडेंगे। आजका रात्रिवास ओीहारामें अेक झेन-पन्थी बौद्ध मदिरमें होनेवाला है।

अमरीकाकी राजनीति तो बिलकुल नवीनतम होती है। लेकिन अुसका मानस अभी पुराना ही है।

अमरीकाने तय किया कि अपने जवानोकी फौज जापानमे रखकर यहाके लोगोको सदाके लिअे दबाकर रखनेमें बुद्धिमानी नही है। यह नीति अतमें महगी भी पडेगी। फौज तो जापानी लोगोकी ही रखनी चाहिये। समय आने पर जहा जरूरत होगी वहा अिन लोगोका अुपयोग कर सकते है। जापान पर अपना अधिकार सैनिक हवाओी जहाजोके द्वारा ही सुदृढ करना चाहिये और सिर्फ वही अेक विभाग अमरीकियोके हाथमें रखना चाहिये।

अेटम बमका अुपयोग कर सके अितने बडे हवाअी जहाज चलाने हों तो अुनके लिअे हवाअी अड्डे भी बडे चाहिये। अितने बडे हवाअी अड्डे बनानेके लिअे और पुराने छोटे अड्डोंको बडा करनेके लिअे लोगोंकी कुछ और जमीन पर कब्जा करना होगा। फिर भले ही अिसके कारण खेतीका नाश हो या किसी लोकवस्तीको नष्ट-भ्रष्ट ही करना पडे।

अुनकी यह नअी नीति ध्यानमें आते ही जापानी प्रजाकी आत्मा अुबल अुठी। सरकारको असहाय समझकर कुछ युवक, विद्यार्थी, मजदूर और थोडे साधु अिकट्ठे हुअे और अुन्होंने अपनी सरकारके खिलाफ सत्याग्रह करनेका निश्चय किया।

अमरीका भले ही भडकानेकी कोशिश करे अथवा कानून और शांति रखनेके लिअे सरकार चाहे जितनी दमन-नीतिका अुपयोग करे या हिंसात्मक कदम अुठावे, फिर भी प्रतिहिंसा नहीं करेंगे, अत्याचार नहीं करेंगे और सारा दमन निर्भयतासे व अहिंसक वृत्तिसे सहन करेंगे अैसा अिन लोगोंने निश्चय किया। और अुसके अनुसार मर्यादाका पालन भी अुन्होंने किया। गत अक्तूबरमें यह सत्याग्रह शुरू हुआ था। पहले दिन कुछ लोग मारे गये और हजारसे भी अधिक सत्याग्रही युवक घायल होकर अस्पतालमें पहुंचे।

पीछे रहे हुअे युवकोंमें कअी साम्यवादी थे। पहले दिनके अनुभवके बाद अिन सत्याग्रहियोंकी अेक समिति विचार करनेके लिअे बैठी। अिसने तय किया कि सरकार पर अहिंसाका असर नहीं होता। अिसलिअे यह नीति छोडकर अब हिंसाका आश्रय लेना चाहिये।

यह बात अस्पतालमें पडे हुअे शुद्ध सत्याग्रहियोंके कानोंमें पडी। अुन्होंने अिस नअी नीतिका खण्डन करके संदेश भेजा कि "हिंसा तो हम भी कर सकते थे। हम लोगोंने विचारपूर्वक अहिंसक प्रतिकारकी नीतिको स्वीकार किया है। अिसमें हेर-फेर नहीं हो सकता। अेक दिनमें ही श्रद्धा डोल अुठे तो अुसका कोअी अर्थ नहीं है। पहले दिनका बलिदान व्यर्थ नहीं जाना चाहिये।"

अिसका अच्छा असर हुआ और लोगोंने अहिंसक प्रतिकारका सत्याग्रह चालू रखा।

अेक तो सत्याग्रह और वह भी अहिंसक रीतिसे करनेवाले स्वदेशके ही बन्धु। अुनपर हथियार चलाना पुलिसको बडा अखरा। हुकुमका अनादर तो नही हो सकता और हुकुमका पालन करे तो हत्यारो जैसा बर्ताव करना होगा, अिससे बेचैन होकर अेक सिपाहीने आत्महत्या कर ली। जिसके आधार पर राज्य चलता है, अुस पुलिसका अैसा रुख देखकर सरकार भी चेती। नये प्रधानमंत्री कीशीको लगा कि अिस तरह राज्यका अधिकार अपने हाथमें टिक नही सकेगा। लोकमतका अैसा प्रवाह देखकर अुन्होने प्रजाकी भावनाको मान दिया और हवाअी अड्डोके लिअे लोगोकी जमीन पर कब्जा करनेकी नीति रद कर दी।

अिस तरह सत्याग्रहकी — जापानी भूमि पर गाधी-मार्गके पहले प्रयोगकी — शानदार विजय हुअी। जिनके निमत्रणमे हम जापानमे आये थे, वे हमारे निचिरेन-पन्थी गुरुजी निचिदात्सु फूजीअी अिस सत्याग्रहमें शामिल हुअे थे। ये अेक आध्यात्मिक वीर हैं। तपस्या और सेवाके द्वारा ये और भी तेजस्वी बने है। ये राजनीतिसे अलिप्त रहना अुचित नही समझते हैं। ये किसी भी वर्तमान पक्षके साथ मिले हुअे नही है। ये स्वतत्र रूपसे विचार करते है और श्रद्धाके आधार पर निश्चित किये हुअे विचारोका जोर-शोरसे प्रचार करते है।

पहले ये राष्ट्रवादी थे। अपने धर्म परे और अपने राष्ट्र पर अटूट श्रद्धा होनेसे ये काफी प्रमाणमें साम्राज्यवादी भी थे। हिन्दुस्तानमे आकर ये गाधीजीके आश्रममें रहे थे। गाधीजीके साथ अिन्होने विचार-विनिमय भी किया था। फिर अिन्होने गाधीजीके सत्याग्रह-मार्गका अध्ययन व चिंतन किया। आखिरी महायुद्धके बाद अिनकी आखें खुली और गाधीजीका मार्ग अिनके गले अुतरा। बादमें ये अिस सत्याग्रहमें शामिल हुअे, अिसमें आश्चर्य ही क्या?

अिनकी शिष्य-शाखाओंका काफी बडा विस्तार है। अिनके प्रमुख शिष्य अेकके बाद अेक गाधीजीके वर्धा आश्रममे रहते आये हैं। अिनके अेक शिष्य स्वामी ओीमाअी-सानको मैने श्री विनोबाके पास भेजा था। वहा अुन्हें भूमिदान व ग्रामदानका प्रत्यक्ष कार्य देखनेका अवसर मिला। भारतकी और जापानकी स्थिति अलग-अलग है। अिसे अच्छी

तरह समझकर जापानमें सर्वोदयका प्रारम्भ किस तरह करना चाहिये, अिसका वे गहराअीमे विचार कर रहे है। किसी अेक जिलेको चुनकर वहा आश्रमकी स्थापना करके श्रमदानकी ओर लोगोको झुकाने, स्तूप बनाकर लोगोको धर्म-जीवनके प्रति जाग्रत करने और अुनमें नव-जीवनका सचार हो अिस हेतुसे कार्यक्रमोकी योजना करनेका अुनका विचार है।

आज जापानके नेताओमे अेकवाक्यता नही है। अेक पक्ष तो मानता है कि दुनियामें जो अनेक गुट (Blocks) है, अुनमें से किसी अेकके साथ साठ-गाठ किये बिना छुटकारा नही है। रूस पडोसमें है। चीन भी पडोसमें है। अिन लोगोका पुराना वैर कैसे भुलाया जा सकता है? अिन लोगो पर कैसे विश्वास रखा जाय? अिसलिअे भलाअी अिसीमें है कि हम अमरीकाकी मदद लें। अमरीकाको जितने चाहिये अुतने सैनिक अड्डे दें और अमरीकाकी नीति अपनायें। यही जापानके जीनेका अेकमात्र अुपाय है। दूसरा पक्ष कहता है कि अमरीकाकी मदद जितनी मिले अुतनी लेनी चाहिये, लेकिन अमरीकाको हवाअी अड्डे नही देने चाहिये। जितना सभव हो अुतना अमरीकाका प्रभाव कम करना चाहिये। अैसा करनेसे ही जापानकी स्वतत्रता सुरक्षित रहेगी।

अिन दो विचारोके बीच जापानका मानस झूल रहा है। अिनके सिवा भारतके असरसे कुछ प्रभावित हुआ अेक तीसरा पक्ष भी कुछ-कुछ अपना सिर अूचा कर रहा है। वह कहता है "रूस अथवा अमरीकाके गुटमें मिलनेकी कोअी जरूरत नही है। अैसा करना आत्महत्याके समान है। हमने साम्राज्यवादी नीति छोड दी है। हमें बडी सेनाकी आवश्यकता ही क्या है? देशमें शाति रहे, लोगोको पुलिसका रक्षण मिले, अिसके लिअे आवश्यकतानुसार सेना रखना ही काफी है। पडोसियोके प्रति हम सद्भाव रखेंगे। अेक-दूसरेकी मदद करेंगे। किसीसे भी भ्रममें आकर शत्रुता नही करेंगे। आत्म-विश्वासके साथ राष्ट्रका विकास करते रहेंगे। हम आन्तरिक शक्ति और आन्तरिक श्रद्धा बढाये, यही महत्त्वका काम है।"

अिस नअी नीतिके पीछे जो श्रद्धा है, जो निर्भयता है और जो दूरदर्शिता है वह आध्यात्मिक तेजसे से ही प्रकट हो सकती है। अिस

नीतिके लोगोके गले अुतरनेमें कुछ समय लगेगा, लेकिन अेक बार जब यह जड पकड लेगी तब शुद्ध विचार अपने आप ही फैलेंगे। दुनियाकी परिस्थिति ही अैसी है कि यह विचार जापानके गले अपने आप ही अुतरेगा। यदि अैसा हो जाय तो भारत और जापान मिलकर दुनियाकी और खासकर अेशियाअी राष्ट्रोकी अुत्तम सेवा कर सकेंगे। और यदि चीन भी अिस नीतिको पसन्द करे, तो दुनियाकी परिस्थिति पर हम अेशियावासी काफी सात्त्विक अकुश पा सकेंगे।

१८

सीमीझुका सागर-दर्शन

ओहारा,
३-८-'५७

नागाओकाके आरामके बाद हमारा कुतूहल हमें सुझुओकाके जिले (prefecture) में घूमने ले आया। अेक टैक्सी करके हम साढे नौ बजे चले। यामाडाया होटलकी व्यवस्थापिका और अुस होटलकी सस्थापिका, अुसकी नब्बे वर्षकी बूढी मासे विदा लेकर हम निकले। कितनी ही सुरगे हमने पार की। अेक जगह तो अेकसे अेक सटी हुअी समानान्तर तीन सुरगे हमने देखी। दो सुरगें तो आने-जानेके लिअे अलग-अलग होगी और तीसरी सुरग शायद रेलके लिअे होगी।

हमने होक्कायडो छोडा तबसे हम मानो जापानके पूर्वी किनारे पर ही सफर कर रहे है। अिसलिअे दो सुरगोके बीचमें प्रशान्त महासागरका दर्शन हो ही जाता है।

मै नही मानता कि अितना बडा प्रशान्त महासागर आजके जैसा ही सदा बिलकुल शान्त रहता होगा। सरोवरके जितनी लहरें भी यहा दिखाअी नही देती! अैसा मालूम होता है मानो पवन 'अन्यमनस्क होकर शायद कही चरने चल दिया है!

टैक्सीको काफी दौडाकर हम सीमीझु आये। अुद्योगके कारखानोंका यह दृश्य भीषण ही कहा जा सकता था। लेकिन स्वामी ओमाजी-साननें हमें यहां बहुत सुन्दर सागर-किनारा दिखानेका वचन दिया था। यहां शराबका कारखाना चलानेवाले अेक सज्जनकी ओरसे हमें दोपहरके खानेकी दावत थी। हम अुनके कारखानेमें गये। जिसमें शकरकंद, खजूर, मकअी वगैरा बहुतसी चीजोंसे शराब बनाअी जाती है। खजूरकी गुठलीका बटनके रूपमें ये लोग अुपयोग क्यों नहीं करते, असका आश्चर्य व्यक्त करके मैंने कारखानेके मालिकको सुझाया कि आप अिन गुठलियोंका तो कअी तरहसे अुपयोग कर सकते हैं। और कुछ नहीं तो अिमलीके बीजकी तरह ही खजूरकी गुठलीका चूरा करके साअिजिंगके लिअे कपडोंकी मिलोंमें असका अुपयोग हो सकता है।

गर्मियोंमें कारखाना अेक महीना बन्द रखकर सारे यंत्रोंकी सफाअी कराते हैं। आजकल अैसी ही छुट्टी होनेसे हम यह कारखाना चलता हुआ नहीं देख सके। फिर भी कारखानेमें सब जगह घूमकर शराब बनानेकी क्रिया समझ ली।

खाने बैठे तब हम अिन लोगोंके आतिथ्य-सत्कारकी गहराअी समझ सके। हमारे लिअे तो शाकाहारी भोजन था ही। लेकिन हमारा साथ देनेके लिअे कारखानेके मालिक और दूसरे कार्यकर्ताओंने भी अुस दिन शाकाहारी भोजन ही किया। भोजन हमें पूरा रुचिकर लगे जिसके लिअे मालिकने अपने रसोअियेको शाकाहारी वानगियां सीखनेके लिअे खास तौरसे टोकियो भेजा था। अुसने अुस दिन खास तौरसे समोसे बनाये थे। मैंने अुन्हें बताया कि जिन समोसोंका आकार हमने अपने यहांके तालाबोंमें होनेवाले सिंघाडोंसे लिया है। अुन्होंने हमें बडे स्नेहसे विदा दी। हम अपनी टैक्सीमें बैठकर फिरसे चल पडे।

समुद्री आत्मा तरंगोंकी मौज लेनेके लिअे अुत्सुक हुअी। अुसने अिसके लिअे अिजाजत मागी। पानीकी गहराअीका अन्दाज लगाना मुश्किल होनेके कारण मैंने अुसे घुटने तकके पानीमें ही जानेकी अिजाजत दी। अुसीमें वह कितनी नाची-कूदी! रेशमकी साडी बिलकुल भीग गअी, अिस ओर अुसका ध्यान ही न गया।

समुद्रके अिस किनारे शंख वगैरा कुछ नहीं थे। सिर्फ टेढे-मेढे और हजारों वर्षोंके घर्षणसे छोटे व चिकने बने हुअे पत्थर यहा-वहा बिखरे पडे थे। अुनमें से अेक अर्धचन्द्राकार पत्थर अिस स्थानकी स्मृतिके रूपमें मैंने अुठा लिया।

समुद्रका पानी क्षितिज तक फैला हुआ था। हमारा मद्रासका समुद्र अपनी भव्यताके लिअे प्रख्यात है। यहा क्षितिजकी रेखा अुस्तरेकी धार जैसी पैनी नहीं थी। लेकिन मानो हलके कुहरेने क्षितिजकी रेखाको जान-बूझकर जरा अस्पष्ट कर दिया हो, अैसी काव्यमय दिखाअी देती थी। सारा दृश्य ही स्वप्निल था। समुद्रमें यदि थोडी भी तरगें होती तो अिस दृश्यको मैं अूर्मिल कहता! अितना अधिक काव्य यहा लहरा रहा था। आसपासके पहाड, रेतके विस्तारमें खडे पेड, अुनके बीचकी दो-तीन दुकानें और जिन पर जापानी अक्षरोंमें लेख खुदे हुअे हैं अैसे अूचे पत्थर — सारा ही दृश्य रोमाचकारी था।

यहा लानेके लिअे ओीमाअी-सानको हम धन्यवाद दे रहे थे, तभी अुन्होंने अिस स्थानके बारेमें अेक पौराणिक कथा सुनाअी।

"अिस स्थानका नाम मीहो है। प्राचीन कालमें अेक धीवर यहा मछलिया पकडने आया था। सुबहसे शाम तक जाल डालकर बैठा रहा, लेकिन कोअी मछली हाथ न लगी। अुसने सोचा कि खाली हाथ घर क्या जाअू। पूर्णिमाकी रात है, समुद्रके किनारे रात बिताअ् तो चित्तकी खिन्नता दूर होगी। चादनीकी शोभा देखता हुआ वह रेतमें बैठ गया। अितनेमें आकाशसे अप्सराओंने झटपट कपडे अुतारकर समुद्र-स्नानके लिअे पानीमें प्रवेश किया। मनुष्य जैसे घोडा दौडाता है अुसी तरह परियोंने अुछलती तरंगों पर अश्वारोहण किया और जी भरकर जल-विहार किया। अिसी बीच धीवरने अेक अप्सराके वस्त्र अुठाकर छिपा दिये।

"परिया कपडोके विना आकाशमे अुड नही सकती। जल-विहारसे तृप्त होकर अेक-अेक अप्सराने अपनी-अपनी साडी सुन्दरतासे लपेटकर आकाश मार्गसे गमन किया। धीवरने जिसका वस्त्र छिपाया था वह घवडाअी। विना वस्त्रोके आकाशमे कैसे अुडा जाय और पृथ्वी पर भी कैसे घूमा जाय! अकुलाकर वह वोल अुठी — 'अव मै क्या करू? मेरे वस्त्र यहासे कहा गये?'

"धीवरने आगे आकर कहा — 'देवी, घवराअिये नही। आपके वस्त्र मै जरूर ला दूगा लेकिन अेक शर्त है। कहते है कि स्वर्गकी परिया और अप्सराअें अद्‌भुत नृत्य करना जानती है। वह नृत्य देखनेकी मेरी वडी अिच्छा है।"

"परीने कृतज्ञतासे धीवरकी ओर देखकर कहा कि हमारे वस्त्रोमें ही हमारा नृत्य शोभा देता है। धीवरने छिपाये हुअे कपडे ला दिये। परीने कलायुक्त ढगसे वे वस्त्र पहन लिये और पौ फटने तक धीवरको कअी प्रकारके स्वर्गीय नृत्य दिखाये। समुद्रमें अुषाकी लाली फैले अुससे पहले ही परीने धीवरसे विदा ली और स्वर्गका मार्ग पकडा।"

जिस स्थानके अुपयुक्त ही हमने यह पौराणिक लोकवार्त्ता सुनी। अितनेमे ही यहाके स्थानीय नेता श्री मोचीझुकी तीन छोटे छोटे तौलिये ले आये। ये हमारे साथ ही यहा आये थे। प्रत्येक तौलिये पर यहाका समुद्री किनारा, फूजीयामा पर्वत और आकाशमें अुडती हुअी अेक परी चित्रित थी। हम तीनोको अिस स्थानके स्मृतिचिह्नके रूपमे अुन्होने ये तीन तौलिये भेटमे दिये और साथमे यहाके दृश्योके रगीन फोटो भी दिये।

परीकी नजरसे सारा समुद्री किनारा नजर भरकर देखनेके वाद हम तीसरे पहर यहासे चले और शामसे पहले ओहारा पहुच गये। नौ हजार मनुष्योकी आवादीवाला यह अेक छोटासा गाव है। यहा नारगी वहुत होती है। नारगीसे शरवत तैयार करनेका अेक कारखाना देखकर हम यहाके अेक-दो किसानोके घर भी देख आये। अदर जाकर अुनके घरकी पूरी रचना देखी। यहा गाव गावमे विजली है। हर घरमे रेडियो तो है ही। प्रत्येक किसान-कुटुम्बके पास लगभग पाच अेकड जमीन होगी। घर-घरमे हमने गाय भी देखी। लोग हर तरहसे सुखी दिखाअी दिये।

अुत्सवमें काम आनेवाले तरह-तरहके मुखौटे (masks) हर घरमें होते हैं। यह अेक धार्मिक रिवाज मालूम होता है।

अिन किसानोंके घर देखकर जापानके लोकजीवनके विषयमें अच्छी जानकारी मिली। प्राथमिक शिक्षा सारे जापानमें अनिवार्य है। अितना ही नहीं, बल्कि अुसके पीछे प्रचुर धन-व्यय करके अुसे अुत्तम-मे-अुत्तम बनानेका यहाके नेताओंका विचार है। हमने देखा कि जापानके प्राथमिक स्कूलोंके मकान हमारे हाअीस्कूलके मकानोंसे हर तरहसे बढे-चढे हैं।

रात्रि-विश्रामके लिअे हम अेक ध्यानपन्थी झेन बौद्ध मदिरमें आ पहुचे। दिनभरकी थकान अुतारकर हमने खाना खाया और अिस परी-पुराणको लिख कर हम निद्राधीन हुअे।

१९

अिजीनियरिंगके पुरुषार्थका प्रतीक

यूअी,
५–८–'५७

यह तो मैं कह ही चुका हू कि हमारी यात्राका क्रम काफी विचार-पूर्वक गढा हुआ है। कही बौद्ध-स्तूप बनानेकी तैयारी देखनी थी, तो कही मदिरके भक्तोंसे मिलना था और अुनके साथ आजकी जागतिक परिस्थितिके बारेमें धर्मचर्चा भी करनी थी। होक्कायडोमें सरोवरों और जगलोंसे बना हुआ 'नेशनल पार्क' देखा और नौका-विहारका आनन्द लिया। अिसीके साथ प्राचीन आयनु लोगोंके जीवन-क्रमका निरीक्षण भी किया। अुसके बादके दो दिन यहाके प्राचीन वैभव और प्राचीन कलाका आकण्ठ पान करनेमें बीते। साथ ही हम यहाकी नैसर्गिक भव्यतामें भी निमज्जन कर सके। तुरन्त ही दूसरे दिन हमने समुद्र और समुद्री प्रजाके दर्शन किये और स्नानानन्द मनाते हुअे लोगोंका कुतूहल देखा। अिसी बीच अेकाध दिन गावके लोगोंकी खेती व अुनका ग्राम-जीवन देखा, तो किसी दिन गावके छोटे-मोटे अुद्योग भी देखे। और

अिस सिलसिलेमें हमने अेक ओर कअी दिन तक लगातार जापानी होटलोंमें वास किया, तो दूसरी ओर बीच-बीचमें व्यक्तिगत घरों व मंदिरोंका आतिथ्य-सत्कार भी स्वीकार किया।

आज हम अिन सब चीजोंसे भिन्न आधुनिक जापानके वैज्ञानिक अिजीनियरिंगके पुरुषार्थका प्रतीक साकुमा बांध देखने गये थे। अुसका वर्णन करना है। लेकिन अुससे पहले ओहाराके मंदिरके विषयमें थोड़ा-सा कह दूं।

जिस कलायुक्त और प्रशस्त मंदिरमें हमने तीसरी तारीखकी रात बिताअी थी, अुस मंदिरका अेक पुजारी साधु अुसी मंदिरमें रहता है और ओहारामें आनेवाले अतिथि-अभ्यागतोंका आदर-सत्कार भी करता है। अिस तरह यह मंदिर ध्यान-पूजाकी जगह होनेके साथ साथ अतिथिशाला भी है। मंदिरका और पुजारीका खर्च गांवके लोग खुद ही चलाते हैं। अतिथि खुदके खाने-रहनेका खर्च देनेके लिअे बंधे हुअे नहीं हैं। अपने आप समझकर वे जो दे दें सो सही।

चौथी तारीखको हम सुबह अुठकर तैयार हुअे अुस बीच मंदिरके आंगनमें गांवके लड़के-लड़कियां कवायद और कसरतके लिअे शिक्षकोंके साथ अेकत्र हो गये थे। छहके घंटे बजते ही पुजारीने रेडियो चालू कर दिया। रेडियोमें से सुन्दर मीठे संगीतके साथ साथ कवायदके हुक्म भी तेज आवाजमें निकल रहे थे। अुन हुक्मोंके अनुसार बच्चे अुत्साह और स्फूर्तिके साथ कवायद कर रहे थे। कवायदकी असी व्यवस्था यहां सभी जगह है। जिससे सारे प्रदेशमें अेक ही समय कवायद-शिक्षकके बिना भी बच्चे शारीरिक व्यायाम कर सकते हैं।

अिस गांवके मुखियाके साथ बातें करनेसे यहांके बारेमें नीचे लिखी जानकारी मिली।

गांवमें कुल तेरह सौ साठ घर हैं। अुनमें किसानोंके घर अेक हजार हैं। खेती और चायके अलावा दूसरी आमदनी नारंगीके बगीचोंसे होती है। मनुष्यकी औसत अुम्र चौंसठ वर्षकी है। अधिकसे अधिक आयु छियानवे वर्षकी है। मुझे नहीं लगता कि हमारे देशमें जितने बढ़िया आंकड़े कहीं भी मिल सकते हैं। हमारे यहांकी औसत आयु तो पैंतीसके

आसपास होगी। प्राथमिक पाठशालामें तेरह सौ विद्यार्थी पढते है, यानी हर घरसे अेक बच्चा तो स्कूल जाता ही है। लेकिन मुझे अधिक खुशी तो यह जानकर हुअी कि मिडिल स्कूलमें सात सौ लडके पढते है। गावके नेताओंको अिस तरह आकडोमें बातें करते देखकर मैंने अुनसे पूछा कि आपके यहा पुरुष और स्त्रियोंकी सख्या किस अनुपातमें है। सामान्य तौरसे यह बराबर होनी चाहिये। लेकिन यहा पैंतालीस फी सदी पुरुष और पचपन फी सदी स्त्रिया है। अिस सवालकी गहराअीमें जानेका समय नही था। मेरे खयालसे पुरुष काफी सख्यामें शहरोंमें रहने चले जाते होगे।

* * *

हमारे यहा जैसे भाटगर, हीराकुड और भाखरा-नागलके बाध है, वैसे ही यहा छोटे पैमाने पर लेकिन जापानके लिअे बडे-से-बडा अेक साकुमा (Sakuma) बाध तेन्र्यु नदी पर बना हुआ है। अिसे देखनेके लिअे हम सुबह सवा सात बजे ओहारासे चले। ट्रेनमें करीब दो घटे बिताकर हम हमामात्सु स्टेशन पहुचे। वहा हमारे पूर्वपरिचित भाअी मोचीझुकी मिले। हमारी परिचित टैक्सीके साथ वे तैयार खडे थे। अुस टैक्सीमें बैठकर हमने पूरे दो घटे पहाडोंके बीचकी घाटियोंको पार करते करते तेन्र्यु नदीके साथ-साथ मोटरका सफर किया। भारतमें साथ की हुअी अपनी किसी अुत्तम-से-अुत्तम यात्राके मुकाबलेका यह दृश्य था। मेरी और तुम्हारी दोनोंकी आखोंसे यह दृश्य देखने पर भी तबीयत भरी नही। चारो ओर हरियाली ही हरियाली दिखाअी दे रही थी। अधिकतर चीडके अूचे-अूचे पेड कतारबन्द खडे थे, अिन्होंने पहाड चढनेकी होड लगा रखी थी। यहाकी नदी तो मानो नागिनी तिस्ताका ही अवतार थी। हिमालयकी किसी भी नदीकी सहेलीके रूपमें यह शोभा दे सकती थी। अिसके घुमावोंको देखकर अिसे नागिनी या सर्पिणी चाहे जो नाम दिये जा सकते है। यह नदी पहाडोंके बीचसे मार्ग निकालती हुअी आगे बढती है। फिर भी यह शैलजा नही बल्कि सरोजा है। सुवा अथवा सुवानो नामके अेक सरोवरमें से निकलकर यह दक्षिण-पूर्वकी ओर बहती है। रास्तेमें और पाच-सात नदियोंका पानी अपनेमें समेटकर अन्तमें

यह पूर्वी प्रशान्त महासागरमे जा मिलती है। यह नदी जापानकी भाग्य-लक्ष्मी सिद्ध होनेवाली है। अिस नदी पर अेक सौ पचास मीटर अूचा, अूपर दो सौ चौरानवे मीटर चौडा और पाच खिडकियोवाला अेक विशाल बाध बाधा गया है। जापानमे जो बडे बडे बाध बाधे गये हैं, अुनमे जिसका भी स्थान है। शायद यही सबसे बडा बाध हो।

अिसकी अेक-अेक खिडकीका अूपर-नीचे होनेवाला दरवाजा बारह मीटर चौडा, चौदह मीटर अूचा और वजनमे अेक टनका है। बाधका रोका हुआ पानी जब काबूसे बाहर हो जाता है, तब ये पाच अथवा अुनमे से कुछ दरवाजे थोडे थोडे अूचे खीच दिये जाते हैं। अिस तरह नदीके प्रवाहको चाहे जब काबूमे लाया जा सकता है।

बाधमे रोके हुअे पानीका जब चारो ओर अुपयोग होगा तब आजसे बीस हजार अेकड अधिक जमीन सीची जा सकेगी और अुपजाअू बन जायगी। आजकल तो अिस बाधका अुपयोग बिजली पैदा करनेके लिअे ही होता है।

जिसकी पूरी कल्पना अिस प्रकार है तेन्र्यु नदी अेक जगह अेक बडे पहाडकी आधी प्रदक्षिणा करके आगे दौडती है। अिसलिअे अूपर बाध बाधकर पानीके स्तरको खूब अूचा अुठा दिया गया है। फिर, अुस पहाडमे से दो बडी बडी अेक सौ सैतालीस मीटर लम्बी सुरगें खोदकर अुसके द्वारा पानीको अेकदम नीचे ले गये है। पानीको नीचे नदीके प्रवाहमें छोडनेसे पहले बडी बडी टर्बाअिनें रखकर अिस पानीमे चक्राकार गति पैदा की गयी है। अुस गतिसे बिजली पैदा करके अेक ओर अुत्तरमे टोकियो तक और दूसरी ओर दक्षिणमें नागोया तक पहुचा दी गअी है। अिन केन्द्रोके द्वारा यत्र चलानेके लिअे जगह जगह यह बिजली वितरित की गअी है। साकुमा बिजली-घरमें कुल साढे तीन लाख किलोवाट बिजली तैयार होती है। यानी हर साल अेक सौ चालीस करोड किलोवाट बिजली वह पैदा कर सकता है। जिस पावर-हाअुस तक जाते हुअे रास्तेमे यत्रोके द्वारा पहाडोमे जो विशाल और अद्भुत काम किये गये है, अुन्हे देखकर मनुष्यने प्रकृति पर कितना प्रभुत्व प्राप्त किया है, अिसका पूरा खयाल आता है।

मोटरसे जाते हुअे अेक जगह हमे ठीक रास्ता नही मिला अिस-लिअे हम नदीके अेक ओरकी सुरग लाघकर सामने पहुचे। फिर हमें भल सुधारनेके लिअे नदीके पाटकी ओर अुतरकर अुस पार चढना पडा। अिसमें मोटर चलानेवालेकी अथवा अपनी भाषामें कहू तो तैलवाहनके सारथीकी पूरी परीक्षा हुअी। बीचमे अेक-दो जगह हमें पैदल भी चलना पडा। अिस तरह अिस घाटीमें कही-कही पैदल चलकर हमें जो ज्यादा समय बिताना पडा वह बडा लाभप्रद साबित हुआ। अिससे हम घाटीकी और प्रवाहकी शोभा तो अच्छी तरह देख ही सके, बडे-बडे यत्र मनुष्यके अिशारेसे कैसे मिट्टी खोदते है, बडे-बडे राक्षसी हाथोसे मिट्टीके ढेरको अुठाकर मालगाडीके डिब्बोमें कैसे भरते है और अुसे ले जाकर कैसे बिछा देते है, आदि सारी लीला भी हम बारीकीसे देख सके।

आखिरमे हम अिस सारे प्रोजेक्टके दफ्तरमें पहुचे। वहा हमने थोडा आराम किया और जिला-समिति द्वारा आयोजित सरकारी भोज स्वीकार किया। यहा हमारे साथ खाना खानेके लिअे निमत्रित किये हुअे अनेक अधिकारियो और पत्र-प्रतिनिधियोके साथ बातें हुअी। 'आसाही' अखबारके प्रतिनिधि भाअी यामामुराने सवाल पूछा कि "पिछले महायुद्धके विषयमें आपका क्या अभिप्राय है?" (पिछले महायुद्धमे भारत पराधीन होनेके कारण अिग्लैडके पक्षमें था। जापानका पराभव हुआ और अिसलिअे युद्धके अन्तमें अुसे जो दण्ड देना पडा था अुसका अमुक भाग भारतके हिस्सेमें भी आया था। लेकिन अुस काफी बडी रकमको भारतने छोड दिया। अिस तरह भारतने जापानके साथ दोस्ती कायम की और अुसे दृढ किया) मैंने अुनसे कहा — "मेरी दृष्टिसे पिछले महायुद्धमे किसीकी भी जीत नही हुअी। दोनो ही पक्षोने भारी हार खाअी है। यदि अैसा न होता तो आज विजयी राष्ट्र अितने भयभीत क्यो नजर आते?" अिसके बाद मैंने अुन्हे बम्बअीके अपने अेक व्याख्यानमें काममे ली गअी अुपमा थोडेमें सुनाअी — "दो जबरदस्त साप बडे जोर-शोरसे आपसमे लडे। दोनोने जोर-जोरसे सिर पछाडे। और अिस घातक युद्धके अन्तमें दोनो ही मर गये। फर्क केवल अितना ही था कि अेक सापसे दूसरा साप

आधा घंटा बाद मरा और अिससे वह लडाअीमें विजयी माना गया। पर विजयका लाभ तो अुसे कुछ मिला ही नही।।"

आमन्त्रित व्यक्तियोंमें से अेक प्रख्यात सोशलिस्ट लेखिका अिस वार्तालापमें अुपस्थित थी। अुन्हे यह किस्सा बडा अच्छा लगा।

खानेके बाद सारे प्रोजेक्टके चीफ अिलैक्ट्रिकल अिंजीनियर केअीझो ओकुनो (Keizo Okuno) हमें वहांका सारा पुरुषार्थ दिखाने ले गये। ये जितने चतुर थे अुतने ही सज्जन भी थे। सारी चीजें विस्तारसे समझानेके लिअे काफी अुत्सुक थे, लेकिन अंग्रेजी भाषा पर अुनका काबू नहींके बराबर था। हां, हमारी बातें वे काफी समझ लेते थे। जापानी लोग हमारे लोगोंकी तरह विदेशी भाषा पर काबू पानेके लिअे अपना जीवन बरबाद नही करते। अुन्हे किसी विदेशी सरकारकी सेवा तो करनी नहीं थी और न विदेशी प्रजामें शाबाशी ही प्राप्त करनी थी।

हमारा रास्ता अेक सुरंगमें से होकर जाता था। अुस सुरंगकी अेक शाखा टेकरीके अेक ओर ले जाती थी, जहांसे सारे बांधका दूरसे पूरा दर्शन हो जाता था। फिर अिंजीनियर साहब हमें अुस प्रसिद्ध बांधके अूपर ले गये और अुन्नीस सौ तिरपनसे आज तक कामकी प्रगति कैसे होती गअी, यह अुन्होंने हमें समझाया। बांधके ठीक मध्यमें ले जाकर अुन्होंने हमारे फोटो खिचाये। बांधके फलस्वरूप बने हुअे गहरे तालाबका पानी पहाडको बेधकर दो सुरंगों द्वारा अुस पार कैसे जाता है यह अुन्होंने समझाया। फिर लौटते हुअे पावर हाअुसके यंत्रोंका स्वरूप भी बताया। वे हमें पावर हाअुसके तलघरमें भी ले गये। यहांकी लिफ्ट पांच मंजिल अूपर और पांच मंजिल जमीनके पेटमें भी जा सकती है। अेक घंटे तक हमने यह सब ध्यानपूर्वक देखा। अुसके बाद वे हमें कारखानेके सुन्दर बगीचेमें ले गये। वहां सारी योजनाका काफी बडा नमूना (model) रखा हुआ था, वह बताया। साथीकी मददसे मैंने यह सब रेखाओं और [illegible] विस्तारसे [illegible]। अिसी बीच हमारे [illegible] नहीं आ गये। अुन्हें [illegible] और साथी ओकुनोको अनेकानेक हार्दिक धन्यवाद दिये। अुन्हें [illegible] निमंत्रण दे हमने अुनसे विदा ली। साथी ओकुनो और [illegible] साथ जिस

बाते करते थे और अुन लोगोकी आखोमे जो प्रेमादर दिखाअी देता था, अुससे हमें विश्वास हो गया कि यह सारी सस्था सुन्दर ढगसे चल रही है। मैंने अुनसे पूछा कि सब मिलकर कितने लोग अुनके मातहत काम करते है? पहले तो वे मेरा सवाल ही नही समझ पाये। लेकिन जब अुनसे वह सख्या मालूम हुअी तब अुन्होने विभागानुसार अितनी अधिक जानकारी दी कि अुन सबका जोड तो मैं भूल ही गया।

अिस तरह अेक प्रचण्ड पराक्रमको अच्छी तरह देखनेका सतोष जीमें होनेसे वापिस लौटते हुअे हम प्रकृतिकी शोभा और भी रुचिसे देख सके।

यहाके पहाडोमे अेक ही प्रदेशमें पेडोकी विविधता नही होती। जहा जो पेड अुगते है वहा सब जगह बस वे ही दिखाअी देते है। अेक जगह तो सारे चीड ही चीडके पेड थे। कही-कही अिन चीडके पेडोके पैर खुले दिखाअी देते है। चि० रेवतीको सूझा कि जैसे अेक तरहके फ्रॉक पहनकर कतारबन्द खडी हुअी बालाओके खुले पैर शोभा देते है, वैसे ही अिन बाल-वृक्षोके पतले तने भी शोभा दे रहे है।

बीच-बीचमें मनुष्योने पेडोको काटकर पहाडी खेती की है। यह खेती स्वय तो सुन्दर होती ही है, लेकिन अिससे आसपासकी भव्यताको कही भी आच नही आती।

तेन्र्यु नदी हमारी तिस्ताकी ही तरह पहाडोमे फसी हुअी है, अिस-लिअे अुसमें से नहरे निकालना और अुसके किनारे खेती करना लगभग असम्भव है। आसपासके पहाडोमे से चली आनेवाली छोटी-छोटी अनेक नदियोका पानी खीचना तो अिसे आता है, लेकिन देनेका नाम नही लेती। अिसीलिअे तो अिसे स्राकुमा बाधसे बध जाना पडा!।

मनुष्यका अितना जबरदस्त पुरुषार्थ देखकर और अुसके विषयमें कदरके साथ गहरा चिंतन करने पर भी जब सारे दिनके अनुभवोको जोडने बैठे, तब लगा कि जिस प्रकृतिके बीच मनुष्यने अितना पराक्रम किया है अुस प्रकृतिकी समृद्ध शोभा और भव्यताको ही मुख्य स्थान देना होगा।

सुबहसे शाम तक अधिकाश समय पहाडोके बीच ही बितानेसे मेरे पैर गिर्यारोहणके लिअे छटपटाने लगे। यदि जवानीके दिन होते तो मैं

मोटरको लात मारकर कूद पडता और अेकके वाद अेक पहाड चढकर शिखरोंको जीतनेका आनन्द प्राप्त करता। लेकिन वृद्ध मनुष्यकी अैसी अभिलाषा दरिद्रके मनोरथकी भाति ही विफल हो जाती है। फर्क अितना ही है कि मैं अपने जमानेमें जिन-जिन पहाडोंके शिखरो पर पहुचा था और 'पादस्पर्शम् क्षमस्व मे' अैसी जिनकी प्रार्थना की थी, अुन सबको याद करके अुनका स्मरणानन्द जरूर ले सकता था।

दोपहरको मैंने हमें खाना खिलानेवाले लोगोसे कहा भी कि मैं तो मह्याद्रिका बालक हू। बचपनसे ही पहाडोंके बीच पला हू। हिमालय जैसे मेरी तपोभूमि है वैसे ही क्रीडाभूमि भी है। यहा चारो ओर आपके ये सब पहाड देखकर मेरी पार्वतीय आत्मा अैसा ही आनन्द अनुभव कर रही है जैसे वह स्वदेशमें हो।

हमारे लोगोंको जापानके पहाडोका खास अध्ययन करना चाहिये। यहा कितने ही जीवित ज्वालामुखी है। ये धूम्रपानके रसिककी तरह अखण्ड धुआ अुगलते ही रहते हैं। अिसके अलावा यहाके भूकम्प, जहा-तहा वहनेवाले गरम पानीके चश्मे और अुनका अच्छे-से-अच्छा होनेवाला अुपयोग यह सब गहरे अध्ययनका विषय है। हमारे युवकोंको यहा आकर भूगर्भशास्त्र, भूकम्प-विज्ञान और खनिज-विद्या अच्छी तरह सीख लेनी चाहिये। अिन लोगोंने यहाकी नदियोंका पूरा अुपयोग किया है, अैसा तो नही कह सकते। लेकिन यह देश छोटा और तग है। दोनों ओर महासागर है और जगह-जगह पहाड हैं। अिसलिअे यहा नदियोंका माहात्म्य कम है। सरोवरोंका अुपयोग ये लोग करते ही हैं। अुसमें खास बात यह है कि अुनके किनारे बसकर ये जीवनका आनन्द भी प्राप्त करते हैं।

यहाकी प्रजा नाटे कदकी है। अिसीलिअे शायद जिन्होंने सौ-दो सौ फुट अूचे बढनेवाले महावृक्षोंको भी ठिगना बनानेकी कलाका विकास किया है। सैकडो घरोंमें अैसे बालखिल्य वृक्ष सभालकर लगाये जाते हैं। अिन ठिगने वृक्षोंकी अुमर पूछे तो कअी पचास वर्षके होते हैं और बहुतसे तो दो सौ-तीन सौ वर्ष पुराने होते है। लेकिन जिनकी अूचाअी दो तीन फुटकी ही होती है। अेक छोटेसे बर्तनमें ही ये अपनी जिन्दगी बिताते हैं। वृक्षोंको जिस तरह छोटे करनेमें अिन लोगोंको क्या आनन्द

मिलता है, यह तो वे ही जानें। हम तो अुनकी लगन और अुनका ज्ञान देखकर केवल आश्चर्य ही कर सकते हैं। अुनकी यह कला हमारे देशमें दाखिल करनेकी अिच्छा मुझे तो नहीं होती।

अिन पेडोंको अैसे वामनावतारसे सन्तोष होता है या बेचैनी, यह पूछनेके लिअे किस पत्र-प्रतिनिधिको अुनके पास भेजे? हमारे पुराणोंमें अंगूठे जितने अूंचे साठ हजार वालखिल्य ऋषियोंका वर्णन आता है। वे सब तेजस्वी सूर्योपासक थे। अिन ठिगने पेडोंका जीवन वे शायद समझ सकें।

वापस लौटनेमें थोडी देर हो गअी। हमें हामामात्सु स्टेशन जाकर शामको ५–१०की ट्रेन पकडनी थी। हमें डर था कि शायद हम अिस ट्रेनको वहां न पकड सकेंगे। अिसलिअे हमने हामामात्सुका रास्ता छोडकर वहांसे दो स्टेशन आगे ओवातो जाना तय किया। वहां ट्रेन ५-२० पर पहुंचती थी। अिस युक्तिसे हम गाडी आनेसे पन्द्रह मिनट पहले ही वहां पहुंच गये। यह समय हमने स्टेशनके पासकी चायकी दुकान पर बिताया। वहां हमने कुछ खाया और लोगोंके रीति-रिवाजका निरीक्षण भी किया।

२०

भाअी मोचीझुकीका यूअी

शामको ७-१० पर हम यूअी पहुंचे। वहां हम गुरुजीके भक्त श्री मोचीझुकीके यहां ठहरे। मैंने सुबह स्नान नहीं किया था अिसलिअे यहां नहानेकी अिच्छा प्रकट की। नहानेके लिअे सडक लांघकर भाअी मोचीझुकीके ही अेक दूसरे घरमें जाना पडा। अंधेरेमें करदीप (टॉर्च) लेकर आते-जाते मनमें विचार आया कि मैंने बिना सोचे-समझे गृहपतिको व्यर्थ ही परेशान किया। श्री मोचीझुकीके यहां जापानी रहन-सहन, जापानी चित्रकला और मूर्तिकला तथा जापानी रीति-रिवाज वगैरा अच्छी तरह देखनेको मिले। तकलीफ केवल अितनी ही थी कि खानेके लिअे अुन्होंने बेहिसाब खानगियां तैयार कर रखी थीं। अैसा विचार आता था कि कहीं ये लोग हमें बकासुर तो नहीं समझ बैठे हैं।

अेक अच्छा-सा मजाक यहा लिखने लायक है। खानेके समय अिन लोगोने जान-बूझकर हमीके लिअे कद्दूके अेक टुकडेको मछलीके जैसा काटकर अुस पर आखे, दुम वगैरा यथारीति बनाकर हमारे सामने रखा। घरकी स्त्रियोका अिशारा पाकर ओीमाओी-साननें कहा "काका-साहेब, आज तो आपको यह मछली खानी ही पडेगी।" मैने टुकडा हाथमे लिया और कहा — "कबूल है, खाअूगा।" चि० रेवतीने अुस मछलीकी पूछका अेक टुकडा तोडा और चखकर कहा — "कद्दू है तो मीठा लेकिन ठीकमे पका नही है।" अिस कारण अिस निरामिष निर्दोष मत्स्याहारसे भी मैं बच ही गया!!

दूसरे दिन सुबह हम यूओीकी स्थानीय पाठशाला देखने गये। थोडी थोडी बारिश हो रही थी। छुट्टिया होनेसे बहुतसे विद्यार्थी बाहर गये हुअे थे। फिर भी चूकि भाअी मोचीझुकी स्थानीय नगरपालिकाके शिक्षा-विभागके अध्यक्ष थे, अिसलिअे अुन्होने काफी सख्यामें लडके-लडकियोको अिकट्ठा कर लिया था। शिक्षक तो सब थे ही। मुझे वहा छोटासा भाषण भी देना था। ओीमाओी-साननें कार्यक्रम अिस प्रकार रखा था कि प्रारम्भमे वे हमारे विषयमें, गाधीजीके विषयमें और दूसरी कुछ आवश्यक बातोके विषयमें जापानीमें विस्तारसे बोलें। फिर मै हिन्दीमें बोलू और वे अुसका अक्षरश टीका-सहित अनुवाद करे और आखिरमे स्वय अुपसहार करे।

मुझे आज सर्वोदयके विषयमें बोलना था, क्योंकि ये विद्यार्थी प्राथमिक पाठशालाके नही, मिडिल स्कूलके थे। मैने देखा कि लडके सब आगे बैठे थे और लडकिया पीछे। 'पिछडी हुअी जातिको आगे आने देना' — सर्वोदयके अिस बुनियादी सिद्धान्तको समझानेके लिअे मुझे अेक अुदाहरण सूझा। मैने कहा — "भारतमे भी पुरुष आगे बैठें और स्त्रिया पीछे बैठे अैसा ही पहले रिवाज था। लेकिन अब हम अिसे बदलने जा रहे है। सभाकी व्यवस्थाको बिना बिगाडे यदि आप पीछे जा सकें और लडकियोको आगे बैठने दे तो मुझे खुशी होगी। शर्त अितनी ही है कि यह फेरफार तीन मिनटके भीतर हो जाना चाहिये।" मेरी अिस आखिरी शर्तने लडकोको जोश चढा। वे फौरन अुठे और देखते ही देखते ठीक

डेढ मिनटमे अुन्होने मेरी सुझाअी हुअी व्यवस्था कर दिखाअी। जरा भी गडवड नही हुअी। मैंने अुनको शावाशी दी और फिर सर्वोदय व अन्त्योदयकी वात समझाअी। अुसके वाद मैंने कहा कि "अेशिया खण्डमें नये युगका प्रारभ हुआ है। अव हम अेक-दूसरेको यूरोपीय लोगोके द्वारा नही वल्कि सीधे ही पहचानना चाहते हैं। जिस तरह आपके देशका नाम जापान नही वल्कि निप्पोन अथवा निहोन है, अुसी तरह हमारे देशका नाम अिडिया नही वल्कि भारत है। हम अिन्ही नामोका अुपयोग क्यो न करे? हम अेशियावासियोको — खासकर निप्पोन और भारतके लोगोको दुनियासे युद्धको विलकुल खतम कर देना है।" मेरी वातें शिक्षकोने वडे अुत्साहसे सुनी। वच्चोको अुन्होने नक्शेकी सहायतासे वे सव समझा दी।

वापस घर आकर खाना खाकर हम कोफू जानेके लिअे निकले। वीचमें कुछ घटे निकालकर हमें मिनोवू भी जाना था। घरसे चलते समय हमारे मेजवानोने हमें सुन्दर रूमाल भेंटमें दिये और अपने साथ फोटो भी खिचवाये।

जापानका लोक-जीवन वारीकीसे देखने पर विश्वास हो जाता है कि यहाकी भाषा, पहनावा और रिवाज चाहे जितने भिन्न हो, लेकिन मनुष्यका हृदय, अुसकी अभिलाषाअें और अुसके आनन्दके विषय सव जगह अेकसे ही होते हैं। भेदके तत्त्व काफी छिछले और अस्थायी होते है, जव कि अेकताके तत्त्व जीवन-व्यापी, गहरे और स्थायी होते है।

कल कोफूमें मेरे हाथसे अेक स्तूपकी आधार-शिला रखी जानेवाली है। कल ही गुरुजीका जन्म-दिन भी है। अिसलिअे हमारी जापान-यात्रामें यह दिन हमारे लिअे और यहाके लोगोके लिअे वडे महत्त्वका है।

२१

जापानी प्रजाकी विशेषता

हमारा देश जापानसे कओी गुना वडा है। हमारी जनसख्या अितनी विशाल है कि कओी तो अुसके आकडे सुनकर ही आतकित हो जायें। हमारे यहा जिस परिमाणमें विजली पैदा हो सकती है और जितनी आगे चलकर अुपयोगमें आयेगी, अुसके मुकावलेमे छोटेसे जापानकी प्रवृत्तिया और अुसके आकडे अधिक नही कहे जा सकते। लेकिन अिस छोटेसे देशने स्वतत्र होनेके कारण पिछले सौ वर्षोंमे जो अुन्नति की है, वहा तक पहुचनेमें हमे कुछ समय लगेगा।

हमें स्वतत्र हुअे दस वर्ष हो चले है। हमारे देशकी प्राकृतिक समृद्धि कम नही है। अकेले लोहेका ही हिसाव लगावें तो आजकी यात्रिक सस्कृतिके आधाररूप अिस खनिज पदार्थकी कुल मात्रा और अुसकी गुण-वत्ता (quality) दुनियाके किसी भी देशसे कम नही है। हमारे यहाका लोहा अुत्तम प्रकारका है और काफी परिमाणमें भी है। औद्योगिक प्रगतिके लिअे जापानको जितने वर्ष लगे अुतने हमें नही लगेंगे। यदि हम निश्चय कर ले तो कुछ ही समयमें हम अदभुत प्रगति करके दुनियाकी अगली पक्तिमे आ सकते है। हमारी जनता समझदार और सस्कारी है। हमारा सामाजिक सगठन, जिसके असख्य दोषोसे हम चाहे जितने परेशान होते हो, दुनियाके दूसरे देशोंमे किसी भी तरह घटिया अथवा निराशाजनक नही है।

हमें तो केवल अपने लोगोकी मानसिक तैयारी करनेमें ही देर लगेगी। "जैसा मानस वैसा मनुष्य" अिसे हम भुला नही सकते। दूसरी अेक महत्त्वकी बात यह है कि जापानी लोग जितना काम कर सकते है अुतना हमारे लोग नही कर सकते। ये लोग जब काममें जुट जाते है तब राक्षसकी तरह काम करते है। अपने शरीर पर ये दया नही दिखाते। अुनके मुकावलेमे हमारे यहाके लोग आरामतलब है। सम्भव हो

साथ ही साथ शिक्षा और विज्ञान भी बढता जा रहा है। यहा खेतीकी मानी जानेवाली पैदावार सचमुच केवल खेतीकी ही नही होती। अिस अुद्योग-प्रधान प्रजाकी महत्त्वाकाक्षा पिछले महायुद्धमे कुचल भले ही गअी हो, लेकिन अब फिरसे वह जाग्रत हुअी है। बढते हुअे अुद्योग-धन्धोका अपना माल बेचनेके लिअे अिन्हे नये-नये बाजार तैयार करने होगे। मालको सस्ता कैसे बनाना और अुसे आकर्षक रीतिसे कैसे बेचना अिस कलामे ये लोग यूरोप व अमरीकासे कही आगे बढे हुअे है।

अैसी प्रजासे बहुत कुछ सीखा जा सकता है। हमारे युवक यहा आकर अिनके बीच रहे और अिनके जितना काम करें तभी वे योग्य बन सकेंगे। कुछ चतुर व मेहनती जापानी युवकोको अपनी सस्थाओंमें हमे रखना चाहिये। अिस तरह स्वभाव व आदतोका विवेकपूर्वक आदान-प्रदान हो सकता है। अिसमे काफी विवेकसे काम लेना होगा। अिसीमे हमारे चरित्रकी कसौटी है और तभी हम जापानके जितने आगे बढ सकेंगे।

अुद्योगिता और सर्वसहिष्णु प्रसन्नताके साथ अिनकी तीसरी अेक विशेषता अनुशासन अथवा तत्रनिष्ठा है। किसीको काम सौंपा तो वह ठीकसे करेगा ही अिसका विश्वास रखा जा सकता है। अिसलिअे सामा-न्यतया अिन लोगोको किसी भी काममें अपना दिमाग लगानेकी आदत कम होती है, लेकिन यह कमी ढक जाती है। सूचना देनेमें यदि आपने भूल की हो तो आपका काम आप जानें। दी हुअी सूचनाके मुताबिक ये काम बराबर कर देंगे। अिसलिअे अिन्हे विश्वासपूर्वक काम सौंपा जा सकता है।

हर जगह मधुर स्वागत स्वीकार करनेके बाद विदाअी लेनेके लिअे यात्रीके पैर तुरत आगे नहीं बढते। लेकिन अिसका क्या अिलाज? पूर्जी छोडते हुअे हमे भी दु ख हुआ। गृहपतिकी मा और पत्नी दोनो ही लोक-सस्कृतिकी अुत्तम प्रतिनिधि थी। घरका बहुतसा काम ये अपने आप ही करती थी। दक्षताके साथ वे सारी जगह स्वच्छ और व्यवस्थित रखती थी। बच्चोका ठीक पालन करती और पतिको प्रसन्न रखती थी। ये अिस बातका पूरा ध्यान रखती है कि मेहमानोको जरा भी

अैसा न लगे कि अुनकी वजहसे घरके लोगोंको किसी भी तरहकी विशेष मेहनत करनी पडती है। अिसीका नाम संस्कृति है। सब जगह सुव्यवस्था रखना, प्रसन्नता फैलाना और अुसके लिअे जो कष्ट अुठाने पड़ें अुनमें जीवनका आनन्द मानना यह कोअी छोटी-मोटी साधना नहीं है।

किसी भी देशकी संस्कृति अुसके शानदार शहरोंमें नहीं मिलती। वह छोटे-बडे गावोंमें और कस्बोंमें संतोषसे चलनेवाले गृहस्थ-आश्रममें ही दिखाअी देती है। अिसलिअे अैसी मेहमानदारीसे दूर होते समय थोडा-बहुत दुःख होता ही है।

सुबहसे आकाश अनमना-सा दिखाअी दे रहा था। जिसके लिअे मैं छटपटा रहा था वह फूजियामाका शिखर आखिर चौथी तारीखको शामको दिखाअी तो दिया, लेकिन अुसके सिर पर बर्फका मुकुट नहीं था। तीन साल पहले भी हमें फूजियामाके दर्शन नहीं हुअे थे। अिस बार भी हवा अच्छी न होनेसे अिस पर्वतोत्तमके दर्शन दुर्लभ हो रहे थे और जब हुअे भी तो बिना मुकुटके! बडी भारी निराशा हुअी। मेरे साथ सहानुभूति दिखानेके लिअे ही यदि आकाश आंसू गिरा रहा हो तो अिसमें कोअी आश्चर्य नहीं!

अिस प्रदेशमें वर्षाकी कोअी अलग ॠतु नहीं होती। जब जीमें आये वर्षा होने लगती है। आजकी बारिश आसपासकी खेतीके लिअे लाभदायक है, अिसलिअे किसान खुश हैं।

२२

तपोभूमिका वैभव

कोफू,
७–८–'५७

यूओीसे कोफू जाते हुअे रास्तेमे मिनोवू आता है। यदि हम यह स्थान न देखते तो वडे ही घाटेमे रहते। दो ट्रेनोके वीच अुपलब्ध डेढ दो घटेमे हमने अेक अुत्तमसे अुत्तम सस्कार-यात्रा पूरी की। अितने समयमें ही सव देखना था, अिसलिअे पहलेसे ही सव व्यवस्था विचार-पूर्वक कर रखी थी, वरना यह सभव नही था।

निचिरेन-पथके मूल सस्थापक महात्मा निचिरेनको अव सव वोधि-सत्त्व कहते है। अुनकी साधना और अुनका प्रचार दोनो ही वडे अुग्र थे। अनेक तरहकी जोखिम अुठाकर, राजकर्ताओंको नाराज करके और विरोधियोको अपने सख्त प्रचारसे व्याकुल करके अुन्होने धर्मशुद्धिका काम किया और जापानकी राष्ट्रीय सस्कृतिको वौद्ध धर्मके शुद्धसे शुद्ध सस्कार दिये। साढे सात सौ वर्ष पहले अुन्होने जो किया अुसका असर जापानमे आज भी सव जगह दिखाओी देता है। अिन निचिरेन वोधिसत्त्वको सकटके समय मिनोवूके जगलोमें अज्ञातवासमे रहना पडा था। अिस स्थानसे अुन्होने नौ वर्ष तक अपने शिष्योंके द्वारा धर्म-प्रचारका कार्य चलाया। अिसलिअे अिसमें जरा भी आश्चर्यकी वात नही है कि निचिरेन-पथके लोग अिस स्थानको अपना मदीना समझें। आज यह स्थान धार्मिक कला व धार्मिक वैभवका अेक वहुत वडा केन्द्र वन गया है। निचिरेन-पथके वडे-वडे मुखिया यहा रहते है और सव केन्द्रोंकी व्यवस्था सभालते है।

गुरुजी निचिदात्सु फूजीओी भी अिसी पथके अेक धार्मिक मुखिया है। लेकिन अुनका वैभवमें विश्वास नही है। धर्मके चैतन्यको जाग्रत व प्रज्ज्वलित रखना, लोगोमें जागृति पैदा करना, सादगीसे रहना, हमेशा

घूमते रहना और वैभव व आरामसे दूर रहना यही अुनका स्वभाव दिखाओी देता हे। जव अुन्होने धर्मकार्यके लिअे अपना जीवन अर्पण करनेका सकल्प किया, तव अुम सकल्पको दृढ करनेके लिअे अुन्होने अपने दोनो हाथोके वाहुओको जलती हुआी मोमवत्तीमे दागा था। आज भी अिन वाहुओकी चमडी पर अुमके निशान दिखाओी देते हैं। अुनके शिष्य भी जव धर्मकार्यके लिअे अपना जीवन अर्पण करते हैं तव अिसी तरह अग्निदीक्षा लेना पसद करते हैं। दीक्षा-पद्धतिका यह आवश्यक अग नही है। सव भिक्षु शिष्य अैसा करते ही हो, सो भी नही। लेकिन ओीमाओी-सान, मारुयामा, सातोमान वगैराकी वाहुओ पर तो अैसे निशान हैं। धीरे-धीरे गुरुजी और अुनके शिष्योका कार्य निचिरेन-पथके अदर भी अलग-सा पड रहा है।

धर्म-जागृति और विश्वशातिके लिअे गुरुजीको अिस तरह अुत्कट कार्य करते देखकर निचिरेन-पथके मुखियाओको भान हुआ कि अुन्हे भी कुछ करना चाहिये। समय-समय पर अपीलके पत्रक वाहर निकालना और अपना अभिप्राय जाहिर करते रहना वगैरा कुछ काम अुन्होने हाथमें लिये हैं। अुनके पास काफी साधन-सम्पत्ति व सव तरहकी सुवि-धायें हैं, अिसलिअे वे वहुत काम कर सकते हैं। लेकिन अुसमें प्राणोका सचार करना आसान नही है।

मिनोबू मदिरके साधुओको गुरुजीने खुद खवर दी थी, अिसलिअे यहा हमारा आतिथ्य-सत्कार अच्छी तरहसे हुआ। हमारी पूरी व्यवस्था अेक अल्प वयकी साध्वी स्त्रीने की थी। वौद्ध भिक्षु और भिक्षुणिया दोनो ही पूरा सिर घुटा लेते हैं और अेक ही तरहकी पोशाक पहनते हैं। अिसलिअे अमुक व्यक्ति पुरुष है या स्त्री यह पहचाननेमें कओी वार कठिनाओी होती है और कभी-कभी तो भूल भी हो जाती है।

स्टेशनसे हमने मोटर ली और मिनोबू शहर पार करके पहाडी प्रदेशके जगलमें प्रवेश किया। वहा पहाडीके अूपर मदिर, मठ, वगीचे और दूसरी कओी छोटी-वडी अिमारतें मिलकर अेक वडा शाही किला ही दिखाओी देता है। यहा हमारे लिअे भोजनकी पूरी तैयारी की गओी थी। लेकिन हमारे पास अितना समय नही था, अिस कारण धन्यवादपूर्वक

अिनकार करना पडा। मोटरसे जितना चढ सकते थे अुतना चढनेके बाद बाकी सब जगह हमें पैदल ही घूमना था।

अिस मठमें बडे-बडे दीवानखानोसे भी बडे कमरे हैं। दीवालो और पर्दाकी कारीगरी अप्रतिम है। लकडीको खोदकर दीवारके अूपरका भाग सजाया जाता है। अितना ज्यादा घूमे और अितना ज्यादा देखा कि आखे भी थक गअी। मुख्य मदिरोका वैभव तो बादशाही दरबारोको भी फीका करनेवाला था। मूर्तिया, चमकते हुअे झूमर और जरीके कपडोकी कलगिया यानी मनुष्यकी श्रद्धाभक्ति व दानवृत्ति जो भी कुछ ले आवे और चढावे वह सब यहा सुन्दर तरीकेसे सजाया हुआ था। हमारे यहा तो मदिरोंमें बहुतसी चीजें चाहे जैसी पडी रहती हैं।

अिस वैभवके बीच छोटे-बडे साधु बडे टीमटामके साथ प्रसन्नता व गम्भीरतासे रहते थे और विचरते थे। अेक जगह जरा अूचाअी पर अेक मदिर था। निचिरेन बोधिसत्त्वकी अस्थिया वहा रखी हुअी थी। ये लोग अस्थिको 'शरीर' अथवा 'शारीर' कहते हैं। यहाके आसपासके पहाड भी सुगढ दिखाअी देते हैं। सब जगह घूमनेके लिअे रास्ते बनाये हुअे हैं। केवल काव्यमय जीवन बिताना हो और 'धार्मिक' वातावरणका लाभ अुठाना हो, तो अिससे अधिक सुन्दर स्थान मिलना कठिन है। धार्मिक-कला और कला-धर्म अैसी जगह ही पनप सकते हैं।

यह सब देखकर और पथके अनुयायियोकी श्रद्धाकी कदर करके हम कोफू देखनेके लिअे आगे चले।

सोनेसे पहले मैने श्रीमती रामेश्वरीजीके लिअे टोकियो ट्रंक-काल किया, लेकिन वे अभी वहा नही पहुची थी। कलकत्तेसे तो वे समयसे निकली थी, लेकिन हवा अच्छी न होनेके कारण अुनका विमान रास्तेमे कही अटक गया होगा। अब वे दूसरे दिन दो बजे टोकियो पहुचनेवाली थी।

यह तो लिखना भूल ही गया कि कोफू पहुचते ही तुम्हारे चार पत्र मिले — अेक २६का, दो २९के और अेक ३०का। अितने पत्र पढने पर मानो थोडे समयके लिअे अुडकर स्वदेश पहुच गये हो अैसा ही लगता था।

ट्रंक-काल करनेके बावजूद जब चीनकी यात्राका निश्चय न हो सका, तो ओमाओी-सानने सुझाया कि आप जापानको ही अधिक समय दीजिये, और ज्यादा भागदौड न करके निश्चिततामे अेक जगह बैठकर सब लोगोसे मिलिये और जो भी कुछ अध्ययन-चिंतन करना हो वह करिये।

यहा जो लोग कोबेसे आये थे अुनका आग्रह देखकर हमने तय किया कि नागासाकीके दो दिनोंमें से अेक दिन कोबेको दें। लेकिन फिरसे सोचने पर यह तय हुआ कि नागासाकीका अेक दिन कम करनेको बजाय कोबेसे टोकियो हवाओी जहाजमें जाकर समय बचा लिया जाय।

दूसरे दिन छह अगस्तको गुरुजीका जन्म-दिवस था। अिस अवसरका लाभ अुठाकर कोफूके भक्तोंने अुसी दिन अेक अूची पहाडी पर विश्व-शातिके लिअे आयोजित स्तूपकी आधार-शिला मेरे हाथसे रखनेका आयोजन किया था। पहाडी पर पहुचनेके लिअे कओी रास्ते थे। हर रास्तेसे लोगोंके झुण्डके झुण्ड अूपर जाते दिखाओी दे रहे थे। मोटर अिस पहाडी पर नही चढ सकती थी और मेरे लिअे भी अिस पर पैदल चढना मुश्किल था। अिसलिअे वे लोग मुझे अूपर ले जानेके लिअे खासकर बनाओी हुओी अेक डोली ले आये। कितने ही शिष्यों और भक्तोंने बारी-बारीसे डोली अुठाओी। अिस तरह भारतसे आये हुअे काका-साहब पहाडके शिखर पर पहुचे! अिसमे अभिमानके शिखर पर पहुचनेके लिअे तो जरा भी गुजाअिश नही है। अुल्टे, मैं तो भगतोंकी सेवाकी शरमसे पानी पानी हो गया।

पहाडीका प्रसग पवित्र और गम्भीर था। स्थान पूजाके लिअे सजाया हुआ था। आये हुअे मेहमानोंके लिअे शामियाने लगे हुअे थे। पहाडीका शिखर होनेसे यह जगह सकरी और अूची-नीची थी। आये हुअे मेहमानोमें अेक ब्रह्मी-जर्मन मिश्र वशके अूचे कदवाले बौद्ध साधु भी थे। अुनकी अूचाअी और भडकदार रगके चीवरमें वे सबमे अलग दिखाअी दे रहे थे। भक्तोमे स्त्रियोकी सख्या पुरुषोंसे कम नही थी। बच्चोके अुत्साहका तो कहना ही क्या?

यहा गुरुजी और दूसरे कअी लोगोंके भाषण हुअे। हम भाषा नही समझते थे, फिर भी गुरुजीका वक्तृत्व जोरदार और प्रभावशाली था अितना जरूर देख सके। आधार-शिला रखनेसे पहले मेरा मुख्य भाषण हुआ, जिसका जापानी अनुवाद लोगोंने बडे हर्षसे सुना। मैंने कहा "भारतमें छोटे-बडे कअी स्तूप है, लेकिन आज वे लगभग खडहर हो गये हैं। स्तूपोके प्रति जीवित श्रद्धा मैंने ब्रह्मदेशमें और यहा निप्पोनमें देखी। गुरुजीकी और जापानके असख्य भक्तोकी अैसी अटूट श्रद्धा देखकर मैं अिन स्तूपोका महत्त्व समझ सका हू।

"मैं यह भी देख सका हू कि भारतमें या ब्रह्मदेशमें जैसे भगवान बुद्धकी अस्थि (शारीर धातु) स्तूपोमे होती है, वैसे यहाके स्तूपोमे न होनेसे अितनी कमी मानी जाती थी। लेकिन तीन वर्ष पहले कुमामोतोमें जिस स्तूपकी स्थापना हुअी अुसमें रखनेके लिअे भारत-सरकारकी ओरसे भगवान बुद्धके अवशेष प्राप्त होनेसे यह कमी दूर हो गअी है। मानो अब यह सारा देश सनाथ हो गया। अब तो भारतके लोग भी यहा यात्राके लिअे आने लगेंगे। जिस भूमिमें शाक्यमुनि भगवान बुद्धके अवशेष हैं वह हमारे लिअे पुण्य-भूमि है। अब हम अिस भूमिको स्वदेश-जैसी ही मानेंगे।

"असख्य लोगोकी भक्ति केन्द्रित करनेकी शक्ति अिन स्तूपोमें होती है। ये स्तूप लोगोकी देशभक्ति और धर्मनिष्ठा दोनोको अेकत्र करनेका काम करते है। धार्मिक श्रद्धासे यदि अैसे स्तूपोकी रक्षा करे, तो देशकी रक्षा अपने आप हो सकती है।

"जैसे हम पुण्य-पुरुषोके फूल अैसी जगह आदरपूर्वक सग्रह करके रखते है, वैसे ही भगवान बुद्धकी पवित्र वाणीका सग्रह भी अैसी जगह हो सकता है। धर्मग्रथ हमारी आध्यात्मिक पूजी है। अुनकी रक्षा भी अैसी ही जगह होनी चाहिये।

"यह स्थान निप्पोन देशके लगभग मध्यमे है। यहासे धर्मके सस्कार दीर्घकाल तक चारो ओर फैलें और विश्वशाति तथा विश्व-बन्धुत्वके गुरुजीके अुपदेश सफल हो। आजके जमानेमे भगवान बुद्धका विश्वकार्य महात्मा गाधीने भारतमे चलाया। अुनके द्वारा भारतमे धर्म-श्रद्धा जाग्रत हुअी और अुसने अपना चमत्कार सारी दुनियाको दिखाया। युद्ध बद हो, राष्ट्रोके बीच व जातियोके बीच विग्रह टले और न्याय, स्वतत्रता, समता व बन्धुताकी स्थापना शातिके ही मार्गसे हो, अिसके लिअे गाधीजीने भारतको तैयार किया।

न हि वेरेण वेराणि सम्मन्तीध कुदाचन।
अवेरेण च सम्मन्ति अेस धम्मो सनन्तनो॥

यह बुद्ध-वाणी भारतमें फिरसे जाग्रत हुअी।

"गुरुजी गाधीजीसे मिले थे। दोनोकी श्रद्धा अेक ही तरहकी है। आजके पुण्य-प्रसग पर मेहमानके नाते भगवान बुद्धकी जन्मभूमिका कोअी व्यक्ति मिले तो अच्छा, अैसा समझकर आपने मुझे यहा आमत्रित किया है। मै गाधीजीका अेक तुच्छ सेवक हू, अिसलिअे भी आपका मन मुझे बुलानेका हुआ यह मै जानता हू। गुरुजीके कितने ही शिष्य गाधीजीके आश्रममे रह चुके है। अिसलिअे अुनका और मेरा आत्मीय सम्बन्ध भी बना है। वे भारतमे जो काम करते है वह मेरा ही काम है अैसा मुझे लगता है। भारतके यात्री जब अिस देशमे आयेगे और अिस स्तूपकी आधार-शिला पर नागरी लिपि व हिन्दी भाषामे लिखा हुआ लेख पढेंगे, तब यह देख सकेंगे कि निप्पोन और भारतके बीच हृदयका कितना अधिक अैक्य बढता जा रहा है। अेशिया अब फिरसे जाग्रत हुआ है। अिस जागृतिमे निप्पोनने कोअी कम हाथ नहीं बटाया है। अब हमें अेक-दूसरेकी मददसे और भगवान बुद्धके आशीर्वादसे सारे विश्वमे शातिकी स्थापना करनी है, जीवमात्रका दुख दूर करना है और सबके

सुखी होना है। अेक बडे युगकार्यका हम प्रारम्भ कर रहे हैं। तथागत भगवान बुद्धके आशीर्वाद हम मबको प्रेरणा दें, यही आज हमारी प्रार्थना है।"

भापणके बाद हम सबने कअी वार प्रदक्षिणा की। प्रदक्षिणा करते-करते गुरुजी कागजकी रग-विरगी पखुडिया बीच-बीचमें अुडा रहे थे। अुन्हे लेनेके लिअे बच्चे होड लगा रहे थे। कअी वृद्धाअें पैरोमें ताकत हो या नही फिर भी आग्रहपूर्वक प्रदक्षिणा कर रही थी। अुनकी यह श्रद्धा देखकर अुनके प्रति मनमें सम्मान पैदा होता था।

पहाडी परसे जुडवा दूरबीनके द्वारा आसपासका प्रदेश देखे विना तो कैसे रहा जाता? लेकिन अब नीचे अुतरकर घरका रास्ता लेनेका सवाल था। भक्त स्वयसेवक सुबहकी डोली मेरे पास ले आये। लेकिन मैंने बैठनेसे साफ अिनकार कर दिया। जिन सुन्दर अगूरके बगीचोसे होकर हम अूपर आये थे, अुनकी मुलाकात लेता-लेता मै नीचे अुतरा। अगूरकी बेलें, अुनके कगूरेवाले पत्ते और जहा-तहा लटकते हुअे अगूरके गुच्छे — यह सब अितना काव्यमय लगता था कि रेवती सीधी अुतरती ही नही थी। वह तो अिन बगीचोमें घुसकर छोटे-छोटे गुच्छोकी शोभा नजदीकसे निहारती थी। मै ओीमाओी-सानके कधेका सहारा लेकर अुतर रहा था। अेक तो पगडडी पहले ही तग थी, अुस पर बारिशके कारण फिसलनी भी हो गअी थी। कअी जगह तो दो आदमी अेक साथ चल भी नही सकते थे। बीच-बीचमें जल्दी जानेवालोके लिअे रास्ता भी छोडना पडता था। अिस तरह कअी दिक्कतें थी। लेकिन अिसीमें मजा भी था। पहाडीके नीचे हम रेलवे लाअिन तक पहुचे तब ओीमाओी-सानका अेक युवक भतीजा सामनेसे आया। अपने काकाको देखकर अुसने प्रसन्न स्मित किया। ये तो काका ही, लेकिन साधु बने हुअे! आत्मीय होते हुअे भी पराये! नजदीक होते हुअे भी दूर! प्रेमका ही रूपान्तर आदरमें हो गया था। अुसकी आखोमें ये सब भावनाअें स्पष्ट दिखाअी देती थी। अुसकी ओर मेरा ध्यान गया देखकर ओीमाओी-सानने मुझसे कहा "यह मेरा भतीजा है। थोडी देरके लिअे मेरे घर चलेंगे क्या, अैसा मुझसे पूछ रहा है।"

हम रेलवे लाअिन लाघकर हमारे अिन्तजारमें खडी मोटरमे बैठे और सब प्रलोभनोको छोडकर सीधे होटल गये। अिसका मुख्य कारण यह था कि पहाडी अुतरते अुतरते मेरे घुटनोकी पूरी कसौटी हुअी थी। लोग कहते हैं कि चढना मुश्किल होता है, लेकिन मेरा अनुभव हे कि चढना आसान है। कडी अुतराअी तो हड्डी-हड्डीको ढीला कर देती है।

होटल पहुचते ही तुम्हारा तारीख २७की रातका लिखा हुआ पत्र मिला। यहाके अखबारोमे यह समाचार भी पढा कि प० जवाहरलालजी पार्लमेंटके द्वारा बिल पास कराकर डाकखानेकी हडताल गैरकानूनी ठहरानेवाले है। अिस कदमके विषयमें और अुसके हमारे कर्मचारियो पर होनेवाले असरके विषयमें विचार करनेका मेरा काम नही था। मेरे लिअे तो तुम्हारे पत्र अब समय पर मिलेंगे अितना भरोसा ही कामका था और सतोष देनेवाला था।

खाया-पीया और घुटने-सहित सारे शरीरको दोपहरका जरूरी आराम दिया। शरीर तो झट मान गया, लेकिन घुटने तो चि० रेवती और मजु दोनोसे काफी खुशामद करवानेके बाद ही राजी हुअे। ये घुटने यदि हडताल कर देते और शरीरको खडा ही न होने देते, तो मै क्या कर सकता था?

शामको शहरके बाहर अेक विशाल द्राक्ष-मण्डपके नीचेसे हम गुजरे। वहा अेक बहुत बडा क्लब था। यही शहर और जिलेकी ओरसे अेक बडा स्वागत-समारम्भ रखा गया था। दोपहरको पहाड पर स्तूपके विषयमे बोला था। शामको निहोनके आतिथ्यके विषयमें और गुरुजी फूजीजीके विषयमें बोला। यही अुचित भी था। मारुयामा-सान तो खुश हो गये। भाषणके बाद मैंने गुरुजीको भारत-सरकार द्वारा छपवाअी गअी 'Way of Buddha' नामक कीमती पुस्तक भेंटमें दी और गुरुजीके नाम लिखा हुआ तुम्हारा पत्र भी दिया। तुम्हे स्वप्नमे भी खयाल न होगा कि तुम्हारे पत्रकी यहाके सज्जनोने कितनी कद्र की! ओीमाअी-सानने तुम्हारा पत्र सारे जन-समुदायके सामने प्रसन्न मुख हिन्दीमें पढकर सुनाया और फिर अुसका जापानीमे अनुवाद भी किया। अब सब लोग मेरे पीछे बैठी हुअी रेवती व मजुकी ओर देखने लगे। अिसलिअे अुनका परिचय

तुम्हे करेलेका रस पीना पडता है, यह पढकर प्रथम तो मुझे वडा मजा आया। कैसा मुह करके पीती होगी, यह देखनेको मै वहा नही हू अिसका वुरा भी लगा। पर अव तुम्हारे प्रति सहानुभूति महसूस हो रही है। तुम्हारे ३० तारीखके पत्रसे लगता हे कि अव तुम्हे कच्चे करेलोका रस धीरे-धीरे भाने लगेगा। यदि वे तुम्हे मेरे जैसे ही भाने लगे तव तो मुझे करेले छोडने ही पडेगे। दुनियाका वैलेस भी तो टिकना चाहिये न?

चि० जवनिके पत्र आते है, किन्तु वे सक्षिप्त होते है। अवनिका पत्र न आवे तो मजु अुस वेचारेकी खवर ले लेती है। अिधर वालका पत्र न आये तो रेवती तुरन्त अुदास हो जाती है। तव मुझे वालका वचाव करना पडता है।

गरीव मुसलमानोमें शादीके वक्त पतिको पत्नीके सम्मुख वचन देना पडता है "पानीका मटका कवूल। लकडीका गट्ठा कवूल।" पर्दा-नशीन पत्नी घरका सव काम तो कर सकती है, लेकिन वाहर जाकर न लकडी वीन सकती है और न पानी ला सकती है। अपनी पत्नियोको यात्रा पर भेजते समय आजके पतियोको तो 'रोजका अेक पत्र कवूल' अैसा वचन देना चाहिये।

अेक वात तो लिखनी रही जा रही थी। कोफू शहरके वाहर जहा स्वागत-समारोह होनेवाला था वहा हम काफी पहले पहुच गये जिससे वागमे जरा घूमे। वहा हमने तरह तरहके वुत (पुतले) देखे और अेक जगह ग्रामोफोनका सगीत सुननेको ठहर गये। वहीं पासमें अेक वडा सार्वजनिक स्नानागार था। अुसके दोनो ओर दो दरवाजे थे। अेकमे स्त्रिया अन्दर जाती थी और दूसरेसे पुरुष। अेक वडे, चौडे परन्तु छिछले हौजमे गरम पानी वह रहा था। अुसके अेक किनारे पुरुष नहा रहे थे और दूसरे किनारे स्त्रिया। भीतर जाकर ये लोग सारे कपडे अुतारकर नहाने अुतरते है। केवल पुरुष या केवल स्त्रिया ही जिस तरह नहाये वह भी हमारी दृष्टिसे विचित्र है। लेकिन पुरुष व स्त्रिया दोनो ही हौजमे आमने-सामने जिस तरह नहाये, यह तो हमारी कल्पनामें भी नही आ सकता। यहाके लोगोको जिसका जरा भी क्षोभ नही होता।

सार्वजनिक स्नानागारकी वाहरी दीवार पर भीतरके हौजका चित्र था, जिससे भीतरकी व्यवस्थाका पूरा-पूरा खयाल आ सके।

आज दोपहरको हम कोफूसे नागासाकी जानेके लिअे निकलेंगे। सफर लम्बा है। कल पहुचेंगे। वहाका वाढ-सकट अव दूर हो गया है। पिछली वार हमने शहीद-शहर हिरोशिमा देखा था। अिस वार नागासाकी देखना है।

२४

नागासाकीका श्राद्ध

नागासाकी,
९-८-'५७

कोफूसे नागासाकीका रास्ता पूरे अट्ठाअीस घटेका है। कोफूमें जिस प्रकार ६ तारीखका महत्त्व था अुसी तरह यहा ८ सितम्बरको अिस शहर पर पडे हुअे अेटम-वमका द्वादश वार्षिक श्राद्ध था। अिसके अुपलक्ष्यमें होनेवाली कान्फरेसमें हमें हाजिर रहना था। अिसीलिअे हमने यह लम्बा सफर वीचमें कही रुके विना ही पूरा कर लिया। शुरूमें फूजी स्टेशन तक हमे तीसरे दर्जेमें जाना पडा। सच्ची यात्रा तो यही होती है, क्योकि तीसरे दर्जेमें ही सामान्य जनताके दर्शन होते है। लोगोके रीति-रिवाज व वोल-चालका कुछ खयाल आता है। वच्चोकी लीला देखनेको मिलती है और मानवताकी सार्वभौम अेकताका अनुभव होता है। लेकिन विलकुल थका हुआ शरीर जव लम्बा होकर नीदके लिअे तरसता हो और नीद मिलनेकी कोअी सुविधा या आशा न हो, तव मानवताके आकर्षणको मुलतवी रखना पडता है। फूजी स्टेशन अव आता ही होगा अिसी अुम्मीदमें किसी तरह समय विताया। फूजी पर हमें गाडी वदलनी थी। स्टेशन पहुचने पर मालूम हुआ कि दूसरी गाडीमें अभी अेक घटेकी देर है।

अिस प्रदेशमें स्टेशन-मास्टरका कमरा ही अूची श्रेणीके यात्रियोका प्रतीक्षालय होता हे। अेक तरहसे यह अच्छा ही है। स्टेशन-मास्टर खुद मेहमानोकी ओर ध्यान दे सकता हे और मन हो तो चायके लिअे भी निमन्त्रित कर सकता है। अितनी तपस्याके वाद जव प्रथम श्रेणीका वातानुकूलित (अेयर कन्डीशन्ड) डिव्वा मिला तव शरीर और मन दोनो प्रसन्न हो गये। फिर मैंने तो सौंदर्य-सृष्टिमे विहार करनेके वदले स्वप्नसृष्टिमें डूव जाना ही पसन्द किया।

होन्शुसे द्वीपान्तर करके क्यूशु द्वीपमे प्रवेश करनेके लिअे भी गाडी नही वदलनी पडती। स्टीमरमें वैठनेका या पुल लाघनेका सवाल भी नही था। तीन साल पहले कुमामोतो और आसो पहुचनेके लिअे हम अिसी रास्ते गये थे। मैंने मजु और रेवतीको समझाया कि अिस द्वीपसे अुस द्वीप तकका रेलका रास्ता समुद्रकी तलहटीमें अेक सुरग खोदकर जोडा हुआ है। लेकिन यह द्वीपान्तर-यात्रा रातको होनेके कारण अुसमें किसी तरहका कुतूहल अनुभव नही होता।

अिस क्यूशु द्वीपमें थोडे ही दिनो पहले प्रचण्ड झझावात आया था, जिसमे अिस प्रदेशको वाढ-सकट भुगतना पडा था। अुसके दृश्य अव सामने आने लगे थे। कही-कही वरसातके कारण पहाडिया धस गअी थी व अुनके पत्थर वडी दूर-दूर तक फैल गये थे। पानीके वहावके साथ जो घास वह आयी थी वह वीच-वीचमें तारोंके खम्भोंके चारो ओर अटकी पडी थी। तारके खम्भे गिर न पडें अिसलिअे अुनको थामनेके लिअे अुनके सिरसे नीचे जमीन तक जो टेडे तार तने रहते है, अुनमें आस-पास भी घास-फूस अिकट्ठा हो गया था। मानो छोटीसी झोपडी अथवा पिरामिड हो। वाढका पानी कहा तक चड गया था, अिसका अदाज लगानेके लिअे यह घास-फूस अुपयोगी था। किसी नदीका पाट कुछ नरम होगा अिसलिअे अुसकी मिट्टी धुलकर वह गअी थी और प्रवाहमे अेक नया ही प्रपात पैदा हो गया था। मिट्टीके धुलकर वह जानेसे कअी जगह तारोंको खम्भोंका आधार ही नही रह गया था। विजलीके तारोंको सहारा देनेके वदले फासी पर चढे हुअे मनुष्यकी तरह तारका ही आधार लेकर लटके हुअे अिन खम्भोंका

देखकर और कहीं-कहीं तो तारको ही नीचे खींचकर खम्भोंको जमीन पर सोता हुआ देखकर दया ही आती थी। मीलों तक अैसा दृश्य देखकर बडा दुःख हुआ। फिर भी अिसमें आनंद अिस बातका था कि लोग बिना घबडाये तेजीसे काममें लगकर अिस परिस्थितिको सुधार रहे थे। धानके खेतोंमें पानीके साथ-साथ रेती और मिट्टी बिछ गअी थी। अिससे जो नुकसान हुआ अुसका तो कोअी अिलाज ही नहीं था।

हम चार बजे नागासाकी पहुंचे। जापानके दूसरे शहर समतल भूमि पर बसे हुअे हैं। लेकिन यह नागासाकी तो कअी पहाडियों पर अूंचा-नीचा बसा हुआ है। बडे-बडे रास्तोंको भी चढते-अुतरते देखकर मुझे पुर्तगालकी राजधानी लिसबन शहर याद आया।

स्टेशन पर जो भिक्षु लेने आये थे वे हमें श्री हासेगावा (डाअि-रेक्टर, सिविल अिंजीनियरिंग)के यहां ले गये। गृहपति घर पर नहीं थे। बाढ़-संकटके निवारणके लिअे सरकारकी ओरसे जो काम चल रहा था अुसीकी देखरेखके लिअे वे गये हुअे थे। अुनकी प्रेमालु पत्नीने हमारा स्वागत किया। नहा-धोकर हमने अुनके यहां खाना खाया। । श्रीमती हासेगावाने रेवती और मंजुको अपने घरकी व्यवस्थाकी पूरी जानकारी दी। कुटुम्बियोंके फोटो दिखाये, कपडे व कांचके बर्तन दिखाये और कअी चीजें भेंटमें भी दीं। दो घंटेमें अिस बहनने हमारी दोनों बहनोंका दिल जीत लिया, और यह सब भाषाका सहारा लिये बिना ही! आंखोंकी भाषा सार्वभौम होती है। अिस घरमें हमारा मुकाम थोडी देरके लिअे ही था। दूसरी अेक जगह गुरुजीके अेक भक्तके यहां हमारे रहनेकी व्यवस्था की गअी थी।

श्रीमती हासेगावासे बिदा लेकर हम अेन्टी-अेटमबम-कान्फरेन्समें गये। यह सम्मेलन अिन्टरनेशनल कल्चरल हालमें रखा गया था। वहां हजार डेढ हजार लोगोंके सामने जिलेके गवर्नर और नागासाकी शहरके प्रतिष्ठित सेठ वगैरा बडे-बडे लोगोंके भाषण हुअे। मैं भारतसे अितनी दूर आया हुआ मेहमान, खास तौर पर अिस सम्मेलनके लिअे और दूसरे दिनके श्राद्धके लिअे, नागासाकी आया था। अिसलिअे लोगोंका मेरे भाषणके प्रति विशेष आकर्षण होना स्वाभाविक था। मैंने भारतकी जनताकी

सहानुभूति प्रकट की और भारत-सरकारकी अन्तर्राष्ट्रीय नीति स्पष्ट की। लोगोंको मेरा भाषण बहुत पसन्द आया। अुस दिन और दूसरे दिन भी कअी लोगोंने अिस भाषणके लिअे मेरा अभिनन्दन किया। मेरे भाषणमें मुख्य बात यह थी "हिरोशिमा और नागासाकी पर जो घातक बम गिरे, वे सचमुच अेशियाके हृदय पर ही पडे हैं। अुस समय हम सबने अनुभव किया कि पश्चिमकी घातक नीतिसे कोअी सुरक्षित नहीं है। अुन दो बमोंके धडाके सचमुच ही अेशियाअी संगठनके लिअे अुत्तमसे अुत्तम व्याख्यान थे। मैंने देखा है कि अिन तहस-नहस हुअे शहरोंको जापानने देखते ही देखते फिरसे खडा कर दिया है। लेकिन अमरीकाकी जो साख टूटी सो अभी भी जुडी नहीं है। अमरीकाके ये दो प्रयोग अुसे बडे महंगे पडे हैं। जैसे औसामसीह क्रूस पर चढ कर दुनियाके तारणहार बने, वैसे ही हिरोशिमा और नागासाकी बमकी बलि चढकर अेशियाके जगावनहार बने हैं। अिसलिअे स्वतंत्र होते ही भारतने अेशियाके तमाम राष्ट्रोंके प्रतिनिधियोंको अिकट्ठा करके अुनके सामने अेक नवीन नीति प्रस्तुत की है कि लडाअीखोर राष्ट्रोंके किसी भी गुटमें हम शामिल नहीं होंगे। हम सबके साथ मित्रता रखेंगे, लेकिन किसी भी युद्धमें सम्मिलित नहीं होंगे। अेटम-बमके केवल प्रयोगोंसे ही कैसा नुकसान होता है यह हमने बिकिनीमें देखा है। अिसलिअे अिस खतरेसे सारी दुनियाको आगाह करनेके लिअे और अैसे सर्वविनाशकारी प्रयोगोंको बन्द करानेके लिअे हम सब प्रयत्नशील हैं। भारत-सरकार, भारतकी सारी जनता और हमारे सब राजनीतिक दल अिस नीतिके बारेमें अेकमत हैं। जापानने जो कष्ट सहन किया वह अब किसीको भी न सहना पडे, अैसी सुरक्षित स्थिति सारी दुनियाके लिअे पैदा करनी है।"

अिन्टरनेशनल कल्चरल हॉलमें प्रवेश करते ही सम्मेलनके प्रतिनिधिके नाते हमें रेशमसे बने हुअे सुन्दर पीले फूल लगानेको दिये गये थे। जब हम सम्मेलनसे बाहर निकले तब ये फूल हमने वापस ले लिये गये। तुम्हें तो मालूम ही है कि अैसी चीजें बच्चोंको खूब अच्छी लगती हैं, अिसलिअे मैं अुनके लिअे अिन्हें सभाल कर रखता हूं। फूल जब वापस मांगे गये तब मुझे जरा विचित्र लगा। लेकिन बादमें

यही रिवाज ठीक लगा। सार्वजनिक पैसे बेकार क्यों खोये जायें? ये फूल या तो दूसरी सभामें काम आ सकेंगे अथवा किराये पर लाये गये हों तो वापस देकर थोड़े खर्चेमें अेक सभा सम्पन्न करनेका सन्तोष मिल सकेगा।

नागासाकी शहर अिन बारह वर्षोंमें बहुत विकसित हो गया है। अिसलिअे अिसमें देखने योग्य चीजें काफी बढ़ती जा रही हैं। यहां पांच-सात मंजिलवाले अेक बड़े मकानमें आयोजित संग्राम-संग्रहालय और अुसके आसपासका बगीचा ये दोनों खास तौर पर देखने लायक हैं। वक्तके अनुसार जितना देखा जा सकता था अुतना देखकर हम गुरुजीके भक्तके यहां गये। भक्तका नाम था सोजाबुरो त्सूजी (Sozaburo Tsuji)। यह घर अेक पहाड़ी पर कल्पनासे कहीं अधिक अूंचाअी पर निकला। लगातार दो-तीन दिनकी थकान चढ़ी होनेसे मुझे यह चढ़ाअी कड़ी लगी। फिर भी वहां पहुंचने पर घरके सब लोगोंका मीठा स्वभाव देखकर मैं अपनी थकान भूल गया। अुन लोगोंने हमें घरकी अूपरकी मंजिलमें ठहरानेकी व्यवस्था की थी। मेरी थकानकी बात सुनकर अुन्होंने तुरन्त कहा कि आप कहें तो आपकी रहनेकी सुविधा नीचे कर दें और हम अूपर चले जायें। लेकिन मैंने तुरन्त मना कर दिया (यद्यपि स्नान, शौच आदिकी सब व्यवस्था नीचे होनेसे नीचे रहनेमें ही सुविधा थी)। अैन मौके पर व्यवस्था बदलनेसे सभीको दिक्कत होती है, अिसका मुझे अच्छी तरह अनुभव है।

अितनी अूंची जगह रात बिताअी अिसका हमें अवश्य लाभ मिला। रातको शहरके दीयोंकी सुन्दरता बड़े विस्तारमें दिखाअी पड़ती थी। अिस तरहका दृश्य मेरे लिअे नया नहीं था। हवाअी जहाजसे बम्बअी, काहिरा, बर्लिन, टोकियो जैसे शहर जिन्होंने रातको देखे हों अुनको शहरी निशा-प्रदीपोंका नशा कैसा होता है यह कहनेकी जरूरत नहीं। फिर भी वह तो अुड़ता हुआ दृश्य ठहरा — विशाल, लेकिन अस्थायी। किसी अेक दृश्यको देखो कि अितनेमें वह कुछ और ही रूप धारण कर लेता है, और वह अपनी कला प्रकट कर सके अिससे पहले वहां कोअी तीसरा ही दृश्य सामने आ जाता है। स्थायी रूपसे ध्यान

करनेकी गुजाअिश अुसमे नही होती। लेकिन सिहगढसे चौदह-पन्द्रह मील दूर पूनाके निशा-रत्न जिन्होने देखे है — आखोसे देखे हो या दूरबीनसे — अुन्हे आकाशके तारे झलमल-झलमल टिमटिमाते क्यो है यह समझाना नही पडेगा।

आजकलकी खगोल-शास्त्रकी यानी ज्योतिषकी किताबोमे तारा-नगरो (star-cities) का वर्णन आता है। अैसे तारा-नगर हमारे विश्वमे अेक-दूसरेसे काफी दूर-दूर बसते है। विराट दूरबीनकी आखोसे अब तक दो सौ तारा-नगर देखे जा सके है। यह हमारी आजकी मर्यादा है। अैसे तारा-नगरोके साथ हमारे बडे-बडे शहरोके विद्युत्-दीपोकी तुलना करे, तो सारी पृथ्वी पर हजारेक बडे तारा-नगर गिनाये जा सकते है।

विश्वपतिके तारा-नगर चाहे जितने कल्पनातीत बडे हो, फिर भी अुन सबमें अेक सफेद रगकी ही चमक है। लाल या नीले रगका शक कही-कही जरूर पैदा होता है, लेकिन अुनमे अुस रगकी छटा है यह कहना मुश्किल होता है। मनुष्यने आजकल अपनी तारा-नगरियोमे कअी तरहके चमकते हुअे रग पैदा किये है। अुनकी अनेक आकृतिया बनाअी है और अुनके फव्वारे भी अुडाये है। जितने विशाल विश्वमे अीश्वरको रगकी विविधता प्रकट करनेकी क्यो नही सूझी, यह अेक आश्चर्य ही है।

नागासाकी कोअी खास बडा शहर नही है। यहाके दीये रग-बिरगे और अुज्ज्वल होने पर भी भडकीले दिखाअी नही दिये।

चामुण्डा पहाडीसे मैसूरकी शोभा अनोखी दिखाअी देती है। मैं तो अुसे अप्रतिम ही कहूगा। लेकिन वह अेक समतल मैदान पर फैली हुअी शोभा है। नागासाकीकी विशेषता यह है कि शहर अूची-नीची पहाडियो पर बना हुआ होनेके कारण अुसके रातके दीये टेढे पर्देकी तरह फैले हुअे दिखाअी देते है। कुछ पास तो कुछ दूर। अुनमे रगोकी मोहक पुष्प-छटा ता [illegible] ही।

अिस सारे दृश्यमे कुछ अूचे और कुछ [illegible] दीयोका अेक गुच्छा [illegible] हुआ था। पूछनेसे मालूम हुआ कि वहा निजाजी लोगोका अेक [illegible] गान-गृह है। अपनी प्रतिष्ठा और वैभव भोगनेका तो अुन्हे काफी

मना नही करता। लेकिन सबसे अलग हो कर जनसाधारणसे घृणा करनेकी अैसी वृत्ति किसे अच्छी लग सकती है?

रातको दीयोको जलाते हुअे देर तक जगनेकी होडमें शहरी लोगोके सामने हम कहा तक टिक सकते थे? हमने अुन नगर-तारोको जी भर कर देखा और अपने समय पर आराममे सो गये। सुबहके फीके अधेरेमें वही दृश्य मैंने फिरसे देखा। रातके वैभवके मरसिया गाते हुअे कुछ दीये वहा दिखाअी दिये। अुनके साथ अब किसकी सहानुभूति हो सकती थी!

सुबह हुअी। आकाशमें सुन्दर आकृतियोमें बिखरे हुअे बादल बोल अुठे 'अरे जरा अूपर तो देखो!' सचमुच वह दृश्य देखने लायक था। पूर्वगिरिके शिखर पर चदोवेके समान फैले हुअे वे बादल कुछ अैसी अुधेड-बुनमें पडे थे कि अिस चमकते हुअे लाल रगका नारगी रग कैसे बनाया जाय? आखिर लाल रगको नारगी होनेमें बहुत देर न लगी। किन्तु बीचमें अुसने कुछ क्षणके लिअे सिंदूरी रग भी धारण किया। फिर अुस नारगीका गिनी गोल्ड यानी पाअुडका सोना बना। अुसीका देखते ही देखते शुद्ध सोना बन गया। लेकिन वह अधिक नही टिका। यह सोना रगमें फीका होने पर भी चमकमें ज्यादा अुज्ज्वल था और अिसलिअे और भी अधिक ध्यान खीचता था। हम रग-परिवर्तनकी ये खूबिया देख रहे थे, अितनेमें अुषाने ललकारा 'रहने दो यह सब खेल। दिनकर महाराज स्वय पधार रहे हैं।' आकाशके बादल भी आखिर दरबारके अनुभवी मुत्सद्दी ठहरे! गम्भीर मुह रखकर चाहे जैसा रग धारण करने अथवा छोडनेमें अुन्हे कोअी कठिनाअी नही होती। जमते हुअे कुहरेमें से भी सूर्यनारायणकी काति खिल अुठे अिसलिअे वे चमकते हुअे बादल तुरन्त श्याम वर्णके बन गये और पहाडकी गहरी हरियालीके साथ होड करने लगे। दिनके अुगते ही कल्पनाकी सृष्टि अस्त हो जाती है और व्यवहारकी सृष्टि सामने आ खडी होती है। हम अुठे और नया दिन शुरू किया।

आजका मुख्य कार्यक्रम शहरमें अनेक जगह मनाये जानेवाले श्राद्ध-दिनके अुत्सवमें से अेक दो जगह हाजिर रहनेका था।

अिसी बीच नागासाकी छोडनेसे पहले कुछ समय निकालकर शहरके प्रेक्षणीय स्थान भी देखने थे। अिसमें मेरी अेक कठिनाअीका ध्यान भी रखना था। सुबह नहा-धोकर नाश्ता करके अेक बार नीचे अुतरनेके बाद दोपहरको फिर अूपर चढना मेरे लिअे मुश्किल था। अिसलिजे कुछ कार्यक्रम छोडकर जरा जल्दी खाना खाकर मैं नीचे अुतरना चाहता था। अिसी सोच-विचारमें थे कि अितनेमें यह समस्या कुछ और ही ढंगसे सुलझ गअी। सरकारकी जिला-समितिने हमें अेक सुन्दर होटलमें दोपहरको खानेके लिअे आमंत्रित किया। अिसलिअे करीब दस बजे हम अपना सामान लेकर और मेजबानोंकी विदा लेकर नीचे अुतरे। हमारे सिर पर छाता लगाकर हमारे मेजबान ठेठ नीचे मोटर तक हमें छोडने आये। यदि हमारे बीच कोअी सामान्य भाषा होती तो हम अेक दूसरेके साथ बहुतसी बातें कर सकते। अुसके अभावमें स्नेही आंखोंसे देखना, थोडासा हंसना और बार-बार नमस्कार करना बस यही हो सकता था। सुबह या शामको जब घरके सब लोग पूजाके लिअे अिकट्ठे होते थे तब हम भी अुनके साथ आग्रहपूर्वक शामिल होते थे। यह भी हमारे बीच स्नेह-बन्धनका अेक साधन बनता।

सरकारी अफसर और नगर-पिता जहां शहीदोंको पुष्प-गुच्छ अर्पण करनेवाले थे, अुस महत्त्वकी श्राद्धविधिमें भाग लेनेका हमें निमंत्रण था। कार्यक्रम यह था कि दोपहरको ठीक ग्यारह बजकर दो मिनट पर (जिस क्षण बारह वर्ष पहले नागासाकीके अपर बम पडा था अुसी क्षण) शहीदोंको पुष्पहार अर्पण करके शान्तिके कबूतर अुडाये जायें। कअी शामियाने लगे हुअे थे। लगभग सारा गांव ही अुलट पडा था। पहले लडकियोंने वृन्द-वादनके साथ शान्ति-सूक्त गाये। नेताओंके भाषण हुअे। फिर गवर्नरने सबसे पहले पुष्प-गुच्छ अर्पण किया। अर्पण किये जानेवाले गुच्छ चाहे जैसे नहीं रखे जाते थे। अेक आडे लम्बे टेबिलमें अेक सीधमें बडे-बडे छेद किये हुअे थे। जो आता वह अपना गुच्छा क्रमके अनुसार टेबिलके छेदमें खोंस देता। भारतके प्रतिनिधि होनेके नाते मुझे शहीदोंको पुष्प-गुच्छ अर्पण करनेके लिअे बुलाया गया था। मैंने भी अपना पुष्प-गुच्छ अर्पण किया। पक्षपाती फोटोग्राफर

वहा काफी बडी सख्यामें अुपस्थित थे और अुन्होंने अुस वक्तका मेरा फोटो भी लिया। यह सारी विधि पूरी करनेके बाद खानेके लिअे हम अेक सुन्दर होटलमें गये। वहा नगरके कअी प्रसिद्ध व सम्मानित लोग आये थे।

लिखना भूल गया कि नगरके जिस अुपवनमें श्राद्ध-विधि हुअी थी, वहा नागासाकीके अेक प्रतिभाशाली मूर्तिकारने मानवताकी अेक प्रचण्ड मूर्ति खडी की है। अेक हाथ अूपर करके घातक कर्म बन्द करनेका मानो आदेश दे रहा हो अैसा वह पाषाणका पुतला है। अिस पुतलेके विषयमें और अिसके मूर्तिकारके विषयमें जानकारी प्राप्त करनेका मैंने काफी प्रयत्न किया, लेकिन अुसमें मैं सफल नहीं हुआ।

फुकुओका हाकाटा

खाना खाकर हम स्टेशन गये। वहासे अेक बजेकी ट्रेन पकडकर छह बजे हम फुकुओका पहुचे। जापानी होटलमें जगह नहीं मिली थी अिसलिअे हम अेक पाश्चात्य ढगकी अिम्पीरियल होटलकी सातवी मजिल पर ठहरे। यहा भी सब सुविधाये जैसी चाहिये वैसी थी। केवल लडकियोका कमरा मेरे कमरेसे काफी दूर था। टबमें गरम पानी भरकर खूब अच्छी तरह नहाये। जापानके विषयमें कुछ अच्छी किताबें देखनेके लिअे मैं वहाके कार्यालयमें गया। पर जाना व्यर्थ हुआ। आज ओीमाओी-सानके सिरका अेक बोझा कम था। अिस होटलके सब नौकर अंग्रेजी समझते थे। अिसलिअे जो चाहिये वह हम माग सकते थे और समझा सकते थे। यह सुविधा देखकर वे निश्चिन्त होकर शहरमें गये और अपना काफी काम निपटा आये।

१०–८–'५७

यहा बडे आरामसे रात बिताकर दूसरे दिन हम शहर देखने निकले। तुम्हें याद होगा कि तीन वर्ष पहले यही शहर हमने आध-पौन घटेमें देखा था। अुस समय निचिरेन बोधिसत्त्वकी विशाल मूर्ति देखकर हम विशेष प्रभावित हुअे थे। वही मूर्ति मुझे फिरसे ध्यान-पूर्वक देखनी थी और रेवती तथा मजुको दिखानी थी।

हाकाटा और फुकुओका ये अेक ही शहरके दो नाम हैं। विस्तारसे जानना हो तो शहरके अेक विभागको हाकाटा और दूसरेको फुकुओका

रहने हैं। पिछले महायुद्धमें यह सारा शहर मटियामेट हो गया था। अुसके बाद यहां शहरके प्रमुख भागमें अमरीकन ढंगके मकान बनाये गये हैं।

निचिरेन बोधिसत्त्वकी मूर्ति बहुत ही बडी और भव्य है। जिस अूंचे चबूतरे पर यह मूर्ति रखी गअी है अुसकी दीवार पर निचिरेनके जीवनके महत्त्वपूर्ण प्रसंगोंके चित्रोंकी पत्थरके खुदाअी-कामकी तख्तियां लगाअी हुअी हैं। वे सब हमने बडे ध्यानसे देखीं। फिर हमने मूर्तिकी प्रदक्षिणा की, बगीचोंके पेड देखे, प्रार्थना करते हुअे भक्तोंको देखा। साढे सात सौ वर्ष पहले चीन और जापानका सम्बन्ध कैसा था, जापानके राजनीतिक नेता कैसे थे और बौद्ध धर्मका असर किस तरह फैल रहा था, यह सब जाननेके बाद ही भगवान निचिरेनके कार्यका अन्दाज आ सकता है। अिस विषयमें विस्तारसे ही लिखना होगा। सब जगह घूम-फिरकर युनिवर्सिटीके मकान देखते हुअे हम होटल वापस आये।

२५

घातकताके सामने आस्तिकता

नागासाकी,
९-८-'५७

नागासाकीका नाम पुराने रूसी-जापानी युद्धके समय पहले-पहल सुना था। अिसी बन्दरगाहमें जापानके अेडमिरल टोगोने अपनी नौसेनाको गुप्त रीतिसे सुरक्षित रखकर रूसी नौसेनाको हस्तमें डाला था और अन्तमें पासकी ही सुशीमा खाडीमें अेक ही समुद्री लडाअीमें सारी रूसी नौसेनाको डुबा दिया था। अितना ही नहीं, अुनके घायल समुद्री नायक (अेडमिरल) को पकडकर और अच्छा करके रूसको वापस भेज दिया था।

नागासाकी अर्थात् जापानकी नाक। सारे राष्ट्रके अभिमानका स्थान। बारह वर्ष पहले अिसी बन्दरगाह पर अमरीकाने [illegible] अेटम-बम फेंका था और करीब-करीब सारे शहरको ही नष्ट कर दिया था।

अिमी तरह अमरीकाने हिरोशिमा पर भी अेटम-बम फेंका था। हिरोशिमामें तो बमके अेक ही धडाकेमें ढाअी लाख लोग मारे गये थे। नागासाकी शहर पहाडके दोनों ओर बसा हुआ होनेके कारण अुसका अेक तरफका हिस्सा बच गया। पहाडके जिस ओर बम पडा था वहा पचास या पचहत्तर हजार लोग मारे गये थे। जिस विज्ञानकी मददमें जापान अितना आगे बढा था अुसी विज्ञानने अेक क्षणमें जापानका पराभव किया। अुस समयके अेक जापानी नेताने कहा था कि बहादुरी अथवा युद्ध-कौशलमें हम नही हारे हैं। विज्ञानकी प्रगतिमें हम कुछ कच्चे थे, अिसीलिअे विज्ञानके हाथों हमारा पराभव हुआ।

मेरे बचपनमें जब चीन और जापानका युद्ध हुआ था तब लडाअी शुरू होनेसे पहले ही जापानके अेडमिरल टोगोने चीनका अेक बडा जहाज डुबा दिया था। अिसी तरह अिस युद्धमें भी जापानने पर्लहार्बरमें अमरीकाकी नौसेना पर अचानक हमला करके अमरीकाको जबरदस्त नुकसान पहुचाया था। अमरीका अिस घातकी हमलेको कैसे भूल सकता था? अिसलिअे लगभग युद्धके अन्तमें जब जापानकी हार स्वीकार करके शरण जानेकी तैयारी थी तभी अमरीकाने जापानके अूपर ये दो बम गिराये थे। अिस तरह धोखेका बदला अिस घातकी कृत्यसे चुकाया गया।

हिरोशिमा और नागासाकी शहरोंकी सामान्य जनताका यह अमानुषिक सहार देखकर सारी दुनिया स्तम्भित रह गअी। पुराने समय में तो नियम था कि सेनायें लडें, आमने-सामने सहार करें, लेकिन साधारण नागरिक जनता (civil population) का नाश नही किया जा सकता। पर आजके युद्ध धर्म-युद्ध नही रहे। शत्रु यानी शत्रु, अुसमें सामान्य नागरिक, स्त्री-बच्चे सभी आ गये। फिर भी अिस तरह बम फेंककर शहरके तमाम लोगोंको मौतके घाट अुतार देना यह अेकदम नया और अकल्पित अमानुषिक कृत्य था।

अमरीकाके अिस कृत्यसे अेशियाके लोगोंकी आस्था जडसे हिल गअी। जापानकी शक्ति खतम हो रही थी। जापान पराभव स्वीकार करके युद्धमें से निकल जाना चाहता था, वह किस शर्त पर युद्धसे हटे अिसकी बातचीत चल रही थी। अिसी बीच केवल अपनी शक्ति आजमाने

· जापानी प्रजाको भयभीत करनेके लिअे अमरीकाने यह राक्षसी म अुठाया था।

अेशियाके लोगोको लगा कि जिस प्रकार किसी नअी दवाका असर ानेके लिअे मनुष्य अुस दवाको पहले किसी जानवरको देकर ता है, जिस तरह गिनि पिग्ज पर नये-नये रसायन आजमाये जाते बिल्कुल अुसी तरह अमरीकाने अपने अणु-बम अेशियाअी राष्ट्रों पर ामाये हैं। जर्मनी गोरे लोगोका राष्ट्र था, जिसीलिअे अुस पर ये की बम नही आजमाये गये। अिन दो शहरोको ध्वस्त करनेवाले । बमोने अेशियाके सगठनमें जितनी मदद की है अुतनी और किसी भी ाने नही की। गोरे लोग दूसरे गोरे दुश्मनोको तो मनुष्य-जातिके ानते है, किन्तु अुनके लिअे अफ्रीका अथवा अेशिया आदि देशोके लोग कुल निम्न कोटिके मनुष्य होते हैं। अिसीलिअे बिना किसी सकोचके को जितनी बडी सख्यामें मार डाला गया — ठीक वैसे ही जैसे आजकल डी० डी० टी० से मच्छरोको मारा जाता है।।

पौराणिक कथा याद करनी हो तो जनमेजय राजाने नाग लोगोका न्दन करनेके लिअे अेक सर्पसत्र चलाया था। अुस सत्रमें शत्रुको केवल नेवा अुद्देश्य नही था, बल्कि अुन्हे बिलकुल खतम कर देनेकी नीति । अपने राजाका अैसा युद्ध-ज्वर देखकर और यह अमानुषिक ल्प सुनकर मनुष्य-जाति पर विश्वास रखनेवाला अेक आस्तिक । वहा पहुचा और अुसने अुस सर्वसहारकारी युद्धको अेकदम बन्द ाया।

आज अिसी तरहके अेक आस्तिक ऋषिका कार्य करनेके लिअे ष राष्ट्रोके प्रतिनिधि हम सब यहा अिकट्ठे हुअे है। सर्व सहार- ी शस्त्रोका हमेशाके लिअे बहिष्कार हो यह हम सुझाना चाहते हैं। पर सुझावके पीछे अुन आस्तिक ऋषिका तपस्तेज हमारे पास कहा है?

तीन वर्ष पहले जब मैं अिस देशमें आया था तब मैंने हिरो- ा जाकर अुन निर्दोष मृतक लोगोको श्रद्धाजलि अर्पण की थी। ो बार आठ-नौ अगस्तको नागासाकीके बलिदानका द्वादश वार्षिक करनेके लिअे अुपस्थित रहा हू।

२६
धर्म-धानी कोबे

हाकाटा,
१०-८-'५७

गुरुजी निचिदात्सु फूजीअीके सम्पर्कमें आये मुझे काफी वर्ष हो गये। अुनके शिष्योंके साथ भी मेरा व्यक्तिगत सम्बन्ध बढता ही जा रहा है। मानो मैं अुनका अेक बडा भाअी होअू अिस तरह वे मेरे प्रति आत्मीयता रखते है। फिर भी मैं अिन लोगोंके परात्पर गुरु निचिरेनके विषयमें अभी तक पूरी जानकारी प्राप्त नही कर पाया हू। अिस विषयमें थोडा-बहुत जो पढा है वह भी अंग्रेजोंने जापानके बौद्ध पथोंका वर्णन करते हुअे जो कुछ गलत-सलत लिखा है बस अुतना ही पढा है। गुरुजी खुद हिन्दी या अंग्रेजी दोनो ही नही बोल सकते हैं। अुनके शिष्य भी हिन्दीमें तो पूरे वाचा-सयमी ही है।

अितने लोग भक्तिके साथ जिसका नाम साढे सात सौ वर्षोंसे लेते आये है अुसकी विभूति विशेष तो होनी ही चाहिये। विदेशियोंने भी जिसका वर्णन असहिष्णु और अुत्पातीके नामसे किया है, अुसमें कुछ-न-कुछ तेज तो जरूर होगा ही। भगवान श्रीकृष्ण, श्री शकराचार्य, मार्टिन लूथर, अिगनेशियस लोयला, मुहम्मद पैगम्बर आदि सभी अिस तरहके अुत्पाती थे। ये लोग अपने समयमे न खुद चैनसे बैठे और न दूसरे किसीको अुन्होंने सुखसे सोने दिया। गाधीजीको भी अनकी अहिंसक मिठासके बावजूद अुत्पातियोंकी पक्तिमें ही बिठाना चाहिये। बैठाना कैसा? खडा करना चाहिये, जो बैठे वह अुत्पाती कैसे हुआ?

साढे सात सौ वर्ष पहले हुअे निचिरेनको जापानके लोग आज बोधिसत्त्वकी तरह पूजते है। (बोधिसत्त्व यानी बुद्ध बननेकी योग्यता और आकाक्षा रखनेवाले साधनावीर जीव) निचिरेनका कहना था कि बौद्धोंमे स्थविरवादी और महायानी—ये जो भेद पडे है वे योग्य

नही है। सद्धर्म-पुण्डरीक स्तोत्रमें जिस धर्मका अुपदेश हुआ है वही अेकमात्र मार्ग है। लोग बुद्धको छोडकर अमिताभके दर्शनके लिअे वानिमत्त्वोकी पूजा करते है यह गलत है। केवल शाक्य मुनिकी ही पूजा करनी चाहिये। वें शाक्य मुनि भी अमुक हजार वर्ष पहले भारतमे जन्मे हुअे अैतिहासिक सिद्धार्थ गौतम नही, किंतु सनातन कालसे सद्धर्मका अुपदेश करनेवाले शाक्य मुनि।

जिन्दगीमें सत्य और धर्मके रास्ते पर चलना ही कल्याणका मार्ग है। अुस धर्मकी शरण जाना यही सच्चा पथ है। अिसीलिअे ये लोग सर्वकालके तमाम बुद्धोको नमस्कार करते है और फिर सद्धर्म-पुण्डरीक सूत्रमें दिये हुअे सच्चे धर्मको नमस्कार करनेके लिअे व अुसकी शरण जानेके लिअे 'नम् म्यो हो रेंगे क्यो' मंत्र बोलते है।

निचिरेन जिस तरह साधु थे अुसी तरह राजनीतिक परिस्थिति जाननेवाले अेक राष्ट्र-पुरुष भी थे। अुनकी बडी अिच्छा थी कि जापानकी सरकार यहाके मत-मतान्तरो और पंथोको तोडकर सारे देशको धर्मके आधार पर अेक कर दे। जापानमें बौद्ध धर्म चीनसे आया है। अिसलिअे वहाके साधु यहा आते थे और यहाके साधु सच्चा धर्म अुसके सच्चे स्वरूपमें समझनेके लिअे चीन जाते थे। बलवान और संस्कृति-सम्पन्न चीन देशके सामने सूर्योदयका निप्पोन देश किसी भी गिनतीमें नही था। फिर भी जापानी लोगोने चीन और कोरियामें बौद्ध धर्म लाकर अुसे अपनी विशेषता प्रगट करनेवाला अेक नया रूप दिया।

बाकी जो समय मिला अुसमें भगवान निचिरेनके विषयमें थोड़ा लिखकर यह पत्र तुम्हे भेज रहा हू।

कोबे,
११-८-'५७

कल यह पत्र हाकाटामें नही भेज सका। हमने दोपहरको बारह बजे हाकाटा छोड़ा और विमान-मार्गसे ढाअी बजे अिटामी पहुचे। विमानमें सेण्डविचका अेक-अेक डिब्बा हमें दिया गया। अुसमें कअी तरहके सेण्डविच थे। स्ट्राबेरी जेमके, आड़ूके, ककड़ीके, टमाटरके और गाजरके। मुह पोछनेके लिअे डिब्बेमें कागजका अेक छोटा व कुछ गीला तौलिया भी रखा हुआ था। चीज अच्छी थी। अिस्तेमाल करनेके बाद भी यह कागज फटा नही। कोबे व ओसाका अिन दो शहरोके बीचमें अिटामी बसा हुआ है। वहासे हम श्री टाकुडो फूजी (Takudo Fuji) नामक भक्तके यहा आये हैं। तुम्हे याद होगा कि तीन वर्ष पहले जब हम कोबे आये थे तब हम अेक गुजराती भाअी धर्मदास थानावालाके यहा ठहरे थे। कोबेमें रहनेवाले करीब चालीस पैंतालीस भारतीय अुनके यहा अिकट्ठे हुअे थे। विदेशमें आकर अपने देशवासियोके घरोमें रहना मेरी नीतिके विरुद्ध है। जहा जावें वहा अपने देशके लोगोंसे मिलना और अुनके अनुभव जानना यह दूसरी बात है — जरूरी भी है। लेकिन जिस देशमें जाये वहा अुन्हीके घरोमे रहे तभी वहाकी सस्कृतिके साथ परिचय होता है, आत्मीयता बनती है और आगे चलकर अिसमें से महत्त्वके और बड़े सुन्दर परिणाम निकल सकते हैं।

अिस बार गुरुजीके भक्त और कोबेके प्रतिष्ठित नागरिक श्री टाकुडो फूजीके निमत्रणसे हम यहा आये है, अिसलिअे अुन्हीके घर पर रहनेकी व्यवस्था है। भाअी फूजीका घर विशाल, सुघड और सुन्दर है। आसपासका छोटा-सा बगीचा भी जापानी कलाका अुत्तम नमूना है। जापानकी अमीराना सादगी हमें यहा देखनेको मिली। भाषाके अभावमें घरके लोगोके साथ बातचीत करना मुश्किल था, फिर भी हमारे बीच कोअी सकोच नही था।

कोबेमें जापानका सबसे बडा स्तूप बननेवाला है। भाजी फूजी जिस स्तूप-समितिके अध्यक्ष हैं। जिस समितिकी ओरसे अेक बडे वस्तु-भण्डार (stores) में हमारे सम्मानमें अेक बडी दावत दी गजी थी। साठ सत्तर लोगोंको बुलाया गया था। कोबेमे रहनेवाले बहुत-से भारतीय भाजियोंको भी जिसमें निमत्रण था। हमारे काजुन्सल श्री सुब्रह्मण्यन्, भाजी थापर और भारतीय मण्डलके अध्यक्ष वगैरा कजी लोग थे। साहित्यिक भाजी बगी तो थे ही। श्री दुर्लभजी खेताणीने मेरे विषयमें जुनको पत्र लिखा था। भोजन-समारम्भमें जो जापानी आये थे जुनमें से दोके ही नाम याद हैं। कोबे विश्वविद्यालयके प्रेसिडेन्ट डॉ० योशीमाटो कोबायाशी और दूसरे कोबे विश्वविद्यालयके विदेशी-विद्या (फारेन स्टडीज) के भूतपूर्व अध्यक्ष प्रो० किन्जी कानेडा थे। ये नाम जिस-लिये याद रहे कि वे दोनो बहुत अच्छा बोले थे। श्री कोबायाशीने मेरे भाषणकी और मेरे मिशनकी कदर की थी। प्रोफेसर कानेडा सुन्दर अंग्रेजी बोलते थे जिसलिये जुनके साथ तो सीधी बहुतसी बातें हो सकी। कोबायाशीने अपने भाषणके अन्तमें जापानी कविताकी अेक दो पक्तियां गाजी। जुसका परिणाम यह हुआ कि अेक दूसरे सज्जनको भी कविता गाकर सुनानेका जोश चढा। जुन्होंने अपनी नाकको फुला-फुलाकर गीत सुनाये।

हम भी अपने-अपने वाहन लेकर आयेंगे। पर दिक्कत यह थी कि कोअी भी मोटर अिस कडी चढाअी पर चढ नही सकती थी। श्री फूजी अूनी धागेकी अेक बडी कम्पनीके डायरेक्टर थे। अत अनुकूल व्यवस्था करनेकी शक्ति अुनमें थी। अतमें यह तय हुआ कि अेक जीप पहले हमें अूपर ले जायेगी और फिर वही वापस आकर औरोको भी ले जायगी।

खानेके विषयमें बताना तो रह ही गया। जापानमें चीनी रसोअी स्वादके लिअे प्रख्यात है, अिसलिअे अिस बडी दावतमें खास चीनी रसोअियोंको बुलाकर अुनके ढगकी बानगिया बनवाअी गअी थी। हम शाकाहारियोंके लिअे विशेष मेहनत की गअी थी। अेकके बाद अेक स्वादिष्ट बानगिया आती ही जाती थी। थोडा-थोडा करके भी हर आदमीने अितना खाया कि बेचैनी होने लगी, फिर भी बानगिया तो खतम ही नही हुअी। तरह-तरहके मशरूम, कितने ही प्रकारके चावल, स्वादिष्ठ सी-वीड्स यानी समुद्रमे मिलनेवाले सब्जीके प्रकार, सिंघाडे और सोयाबीन थे। अेक सोयाबीनमे ही कअी तरहकी चीजें बनायी गअी थी। समुद्र-स्नानमें अेकके बाद अेक आनेवाली लहरोंसे जिस तरह तबीयत घबडाने लगती है वैसी ही हमारी स्थिति हुअी। भूरे कद्दुओको, जिनसे पेठेकी मिठाअी बनती है, पेटमें अनेक मसाले भरकर पकाते हैं, फिर सारा भीतरी भाग खरोच-खरोचकर खाया जाता है। वह भी यहा मौजूद था। आठ बजे खानेको पहुचे थे सो वह साढे दस तक चला और घर आते-आते तो ग्यारह बज गये।

आज सुबह नौ बजे हम मोटरमे बैठकर पहाडकी तलहटी तक पहुचे। वहासे जीपमें बैठकर अूपर गये। चढाअी काफी कडी थी। बीच-बीचमें रास्ता पिछली रातको और सुबह ही ठीक किया गया हो अैसा स्पष्ट दिखाअी दे रहा था। हमारे साथ भाअी बशी, अुनकी पत्नी कान्ताबहन तथा अुनकी लडकी कुजबाला थी। तीनोंको बढिया जापानी बोलना आता था। अिस कारण बडी सुविधा रही। अूपर पहुचकर देखा कि वहा पहाडीको खोदकर आवश्यकतानुसार अेक मैदान तैयार किया जा रहा था। पास ही अेक जगह पहाडीका शिखर

शिव-लिंगकी तरह रखकर अुसके आसपास रास्ता बना दिया गया था। अेक तरफ कोबे और दूसरी तरफ ओसाका अिन दोनों शहरोंकी यहासे खासी अच्छी झाकी मिलती थी और सामने, दूर, विशाल समुद्र फैला हुआ था।

अिस स्थानसे प्रभावित होनेके कारण अुसके प्रति मेरी श्रद्धा बढी और वहा बोलते हुअे मैंने कहा "मै देख रहा हू कि यह स्थान जापानकी भावी धर्म-प्रेरणाका केन्द्र बनेगा। समुद्रके जहाज दूरसे ही अिस स्तूपको देख सकेंगे और अगुली बताकर अेक-दूसरेका ध्यान अिस ओर खीचेंगे। हो सके तो अिस पहाडी पर अेक दीप-स्तम्भ बनाना चाहिये, जिससे दूर-दूरके जहाजोंको मालूम हो सके कि वे कोबेके स्तूपके आस-पास ही कहीं हैं। भले ही टोकियो जापानकी राजधानी हो, नारा भले ही जापानका साहित्यिक और सास्कृतिक केन्द्र हो, लेकिन कोबे तो जापानकी धर्म-धानी बननेवाला है।"

यहा अेकान्त तो कहासे मिलता? फिर भी जरा अेक ओर जाकर बैठा। सृष्टिके अिस सौंदर्यको कुछ देर निहारा और फिर अन्तर्मुख होकर मनमे प्रार्थना की कि जितने सब सज्जनोंके शुभ सकल्प यथा-समय सिद्ध हो।

स्तूपकी जगह देखकर हम नीचे अुतरे और भाअी वशोके यहा खाना खाने गये। वहा आये हुअे लोगोंके साथ काफी बाते हुआी।

वहासे श्री फूजीके यहा होते हुअे हम हवाअी अड्डेके लिअे निकले। श्री फूजीने हम तीनोंको अेक-अेक कीमोनो भेटमे दिया। शामको करीब चार बजे तक हम टोकियो पहुच गये।

नीचे जाकर चारो ओरसे बादल आ घेरते है, जिससे हमें यही भास हो कि यह शिखर पृथ्वीके आधार पर यहा नही खडा हुआ है, यह तो अेक स्वर्गीय विमान ही है। पृथ्वी पर अनुग्रह करनेके लिअे ही यह अुसके अितने पास आ गया है। अिस शिखरके दर्शनका वर्णन अुसकी प्रतिष्ठा रखनेके खातिर भी अेक अलग पत्रमें ही लिखना होगा। अिसके बादका पत्र अिसे ही अर्पित होगा।

मेरा अिस पहाडके प्रति प्रेम और पक्षपात तुम जानती ही हो। तीन वर्ष पहले फूजीयामाके दर्शनके लिअे हमने कितनी परेशानी अुठाअी थी यह भी तुम्हें याद होगा। अिसलिअे फूजीयामाके शिखरके दर्शनसे हमें कितना आनन्द हुआ, यह तुम समझ सकोगी।

२७

फूजीयामाके दर्शन

टोकियो,
१३–८–'५७

सारे ही पहाड अुन्नतिके प्रतीक होते है। ये स्वय तो अूपर अुठे हुअे होते ही है, साथ ही देखनेवालेको भी अूपर चढनेका निमत्रण देते रहते है। ऋषि कहेंगे कि पहाड निमत्रण नही, दीक्षा देते है। पुराणकार कहते है कि प्राचीन कालमें पहाडोके पख होते थे और वे आकाशमें अुडकर चाहे जहा जा बैठते थे।

आकाशसे गिरा हुआ अेक ककर भी बढकर अेक पर्वत बन जाता था। कहा जाता है कि श्रीनगर (काश्मीर) का हरि पर्वत और शकराचार्यकी पहाडी अिसी तरह ककरसे बढकर बडे पहाड बन गये है। पैदल या किसी भी वाहनमे बैठकर जब हम सफर करते है तब लगता है कि मानो पर्वत भी हमारे साथ ही साथ धीरे-धीरे आगे चल रहे है। नदी दौडती है, पहाड स्थिर रहता है। फिर भी मनुष्यको अिन दोनोका साथ तो मिलता ही रहता है।

ये पहाड कभी तो दो प्रदेशोंके बीचमें सीमा बना देते हैं और कभी तम्बूके खम्भेकी तरह सारे प्रदेशको अेक अुन्नत-अुत्तुंग केन्द्र प्रदान करते हैं। स्पेन, पुर्तगाल और फ्रान्सके बीचमें यदि पिरिनीज़ पर्वत न होता तो वह अेक ही देश माना जाता। अिंग्लैंड व स्काटलैंडके बीच भी विभाग करनेवाला अेक पहाड है ही। स्वीडन व नार्वेके बीचमें भी अैसा ही है। हमारा हिमालय तो भारत और चीनके बीचकी अेक सनातन और भव्य सीमा है। लेकिन आबू और अरावली पर्वत पूरी सीमाअें नहीं बनाते। कच्छका ननामा, सौराष्ट्रका गिरनार तथा चोटीला और बड़ोदाके पासका पावागढ आदि कअी पहाड तो गोपुरकी तरह अूंचाअी धारण करके अपने आशीर्वादसे आसपासके प्रदेशका रक्षण करते हैं।

सभी पहाडोंका समान आकर्षण होते हुअे भी कुछ पहाड तो मेरे मन पर चिरस्वप्नकी तरह छाये रहते हैं। हिमालयके अुस पारका कैलास हम भारतीयोंके लिअे अेक चिरस्वप्न ही है। अुसे तो चिरस्वप्न न कहते हुअे सनातन स्थिर स्वप्न ही कहना चाहिये। जिस पहाडके दर्शनकी हमारी आकांक्षा अुतनी ही पुरानी है जितनी हमारी संस्कृति। नन्दा देवी, नन्दा कोटा व त्रिशूल वगैरा हिमालयके शिखर मनको अिसी तरह पागल कर देते हैं। फिर, अुनके दर्शन न हों तब तक शान्ति नहीं मिलती। कांचनजंगा भी अैसा ही अेक पहाड है। सिक्किमकी राजधानी गंगटोक जाकर काफी दिनों तक रोज सुबह सुबह दर्शन किया तब कहीं दिलका वह नशा अुतरा।

जो कुछ अुपलब्ध था वह सब पढ डाला। अपनी पुस्तकमें अुसके विषयमें लिखा। तब कहीं अुसका भूत मेरे मनमें अुतरा।

जापान तो पहाडी मुल्क ही ठहरा। यहा भला पहाडोंकी क्या कमी! अेकसे अेक सुन्दर पहाडोंकी शरणमें जो समतल भूमि अिधर-अुधर फैली हुअी है, अुसी पर यहाकी प्रजा अपना गुजर चलाती आअी है।

अैसे अिस पहाडी प्रदेशमें भी अेक पहाड अपनी गर्वोन्नतिके कारण सबसे बिलकुल अलग खडा है। अिसीका नाम फूजीयामा है। फूजी यानी अेकाकी, अद्वितीय और यदि यह फूजी नाम यहाके आदिवासी आयनु लोगोंका रखा हुआ हो तो अुसका अर्थ होता है अग्निदेवी। जैसे हमारा ध्यानमूर्ति पहाड कैलास है, वैसे ही जापानियोंका फूजीयामा। यह पहाड सब तरहसे बडा व्यवस्थित है। चारों ओर अेक समान फैला हुआ है और अिसका अूचा मस्तक तो बडा ही मनोहर है। कैलास और किलिमाजारोकी तरह अिसके मस्तक पर भी श्वेत हिम-मुकुट है। जापानमें जहा देखो वहीं अिस पहाडके चित्र और प्रतीक दिखाअी देते हैं। पर्दों पर और बर्तनों पर, पखों पर और कागजोंके दीपों पर फूजीयामाके चित्र तो होते ही हैं।

जापानकी यात्रा करें और फूजीयामाके दर्शन न करें यह तो अेक असभव-सी बात है। फिर भी जब मैं सन् १९५४में जापान आया था, तब अनेक प्रयत्न करने पर भी हमें फूजीयामाके दर्शन न हो सके थे। अुस समय हवा अितनी धुधली थी कि आखें व कल्पना दोनोंने अुसे देखनेके प्रयत्नकी पराकाष्ठा कर डाली, तो भी विश्वाकाशमें अथवा हृदयाकाशमें फूजीयामाकी आकृति दिखाअी नही दी। हमने ठेठ दक्षिणमें कुमामोतोसे आसो जाकर वहाका अद्भुत ज्वालामुखी पर्वत देखा, नारा व क्योटोकी सस्कृति देखी और हिरोशिमाका सर्वनाशी कुरुक्षेत्र भी देखा। लेकिन जापान आया था यह कहनेसे पहले मेरा मन ही मुझे पूछ बैठता कि तुमने फूजीयामा कहा देखा है?

अिस बार जब निप्पोनकी यात्रा तय हुअी तब मैंने श्री ओमाअी-सानको लिखा कि अबकी ये दो चीजें तो टाली ही नही जा सकती

अेक तो फूजीयामाके दर्शन करना और दूसरी नागासाकीके सर्वनाश और पुनर्जागरणको निहारना। मैंने यह भी लिख दिया था कि पिछली बार हमने टोकियोसे दक्षिणमें जाकर आधा निप्पोन देखा था। जिस बार अुत्तरका होक्कायडो द्वीप जरूर देखना है।

अिस संकल्पके अनुसार टोकियो आते ही प्रथम हम अुत्तरमें गये। होक्कायडोके पहाड़, नदी और सरोवर देखे। नये स्तूपोंके संकल्पित स्थान देखे और तब फिर हम धीरे-धीरे दक्षिणकी ओर अुतरे। फूजीयामाके दर्शनकी अुत्कण्ठा तो बढ़ती ही गअी। लेकिन जिस बार भी अुसके दर्शन दुर्लभ ही रहे। भाग्यके साथ हवा भी प्रतिकूल हो तब और क्या हो सकता था? लेकिन अेक दिन अगस्तकी तीन या चार तारीखके करीब श्री ओीमाओी-सानने ट्रेनमें से ही फूजीयामाके दर्शन कराये। हवा बिलकुल स्वच्छ थी। फूजीयामाकी आकृति आकाशमें से बिलकुल कोर-कर गढ़ी गयी हो जैसी दिखाओी दे रही थी। रंग गहरा हरा था। लेकिन अुसके सिर पर बरफका नामोनिशान भी नहीं था। अेक ही क्षणमें खिन्नता और निराशा दोनोंका अेक ही साथ अनुभव हुआ। क्या जिसके दर्शनकी रटन लगी हुआी थी वह फूजीयामा दिखाओी तो दिया! लेकिन कैसा? बिलकुल रोगी, हिम-शून्य! तुरन्त ही किलिमांजारोके पासका मेरु पहाड़ याद आया। अपने मनको यों समझाया कि बरफ न हो तो न सही, पर फूजीयामा तो आखिर फूजीयामा ही है। वह देखो कितना अूंचा, गठीला और [illegible]

तुरन्त ही मुझे कालिदासका अेक वचन याद आया, जिसमें अुन्होंने पहाडके शिखर पर वरफका होना अेक दोष ही बताया है और आश्वासन देते हुअे कहा है कि अिस दुनियामें नितान्त सुन्दर वस्तु हो ही कैसे सकती है? कहीं तो कमी रहेगी ही। मनमें आया कि यदि आज कालिदास यहां होते तो वे कहते कि धन्य है आजका दिन कि जब मैंने विना वरफका फूजीयामा देखा! लेकिन मैं तो कालिदास नहीं हूं। मुझे तो काका ही रहना है। विना वरफका फूजीयामा मेरे ध्यानका फूजीयामा नहीं है। अिसलिअे मैं तो अधन्य ही हूं।

अितनी अुधेड-बुनके वाद मैंने अपने मनको समझाया कि जो नहीं है अुसका अफसोस करनेके वदले जो है अुसका आनन्द लूटनेका अवसर क्यों खोता है? आखिर मेरे मनकी खिन्नता दूर हुअी और तब कहीं वह फूजीयामाकी वीत-हिम शोभा निहारने और अुसकी कदर करनेके लिअे तैयार हुआ।

हमने चलती ट्रेनसे जितनी वार दर्शन हो सके अुतनी वार फूजीयामाके दर्शन किये और संतोष माना। अुसके वाद फिर फूजीयामाके दर्शन हुअे ही नहीं। मेरे जैसे कृतघ्नको दर्शन दे भी कौन? फूजीयामाको जरूर कुछ अैसा ही लगा होगा। अेक वार तो हम फूजी नामके अेक जंक्शन पर भी अुतरे। कोवेमें फूजी नामके अेक भाअीके घर पर भी रहे, लेकिन फिर भी फूजी-दर्शनकी पूरी तृप्ति नहीं हुअी सो नहीं ही हुअी। आखिर मेरी फूजी-भक्ति कुछ परिपक्व हुअी और केवल हिम-वेष्टित शिखर देखनेकी धुन दूर हुअी। और तब कोवेसे टोकियो आते हुअे विमानसे फूजीयामाके शिखरके अद्‌भुत दर्शन हुअे! विमानके यात्री अुत्कण्ठासे कुछ देखने लगे। अिसलिअे हमने भी अुधर देखा। समुद्र परके पहाडोंको वेधकर खुले आकाशमें फूजीयामाका मस्तक विराजमान था। जमीनसे देखने पर फूजीयामाके द्रोणकी कोर दिखाअी नहीं देती। विमानमें अितनी अूंचाअी पर आनेके वाद अिस द्रोणकी खुरदरी कोर कुछ स्पष्ट हुअी। विना कहे ही आंखोंका भाव वोल अुठा "आज सचमुच कुछ अद्‌भुत देखा!"

हवाअी जहाजकी खिडकीसे नीचे चमकता हुआ समुद्र दिखाअी दे रहा था। अुससे जरा आगे कुहरे और वादलोंका अेक पर्दा-सा बना

हुआ था। अुस पर्देके अूपर खुले स्वच्छ आकाशमें फूजीयामाका शिखर अिस प्रकार शोभा दे रहा था, मानो वह सीधा आकाशसे ही अुतरा हो और अुसका पृथ्वीके साथ कोअी सम्बन्ध ही न हो। अितनेमें मारुयामा दौड़े-दौड़े आये और हमें बताने लगे कि वह देखो अूपर फूजीयामा दिखाअी दे रहा है। मैंने कहा "मैं तो कभीका अुसे ही देख रहा हूं। अितनी अूंचाअीसे फूजीयामाका शिखर देखनेको मिले यह कोअी सामान्य आनन्दका प्रसंग नहीं है।"

सचमुच फूजीयामा निप्पान देशके गौरवका अेक प्रतीक है। निप्पोनके अभिमानका यह आश्रय-स्थान है। यह केवल पत्थरसे बना हुआ और बरफसे ढका हुआ पार्थिव शिखर ही नहीं है, अपितु निप्पोनके सांस्कृतिक हृदयका अभिमानी देवता है। जब तक यह शिखर है तब तक अिस जातिका अपने भाग्यके विषयमें निराश होनेका कोअी कारण नहीं है। जापानकी संस्कृतिमें जो कुछ अुच्च, अुदात्त, भव्य और स्थायी है, अुसकी दीक्षा देनेके लिअे यह शिखर सब तरहसे समर्थ है।

२८

विराट सम्मेलन

कार्यमे भारतकी ओरसे रस लूगा। अिसी आशासे अुन लोगोने मुझे अपनी समितिका अुपाध्यक्ष चुना था। अध्यक्ष प्रो० काओरु यासुओी थे। ये निप्पोन विश्वविद्यालयमे राजनीति विभागके अध्यक्ष है। ये अुत्साही, गम्भीर तथा अपने कार्यमें चतुर है। आस्ट्रेलियाके श्री विलियम मॉरो जनरल सेक्रेटरी थे। ये भी मजे हुअे कार्यकर्ता है। चीन, रूस आदिके प्रतिनिधि अुत्साहसे काम कर रहे थे। अुसी वक्त मैंने अुनसे कहा था कि जागतिक परिषद् शुरू होगी तभी मै अुसमें भाग ले सकूगा। मुझे निप्पोनमें सर्वत्र घूमकर जन-सम्पर्क बढाना है, परिषद्के कार्यसे जन-सम्पर्कका कार्य मुझे अपने लिअे अधिक महत्त्वका लगता है। और जिनका मेहमान बनकर मै आया हू वे भी यही चाहते है कि निप्पोनमे सब जगह घूमकर मै अुनकी प्रवृत्तियोका निरीक्षण करू और भारतकी ओरसे अुन्हें प्रोत्साहन दू। मैंने यह भी बता दिया कि भारतके प्रतिनिधि मेरी अिस भूमिकाको जानते है और अिसीसे अुन्होने प० सुन्दरलालजीको भेजनेका विचार किया है। वे आते ही पूरे समय आपके साथ रहेगे।

यह सफाअी सुननेके बाद समितिके सदस्योने मुझे मुक्त कर दिया। प० सुन्दरलालजी आते ही प्राथमिक तैयारीकी समितिमें और व्यवस्था-समिति (Steering committee) में कार्य करने लगे।

८ अगस्तको नागासाकीकी शाखा-परिषद्मे भाग लेनेके बाद कोबे होकर मै ११ की शामको टोकियो पहुचा। तब तक भारतके सब प्रतिनिधि आ पहुचे थे। बारहको मुख्य परिषद् शुरू होनेवाली थी। मै अतरगका सदस्य मिटकर मानो बाहरका सदस्य बन गया था। यदि मै अन्दर घुसनेका जरा भी प्रयत्न करता तो वह मेरे लिअे आसान था, लेकिन मेरे कानकी दिक्कतका मुझे खयाल था। जापानी सदस्योके साथ भाषाकी कठिनाअी, चीनी और रूसी प्रतिनिधियोके साथ मिलने-जुलनेमें भी यही दिक्कत और कानसे सुनता हू कम। अिन असुविधाओंके कारण बडी-बडी समितियोमें काम करना अेक परेशानी ही हो जाती। मुख्य नीतिके विषयमे मेरा मतभेद था ही नही। कअी सदस्योके साथ बातचीत करते हुअे मै समझ गया था कि परिषद्में जागतिक लोकमत

उग्रतासे व्यक्त करना और यू० अेन० ओ० (UNO) के अूपर दबाव डालकर अुनके द्वारा कार्य कराना अितना ही अिस परिषद्का अुद्देश्य है।

जून मासके दूसरे सप्ताहमें कोलम्बोमें जो जागतिक शांति परिषद् हुअी थी, अुसमें अनेक देशोंके प्रतिनिधियोंके साथ चर्चा करके शांतिवादियोंका रुख मैंने जान लिया था। मैं मानता था कि जब यू० अेन० ओ० की शक्ति दूसरी तरह खर्च हो रही है और अुसमें अमेरिका, रूस, ब्रिटेन आदिकी सरकारोंकी शक्ति और नीति ही प्रमुखतासे कार्य कर रही है, तब अुनके सदस्यों पर असर डालनेका प्रयत्न विशेष सहायक नहीं होगा। दुनियाकी छोटी-बड़ी सरकारोंकी मर्यादाअें समझ कर यदि हम जागतिक जनताकी शक्ति जाग्रत करें और अुस प्रयत्नमें स्वेच्छासे त्यागपूर्वक कष्ट अुठायें, तभी अेक नअी नैतिक शक्ति अुत्पन्न होगी। अुसके बलसे हम भिन्न-भिन्न सरकारों पर प्रभाव डाल सकेंगे, यह मेरा अभिप्राय था। दुनियाके लोग शांति चाहते हैं, अेटम-बमसे व्याकुल हैं, वगैरा लोकमत तो हमने कअी बार प्रकट किया है। अुसमें कोअी नवीनता नहीं है। अलग-अलग देशोंमें अेकत्र होकर अुन्हीं प्रस्तावोंको पास करें तो हम स्थानीय लोक जागृतिमें मददगार हो सकते हैं, लेकिन अुससे प्रगति होनेवाली नहीं है। अुलटे अैसी छाप पड़ेगी कि जगतकी जनताका अभिप्राय निर्बल है, और अुसके पीछे ताकत [illegible] है। अिसलिअे हम जनताकी ओरसे कोअी [illegible] शांतिके लिअे अुस ओर [illegible] चाहिये। [illegible] अभिप्राय [illegible] प्रतिनिधियोंके सामने मैंने रखा था।

भारत जैसा अेक देश अमरीकाकी मदद लेनेमे अिनकार करे तो अुससे जागतिक परिस्थिति पर जो असर होगा अुसके वजाय वहुतसे शातिवादी राष्ट्र अेकमत होकर अमरीका, रूस व ब्रिटेन अिन तीनो अेटम-शस्त्रोका प्रयोग करनेवाले राष्ट्रोसे मदद लेना बन्द करें, तो अेक वडी प्रभावशाली परिस्थिति निर्माण हो सकती है। अैसा हो तो फिर जागतिक जनताके अभिप्रायकी अुपेक्षा नही हो सकेगी। यह मेरे सुझावका सार था।

लेकिन भारतके प्रतिनिधि ही अिस भूमिकाको स्वीकार करनेके लिअे तैयार नही थे। गाधीजीका नाम लेना, अुनके अहिंसक प्रतिकारके सिद्धा-न्तोका वखान करना और साथ ही रूसकी नीतिको प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहारा देना, वस अितना ही भारतके प्रतिनिधियोको सूझना था।

कोलम्बोके अनुभवोके वाद टोकियोमें मेरा अुत्साह काफी ढीला पड गया था। जापानके प्रतिनिधि मेरी भूमिका समझें या अुसे स्वीकार करे अैसा सम्भव नही था, अिसलिअे जापानने वारह वर्षोमे जो कष्ट झेले अुनके लिअे अुसके प्रति सहानुभूति दिखाना और अेटम-वमके विरुद्ध व जागतिक युद्धोके विरुद्ध लोकमत व्यक्त करना अितना ही काम वाकी रह जाता था। वस, अिस हद तक परिषद्मे भाग लेकर सतोष मानना अैसा मैंने अपने मनमें तय कर लिया था। और अिसी भूमिकाके अनु-सार परिषद्में मैं दो-तीन वार वोला। यहा हरअेक भाषणका भाषातर सारी श्रोता-मडलीके लिअे जापानीमें होता था और वाकी लोगोके लिअे अग्रेजी, रूसी, फ्रेंच, चीनी वगैरा भाषाओमे अनुवाद होते थे। ये अनुवाद जिस भाषामें सुनना हो अुसी भाषाकी कर्णिका (Hearing aid) पहननेसे लोगोको सुनाअी देते थे। जो अपना भाषण पहलेसे लिखकर छपा लेता अुसका प्रचार अधिक होता था। सचालक लोग जिस वस्तुको महत्त्व दें अुतना भाग रिपोर्टमें दाखिल हो जाता है। अिस प्रकार अिन परिषदोकी रचना होती है। अनेक देशोके विभिन्न भाषा-भाषी प्रतिनिधि अिकट्ठे होते है, तव कोअी भी प्रतिनिधि विशेष कुछ कर ही नही सकते। समितियोमे जरूर थोडी-वहुत चर्चा हो जाती है। सामान्यतया जागतिक विचारके अमुक नेता जो दृष्टि प्रदान करते है अुसके अनुकूल प्रस्ताव

ही ऐसी परिषदोंमें पास होते हैं। आग्रही सदस्य प्रस्तावोंकी भाषामें थोड़ासा हेर-फेर करा सकते हैं। कभी प्रस्ताव महत्त्वके भी होते हैं। जिन्हें पूरे वर्ष प्रचार करना होता है अुनके लिअे ये प्रस्ताव और अुनकी शब्द-रचना सबसे अधिक महत्त्वकी होती है।

ग्यारहकी शामको भिन्न-भिन्न देशोंके प्रतिनिधियोंका स्वागत और अुनके परिचयका ही काम था। अुनके बाद नृत्य, नाट्य आदि रंजनात्मक कार्यक्रम रखा गया था। वह बहुत ही आकर्षक था।

शामकी परिषद्में मैं अकेला ही गया था। मंजु और रेवती घर पर ही रह गयी थीं। रंजनात्मक कार्यक्रमके लिअे मैंने अुन्हें टेलीफोन द्वारा बुलानेका प्रयत्न किया, लेकिन वह सफल नहीं हुआ। टोकियो याने स्थानोंके बीच बहुत बड़े अन्तरवाला नगर। अेक जगहसे दूसरी जगह जानेमें काफी वक्त लगता है। अकेले बैठकर रंजनात्मक कार्यक्रमका आनन्द लेनेकी अिच्छा नहीं हुअी, अिसलिअे वह सब छोड़कर मैं मुकाम पर गया। विदेशमें मनोरंजनके लिअे रातको जागना और फिर दूसरे दिनके कार्यक्रमके लिअे तैयार रहना यह मुझे पुसा नहीं सकता था।

अिसके बाद मुख्य परिषद् शुरू होनेवाली थी।

केवल प्रतिनिधियोकी ही गणना करें तो निप्पोनके ही प्रतिनिधि करीब चार हजार थे। बाहरसे आये हुअे प्रतिनिधियोमें छब्बीस देश और दस आन्तर-राष्ट्रीय सस्थाअें शामिल हुअी थी। भारत, चीन व निप्पोनके दक्षिणमें आये हुअे आस्ट्रेलियाके प्रतिनिधि सबसे अधिक सख्यामें थे। अिन तीनो देशोमे से प्रत्येक देशके प्रतिनिधि अेक दर्जनसे अधिक थे, जब कि रूसके व अमरीकाके मिलकर अेक दर्जन होते थे। कोरिया व मगोलियासे पाच-पाच आवें अिसमें आश्चर्य नही। लेकिन मिस्रसे छह प्रतिनिधि आये थे, यह विशेष ध्यान आकृष्ट करनेवाली बात थी। अिग्लैण्ड व फ्रान्ससे चार-चार आये, ये अपेक्षासे कम नही थे। लकाने तीन भेजे थे, यह अुसके लिअे शोभाकी बात थी।

दूसरे ढगसे जाचे तो अिन करीब सौ गैर-जापानी प्रतिनिधियोमें से सोलह तो अलग-अलग धर्मोके प्रतिनिधि थे। चौदह थे लेखक व पत्रकार, दस थे समाज-सेवक। शातिकार्यको ही जिन्होने अपना जीवन अर्पण किया है अैसे आठ प्रतिनिधि थे। खास ध्यान खीचनेवाली आठकी सख्या थी — विज्ञान-शास्त्रियोकी। मजदूर-दलके नौ थे, जब कि व्यापारियोके प्रतिनिधि कुल तीन थे। डॉक्टरोमे से सात थे, तो वकीलोमे से दो। थोडे-बहुत कुछ और भी थे। विदेशोसे आनेवालोमें स्त्रियोकी पद्रहकी सख्या नगण्य नही कही जा सकती।

सम्मेलनका सबसे पहला खुला अधिवेशन (Plenary session) आज १२ अगस्तको सवेरे साढे नौ बजे शुरू हुआ। समय-समय पर अध्यक्षका काम करनेके लिअे अिकहत्तर सदस्योको चुना गया था। अुनमें छत्तीस जापानी थे और पैंतीस बाहरके थे।

आज तो सदेश-वाचन और प्रास्ताविक भाषण — यही दो मुख्य काम थे। अुसके बाद सारी परिषद्के पाच विभाग किये गये। आये हुअे लोगोको नीचेके दलोमें बाटा गया स्त्रियोका मण्डल, धार्मिकोका मण्डल, विद्यार्थियोका मडल, युवकोका मण्डल, अेटम-बमसे पीडित लोगोका मडल, नगरपालिकाओका मडल, व्यापारियोका व कारखानेवालोका मडल और मजदूरोका मडल।

आज सुबह दस बजे कार्य शुरू हुआ। हम विदेशसे आये हुअे प्रतिनिधि अपने-अपने दलके अनुसार नियत किये गये स्थान पर बैठे। प्रत्येक भाषणका अंग्रेजी अनुवाद कान पर चढाओी हुओी बिजलीकी प्रणालीके द्वारा बराबर सुनाओी देता था। लेकिन अगर कोओी प्रतिनिधि सूत्र अंग्रेजीमें बोलने लगता तो अुसका भाषण हमारी प्रणालीमें सुनाओी नहीं देता था।

लोगोंके चेहरे मुझे याद नहीं रहते। यह कठिनाओी भारतमें जितना तंग करती है अुससे अपेक्षा विदेशमें और भी अधिक तंग करती है। अमुक चेहरा जापानी नहीं है, यूरोपीय है अितना ही पहचाना जाता था। यूरोपीय और अमरीकीके बीच तो भेद होता ही नहीं। जिनके साथ दो दिन पहले विस्तारसे खूब चर्चा की हो और अुनके दृष्टिकोणकी कदर भी की हो, वही सज्जन फिरसे मिलें और अुन्हें मैं पहचान न सकूं तब बड़ी ही परेशानी महसूस होती है। और फिर लज्जाके कारण किसीसे मिलनेका अुत्साह भी नहीं रहता।

होना चाहिये। लेकिन मुझे वैसा नही होता। भगवान जिस परिस्थितिमें रखे वह स्थिति केवल लाचारीसे स्वीकार करू — अैसा अरसिक भी मैं नही हू। भगवानके लीला-नाटकका यह भी अेक अुतना ही रसपूर्ण अक है यह मैं जानता हू। अिसलिअे अिस नअी अुत्पन्न हुअी अलिप्तताका स्वागत करनेके लिअे मन तैयार हो गया है। दूसरा अेक और भी कारण है। चितन द्वारा हो या अुत्कट महानुभति द्वारा हो, पर अमुक वातावरणमें पहुचनेके बाद वहाका मुख्य मानस मैं विल्कुल सही पकड सकता हूं। अिसलिअे हवासे ही मुझे जो चाहिये वह सब मिल जाता है। अिस कारण भी मन भरा-भरा और सन्तुष्ट रहता है।

परिपद्‌के जो पाच विभाग अथवा कमीशन तय हुअे हैं अुसमें से मैंने धार्मिक कमीशनमें जाना पसन्द किया है। मुझसे कहा गया है कि वहा मुझे अध्यक्षके नाते पाच-दस मिनट बोलना पडेगा। हम अग्रेजीमें बोलें तो अुसका जापानी अनुवाद करनेवाले भाअी या बहन जो पास हो वे बराबर समझ सके अितनी धीमी गतिसे बोलना होता है। अेक वाक्यका अनुवाद पूरा हो जाने पर दूसरा बोला जाता है। अिसमें लाभ यह है कि हमें विचार करनेका समय मिल जाता है। भापा मनमें व्यवस्थित बैठ सकती है और सुननेवालेको भी सुनी हुअी बात समझकर अुस पर चितन करनेका मौका मिलता है। अेक-अेक वाक्य यानी अेक-अेक मुद्दा। बेकारका विस्तार करनेके लिअे अवकाश नही रहता। चिल्ला-चिल्लाकर लम्बी वक्तृता झाडनेवाले लोगोको अनुभव होता है कि अुसका यहा बिलकुल भी अुपयोग नही है।

डॉ० जैक्स (Dr Jacks), सुन्दरलालजी वगैरा अिसी विभागमें थे। ये विभाग चर्चाके लिअे टोकियोमें अलग-अलग जगह भिन्न-भिन्न मकानोमें अिकट्ठे होते थे। अिस तरह तीन दिन अलग-अलग बैठकर आखिरी दो दिन फिरसे टोकियो जिमनेशियममें अेकत्र होनेका कार्यक्रम है।

विराट सम्मेलनके प्रारम्भमें अेक अिटेलियन बहन अध्यक्षके पद पर थी। अुसके बाद श्रीमती रामेश्वरीजीने यह स्थान लिया। अुन्हे जब कही और जाना पडा तब अेक भाअी अध्यक्ष हुअे।

दोपहरको रामेश्वरीजीने सब भारतीय प्रतिनिधियोंको विचार-विनिमय करनेके लिअे अपने होटलमें बुलाया था। खाते-खाते सब बातें हुअीं। शाकाहारी लोगोंको खिलानेकी व्यवस्था अच्छी नहीं थी। फिर भी मुझे प्रतिव्यक्ति चार सौ येन खर्च करने पड़े।

दोपहरके कार्यक्रममें विशेष रस नहीं आया। शामको सवा सात बजे टोकियोके गवर्नर श्री सेअी ओचीरो यासुअीकी ओरसे फुकागावा महलमें विदेशके सब प्रतिनिधियोंको खानेका निमंत्रण था। भोजनके बाद जापानी नृत्य व संगीतका सुन्दर कार्यक्रम था। सब सदस्योंको परिषद्के स्थानसे फुकागावा तक अनेक बसोंमें बिठाकर ले गये। अन्तर अितना अधिक था कि बसके सफरमें भी करीब अेक घंटा लगा। जिस तरह हम टोकियोका काफी बड़ा भाग और अुसके रंग-बिरंगे दीये अच्छी तरह देख सके। सभी कुछ देखनेमें आनन्द आता था, अिसलिअे अूबनेकी तो नौबत ही नहीं आअी।

गवर्नरके यहांका भोजन सुन्दर था। अुसमें शाकाहारकी वानगियां कौनसी हैं यह पूछकर अथवा ढूंढकर लेनी थीं। खाते-खाते लोगोंके साथ बात भी करनी थी। 'बूफे' भोजन-व्यवस्थाका अेक लाभ यह है कि अेक जगह बैठा नहीं जाता और घूमते-फिरते खाना खानेसे आदमी अनेक लोगोंके साथ बात कर सकता है।

होना चाहिये। लेकिन मुझे वैसा नहीं होता। भगवान जिस परिस्थितिमें रखे वह स्थिति केवल लाचारीसे स्वीकार करूं — ऐसा अरसिक भी मैं नही हू। भगवानके लीला-नाटकका यह भी अेक अुतना ही रसपूर्ण अंक है यह मै जानता हू। अिसलिअे अिस नअी अुत्पन्न हुअी अलिप्तताका स्वागत करनेके लिअे मन तैयार हो गया है। दूसरा अेक और भी कारण है। चिंतन द्वारा हो या अुत्कट महानुभूति द्वारा हो, पर अमुक वातावरणमें पहुचनेके बाद वहाका मुख्य मानस मैं बिल्कुल सही पकड सकता हूं। अिसलिअे हवासे ही मुझे जो चाहिये वह सब मिल जाता है। अिस कारण भी मन भरा-भरा और सन्तुष्ट रहता है।

परिषद्के जो पाच विभाग अथवा कमीशन तय हुअे है अुसमें से मैंने धार्मिक कमीशनमें जाना पसन्द किया है। मुझसे कहा गया है कि वहा मुझे अध्यक्षके नाते पाच-दस मिनट बोलना पडेगा। हम अंग्रेजीमें बोलें तो अुसका जापानी अनुवाद करनेवाले भाअी या बहन जो पास हो वे बराबर समझ सकें अितनी धीमी गतिसे बोलना होता है। अेक वाक्यका अनुवाद पूरा हो जाने पर दूसरा बोला जाता है। अिससे लाभ यह है कि हमें विचार करनेका समय मिल जाता है। भाषा मनमें व्यवस्थित बैठ सकती है और सुननेवालेको भी सुनी हुअी बात समझकर अुस पर चिंतन करनेका मौका मिलता है। अेक-अेक वाक्य यानी अेक-अेक मुद्दा। बेकारका विस्तार करनेके लिअे अवकाश नही रहता। चिल्ला-चिल्लाकर लम्बी वक्तृता झाडनेवाले लोगोको अनुभव होता है कि अुसका यहा बिलकुल भी अुपयोग नही है।

डॉ० जैक्स (Dr Jacks), सुन्दरलालजी वगैरा अिसी विभागमें थे। ये विभाग चर्चाके लिअे टोकियोमें अलग-अलग जगह भिन्न-भिन्न मकानोमें अिकट्ठे होते थे। अिस तरह तीन दिन अलग-अलग बैठकर आखिरी दो दिन फिरसे टोकियो जिमनेशियममें अेकत्र होनेका कार्यक्रम है।

विराट सम्मेलनके प्रारम्भमें अेक अिटेलियन बहन अध्यक्षके पद पर थी। अुसके बाद श्रीमती रामेश्वरीजीने यह स्थान लिया। अुन्हें जब कही और जाना पडा तब अेक भाअी अध्यक्ष हुअे।

दोपहरको रामेश्वरीजीने सब भारतीय प्रतिनिधियोको विचार-विनिमय करनेके लिअे अपने होटलमें बुलाया था। खाते-खाते सब बातें हुअी। शाकाहारी लोगोको खिलानेकी व्यवस्था अच्छी नही थी। फिर भी मुझे प्रतिव्यक्ति चार सौ येन खर्च करने पडे!

दोपहरके कार्यक्रममें विशेष रस नही आया। शामको सवा सात बजे टोकियोके गवर्नर श्री सेअी ओीचोरो यासुअीकी ओरसे फुकागावा महलमें विदेशके सब प्रतिनिधियोको खानेका निमत्रण था। भोजनके बाद जापानी नृत्य व सगीतका सुन्दर कार्यक्रम था। सब सदस्योको परिषद्के स्थानसे फुकागावा तक अनेक बसोमें बिठाकर ले गये। अन्तर अितना अधिक था कि बसके सफरमें भी करीब अेक घटा लगा। अिस तरह हम टोकियोका बाकी बडा भाग और अुसके रग-बिरगे दीये अच्छी तरह देख सके। सभी कुछ देखनेमें आनन्द आता था, अिसलिअे अूबनेकी तो नौबत ही नही आअी।

गवर्नरके यहाका भोजन सुन्दर था। अुसमें शाकाहारकी बानगिया कौनसी है यह पूछकर अथवा ढूढकर लेनी थी। खाते-खाते लोगोके साथ बातें भी करनी थी। 'बूफे' भोजन-व्यवस्थाका अेक लाभ यह है कि अन्न जूठनमें बेकार नही जाता और घूमते-फिरते खाना खानेसे आदमी अधिक लोगोके साथ बातें कर सकता है।

भोजनके बाद नृत्यके और अभिनयके जो कार्यक्रम हुअे। वे सचमुच निप्पोनकी कलाके अुत्कृष्ट नमूने थे। तीन वर्ष पहले हमने कोबेसे क्योटो जाकर डोरेमिको थियेटरमें जो नृत्य देखे थे वे बडे पैमाने पर थे। वहा गेशा नर्त्तिकाओने मुह पर अितना अधिक रग लगाया था कि अुन चमकते चेहरो पर भावोके प्रदर्शनका सवाल ही न अुठता था। नर्त्तिकाअें हाथ-पैरके सचालनसे और कपडे व पखोके द्वारा ही भाव व्यक्त करती थी, क्योकि अुस नृत्यका व्याकरण 'पपेट शो' जैसा ही था।

यहाके नृत्यमें होठ, आख और चेहरे सब पर तरह-तरहके भाव अुभर रहे थे। अेक नर्त्तिकाने तो बहुत ही सुन्दर भावपूर्ण नृत्य किया। प्रेक्षकोने अुनका तालियोसे स्वागत किया। अुसने अुस सत्कारको अैसे सुन्दर-मधुर स्मितसे स्वीकार किया कि वह स्वीकृति ही भावप्रदर्शनका

अेक अुत्कृष्ट नमूना साबित हुअी। यहाके अिस कार्यक्रमकी पृष्ठभूमि बिलकुल सादी थी, लेकिन नृत्यके प्रकार क्योटोसे हजार गुने अधिक अच्छे थे। क्योटोके थियेटरमे रगभूमिकी खूबीमें विज्ञानका पूरे तौरसे अुपयोग किया हुआ था। वहा पर्देके पीछेके प्रकाशके द्वारा और मचकी सजावटके द्वारा शरद्, हेमन्त व वसन्त आदि ऋतुओंकी शोभा अेकके बाद अेक अप्रतिम तरीकेसे दिखाअी गअी थी। समुद्रका विस्तार, अुसमें अेकाअेक अुठा हुआ तूफान, घबडाअी हुअी मछलिया और सब शात होने पर स्थापित अद्भुत शाति — यह सब देखकर हम बहुत ही खुश हुअे थे। अुसमें साकुरा (चेरी) पुष्पोकी और मोमो (पीच) पुष्पोकी बहार भी कितनी सुन्दर थी! यहा गवर्नरके यहा तो रगभूमि जैसा कुछ था ही नही। नर्त्तिकाअें और नर्त्तक अपने हाव-भाव और कपडोकी शोभा पर ही सारा आधार रखते थे।

नर्त्तिकाओंके सिर पर जो लाल रगका मुकुट था, अुसे मैने मशरूमके सिरकी अुपमा दी। वह रेवतीको जरा भी अच्छी नही लगी। वह कहने लगी, “अितने सुन्दर शृगारको आप कैसी अुपमा दे रहे है?” मैंने कहा, “हीनोपमाका दोष मै स्वीकार करता हू, लेकिन यह बताओ कि अुपमा सोलह आने सही बैठती है या नही। आकार हूबहू मशरूम जैसा ही है न?”

अुसके बाद अैसे अनेक मुकुट अेक रस्सीमें बाधकर अिधर-अुधर फेंकनेका कार्यक्रम हुआ। फिर रगीन कागजोकी लम्बी-लम्बी सर्पाकृति-वाली डोरिया अिधर-अुधर अुछाली गअी। अुनकी सुन्दरताका किन शब्दोमें वर्णन करू? हम तो अवाक् होकर देखते ही रहे। सगीत भी अुत्कृष्ट था। सारा कार्यक्रम पूरा होने पर स्वागतवाले अधिकारियोंसे विदा लेकर हम जिस तरह आये थे अुसी तरह फिरसे बसमे बैठकर दस बजे घर लौटे।

घर आते ही तुम्हारे सात पत्र अेक साथ मिले! दावत पर दावत रही। चि० रेवतीके लिअे बालके तीन पत्र है! अिसलिअे वह भी खिल गअी है। अब तो पहले पत्र पढेंगे। सुनिशम्!

२९

विश्व-सम्मेलन और अुसके पश्चात्

टोकियो,
१३-८-'५७

कल रातको तुम्हारे तथा चि० बालके पत्र पढते-पढते जरा देर हुअी। तुम्हारे आखिरी पत्र पर थाअीलैंडके टिकिट और बैंगकॉककी छाप देखकर बडा ही आश्चर्य हुआ। हम चीन नही जानेवाले हैं अैसा मेरे आखिरी पत्रसे अनुमान करके तुम कही हमें बैंगकॉक तक लेने तो नही आ गअी? अैसा विचार — भले विनोदमें ही सही — मनमे अेक क्षणके लिअे तो आ ही गया। पत्र खोलने पर मालूम हुआ कि डाककी हडतालके कारण बम्बअीसे पत्र जानेमें कही देर न हो अिस डरसे तुम्हे बैंगकॉक जानेवाले अेक भाअीके हाथ ये पत्र भेजनेकी सूझी।

सुबह वक्तमे तयार होकर हम साढे आठ बजे 'नाकानो' नामक सार्वजनिक हालमें पहुचे। वहा हमारी अिस परिषद्के धार्मिको (Religionists) की विभागीय परिषद् थी। 'रिलिजनिस्ट' यह कोअी बहुत अच्छा शब्द नहीं है। लेकिन निप्पोनमें अिसीका अुपयोग होता है, अिसलिअे मैंने अिसका अनुवाद 'धार्मिक' शब्दसे किया है। अिसके अध्यक्षके तौर पर मैं पाच-सात मिनट बोला। मैंने कहा "अेक वक्त था जब समाजमें धर्मका बोलबाला था। अब यह स्थान विज्ञानने ले लिया है। विज्ञानका परिणाम स्पष्ट दिखाअी देता है। यह तत्त्व बडा ही समर्थ है। अिसके मुकाबिलेमें आज धर्म फीके, सकुचित मनके और निस्तेज दिखाअी देते हैं। विज्ञानकी सहायतासे दुनिया अेटम-बम तक आ पहुची है। अिससे मनुष्य-जातिका अस्तित्व ही खतरेमें पड गया है। अब धर्मोंको अपनी नैतिक शक्तिका अुपयोग करके दुनियाको बचाना चाहिये। धर्म दुनियाकी अिस प्रकारकी सेवा कर सके अुससे पहले अुन्हे अपनी ही सेवा यानी आत्मशुद्धि करनी चाहिये।

"धर्मके ठेकेदार धर्मके प्राणकी अपेक्षा करके धर्मके बाह्य आकारको अधिक महत्त्व देने लगे हैं और भीतर ही भीतर लड-झगडकर हमीके पात्र बनते जा रहे हैं।

"पश्चिमकी प्रतिष्ठाके कारण ओीसाओी धर्मकी प्रतिष्ठा भी खूब बढी। अुसके मिशनरी दुनियामें सब जगह फैल गये। साम्राज्यशाहीके हस्तक बनकर अुन्होंने अपनी कीमती सेवाका महत्त्व घटा लिया। अब हम कहने लगे हैं कि ओीसाओी धर्मकी कसौटी हो चुकी। यह धर्म हीन-सत्त्व साबित हुआ है। अैसी टीका करनेवालोंको विचार करना चाहिये कि दूसरे कौनसे धर्म पूरे खरे अुतरे हैं। अब तो सभी धर्मोंको अन्तर्मुख होकर आत्मशुद्धि करनी चाहिये और धर्मतेज प्रगट करके दुनियाको विज्ञानका सदुपयोग करनेकी बात समझानी चाहिये। अिसके लिअे धर्मके ठेकेदारोंको अेक ओर हटाकर धर्मको संकुचिततासे बचाना चाहिये।

"आज हम अणु-बमके प्रयोगको व अुपयोगको जरूर बुरा कहें, युद्धके द्वारा मनुष्यका कल्याण नहीं होनेवाला है, अिसकी भी घोषणा करें। यह सब जरूरी है। लेकिन हमारा मुख्य कार्य धार्मिक विधि और रूढियोंमें फंसे हुअे धर्मके प्राणको बचाना है। तभी सब धर्मोंके बीच सहकार हो सकेगा और धर्म समाजके जीवन पर अच्छा प्रभाव डाल सकेंगे।"

मेरे बाद जो अेक दो जापानी बोले, अुन्हें मेरा भाषण बहुत पसन्द आया। मैं नहीं मानता कि परिषद्के मुख्य संचालकोंको मेरा रुख अच्छा लगा होगा। अणु-शस्त्रोंके विरुद्ध बोलने और अधिकसे अधिक युद्धके विरुद्ध बोलनेके अतिरिक्त प्रत्यक्ष कुछ करनेकी अथवा आत्मशुद्धिकी बात करें तो वह अुन्हें पसन्द नहीं आती।

जरा थकान महसूस हो रही थी अिसलिअे दोपहरको मैंने परि-षद्में जाना मुलतवी रखा। अुसके बदले पत्र लिखे और अखबारवालोंको मुलाकात दी। अिसमें अेक बात लिखने योग्य है। पिछला महायुद्ध शुरू हुआ तब मारुयामाजी आश्रम-जीवनका अनुभव लेनेके लिअे सेवाग्राममें बापूजीके पास आकर रहे थे। युद्ध शुरू होता है तब सरकार शत्रुपक्षके लोगोंको देशमें आजाद नहीं रहने देती। अुन्हें या तो लश्करी जेल

(Concentration Camp) मे वद कर देती है अथवा देश-निकाला दे देती है। अिस नियमके अनुसार भारतकी अंग्रेज सरकारने मारुयामाजीको पहले तो जेलमे वन्द किया और फिर देशके बाहर भेज दिया। अिस वात परसे कुछ जापानी अखबारवाले मुझे पूछने लगे कि भारतके स्वातत्र्य-सग्राममे मारुयामा-सानका कितना हिस्सा था? मैंने अुन्हे अूपरकी तफसील दी और कहा कि मै तो अितना ही जानता हू। अिसके अलावा कुछ और हो तो मारुयामाजीसे ही पूछिये।

१४–८–'५७

तीन-चार दिनसे चि० रेवती यहीसे स्वदेश वापस जानेकी वातें कर रही थी। मैंने अुस वातको महत्त्व नही दिया। परसो जब वालके पत्र आये तव मैंने मान लिया था कि अव वह वापस जानेकी वात भूल जायगी। लेकिन देखता हू कि पत्रोका तो अुलटा ही असर हुआ है और अुसका तुरन्त घर जानेका आग्रह वढ गया है। मैंने अुसे अपना अभिप्राय वताया कि "अितनी दूर अितना खर्च करके आने पर अुसका पूरा लाभ न अुठाना और लौटनेकी अुतावली करना अुचित नही है। मेरी अिजाजत ही जरूरी हो तो वह मिलनेवाली नही है। लेकिन तुम्हे मै रोकूगा नही। जाना हो तो खुशीसे जा सकती हो, मै सव सुविधा कर दूगा। निप्पोन तो चाहे जव फिरसे आया जा सकता है, किन्तु चीनमें घूमने और देखनेका अैसा मौका आसानीसे नही मिलेगा। अिसलिअे दो-तीन दिन ठीक विचार करके जो निर्णय करना हो सो कर लो।" मेरा अैसा तटस्थ रुख देखकर वह दुविधामे पड गअी। मैंने अपना रुख तो नही वदला, लेकिन वह प्रसन्न रहे अिसके लिअे अुसकी ओर अधिक ध्यान देना तय किया है।

आज मै राष्ट्रोके वीचका वैरभाव और अुनकी तनातनी कैसे दूर हो (Reduction of tensions between nations) अुसका विचार करनेवाली समितिमे जाकर वैठा। निप्पोनी भाषणोका अंग्रेजी अनुवाद करनेवाला अेक जापानी युवक मेरे पास ही वैठा था। अुसी काममें मदद करनेवाली अेक जापानी वहन भी वही चाय पीती हुअी काम कर रही थी। अनुवादक महोदय चतुर दिखाअी दिये। जापानीका अधूरा वाक्य सुनते ही

असका अग्रेजी अनुवाद माअिक (ध्वनि-विस्तारक यत्र) में बोल जाते थे। फिर जब वाक्य पूरा होता था तब बडी कुशलतासे अग्रेजी वाक्य भी पूरा करते थे। विस्तारको काट-छाटकर मतलबकी बातें थोडेसे शब्दोंमें कहना और वक्ताकी गतिके साथ मेल रखना जिस खूबीको वे निपुणतासे निभा रहे थे।

आज मजु व रेवती परिषद्में आनेके बदले हमारे दूतावासके प्रथम मत्री श्री हेजमाडीके यहा अुनकी पत्नीसे मिलने गअी है। हेजमाडीकी पत्नी सगुणा रेवतीकी सहेली हे। तीनों मिलकर बाजार गअी और अच्छी-अच्छी चीजे खरीद लाअी। अुसके बाद श्री हेजमाडी मुझे मिलने आये। और रातको अपने यहा खानेका निमत्रण दे गये।

दोपहरको अखबारवाले आये थे। अुन्होने बहुतसे महत्त्वके प्रश्न पूछे। मैने अुन्हे विस्तारसे जवाब दिया।

शामको हम टोकियोका विश्वविख्यात बाजार — गिजा देखने गये। बबअीमें जैसे फोर्टका विस्तार हे, दिल्लीमें जैसे कनाट सर्कस हे, अुसी तरह टोकियोका यह गिजा है। रातको हरअेक दुकानमें नीचेसे अूपर तक रग-बिरगे दियोकी अेकसी दीवाली पूरे वर्ष रहती है। निप्पोनका पूरा वैभव अिस अेक बाजारमें दिखाअी दे जाता हे। धनवान लोग, रसिक लोग, विलासी लोग और अुस-अुस क्षेत्रके मर्मज्ञ यहा अिधर-अुधर घूमते हुअे देखे जा सकते है। यह सारा ठाठ-बाट कलायुक्त ढगसे फैला-हुआ देखकर मनुष्यका दिमाग चकरा जाय तो कोअी आश्चर्य नही। सब जगह पैदल घूमकर यह महोत्सव देखा और वहासे हम श्री हेजमाडीके यहा खाना खाने गये।

सगुणा बहनने हमारे साथ हमारे मेजबान मारुयामाजी और तास्से, अिन दोनोको भी भोजनके लिअे बुलाया था। शीमाओजी किसी कामसे दूसरी जगह गये थे। सगुणा बहन कला-रसिक और स्वत कलाकार है। अुनकी कसीदाकारी व चित्रकारी तो सुन्दर थी ही, लेकिन अुन्होने अेक जापानी ढगकी गुडिया भी बनायी थी। वह अितनी सुन्दर बनी थी कि जापानी भी अुसकी सराहना करे। गुडियोको जापानी पोशाक पहनाना कोअी सरल कार्य नही है। अुसमे बहुतसी बातोका ध्यान रखना पडता है।

स्वदेशी ढगका भोजन विदेशमे अेक वडे ही सुख व आनन्दका विषय होता हे। श्री हेजमाडीने मिस्र, अिण्डोनेशिया वगैरा दो-चार देशोके प्रतिनिधियोको भी खानेके लिअे वुलाया था। अिसलिअे खानेसे पहले और वादमे भी वातोका खूव रग जमा। मिस्रके दूतावासके श्री सेल्विन और श्रीमती सेल्विनके साथ मेरी महत्त्वपूर्ण वाते हुअी। विचारोके लेन-देनमें अुन दोनोको खूव रस आया।

वर्माके अुस पारकी दुनियाके विषयमे हम वहुत ही थोडा जानते है। अुन लोगोका जीवन, अुनका मानस, अुनकी समस्याअें — अिनमें से हमारे लोग कुछ भी नही जानते, यह वहुत वडी कमी हे। चि० सतीश अिन लोगोके देशमे दो वर्ष रह आया है अिसलिअे वह वहुत कुछ जानता है। यूरोपके लोग अुनके अपने महाद्वीपके लोगोके विषयमे परस्पर जितना जानते है अुतना भी यदि हम अेशियावासी अेक-दूसरेके देशोके विषयमे न जानें, तो अेशियाकी आत्मा किस प्रकार प्रकट होगी?

हमारे साथ आये हुअे मारुयामा और तास्सेकी हेजमाडीके अरविन्दके साथ देखते ही देखते दोस्ती हो गअी। वे आपसमें जापानीमें वोलने लगे। वातें करते हुअे वे पासके अेक कमरेमें टेलीविज़न देखनेमे तल्लीन हो गये। तास्सेको टेलीविज़न देखनेका वडा ही शौक है।

गिजा जाते समय हम भूगर्भ-रेलगाडीमें वैठे थे, यह लिखना तो मै भूल ही गया। लन्दनमें हम अैसी ही रेलगाडीमें वैठे थे, लेकिन अुससे मुझे जापानकी यह भूगर्भ-रेल अधिक अच्छी लगी। यहाके स्टेशन भी वडे शानदार है।

जापानी गुडियाके विषयमें मैने लिखा ही है। गुडिया अिस देशकी विशेषता है। होक्कायडोसे नागासाकी तक जहा-जहा हम गये, शहरोंमें या गावोमे, वहा हर घरमें तरह-तरहकी छोटी-वडी सुन्दर गुडिया होती ही थी। अेक दिन मैने अपने गृहपतिसे कहा कि निप्पोनमें जमीन थोडी है और जनसख्या अधिक, यह वात सच है। लेकिन यदि निप्पोनकी तमाम गुडियोकी गणना की जाय तो मनुष्योकी सख्यासे अुनकी सख्या दस-वीस गुनी अधिक निकलेगी। कुदरत मनुष्यको वनाती है और मनुष्य अपनी कला आजमाकर तरह-तरहकी गुडिया वनाता है। यह अच्छी होड है।

१५-८-'५७

आज सुबह परिषद्में पहले दो दिन अलग-अलग विभागोंमें जो काम हुअे अुनका ब्यौरा दिया गया। यह सब सुननेमें दोपहरका अेक बज गया। खाना खाकर हम लोग किताबें खरीदने निकले। निप्पोनके विषयमें अंग्रेजीमें अुपलब्ध साहित्य देखा। विदेशियोंकी लिखी हुअी बहुत-सी किताबें यहांके बाजारमें नहीं मिलतीं। देशाटनके रसिक सरकार-यात्रियोंको रुचिकर हों अैसी ही पुस्तकें यहां थीं। रेवती व मंजुको पुष्प-रचनाकी कला व घरके कमरे सजानेके विषयकी ही खास किताबें चाहिये थीं। तीन वर्ष पहले खरीदी गअी किताबोंमें से मैं बहुत कम पढ़ सका था। अिसलिअे अिस बार अधिक खरीदनेका मन नहीं था। फिर भी प्रवास, साहित्य और भाषाके विषयकी साठ-सत्तर रुपयोंकी किताबें तो खरीद ही लीं। ये किताबें खरीदते वक्त अेक अनुभव मिला। अिन किताबोंमें से अेक किताब अूपरसे कुछ खराब थी। अुनके पास अुसकी दूसरी प्रति नहीं थी। मैंने कहा कि "कोअी बात नहीं, जैसी है वैसी ही दे दें।" अुन लोगोंने साफ मना कर दिया। अुन्होंने कहा "कल तक अिसकी अच्छी प्रति हम आपको पहुंचा देंगे। अैसी मैली-कुचैली किताब हम आपके देशमें कैसे जाने दें?"

अपने बचपनमें मैंने जापानियोंके बारेमें काफी भला-बुरा सुना था 'बतायेंगे अेक माल भेजेंगे दूसरा' वगैरा-वगैरा। अुस समयकी यह टीका या तो गलत होगी अथवा अुस बदनामीको धो डालनेका अिस देशने निश्चय किया होगा। चाहे जो हो, दोनों बारकी यात्राओंमें अिन लोगोंके विषयमें हमारा अनुभव हर तरहसे अच्छा ही रहा।

रातको हम निप्पोनका प्रख्यात काबूकी शैलीका नाटक देखने गये। यह नाट्य-प्रकार मूलत चीनका है। जापानी वहांसे अिसे लाये व अिसमें अपने ढंगसे हेर-फेर करके अिसे राष्ट्रीय रूप दिया। ये नाटक पुराने ढंगके होने पर भी बड़े लोकप्रिय हैं।

हमने नाटक देखना तो तय किया, लेकिन अुसमें अेक दिक्कत खड़ी हुअी। आज भारतका 'स्वतंत्रता-दिवस' है। अिसलिअे आज हमारे प्रतिनिधि-मण्डलने जापानी मेहमानोंको आमंत्रित करके यह अुत्सव

मनाना तय किया। विदेशमें अैसे अुत्सवोंमें भाग लेना और भी महत्त्व-पूर्ण होता है। अिसलिअे अुसे टाला नही जा सकता। दोनोंमें से किसे अधिक महत्त्व दिया जाय? हमने दोनोको ही साधनेका निश्चय किया। काबूकी नाटक खासा चार-साढे चार घटे चलता है। बहुतसे लोग बीचमें ही पासके ढाबेमें जाकर खाना खा आते है और फिर वापस आकर आगेका नाटक देखते है। हमने थोडी देर नाटक देखा और फिर स्वतत्रता-दिवसके अुत्सवमें गये। वहा मुझे बोलना था। स्वातत्र्य-गीत गानेमे रेवती और मजुने भाग लिया। यह अुत्सव अच्छी तरह पूरा करके हम फिरसे नाटकमें पहुचे। खाना भी हमने नाटच-गृहके भोजनालयमें ही खाया।

स्वतत्रता-दिवसके अुत्सवमे मैंने अपने छोटेसे भाषणमें आजादीका अितिहास बताया। अुसमें १९०५ के रूसी-जापानी युद्धका अेशिया पर कैसा अच्छा असर हुआ और अुस समयके हम युवकोको अुससे कैसी प्रेरणा मिली, अिसका भी मैंने अुल्लेख किया। भारतकी पताकाका विश्व-सदेश भी मैंने थोडेमे समझाया। हमारा श्वेत रग विश्वशान्तिका प्रतीक है। अुसके अूपरका अशोक-चक्र न्याय, सदाचार व बन्धुत्वका धर्मचक्र है और अभयदानका द्योतक भी है, आदि कुछ बाते मैंने वहा स्पष्ट की।

चार घटेके नाटकके विषयमें थोडेमे लिखना मुश्किल है। पुरुषका पार्ट स्त्रीको देनेसे अभिनयमें जरूरतसे ज्यादा कोमलता आ जाती है। और रसभग भी होता है। यह कठिनाअी दूर करनेके लिअे और अिस परिस्थितिसे भी लाभ अुठानेके लिअे अिस ओरके नाटककार कभी-कभी नाटकमें प्रसग ही अैसा अुपस्थित करते है कि यह सब स्वाभाविक मालूम हो। अुदाहरणके लिअे, कोअी लडकी पुरुष-वेषमें किसी मठमें दाखिल हुअी। अुसने तपस्या शुरू की। अेक बार अुसे जानकी जोखिम भी अुठानी पडी। अुसमें अुसने अमुक बहादुरी भी दिखाअी। अन्तमें लोगोंके सामने वह अपने असली स्त्री-रूपमें प्रकट हुअी, वगैरा। अैसे कथानकमे कोअी लडकी पुरुषका वेष बनाये, यह सब तरहसे अुचित जान पडता है। अिससे रसभग होनेके बदले रसका अुत्कर्ष ही होता है। हमारे देखे हुअे नाटकमें विषादका वातावरण कुछ अधिक था।

नाट्य-गृहका रगमच तो हमारे यहाके रगमचोसे तीन गुना अधिक बडा होगा। अेक बार तो सारे रगमचको ही गोल घुमाकर पीछेका हिस्सा आगे लाया गया था। दिन अथवा रात, मदिर, मठ या श्मशान और भिन्न भिन्न अृतुओमे कुदरतकी बदलती हुअी शोभा आदि सभी चीजें अुच्च अभिरुचिके साथ हूबहू दिखाअी गअी थी। अभिनय-कला सुन्दर थी। साथियोने बताया कि बीचमे अुठकर आपने अेक सुन्दर दृश्य खोया। खैर, हमने तो जो देखा अुसीसे हमे बहुत सतोष हुआ। हमें केवल जापानी कलाके कुछ नमूने ही देखने थे।

अब तो जापान छोडनेके दिन नजदीक आ रहे है। अितने दिन जिनके साथ बिताये, अुनसे अेक बार तो अलग होना ही होगा। बादमे न मालूम फिर कब मिलें! मिलेंगे यह अुम्मीद भी कैसे रखें? —अिस तरहके मिश्रभाव मनमें अुठने लगे है।

३०

विदा

टोकियो,
१६-८-'५७

कितना अजीब और दुखदायी! अिस बार जब निप्पोनकी यात्राके लिअे निकला तब भारतन् कुमारप्पा गये और अब यह प्रवास पूरा कर रहा हू तब देवदास गाधीके मृत्युके समाचार मिले! प्रथम तो समाचार अुडते-अुडते ही सुने। किसी तरह भी विश्वास नही होता था। हालमें ही तो वे मिले थे। अुनकी लडकीके विवाहमें हमने अुन्हे देखा था। ताराका अभिनन्दन किया था। वही राजाजीके साथ बाते हुअी थी। देवदासने खुद बडे आग्रहसे हमें मिठाअी खिलाअी थी और आज अुनके जानेके समाचार सुन रहा हू!

देवदास बीमारीमे मद्रास जरूर गये थे, लेकिन अुसके बाद तो अच्छे होकर अुन्होने कामकाज सभाल लिया था और बडे अुत्साहसे सब काम करते थे।

अशुभ समाचार सुने और अेकदम १९१५ मे शातिनिकेतनमें वालक देवदासको मै पहले-पहल मिला था अुस समयका अुनका सारा जीवन आखोके सामने घूम गया। कविवर रवीन्द्रकी शिक्षण-सस्थाको केवल वाहरसे नही वल्कि अन्दर रहकर देखनेके हेतुसे मै वहा गया था। गाधीजीके फिनिक्स सेटलमेटवाले कुटुम्वियोके साथ मै वहा अनायास ही घुल-मिल गया था। अुस व्यापक कुटुम्वमें गाधीजीके तीन पुत्र मणिलाल, रामदास और देवदास भी थे। श्री मगनलाल गाधी अुस परिवारके प्रमुख व्यक्ति थे। अितनी छोटी अुमरमे भी देवदासकी तेजस्विता और तत्त्वनिष्ठा निखर पडती थी। अुस समय भी प्रभुदास, केशू और कृष्णदास देवदाससे प्रेरणा लेते थे। सव वुजुर्गोकी आज्ञा पालन करने पर भी देवदास अपनी स्वतन्त्रता नही खोते थे। वे श्री अेन्ड्रूज़ व पियर्सनसे जितना मिल सके अुतना ग्रहण कर लेते थे। देवदासके गुलावी चेहरेसे और अुनकी आखोकी खुमारीसे मै कल्पना कर सकता था कि वापूजी अपनी युवावस्थामें कैसे दिखाअी देते होगे। वादमे जव वापूजीने अहमदावादमें आश्रम खोला और मै वहा रहने गया तव देवदासको मै सस्कृत पढाता था। पूज्य वापूजीके सिद्धान्तोका और अुनके आग्रही स्वभावका देवदासको वचपनसे ही परिचय होनेके कारण अुन्हें हर वातका स्पष्टीकरण करनेकी आदत थी। अेक दिन अुन्होने आश्रमकी सभामें कहा "मै नही मानता कि मै यहा अेक आश्रमवासीके नाते रहता हू। आश्रम-जीवन अच्छा है, लेकिन मै तो यहा अपने माता-पिताके साथ अुनके पुत्रके नाते ही रहता हू।" आश्रमकी प्रार्थनामें देवदासके भजन अत्यन्त मधुर और असर करनेवाले होते थे। पूज्य वापूजी अुन दिनो सारा दिन दर्जीका काम करते थे और देवदासको भी यह हुनर सिखाते थे। अपनी सारी शिक्षा देवदासने अपनी कल्पनाके अनुसार और अपने प्रयत्नसे ही प्राप्त की थी। जेलमें जवाहरलालजीने भी देवदासको थोडा पढाया था। लेकिन खास तौरसे तो मद्रासमें राजाजीने ही देवदासकी शिक्षामें पूरा रस लिया था।

अेक बार बापूजीके सेक्रेटरीका काम करनेका देवदासने विचार किया। मैंने कहा कि बडे आदमीके लडकेको पिताके मत्री बननेका प्रयत्न नही करना चाहिये। जिधर देखो अुधर अप्रिय बनना पडता है और गलतफहमीका तो पार ही नही रहता। 'हिन्दुस्तान टािअम्स' कैसे शुरू हुआ और अुसके द्वारा देवदासने अपने आपको अेक पत्रकारके रूपमें कैसे तैयार किया, अुसका भी सारा चित्र आंखोंके सामने खिच गया। बापूजीकी तत्त्व-जिज्ञासा और आसपासके सब लोगोको जीत लेनेकी कला देवदासने अच्छी तरह सीख ली थी और अुनकी व्यवहार-कुशलताको तो चरम सीमा पर पहुचा लिया था।

गाधी-स्मारक-निधिको तो मानो शनिकी दशा ही लग गअी है। अिस निधिकी स्थापना हुअी तभी वल्लभभाअी गये। फिर दादा साहेब, अुसके बाद बाला साहेब और अब देवदास तो असमयमें ही चल बसे।

देवदासके बच्चे तो आखिर अपनी-अपनी कार्यशक्ति बढानेमें लग ही जायेंगे, लेकिन चि० लक्ष्मीके बारेमें बहुत विचार आ रहे हैं। अभी-अभी मैंने और मारुयामाने लक्ष्मीको तार भेजा है।

आज जागतिक परिषद्का आखिरी दिन है। सब समितियोंके बने हुअे प्रस्ताव कुछ घटा-बढाकर आज परिषद्की ओरसे पास हुअे। अेक प्रस्तावमें ओकीनावाका अुल्लेख हटा देनेका प्रयत्न बहुतसे अमरीकी प्रतिनिधियोकी ओरसे हुआ। यह मुझे जरा भी पसन्द नही आया। अिसलिअे आखिरी दिनके अपने भाषणमें मैंने ओकीनावाका खास अुल्लेख किया। मैंने कहा "हमें भूलना नही चाहिये कि यह जागतिक परिषद् टोकियोमें की गअी, अिसमें अेक बडी विशेषता है। अेटम-बमके कारण सबसे अधिक कष्ट जापानियोने सहे हैं। हिरोशिमा और नागासाकीके जैसा नुकसान और किसीका नही हुआ है। जापानी लोगोकी भावना हमारे प्रस्तावमें व्यक्त न हो तो मैं तो अुन प्रस्तावोको निर्जीव समझूगा। ओकीनावाका अुल्लेख भला क्यो निकाल दिया जाय? अुस अभागे द्वीपमें जो ८०,००० जापानी बसते हैं अुन्हे अपने राष्ट्रसे जबरदस्ती अलग किया गया है। वहाके युद्धके अड्डोका विस्तार करनेके लिये प्रजाकी खेती

नष्ट की जा रही है। अिस भयकर अन्यायके बारेमें हमारा पुण्य-प्रकोप व्यक्त होना ही चाहिये।"

अिस प्रकार थोडा बोलकर मैंने अपना भाषण पूरा किया और अपनी जगह आ बैठा। तब ओकीनावाके अेक-दो प्रतिनिधियोने आकर मेरे भाषणके लिअे मेरा अभिनन्दन किया और भीनी आखोसे अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। अुन्होने कहा कि "भारत जैसे दूर देशसे आकर भी आप हमारा दु ख समझ सके हैं।" मैंने अितना ही कहा "विमान-मार्गसे आते-जाते आपका द्वीप दो-अेक बार देखा है। तबसे अिस द्वीपके प्रति हमारी सहानुभूति जाग्रत हुअी है और यदि विश्वशातिका अर्थ विश्व-बन्धुत्व होता हो तो हमें अेक-दूसरेका दु ख अपने दु खके जैसा ही लगना चाहिये।"

अुन्होने आग्रह किया कि "हम ओकीनावाके बीसेक प्रतिनिधि अुधर बैठे है वहा आप हमारे बीच चलिये। हम आपके साथ अेक फोटो लिवाना चाहते है।" मै अुनके बीच बैठकर आ गया। सच्ची सहानुभूति हो तो दुनियाकी किसी भी प्रजाके साथ हृदयकी अेकता स्थापित हो सकती है।

* * *

दोपहरको सरकारी रेडियो-विभागके लोग हमारे निवास-स्थान पर आये और मुझसे प्रश्न पूछकर अुनके जवाब रिकार्ड करके ले गये। अुनके प्रश्नोमें से अेक मुझे याद है "युद्धोमें आणविक शस्त्रोका अुपयोग होता है और अुन शस्त्रोके प्रयोग भी चल रहे हैं। अुनके विरुद्ध जापानी प्रजाकी अकुलाहटके विषयमें आपको क्या लगता है?" मैंने अुत्तर दिया "चार हफ्तेसे मै निप्पोनमें घूम रहा हू। निप्पोनकी प्रजा शाति चाहती है। आणविक शस्त्रोका व्यवहार बन्द होना ही चाहिये, अैसा वह अेक स्वरसे पुकार रही है, यह मै स्पष्ट देख सका हू। दु ख अितना ही है कि अुस पुकारका असर जापानकी लोकतात्रिक सरकार पर जितना होना चाहिये था अुतना नही दिखाअी दिया।"

"निप्पोनके लोगोका रहन-सहन आपको कैसा लगा?" अिस सवालके अुत्तरमे मैंने कहा, "अिस देशकी सुघडता और कलात्मकता

मुझे बहुत भाओी है। मैं भी अेशियावासी हूं। जापानी ढगसे रहते हुअे मुझे अैसा नहीं लगा कि मैं परदेशमें आया हूं।"

निप्पोन आया हूं तबसे गुरुजीसे दो-तीन बार ही मिलना हुआ है। परिषद्‌में जरूर रोज मिलते थे, लेकिन अुसे तो मुंह देखी मुलाकात ही कह सकते हैं। अेक-दूसरेको देखकर हमें, नमस्ते की और चले। निप्पोन छोडनेसे पहले मुझे अुनसे खास मिलना था और बहुत-सी बातें अुन्हें खानगीमें कहनी थीं। अिसके लिअे आज शामको हम अुनके निवासस्थान पर गये थे। हमारा भोजन भी वहीं था, अिसलिअे खाते-खाते आरामसे सब बातें हो सकीं।

मैंने अुनसे कहा "पिछले पचास-साठ वर्षोंमें भारतमें भगवान बुद्धके प्रति जो भक्तिकी भावना जाग्रत हुआी है और बौद्ध-धर्मके प्रति शिक्षित लोगोंमें जो आदर अुत्पन्न हुआ है अुसमें अधिकसे अधिक असर थेरवादका यानी हीनयानका है। लंका और बर्माके साथ सम्पर्क होनेके कारण थेरवादसे हम अधिक परिचित हैं। अुन लोगोंमें हिन्दू-समाजके प्रति सहानुभूति कम है। मेरे बौद्ध मित्र साधुचरित प० धर्मानन्दजी कोसम्बीने लंकामें ही दीक्षा ली थी और पालि-त्रिपिटकोंका गहरा अध्ययन किया था। महायानी शांतिदेवाचार्यका बोधिचर्यावतार अुनका प्रिय ग्रन्थ था। अिससे स्पष्ट होता है कि अुन्हें महायानके प्रति भी आदर था। अब आपने हमारे देशमें राजगिर, कलकत्ता, बम्बअी वगैरा स्थानोंसे सद्धर्मपुण्डरीकके द्वारा महायानका प्रचार चलाया है। अुसका मैं स्वागत करता हूं। विनोबाकी और मेरी यह खास अिच्छा है कि सब लोग महायान व हीनयानके भेद भूलकर बौद्धधर्म, जैनधर्म और वेदान्तका समन्वय करें और अुसके द्वारा धर्मकी पुनर्जागृति करनेका प्रयत्न करें।

"ओीमाओी-सान जैसे आपके शिष्य हिन्दी जानते हैं और सुन्दर काम कर रहे हैं। प्रत्यक्ष परिचयसे मैं कह सकता हूं कि ओीमाओी-सान अेक अनुभवी तथा गम्भीर व्यक्ति है। कामका विस्तार कैसे करना अिसका अुन्हें खयाल है। ओीमाओी-सानको कुछ दिन अपने साथ यात्रामें रखनेकी मैंने श्री विनोबासे सिफारिश की थी। अुसके अनुसार अुनके साथ घूमकर ओीमाओी-साननें भूदान और ग्रामदानका रहस्य समझ लिया

है। विनोबा पर अुनका अच्छा असर हुआ है। अुनके द्वारा निप्पोनको और भारतकी बहुत महत्त्वकी सेवा होनेवाली है। अभी तक आपने राजगिरमें स्तूप बनानेका और अनेक जगह मंदिरोंको सुचारु रूपसे चलानेका काम किया है। अुसके साथ अब साहित्यका प्रचार भी करना चाहिये। अिसके लिअे भारतमें आनेवाले आपके शिष्योंको हिन्दीका अुत्तम ज्ञान होना चाहिये। यदि वे हिन्दीमें अस्खलित बोल न सकें या लिख न सकें, तो धर्मकार्यमें अुतनी कमी रहेगी।"

आखिरमें मैंने कहा "भारतमें अब राजनीतिक और सामाजिक कारणोंकी वजहसे बहुतसे लोग काफी संख्यामें बौद्ध-धर्मकी दीक्षा ले रहे हैं। किसीके साथ वैर न करनेके शाक्यमुनिके अुपदेशको यदि वे स्वीकार करें, तो खुद अुनका और भारतका कल्याण ही होगा। लेकिन अिन्हीं दिनों अेक-दो जगह हिन्दू और बौद्धोंके बीच झगडे होनेके समाचार मिले हैं। अैसे समय खूब संभलकर चलनेकी जरूरत है। आज भारत-सरकार और भारतकी प्रजा बौद्ध-धर्मके प्रति आदर और अनुकूलता रखती है। यह सद्भाव ही हमारी सबसे बडी पूंजी है। यह पूंजी खोनेके बदले अुसे बढानेकी ओर हमारा प्रयत्न होना चाहिये। धर्मको यदि हम राजनीतिक पक्ष-विपक्षमें फंसने देंगे तो अुसमें दुर्गन्ध पैदा होने लगेगी और हमारा महान कार्य देखते ही देखते नष्ट हो जायगा।"

गुरुजीने मेरी बात ध्यानसे सुनी और अन्तमें अितना ही बोले "महात्माजीने मुझे बहुतसी सूचनाअें दी थीं और कअी बातोंके बारेमें चेताया भी था। अुनका महत्त्व अब समझमें आ रहा है। अब मैं अपनी सारी शक्ति विश्वशांतिके लिअे ही लगानेवाला हूं। अमुक धर्म या अमुक पक्षका आग्रह रखकर कुछ नहीं करूंगा।"

हम जिनके यहां रहते हैं वे लोग आजकल बाहर गये हुअे हैं। अिसलिअे हमारे लिअे खाना पकानेका काम सुमिको-सान नामकी अेक लडकी करती है। नागासाकी जानेसे पहले टोकियोमें जिन भक्तके यहां हमने दो घंटे बिताये थे अुन्हींकी यह लडकी है। यह साधारण ठीक पढी हुअी है और धर्मके प्रति श्रद्धा रखती है। सुमिको-सानका नाम

मैंने सुमित्रा रखा और रामायणकी सुमित्राके विषयमें अुसे थोड़ी जानकारी दी। अिसका कुछ दिनोंमे ही विवाह होनेवाला है। मैंने अुससे विनोदमे कहा कि विवाहमे पहले तुम अपने पतिसे वचन ले लेना कि वे तुम्हे भारत ले जावे तो ही तुम अुनसे विवाह करोगी। मैंने जब अुससे पूछा कि "सुमित्रा नाम तुम्हे पसन्द है?" तब वह हसकर बोली कि "यदि भारत आअी तो अिस नामको धारण कर लूगी।" टोकियोसे निकलनेके पहले अुसने मेरे हस्ताक्षर मागे। मैंने अुसे अेक गुजराती कविकी दो पक्तियोका हिन्दी अनुवाद करके लिख दिया।

अब तो आखिर जागतिक परिषद् पूरी हुअी। साथ ही हमारा जापान-भ्रमण भी पूरा हुआ। अब केवल पी० अी० अेन० वालोसे मिलना और भारतके राजदूत श्री झाके यहा भोजन करना शेष है।

१७-८-'५७

आज यहाका अन्तिम दिन है। आधी रातमे पहले ही हम टोकियो छोडकर अुड चलेंगे। अुडनेमे पहले आजके कार्यक्रमका कुछ हाल लिख दू। अुसके बादकी बाते सवेरे हागकाग आनेमे पहले ही लिख डालूगा। यह पत्र वहीसे रवाना होगा।

सुबहका सारा समय तो सामान बाधनेमे ही गया। अिस यात्रामें भी मैंने पहलेसे ही निश्चित कर लिया था कि मैं सामान सभालने, बाधने या खोलनेकी ओर बिल्कुल भी ध्यान नही दूगा। बहनोको जो सूझे सो ठीक। हवाअी जहाजकी यात्रामे जितना सामान साथ लिया जा सकता है अुतना साथ लेकर बाकीका सामान दो पेटियोमे बन्द करके समुद्रसे भेजनेके लिअे ओमाओ-सानको सौप दिया है।

दोपहरको भारतीय मण्डलके सभी सदस्योका भारतीय राजदूत श्री झाके यहा खाना था। श्री झासे मैं आज पहली बार ही मिला। वे बहुत ही मिलनसार और मीठे स्वभावके है। आये हुअे सब लोगोके साथ परिचय हो जानेके बाद श्री झा और मैं बगीचेमें जाकर बैठे और बातोमे लग गये। सबसे पहले मैंने अुनके बगीचेकी प्रशसा की। हमारे यहा मकानके पीछे सुन्दर घास अुगाकर तृणस्थली (लॉन) रखनेका रिवाज है। यहा भी वैसी ही तृणस्थली रखकर अुसके आसपास जापानी

ढगका वगीचा लगाया हुआ है। दो अभिरुचियोका अैसा मेल अत्यत सुविधाजनक और आनददायी था। अिधरसे अुधर यदि चक्कर लगाने हो तो तृणस्थलीका अुपयोग कीजिये, और यदि प्रकृतिके साथ गुफ्तगू करनी हो तो जापानी वगीचा सेवामे हाजिर है।

दो सस्कृतियोका अैसा सुभग मिश्रण बहुतसे लोगोको अनुकरणीय लग सकता है। लेकिन जरा सोचने पर मुझे लगा कि अिसमे जापानी वगीचेको कुछ गौण स्थान प्राप्त होता है यह ठीक नही है। मेरा यही भाव अनायास ही मेरे अूपरके वाक्यमें आ गया है "वगीचा सेवामे हाजिर!" मै तो मानता हू कि अेक सस्कृतिकी चीज दूसरी सस्कृतिमें सम्मिलित करते समय अितना विवेक तो रखना ही चाहिये कि किसीकी भी प्रतिष्ठा कम न हो।

श्री झासे निप्पोनकी शिक्षा-पद्धतिके विषयमे बहुत कुछ जाननेको मिला। अुन्होंने अिसका गहरा अध्ययन किया है। जापानी स्वभावके विषयमें चर्चा करते हुअे अुन्होंने बताया कि यह प्रजा बडी विवेक-शील है। अिसीलिअे प्रत्येक प्रसग पर अपना पूरा-पूरा असर डालनेमें ये लोग सफल होते है। श्री झाके यहाका स्नेह-सम्मेलन बडा ही अच्छा रहा। अिस प्रसग पर बुलाये हुअे जापानी भाअियोके परिचयसे मुझे बडी खुशी हुअी। वे लोग अग्रेजी जानते थे, अिसलिअे खुलकर बातें भी हो सकी। अुनमे से अेक सज्जनके साथ मेरा बीस-पच्चीस दिन पुराना परिचय होनेके कारण अुन्होंने पी० ओ० अेन० क्लबके लोगोसे मिलनेके लिअे मुझे 'सैयोकेन' जलपान-गृहमें ले जानेकी जिम्मेदारी अुठाअी। यह अुपाहार-गृह मारुनोअुची नामकी अेक विशाल अिमारतकी नवी मजिल पर था। वहा पी० ओ० अेन० की प्रधान मत्राणी श्रीमती योका मात्सुओकाने दो साहित्यकारोको मुझसे मिलनेके लिअे बुलाया था। अेक थे कवि शिम्पेअी कुसानो और दूसरे थे कथाकार जून टाकामी। जापानी हरी चाय पीते-पीते हमने बहुतसी बाते की। श्री झाके यहा खानेके बाद और कुछ खानेकी गुजाअिश भी नही थी। वे दो सज्जन भी तीन बजे कुछ खानेके लिअे अुत्सुक नही दिखाअी दिये। मै अग्रेजीमें बोल रहा था। और श्रीमती योका मात्सुओका

अुसका अनुवाद करके समझा रही थी। बातें तो बहुत हुआी लेकिन अुसमें से कुछ खास निष्पन्न नहीं हुआ।

कभी कभी भाषाकी कठिनाअीके कारण हम पूछते हैं अेक बात और जवाब मिलता है किसी दूसरी बातका। अेक-दो किताबोंके विषयमें अुन्होंने सिफारिश की, अुनके नाम मैंने लिख लिये Bunsho Rokuju, Edited by Hokuchi Hanawa यह अेक विशाल लेख-संग्रह है, अितना ही मैं याद रख सका हूं। दूसरे ग्रन्थका नाम था Koji-Ki महाराष्ट्रके 'बखर' के समान यह अेक अैतिहासिक ग्रन्थ है। ये लोग अुसे गद्य महाकाव्य मानते हैं। श्रीमती सान्मुओकाकी आत्मकथा मैंने खरीद ली।

पी० ओ० अेन० वालोंसे मिलकर जब मैं घर आया तो कलके जापानी रेडियोवाले आभार-प्रदर्शनका अेक पत्र और अेक सुन्दर भेंट लेकर आये। पूछने पर अुन्होंने बताया कि अुस पैकेटमें सिगरेट रखनेका अेक चांदीका डिब्बा है, जिस पर सुन्दर कलाका काम है। मैंने बताया कि मुझे बीडी-तम्बाकूका व्यसन नहीं है। मेरा बडा लडका जरूर अिसका शौकीन है। अुसे यह डिब्बा दूं तो वह खुश होगा। लेकिन तम्बाकूका विरोध करनेवाला मैं अैसी चीज लूं और अपने लडकेको दूं, यह शोभा नहीं देता। वे समझ गये। पहलेसे पूछा नहीं अिस 'अविवेक' के लिअे अुन्होंने क्षमा मांगी और वापस जाकर वे अेक सुन्दर लकडीकी तश्तरी (ट्रे) ले आये। मैंने अुन्हें धन्यवाद दिये और अुसे ले लिया।

यात्रा पर जानेवाले मनुष्यकी सुविधा-असुविधाका जिनको खयाल होता है, वे ही यात्रियोंको जाते वक्त अपने यहां खानेके लिअे पहलेसे निमंत्रण दे रखते हैं। श्री हेजमाडीने हमसे कहा कि आप अपना सब सामान बांधकर दूतावासके अेक कर्मचारीको सौंप दें और फिर आप तीनों हमारे यहां खानेके लिअे आ जायें। आखिर तक हम बातें करेंगे और फिर मैं आपको अपनी मोटरमें हानेडा तक पहुंचा आअूंगा।

अितना सुविधाजनक निमंत्रण और वह भी अितने सज्जन व रसिक लोगोंसे मिला हुआ! फिर भला अुसे कौन छोडता?

हमने अुनके यहा जाकर वडे आरामसे खाना खाया। वाहरके और कोओी नहीं थे अिसलिअे खूव वाते हुओं और हम आरामसे हानेडा पहुच गये। यह रास्ता भी अैसा था कि टोकियो शहरके पुराने भागका वहुतसा हिस्सा हम फिरसे देख सके। पुरानी वडी-वडी दीवारे, पुराने ढगके दरवाजे और पुराने ही किस्मके घर देखकर मुझे वडा आश्चर्य हुआ। पिछले महायुद्धमे शत्रुने जिस शहरको पूरा तहस-नहस कर दिया था, फिर भी अुसका यह पुराना हिस्सा सावित रह गया, यह अेक आश्चर्यकी ही वात थी।

हम हवाओी अड्डे पर पहुचे। वहा ओमाओी-सान, ताम्से-सान, सुमीको-सान और दूसरे वहुतसे लोग हमे विदाओी देनेके लिअे अेकत्रित हुअे थे। जव तक साथ रह सकते थे तव तक साथ रहे और अुसके वाद वे सव नजदीकके अेक पुल पर चढ गये। वहासे पक्तिवद्ध खडे होकर चमडेके पखे वजाते-वजाते अुन्होंने हमें अन्तिम विदा दी। मुझे विश्वास है कि अुनके हृदय भी हमारे जैसे ही भारी हो गये थे। करीव अेक महीनेकी मधुर मेहमानी चखकर हमने अेक समर्थ, सस्कारी और वडी ही प्रेमालु प्रजासे विदा ली। किन्तु अुनका प्रेम और अुनके प्रति आत्मीयताकी कीमती और भारी भेट हमने अपने साथ रख ली। अिसका हवाओी अड्डे पर वजन करनेकी जरूरत नहीं थी, वरना तो हमारा हवाओी सफर वहीं रुक जाता। साढे ग्यारह हो गये। वारहका घटा वजते ही दिन वदलता है। पर अुससे पहले ही हमने जापानकी धरती छोड दी और दक्षिणकी ओर प्रयाण किया। जव तक टोकियोके दीये दिखाओी देते रहे तव तक हमारी आखे जहाजकी खिडकीमे ही चिपकी रहीं। मध्य-रात्रि हो जाने पर भी हृदयकी मीठी अस्वस्थताके कारण नींद नहीं आओी। आखिर जव शरीर विलकुल थक गया, तव निद्रादेवीने अधिकार किया और हमे स्वप्न-सृष्टिमे पहुचा दिया।

ओीश्वरकी वडी कृपा है कि मैं दो वार अेशियाके अिस अद्भुत देशका दर्शन कर सका। पहली वार तुम साथ थी। दूसरी वार जो देखा-जाना, अनुभव किया और सोचा अुसकी तफसील पत्रोंके द्वारा वारवार भेजकर अिस यात्राका खयाल तुम्हे दे सका हू। अिसलिअे

मैं तो कहूंगा कि जापानके "हमने दो बार दर्शन किये।" फर्क केवल अितना ही है कि पहली यात्रा तुमने खुद मेरे साथ की थी और यह दूसरी यात्रा, मानस-यात्रा होनेके कारण, तुमने मेरे द्वारा की है। हम सब आशा रखते हैं कि भारतके लोग प्रतिवर्ष अधिकसे अधिक संख्यामें निप्पोन देशमें आयेंगे और निप्पोनके लोग भी ज्यादासे ज्यादा संख्यामें बुद्ध भगवानकी जन्मभूमि व पुण्यभूमि भारतमें आयेंगे और अिन दो प्रजाओंका सहयोग दुनियाके लिअे कल्याणकारी सिद्ध होगा।

३१

निप्पोन : वर्तमान और भावी

कोबे (जापान),
१०-८-'५७

मेरे अुस भाषणकी दो नकलें और दूसरे अेक-दो पत्रोंकी नकलें, जो तुमने टोकियोके हमारे दूतावासके मारफत भेजीं, मिलीं। लेकिन अुनमें तुम्हारा अथवा चि० चन्दनका पत्र कैसे नहीं है? तुम अर्थशास्त्री हो, फिर भी शब्दोंकी बचत करनेकी तो तुम्हारी आदत नहीं थी। बहुत करके तुम्हारा समय-दारिद्र्य ही अिसका कारण होगा।

चि० सरोज तो रोज अेक पत्र भेजती है। अुन पत्रोंमें सब लोगोंके समाचार काफी विस्तारमें होते हैं। अुसकी तबीयत अब सुधरने लगी है।

चि० मंजु अवनि मेहताकी पत्नी है यह तुम जानते हो, लेकिन तुम्हें यह नहीं मालूम होगा कि वह हमारे कान्ति और जयन्ती मेहताकी बहन भी है। छोटे बच्चोंको छोड़कर अितने दिनका और लम्बा सफर करना ठीक है या नहीं, अैसी अुधेड़-बुन अुसके मनमें चल रही थी और वह निर्णय नहीं कर पा रही थी। तब अुसकी सासने अुसे डपटकर कहा "बड़ी आओी है बच्चोंकी चिंता करनेवाली! घरमें जैसे हम कोओी हैं ही नहीं! कहती हूं कि बिल्कुल निश्चिन्त होकर

चली जा। दूर-दूरके देश देखनेका यह मौका मिला है, अुसे खोना नही चाहिये।" मजुको अुसकी सासके सुन्दर और मधुर पत्र मिलते रहते है। अुसकी सास तो मानो साक्षात् मा ही है।

चि० राजा और कुमार मजेमे होगे। चि० शैलाके सुन्दर-सुन्दर पत्र आते होगे।

पूरी यात्रामे हमारी तबीयत खूब अच्छी रही। हमारे खाने-पीनेकी, घूमने-फिरनेकी और सोने-अुठनेकी व्यवस्था अुत्तम है। समुद्रकी मछलिया खानेको हम तैयार नही है, लेकिन समुद्रमे पैदा होनेवाली चित्र-विचित्र वनस्पतियोकी साग-भाजी मुझे भाने लगी है। अिस तरह हमारी यात्रा खूब अच्छी चल रही है। निप्पोनके ठेठ अुत्तरसे ठीक दक्षिण तकका सारा मुल्क हमने जी भरकर देखा। अिस बार चार आखें और मेरी मददमे है। राजाओको चारचक्षु कहते है। मै अिस नये अर्थमें चार-चक्षु अथवा षट्चक्षु बन गया हू। कोअी भी बात षट्कर्णी होती है तो वह छिपी न रहकर सारी दुनियामे फैल जाती है। तब षट्चक्षु दर्शन कहा तक पहुचेगा, यह विचारणीय है। हम तीनोकी तबीयत अुत्तम है। चि० रेवतीको शक होने लगा है कि अुसका वजन कम बतानेवाले काटे शायद ठीक ही हो!

मैने देखा है कि निप्पोनमे जितनी कम जमीन पर अितनी लोक-सख्या निभानेके लिअे जिन लोगोको छोटे-बडे अनेक अुद्योग बढाने पडे है। परिणाम यह हुआ है कि अिस देशके गाव बडी तेजीसे शहरोका रूप धारण करने लगे है। गावमें बिजली पहुच जाय, हर तरहकी सुघडता हो और लोगोको पुस्तकालय, सग्रहालय (म्यूज़ियम), नाट्य-गृह आदिकी सुविधाअे मिले, यह तो मै चाहता हू। लेकिन खेतीके साथका और जानवरोके साथका सम्बन्ध हमेशा कायम रहना चाहिये। बस्ती बहुत घनी नही होनी चाहिये यह मेरा आदर्श है। निप्पोनमें अब शहरी सस्कृतिके गुण-दोष आने लगे है। जापानी अितिहास और साहित्यका विचार करते हुअे मुझे तो लगता है कि अिस जातिके स्वभावमें शहरी जीवन और ग्रामीण जीवन दोनोका मिश्रण है। अिस राष्ट्रीय पूजीके भरोसे ही अिस देशने पिछले सौ वर्षोमे जितनी प्रगतिकी है।

ये लोग यदि पूरे-पूरे शहरी बन जाय तो अिनकी अमुक शक्ति नष्ट हो जायगी। फिर तो जिसे मै 'प्रवाल सस्कृति' कहता हू वही बढ सकती है।

प्रवाल सस्कृति — यह अेक नया शब्द मैने गढा है। अिसकी कल्पना भी नअी है। अिसलिअे अिसे जरा समझा दू।

समुद्रमे प्रवालके कीडे बहुत ही छोटे होते है, लेकिन वे करोडो की सख्यामे होते है। अिसलिअे परस्पर सहकारके द्वारा वे बडे-बडे घर बनाते है। पेड और अुनकी शाखा-प्रशाखाओ जैसे अुनके सफेद और लाल घर हम सग्रहालयोमे देखते है। ये स्पजके आकारके होते है। ये समुद्रकी तलहटीमे घर बाधना शुरू करते है और अूपर बढते-बढते समुद्रकी सतह तक पहुच जाते है। तब अुनके सिरका अेक अगूठी जैसा गोल टापू बन जाता है, जिसे अग्रेजीमें 'अेटोल' कहते है। (यह सब तुम तो जानते हो। लेकिन चि० चन्दन यह पत्र राना और कुमारको पढकर सुनायेगी। अुनकी सुविधाके लिअे यह जरा विस्तारसे लिखा है।) अिस अगूठी जैसे द्वीपके अन्दर जो समुद्रका हिस्सा रहता वह धीरे धीरे मीठे पानीका सरोवर बन जाता है। फिर पक्षी आते है और अिस द्वीप पर वनस्पतिके बीज गिरा देते है। अिस तरह द्वीप पर जगल बढनेके बाद मनुष्य और जानवर भी यहा आ बसते है।

अिस तरह अगूठी जैसे द्वीप बनानेका धधा ये प्रवालके कीडे करते है। समुद्रसे कैल्शियम प्राप्त करना अुसे, लेकर समुद्रकी तलहटीसे बडे-बडे प्रवालीय पेड तैयार करना और फिर अुनका विस्तार करना यही अिन कीडोका जीवन है। विस्तार बढानेके अलावा और कोअी भी विविधता या जीवनानन्द ये लोग नही जानते। अुनकी मेहनतका लाभ भले ही फिर कोअी दूसरी सस्कृति अुठावे। अैसी अिन प्रवालके कीडोकी केवल विस्तार-परायण, विविधता-शून्य और आनन्द-विहीन लेकिन सुघड सस्कृतिको मै प्रवाल सस्कृति कहता हू। तुम्हे सस्कृतकी वह पक्ति याद होगी — "अति-विस्तार-विस्तीर्णम् तद् भवेत न चिरायुषम्।" किसी वस्तुका अनुपातसे अधिक अमर्याद विस्तार बढे तब अुस वस्तुकी आयु कम होती ही है। पश्चिममे जितनी हद तक प्रवाल सस्कृति विकसित हुअी है अुस हद तक अुसकी आयु घटी है। यदि यह सस्कृति समयसे

चेत जाय व सुधर जाय तो अच्छा, नही तो अुस पर अूपरवाला नियम लागू होगा ही। चीन या अमरीका जैसे विशाल देशोकी बात और है, लेकिन ब्रिटेन या जापान जैसी द्वीपी (अिन्सुलर) संस्कृतिके लिअे अति-विस्तार घातक साबित होगा।

द्वीपी प्रजामे आत्म-विश्वास, अुद्योगिता और महत्त्वाकाक्षा बढे तो अुसका विकास बहुत जल्दी और अद्भुत रीतिसे होता है। ब्रिटेन और निप्पोन अिसके अुत्तम नमूने है। लेकिन अुसके लिअे प्रजा अेकजीव होनी चाहिये। हमारे यहा लकाकी प्रजा चाहे तो अैसा ही सामर्थ्य प्राप्त कर सकती है। लेकिन अुसकी बात अभी रहने दे।

तीन वर्ष पहले हम जापान आये थे तब क्वेकर बहन श्रीमती ग्लेडिस ओवेन हमारे साथ ही रही थी। हमारे बीच काफी बातचीत हुआी थी। अेक दिन किसीको मेरा परिचय देते हुअे अुन्होने कहा 'Kaka Saheb is world-minded' तुरन्त ही अुन्होने अुसे और स्पष्ट कर दिया 'Not worldly-minded, but world-minded' अुनकी बात बिना सकोच या अभिमानके मैं स्वीकार करनेको तैयार हू। मैं विश्वप्रेमी हू। जहा जाता हू वहाके लोगोके सुख-दुःखके साथ समरस होनेमे मुझे कठिनाअी नही होती। प्रत्येक प्रजाकी आकाक्षा मैं समझ सकता हू और अुसे अपने मनमे शिष्टरूप भी दे सकता हू। फिर अुस प्रजाको अैसा रूप स्वीकार करनेमे और अपनानेमें स्वाभाविक रूपसे कोअी कठिनाअी नही होती।

खैर! जिस प्रदेशमें हर जगह मैं आत्मीयतासे हिल-मिल सका हू, यद्यपि लोगोके साथका मेरा सम्पर्क भाषाकी असुविधाके कारण केवल भिक्षु अीमाअी-सानके मारफत ही सधा है। हमारे यहा लगभग सब जगह अग्रेजी जाननेवाले लोग मिलते है। यहा अैसा नही है। भले-भले लोग अग्रेजी नही जानते। जो अग्रेजी जाननेका दावा करते है, अुनमें से कअियोकी अग्रेजी हमारे लिअे जापानी भाषाके जैसी ही अगम्य है।*

---

* मुझे विश्वास हो गया है कि अग्रेजीके द्वारा जापानकी प्रजा, अुसका हृदय, अुसकी विचार-प्रणाली अथवा संस्कृति अिनमें से कुछ भी अच्छी तरह जाना नही जा सकता।

ओीश्वरकी यह कितनी बडी कृपा है कि हृदयकी भाषा आंखोंके द्वारा व्यक्त हो सकती है। हम यदि जानवरोंके प्रति प्रेम करें तो वे भी हमारी आंखोंमें ही यह पहचान लेते हैं। फिर मनुष्य तो आखिर मनुष्य ही ठहरा।

यहांका प्राकृतिक सौंदर्य, प्रजाका पुरुषार्थ, लोक-जीवनकी रसिकता, सारे समाजकी रग-रगमें समायी हुअी तंत्रनिष्ठा और बौद्धधर्म द्वारा चीन, कोरिया व जापान तीनों देशोंकी संस्कृतिके साथ समरस होकर धारण किया हुआ नित्य नूतन स्वरूप -- जिन सबका अध्ययन व चिंतन करते करते मैं तल्लीन हो जाता हूं।

किसी भी प्रजाके जीवनमें भाग्यके पलटे तो आते ही रहते हैं। यह पुरुषार्थी और स्वाभिमानी प्रजा आज अमरीकाके प्रभावमें दबी हुअी है। लेकिन यह स्थिति हमेशा टिकनेवाली नहीं है। यह प्रजा यदि गलत रास्ते न जाय तो अिसके भाग्यकी कोअी सीमा नहीं है।

गूढ चिंतनकी आदत जिस प्रजाको भले ही न हो, फिर भी कोअी चीज सूझे या गले अुतरे कि तुरन्त अुसे आत्मसात् करनेकी जबरदस्त शक्ति अिसमें है। द्वीपी प्रजाका स्वभाव ही जैसा होता है कि वह विश्वप्रेमका आदर्श सरलतासे नहीं अपना सकती। लेकिन यदि यह आदर्श अुसके गले अुतरे और अुनसे सध जाय, तो अुनके हाथों युगकार्य अवश्य सम्पन्न हो सकता है। बौद्ध-धर्म और ख्रिस्ती धर्म, दोनों मूलमें ही विश्वप्रेमी हैं। अिस प्रजाको अुस अुत्तराधिकारकी मदद पूरी तरहसे मिल सकती है। लेकिन कठिनाअी यह है कि कलामें क्या और जीवनमें क्या, यह प्रजा आकृति-पूजक (worshipper of form) है। अिनकी समाज-व्यवस्था, अिनकी तंत्रनिष्ठा (डिसीप्लिन), जिनके बगीचे और चित्रकला वे सब आकृति-पूजामें से ही विकसित हुअे हैं। अब यह चीज समझमें आने-जैसी है कि आकृति-परायण प्रजा सहज ही अनुकरणशील बन जाती है और अुसमें असाधारण सफलता भी प्राप्त करती है।

अितिहास-विधाताकी कृपा होगी और यदि अिस प्रजामें युगानुकूल नवजीवन जागृत होगा, तो वह आकृतिका बंधन छोडकर जीवन-

परायण, आत्म-परायण और विश्वात्मैक्य-परायण हो सकेगी। अिनके बीच फैला हुआ महायान बौद्ध-धर्म यदि नवजीवन धारण करे, तो जापानी संस्कृतिको नवचैतन्य प्रदान कर सकेगा।

भोग-विलासकी अुपासना करनेवाले शहरी लोग समयसे नही चेते तो वे संस्कृति-विहीन हो जायेंगे। और यदि अैसा हुआ तो अिस प्रजाको फिरसे जीवन प्राप्त करनेमें बडी कठिनाअी होगी। कठिनाअी क्या — बिलकुल क-ख-ग से ही प्रारम्भ करना होगा।

अभी टोकियो शहरमें बसमें जाते हुअे अेक सज्जनके साथ बातें हुअी। मैंने कहा "टोकियो अब दुनियाका सबसे बडा शहर हो गया है। न्यूयार्क, वाशिंगटन, लंदन और बर्लिनसे भी बडा। अिसके लिअे जापानी लोग जरूर गर्व कर सकते हैं। लेकिन मुझे यह चिह्न अच्छा नही दिखाअी देता।" मेरे सहयात्रीने आश्चर्य करते हुअे कहा, "आपको यह क्यों नहीं पसन्द आता?" मैंने कहा "अैसे शहर आसपासके गावोंके सेवक अथवा रक्षक होनेके बदले अुनके भक्षक ही बन जाते हैं। जिनके जीवनका फिर कोअी खास अुद्देश्य नही रहता। केवल बढते जाना बस जितना ही ये जानते हैं। सुख-विलासमें पडे रहने पर भी वे जीवनका सच्चा आनन्द खो बैठते हैं। अुनका मानस भी विकृत हो जाता है। विस्तारके साथ सत्ताका लोभ जाग्रत होता है और बढता जाता है। वे शान्ति या संतोषका अनुभव तो कर ही नही सकते।"

अेक तरफ तो अैसे विस्तारको मैं भला-बुरा कहता हू और दूसरी तरफ मनमें कामना करता हू कि जापानकी यात्रा पूरी होते ही अनन्त आकाशके नीचे अनन्त सागरका विस्तार देखूगा और हवाअी जहाजके जैसे छोटेसे घेरेमें अनेक देशोंके बडे-बडे लोगोंको अेक साथ यात्रा करते हुअे देखकर अनन्त शक्ति और अनन्त संकल्पवाले विराट मानवका दर्शन भी करूंगा!

समझमें नही आता कि बुद्धि क्या सोचती है और हृदय क्या चाहता है!

———